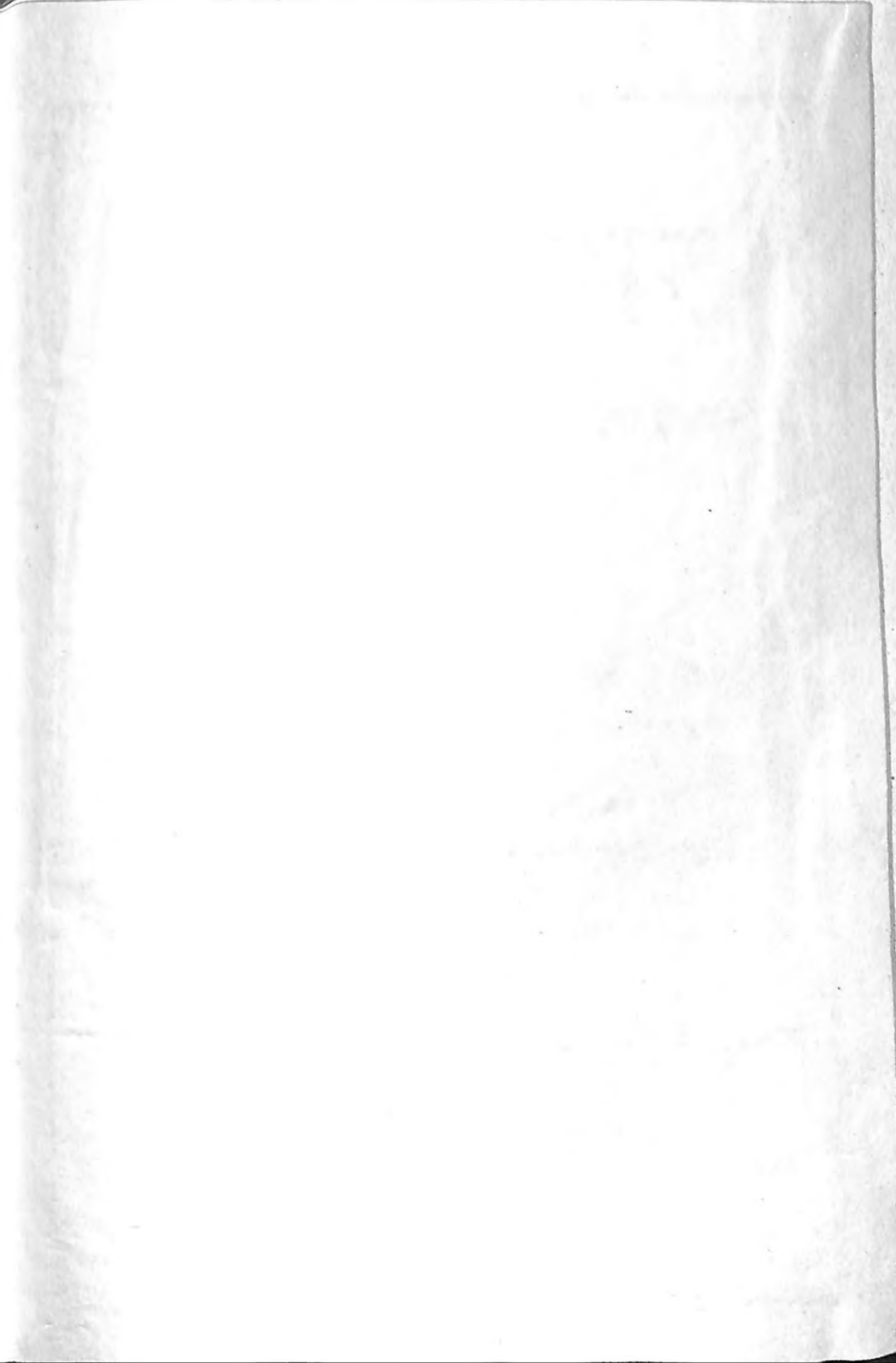
मन्त्र सागर





मन्त्र-सागर

(विद्या में भारत सोने की चिड़िया)

लेखक तथा सम्पादक-
तन्त्राचार्य-स्व० डॉ० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय'
ज्योतिष शास्त्री, ज्योतिष रत्नाकर, दैवज्ञ रत्नाकर,
सामुद्रिक शास्त्रालंकार
यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र ज्योतिष शोध-संस्थान
१२८/७६९, वाई ब्लाक, किदवई नगर, कानपुर-११

प्रकाशक
सावित्री ठाकुर प्रकाशन
रथयात्रा चौराहा,
वाराणसी।

मूल्य ७०/-

सावित्री ठाकुर प्रकाशन
रथयात्रा, नाटीइमली, वाराणसी।
फोन : रथयात्रा-3257309







मुद्रक-
सावित्री प्रिंटिंग प्रेस,
वाराणसी।



लेखक तथा सम्पादक

तन्त्राचार्य - **स्व० डॉ० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय'**
ज्योतिष शास्त्री, ज्यौतिष रत्नाकर, दैवज्ञ रत्नाकर,
सामुद्रिक शास्त्रालंकार

आमुख

'जय महाशक्ति'

प्रत्येक प्राणी अपने-आप को तथा परिवार को चतुर्मुखी सुखी, निरोग और सम्पन्न देखना चाहता है। जहाँ सुख के अनेकानेक साधन हैं, उनमें तन्त्र-साधना भी मानव जीवन की आवश्यकता और आकांक्षाओं की पूर्ति के साधनों में सुगम साधन है। यह भ्रम सर्वथा निर्मूल है कि तन्त्र केवल भूल-भुलैया अथवा मन बहलाने का नाम है।

तन्त्र शास्त्र का विशाल प्राचीन साहित्य इसकी वैज्ञानिक सत्यता का जीता-जागता प्रमाण है। आधुनिक विज्ञान और यन्त्र-तन्त्रादि में बहुत समानता होते हुए भी तन्त्रादि में स्थायित्व है, सत्य है और जग-जन कल्याण है।

इस साधना के द्वारा बड़ी-से-बड़ी और छोटी-से-छोटी जैसी भी समस्या हो उसका समाधान सहज रूप से प्राप्त किया जा सकता है।

भारतीय संस्कृति के मूलाधार तन्त्रादिक शास्त्रों में यन्त्र-मन्त्रों की अद्‌भुत शक्ति विद्यमान है। मैं दावे की बात तो नहीं कह सकता कारण अहम् भाव आ जाता है। पर मैं यह अवश्य कहूँगा कि यह बड़ा ही अगम्य है। मैंने श्री जगद्-जननी माँ की असीम अनुकम्पा से हजारों व्यक्तियों के असाध्य रोग व काम तन्त्रादि के द्वारा सम्पन्न किये हैं। जिनका प्रमाण वाराणसी तथा विशेष रूप के कानपुर की जनता साक्षी है।

कई वर्षों के अथक परिश्रम के बाद प्रस्तुत पुस्तक का प्रकाशन हो पाया है। तन्त्रशास्त्र बड़ी ही गहन एवं क्लिष्ट विषय है। इसमें अनेक साधकों के जीवन तक समाप्त हो गये, पूर्ण सिद्धि नहीं ही प्राप्त कर सके।

प्रस्तुत पुस्तक मन्त्र-सागर फिर भी 'यथा नाम तथा गुणम्' इसमें तन्त्र शास्त्र

के महान् प्रामाणिक ग्रन्थ, जैसे—मन्त्र महार्णव, मन्त्र महोदधि, कामरत्न, योगिनी तन्त्र, यन्त्र-चिन्तामणि, उड्डीश तन्त्र, क्रियोड्डीश तन्त्र, गायत्रीतन्त्र, धन्वन्तरि तन्त्र शिक्षा, साबरी तन्त्र, महानिर्वाण तन्त्र, वशीकरण साधन व अनेक प्रकाशित एवम् प्राचीन हस्त लिखित ग्रन्थों की खोज पूर्ण अन्वेषण एवम् सन्त-महात्माओं, प्राचीन परम्परा-त्रिपाठी वंश की थाती व अपने पूज्य दउआ (चाचा जी) विश्वविख्यात रमल सम्राट् स्व० पं० बचान प्रसाद त्रिपाठी (प्रणेता एवं संस्थापक चिन्ताहरण जन्त्री) की विशेष कृपा एवं उनके वरदहस्त आशीर्वाद स्वरूप बहुत कुछ मिला है। मैंने यथा शक्ति पुस्तक को सरल व पूर्णरूप से जो था, उसे अधिकांश प्रकाश में ला दिया है।

मेरे परम स्नेही बन्धुवर आचार्य पण्डित श्रीशिवदत्त मिश्र जी शास्त्री ने अपने व्यस्त कार्य-क्षणों में भी प्रस्तुत की अपनी प्रस्तावना में इसकी विशेषता व्यक्त कर ग्रन्थ को अत्यधिक गौरवान्वित किया है, इसके लिये उनका मैं हृदय से आभार मानता हूँ। आप शताधिक धार्मिक ग्रन्थों, जैसे—दुर्गार्चन पद्धति, काली-रहस्य, दुर्गातन्त्र, शिव-रहस्य, राम-रहस्य, हनुमद्-रहस्य, गायत्री-रहस्य, बगलामुखी-रहस्य एवं बृहत्स्तोत्र-रत्नाकर-आदि के लेखक, सम्पादक एवं अनुवादक है। तथा काशी के वरिष्ठ विद्वानों में आपकी काफी प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि है। फिर भी मेरे ऊपर आपका अक्षुण्ण स्नेह और अनुकम्पा बनी रहती है, यह पराम्बा जगदम्बा की असीम अनुकम्पा है।

अन्त में, हम अपने कुछ शुभ चिन्तकों, विद्वानों, भक्तों आदि को साधुवाद देते हैं, जिन्होंने पुस्तक-प्रकाशन की अवधि में हमें सहयोग व धैर्य प्रदान किया। सर्व-प्रथम श्री आमडेकर जी, दुर्गा मन्दिर, गंगाघाट, जिन पर माँ की विशेष अनुकम्पा है।

श्रीपदमकुमार अग्रवाल, श्याम ट्रेडिंग कम्पनी, फूलबाग, कानपुर जिन पर माँ जगद्-जननी की अनुकम्पा है, व अच्छे साधक हैं। तथा आपका दुर्गा दीप यन्त्र पर अच्छा अनुभव प्राप्त है।

श्री पं० हरि प्रसाद जी शुक्ल, युग-निर्माण योजना, कानपुर शाखा के कार्य

वाहक मन्त्री कहें, या स्तम्भ कहें, जिन्होंने गायत्री के कई पुरश्चरण कर चुके हैं, अब भी साधना रत हैं। श्रीजयनारायण जी जैन, (J. N. Jain) आप स्टेट बैंक में उच्चाधिकारी होते हुए भी माँ भगवती के बहुत ही उपासक हैं और माँ से बहुत कुछ प्राप्त करते रहते हैं, पर किसी से व्यक्ति नहीं करते, यह बहुत बड़ी आपकी महानता है। श्री सतीश चन्द्र जी पाण्डेय तथा उनकी धर्मपत्नी, यह दाम्पत्य परिवार श्रीगजानन (गणपति) व माँ के बड़े ही भक्त हैं। श्री आर. बी. दुबे, दुर्गा मन्दिर तथा श्रीसत्यनारायणजी गुप्त, लाला प्रोडेक्ट व श्रीहीरा लाल शर्मा (सूरजबाबू), माहेश्वरी मुहाल आदि भी नगर प्रिय और माँ भगवती के बड़े ही उपासक हैं। वैसे तो, श्रीरमाकान्त जी पाण्डेय, कृष्णा गृह निर्माण यशोदा नगर, कानपुर की मेरे ऊपर विशेष कृपा है। श्रीमहेश प्रसाद जी पाण्डेय, आदित्यनारायण पाण्डेय, श्री चन्द्रिका प्रसाद श्रीवास्तव, श्रीगिरजा शंकर जी दूबे, श्रीसत्यनारायण केजरीवाल (सत्तू बाबू) आदि व्यक्तियों की सतत प्रेरणा रही है।

मैं उक्त सभी सज्जनों का आभार प्रकट करता हूँ, आप लोगों का बड़ा ही सहयोग व प्रेरणा रही है। मैं सभी के लिए जगज्जननी माँ भगवती से कल्याण की कामना करता हूँ।

तन्त्राचार्य–स्व० डॉ० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय'
यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र ज्योतिष शोध-संस्थान
१२८/७६९, वाई ब्लाक, किदवई नगर, कानपुर-११
दूरभाष : २६३०३३३

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति के मूलाधार तन्त्रशास्त्रों में मन्त्रों की अद्भुतशक्ति विद्यमान है। जिस प्रकार एक छोटा सा अंकुशद्वारा महाबलशाली मदोन्मत्त गजराज को भी अपने वश में करके उससे जो चाहे सब कुछ करा लेते हैं। उसी प्रकार कुशल साधक अपने विधि-पूर्वक यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र के अनुष्ठान द्वारा किसी बड़े-से-बड़े देवी देवताओं को भी अपने वशीभूतकर जो चाहे सब-कुछ कराने की प्रबल मन्त्रशक्ति प्राप्त कर लेता है। उसी का प्रधान अंगभूत प्रस्तुत पुस्तक भी है, जिसका नाम है 'मन्त्र-सागर' अर्थात् सभी यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों का जिसमें एकत्र संग्रह है, ऐसा एक विशिष्ट ग्रन्थ।

इसके लेखक हैं, तन्त्राचार्य—डॉ० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय'। आपके चिरकालीन घोर परिश्रम के साथ यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र सम्बन्धी बड़े-बड़े प्राचीन ग्रन्थ, जैसे—मन्त्रमहार्णव, मन्त्रमहोदधि, महानिर्वाणतन्त्र, धन्वन्तरि तन्त्र शिक्षा, यन्त्रचिन्तामणि, कामरत्न, सावरीतन्त्र, अघोरीतन्त्र, उड्डीशतन्त्र, गायत्री तन्त्र, वशीकरण साधन आदि अनेक अप्राप्य प्रकाशित एवं हस्तलिखित तन्त्र ग्रन्थों की खोजपूर्ण अन्वेषण एवं सन्त-महात्माओं, विशेषकर रमल सम्राट् पण्डित बचान प्रसाद त्रिपाठी, जो कि आपके (दउआ) चाचा जी हैं, आदि महानुभावों से विशिष्ट ज्ञान प्राप्तकर, छान-बीन पूर्वक प्रस्तुत पुस्तक लिखने का ही सुपरिणाम है कि अनेकानेक प्रयोग-विधि सहित यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों का एक प्रामाणिक एवं विशुद्ध सर्वोत्तम ग्रन्थ आपके हाथों प्रस्तुत है।

इसमें शिवाशिव-सम्वाद, षट्कर्मों के नाम एवं उनकी व्याख्या, कलश विधान, शिवार्चन, काली, तारा, महाविद्या (त्रिपुर सुन्दरी) भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातंगी एवं कमला (लक्ष्मी) इन दश महाविद्यायों के साधन प्रयोग, स्तोत्र, कवच, अष्टनायिका साधन, सभी प्रकार के यन्त्र-मन्त्र, मारण,

मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, वशीकरण आदि षट्कर्मों तथा यक्षिणी आदि साधन प्रयोग, पञ्चदशी, यन्त्र-मन्त्र-विंशतियन्त्र (बीसायन्त्र) तथा पुत्रदाता सिद्ध यन्त्र-मन्त्र, सर्पादि विष झाड़ने के मन्त्र, नवग्रहों की शान्ति एवं उनके यन्त्र-मन्त्रादि, तन्त्र-विज्ञान (टोटका-विज्ञान) आदि अनेकों विषय दिये गये हैं। इन बहुत से सिद्ध यन्त्र-मन्त्र तो ऐसे हैं जो कि त्रिपाठी जी के अनुभूत, स्वयं सिद्ध हैं, जिनको सिद्ध करके अनेकों साधकों ने अधिकाधिक लाभ उठाये हैं। इस विषय में श्री 'निर्भय' जी विश्व-विश्रुत एवं ख्याति प्राप्त विद्वान् हैं वाराणसी लखनऊ, विशेषतः कानपुर के निवासी तो इन्हें भली-भाँति जानते हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि, तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र के जिज्ञासु पाठकों के लिए यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी। अब तक ऐसा संस्करण अन्यत्र कहीं से प्रकाशित है, यह देखने में नहीं आया।

मैं सर्वथा श्रम-साध्य इस स्तुत्य प्रयास के लिए श्रीत्रिपाठी जी का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए भगवान् आशुतोष के श्रीचरणों में इनके निरामय दीर्घायुष्यकी प्रार्थना करता हूँ और आशान्वित हूँ कि आप के मस्तिष्क तथा लेखनी द्वारा भविष्य में भी अन्यान्य तन्त्र-मन्त्र-यन्त्रादि सम्बन्धी ग्रन्थरत्न सुन्दर एवं दिव्यरूप से प्रकाशित होते रहें, जिससे अनेकशः यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र स्नेही पाठक लाभान्वित हो सकें।

वसन्त पंचमी
३१ जनवरी, १९९०

—स्व० शिवदत्त मिश्र शास्त्री
शिव साहित्य संस्थान

शुभ कामना

तन्त्र-विद्या व्यक्ति चेतना के जड़ भाव को सम्पूर्ण रूप से दूर करके व्यक्ति को प्रज्ञा के प्रकाश में खड़ा करने वाली, पर्दे के भीतर रहने वाली कुलवधू की तरह, अत्यन्त गोप्य शाम्भवी विद्या है। अत्यन्त चेतना का आत्यन्तिक विस्तार करने के कारण भी इसे 'तन्त्र' कहते हैं। 'तन्त्र' विद्या प्रयोग-गर्भा है, अतएव एक विज्ञान है। तान्त्रिक प्रक्रियाएँ मन्त्रात्मक हैं तथा मन्त्र-चैतन्य अपने आप में एक बहुत बड़ी क्रान्ति है। मन्त्रानुष्ठान एवं तान्त्रिक प्रक्रियाओं द्वारा अपनी निद्रित शक्ति को जगा कर अभ्युदय एवं निश्श्रेयस् की सिद्धि करना मानव मात्र का कर्तव्य है। इस सिद्धि की ओर सम्पूर्ण भाव से अग्रसर करने वाली तन्त्राचार्य स्व० डॉ० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'मन्त्र-सागर' का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। इस अकेली पुस्तक में षट्कर्म, दश महाविद्याओं एवं डाकिनी, शाकिनी, यक्षिणी आदि के साधन प्रयोग का ब्यौरा सम्पादक ने अत्यन्त स्पष्ट रूप से दिया है। साथ ही विविध मन्त्रों द्वारा प्रयोग-लभ्य सिद्धि-प्रकार का भी ग्रन्थकर्ता ने दुर्लभ विवरण प्रस्तुत किया है।

तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र-सम्बन्धी साधन प्रयोगों को हिन्दी में प्रस्तुत करने वाली यह पुस्तक धार्मिक जगत् में निःसन्देह एक युगान्तर प्रस्तुत करेगी। डॉ. त्रिपाठी का यह महान् प्रयास आस्तिक समाज को हमेशा आमोद से भरता रहे, यही मेरी कामना है।

मकर संक्रान्ति
१४ जनवरी, १९९०

डॉ. सत्यव्रत शर्मा
आचार्य, डीन एवं अध्यक्ष आधुनिक भाषा एवं भाषा विज्ञान-विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

शुभाशंसा

जिस मनोयोग, अध्यवसाय एवं आस्था के साथ मेरे लघुभ्राता तन्त्राचार्य- डॉ० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय' ने भारतीय आस्तिक समाज को प्रबुद्ध और सक्रिय बनाये रखने के लिए प्रस्तुत पुस्तक 'मन्त्र-सागर' का सम्पादन किया है वह वास्तव में बहुत ही प्रशंनीय है।

प्रस्तुत पुस्तक में षट् कर्म, वशीकरण, मारण, मोहन, उच्चाटन, आकर्षण, स्तम्भन, विद्वेषण तथा दश महाविद्याओं के साधन प्रयोग, स्तोत्र, कवच, भूत-प्रेत, अष्ट नायिका साधन, डाकिनी, शाकिनी, यक्षिणी आदि साधन प्रयोग एवं उनके यन्त्र-मन्त्रादि अनेकानेक विषय दिये गये हैं। विशेषकर गोप्य-अप्राप्य विंशति यन्त्र (बीसा यन्त्र) आदि, प्राचीन टोटका विज्ञान, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि के क्रम बद्ध सुन्दर समुपादेय संकलन-सम्पादन तथा विवेचन आदि के लिये मैं बन्धु 'निर्भय' के लिये माँ जगत् जननी (जगदम्बा) से दीर्घायु की कामना करता हूँ। तथा मुझे विश्वास है कि भारत की धार्मिक जनता इस पुस्तक का समुचित स्वागत और समादर करेगी।

रमलाचार्य आश्रम, कसमण्डा
पोस्ट—कसमण्डा
प्रान्त-सीतापुर

रामकृष्ण शर्मा बी. ए.
सुपुत्र
स्व० रमल सम्राट्-श्री पं० बचान प्रसाद त्रिपाठी
तान्त्रिक-शिरोमणि
प्रणेता—एवं प्रवर्तक, चिन्ताहरण जन्त्री

सम्मति

भारतीय तन्त्र-विद्या केवल सैद्धान्तिक विषय नहीं, प्रस्तुत क्रियात्मक विषय है, और उसके अनेक प्रत्यक्ष फलदायी एवं विस्मय-विमुग्धकारी प्रयोग गुरु-गम्य हैं। इस क्षेत्र में कार्य-सिद्धि के अभिलाषी व्यक्तियों के लिए पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभवजन्य ज्ञान अनिवार्यतः अपेक्षित है, जो अनुभवी सिद्ध सद्‌गुरु के द्वारा ही प्राप्य है। इस समय पहले तो सच्चे अनुभवी गुरु ही दुर्लभ हैं और यदि किसी को भाग्यवश वे मिल भी जायें तो उनसे विद्या प्राप्ति के लिए अपने को सत्पात्र बनाना भी कम कठिन नहीं है। वस्तुतः वास्तविक साधना सत्पात्र बनने के लिए ही होती है। अधिकारी और सत्पात्र के लिए सद्‌गुरु को कुछ अदेय नहीं है। इस पुस्तक मन्त्र-सागर के लेखक—स्व० डॉ० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय' भारत-विख्यात तान्त्रिक श्री पं० बचान प्रसाद त्रिपाठी रमलाचार्य जी महाराज के भ्रातृज हैं और तन्त्र के क्रियात्मक साधना में आपने आशातीत प्रगति की है। आपने भारतीय तन्त्र-साहित्य का बड़े परिश्रम से अवलोकन करके उसके अनेक उपयोगी प्रयोगों का संकलन इस पुस्तक में किया है, जिसके प्रकाशन की प्रतीक्षा बड़े लम्बे समय से जिज्ञासु समुदाय कर रहा था। इस पुस्तक के लेखन और प्रकाशन के द्वारा प्रणेता और प्रकाशक ने तो अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है, किन्तु पुस्तक के उपयोगकर्त्ताओं को अपने कर्त्तव्यपालन मे सर्वाधिक सावधानी की आवश्यकता है। पुस्तक में उन्हें कई ऐसे तन्त्र मिलेंगे जिनमें मारण-मोहनार्थ निषिद्ध प्रयोगों का भी विधान है। इस प्रकार के तामसी प्रयोग-कर्त्ताओं को तात्कालिक कार्य-सिद्धि भले ही मिल जाय, अन्ततः उन्हें बड़ा दुःखद परिणाम प्राप्त होता है। अतः मेरी विनम्र सम्मति में इस पुस्तक के विचारशील पाठ कों को ऐसे प्रयोगों से परे रहकर अपनी प्रसुप्त दैवी शक्ति के जागरण की सात्त्विक साधना ही करनी चाहिए।

स्व० जगजीवन दास गुप्त
ज्योतिष-मार्तण्ड, ज्योतिष-शिरोमणि

प्रस्तुति

तन्त्राचार्य–डॉ० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय' 'शास्त्रीजी' को मैं चिरकाल से भलीभाँति जानता हूँ और इनके सैकड़ों तान्त्रिक चमत्कार मैंने स्वयं देखे हैं, जो शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकते।

'कलौ चण्डी-विनायकौ' (कलियुग में चण्डी-दुर्गा, विनायक-गणेशजी) की प्रधानता सिद्ध है। श्री निर्भय जी दश महाविद्याओं में अद्‌भुत शक्ति एवं गणेश जी के अच्छे उपासक तथा उच्चकोटि के तान्त्रिक हैं और माँ जगदम्बा की आप पर विशेष अनुकम्पा है।

आपने भारतीय यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि साहित्य पर अध्ययनशील अन्वेषण बड़ी ही श्रमसाध्य साधना द्वारा खोजबीन पूर्वक की है तथा काम-रूप 'कामाक्षा देवी' में भी चिरकाल का निरन्तर साधना की है। अब भी वर्ष में एक-दो बार वहाँ अवश्य जाते हैं। श्री 'निर्भय' जी बहुत पहुँचे हुए सिद्धसाधक तान्त्रिक हैं, इसमें दो राय नहीं है।

आपकी **'मन्त्र-सागर'** नामक पुस्तक मैंने आद्योपान्त पूर्णरूप से देखी और पढ़ा। आपने तन्त्र शास्त्र पर जो खोज पूर्णतथा स्वयं सिद्ध तन्त्रादि विषय दिये हैं वह बड़े ही कल्याणकारी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में जो तान्त्रिक साधन विधान, दश महाविद्याओं, षट्‌कर्मों आदि के पूर्णरूपेण विधान क साथ योगिनी, अष्टनायिका तथा प्राचीन टोटकों आदि का उत्तमोत्तम संकलन, तन्त्रादि क्रियात्मक साधना आदि विषय दे देने से जन-साधारण के लिए भी बहुत हीं उपयोगी हो गया है।

इस स्तुत्य प्रयास के लिए विद्वान् (मेधावी) लेखक को मैं हृदय से साधुवाद देता हूँ और मेरी शुभ कामना है कि श्री 'निर्भय' जी का यह सत्प्रयास निरन्तर निर्बाध गति से चलता रहे।

चन्द्र-भवन
आलूथोक-हरदोई

डॉ० चन्द्रसेन मिश्र (चन्द्र)
'तन्त्रदिवाकर'

शुभ सम्मति

तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र के सुप्रसिद्ध वेत्ता तन्त्राचार्य डॉ० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय' की पुस्तक 'मन्त्र-सागर' को आद्योपान्त देखने से प्रतीत हुआ कि आज के भौतिक युग में जब कि मानव कई प्रकार से परेशान है, इसके लिए यह पुस्तक वास्तव में लाभप्रद है। मारण, मोहन, वशीकरण तथा उच्चाटन के साथ ही कई प्रकार के बीसा यन्त्रों का जो विवरण, विधि-विधान दिया गया है उसमें अनेक अनुभूत हैं।

परिवार में तथा इस विद्या में रुचि रखने वालों के लिए यह पुस्तक परम उपयोगी तो है ही, इससे तन्त्र-मन्त्र-यन्त्र की काफी हद तक जानकारी भी मिलती है। आज ऐसे ही ग्रन्थों की समाज तथा विद्वानों को आवश्यकता है।

धर्मरत्न ओमप्रकाश सिन्हा शास्त्री
(आकृति विज्ञानविद्)
भारतीय अध्यात्म परिषद्, वाराणसी।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ

मंत्र सागर

शिवा शिव सम्वाद

गिरि राज हिमालय को उच्च शिखर पर आसीन कपाल मालधारी कामरि गंगाधर देवाधिपति भगवान् शंकर की समाधि टूटने पर गिरिसुता जगत्-जननी जगदम्बा भगवती पार्वती विनम्रता पूर्वक हाथ जोड़ भगवान् भूतनाथ से बोलीं कि हे देव!आज कल समग्र जगत के प्राणी नाना प्रकार की व्याधियों से पीड़ित दरिद्रता का जीवन व्यतीत कर रहे हैं, अतः आप संसार के सकल दुःख निवारण करने वाला कोई ऐसा उपाय बतलाने की कृपा करें जिससे रोगी दरिद्री एव शत्रु द्वारा सताये हुए प्राणी क्लेश मुक्त हो सकें। तब जटा जूट धारी सृष्टि संहारकर्त्ता भगवान त्रिलोचन कहने लगे कि हे पार्वती आज मैं तुम्हारे सन्मुख संसार के समस्त क्लेशों से छुटकारा दिलाने वाले उन अमोघ मंत्रों का वर्णन करता हूँ जिनके विधान पूर्वक सिद्धि कर लेने पर मनुष्य रोग शोक दरिद्रता तथा शत्रु भय से सर्वथा मुक्त हो सकता है और जगत की उपलब्ध समस्त सिद्धियां उसे अनायास ही प्राप्त हो सकती हैं। हे गिरिजा!अब मैं तुम्हारे सन्मुख मंत्र सिद्धि प्राप्ति हेतु आवश्यक षटकर्म का वर्णन करता हूं।

षटकर्मों के नाम

शान्ति वश्यस्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटने तथा।

मारणान्तानि शंसन्ति षट् कर्माणि मनीषिणः॥

(१) शान्ति कर्म (२) वशीकरण (३) स्तम्भन (४) विद्वेषण (५) उच्चाटन एवं मारण। इन छः प्रकार के प्रयोगों को षटकर्म कहते हैं और इनके द्वारा नौ प्रकार के प्रयोग किये जाते हैं।

नौ प्रकार के प्रयोग

मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण, रसायन एवं यक्षिणी साधन। उपरोक्त नौ प्रकार के प्रयोगों की व्याख्या एवं लक्षण पंडित जन इस प्रकार कहते हैं।

षटकर्म व्याख्या

(१) **शान्ति कर्म**–जिस कर्म के द्वारा रोगों और ग्रहों के अनिष्टकारी प्रभावों को दूर किया जाता हैं, उसे शान्ति कर्म कहते हैं और इसकी अधिष्ठात्री देवी रति हैं।

(२) **वशीकरण**–जिस क्रिया द्वारा स्त्री पुरुष आदि जीव धारियों को वश में करके कर्त्ता की इच्छानुसार कार्य लिया जाता है उसको वशीकरण कहते हैं। वशीकरण की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती हैं।

(३) **स्तम्भन**–जिस क्रिया के द्वारा समस्त जीवधारियों की गति को अवरोध किया जाता है, उसे स्तम्भन कहते हैं। इसकी अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी हैं।

(४) **बिद्वेषण**–जिस क्रिया के द्वारा प्रियजनों की प्रीति, परस्पर की मित्रता एवं स्नेह नष्ट किया जाता है, उसे बिद्वेषण कहते हैं। इसकी अधिष्ठात्री देवी ज्येष्ठा हैं।

(५) **उच्चाटन**–जिस कर्म के करने से जीवधारियों की इच्छाशक्ति को नष्ट करके मन में अशान्ति, उचाट उत्पन्न की जाती है और मनुष्य अपने प्रियजनों को छोड़कर खिन्नता पूर्वक अन्यत्र चला जाता है, उसे उच्चाटन कहते हैं। इसकी अधिष्ठात्री देवी दुर्गा हैं।

(६) **मारण**–जिस क्रिया के करने से जीवधारियों का प्राणान्त कर्त्ता की इच्छानुसार असामयिक होता है उसे मारण कहते हैं। इसकी अधिष्ठात्री देवी भद्रकाली हैं और यह प्रयोग अत्यन्त जघन्य होने के कारण वर्जित है।

षट कर्मों के वर्ण भेद

षटकर्मों के अन्तर्गत जिस कर्म का प्रयोग करना हो, उसके अनुसार ही वर्ण का ध्यान करना चाहिए। साधकों की सुविधा के लिए हम वर्ण भेद लिख रहे हैं, इसे स्मरण रखना चाहिए।

शान्ति कर्म में श्वेत रंग, वशीकरण में लाल रंग (गुलाबी)

स्तम्भन में पीला रंग, विद्वेषण में सुर्ख(गहरे लाल रंग) उच्चाटन में धूम्र रंग(धुयें के जैसा) और मारण में काले रंग का प्रयोग करना चाहिये।

आसन तथा बैठने का योगासन

शान्ति कर्म के प्रयोग में साधक को गजचर्म पर सुखासन लगाकर बैठना चाहिये, वशीकरण के प्रयोग में मेषचर्म (भेड़ की खाल) पर भद्रासन लगाकर, स्तम्भन में बाघम्बर (शेर की खाल) को बिछा कर पद्मासन से बैठना चाहिए। विद्वेषण में अश्वचर्म (घोड़े की खाल) पर कुक्कुटासन लगाकर बैठना चाहिये, उच्चाटन प्रयोग में ऊँट की खाल का आसन बिछाक अर्ध स्वस्तिकासन लगाकर बैठना चाहिये तथ मारण प्रयोग में महिषचर्म (भैंसे की खाल का आसन अथवा भेड की ऊन से बने हुये आसन पर विकटासन लगाकर बैठना चाहिये।

मंत्र जाप के लिए मालायें

वशीकरण और पुष्टिकर्म के मंत्रों को मोती, मूँगा अथवा हीरा की माला से जपना चाहिए। आकर्षण मंत्रों को गज़ मुक्ता या हाथी दांत की माला से जपना चाहिए। विद्वेषण मंत्रों की अश्व दन्त (घोड़े के दाँत) की माला बनाकर जपना चाहिए। उच्चाटन मंत्रों को बहेड़े की माला अथवा घोड़े के दाँत की मालासे जपना चाहिए, तथा मारण मंत्रों को स्वतः मरे हुये मनुष्य, या गदहे के दांतों की माला से जपना चाहिए। विशेष—धर्म कार्य तथा अर्थ प्राप्ति हेतु पद्माक्ष की माला से जाप करना सर्वोत्तम होता है और साधक के समस्त मनोरथ पूर्ण करने वाला रुद्राक्ष की माला अतिश्रेष्ठ हैं।

माला में मनकों (गुरियों) की संख्या

सप्तविंशति संख्याकैः कृता मुक्ति प्रयच्छति।
अक्षैस्तु पंचदशभिर भिचार फलप्रदा।
अक्षमाला विनिर्दिष्टा तन्त्रादौ तत्व दर्शिभिः।
अष्टोत्तरशतेनैव सर्वकर्मसु पूजिता॥

अर्थ–शान्ति और पुष्टि कर्म में २७ दानों की, वशीकरण में १५ दानों की, मोहन में १० दानों की, उच्चाटन में २८ दानों की, विद्वेषण में ३१ दानों की माला से जाप करना चाहिए। ऐसा मंत्र शास्त्रियों तथा शास्त्रों का निर्देश है।

षटकर्म में माला गूंथने के नियम

शान्ति और पुष्टि कर्म में कमल के सूत्र की डोरी से, आकर्षण तथा उच्चाटन में घोड़े के पूंछ के बालों से तथा मारण प्रयोग में मृतक मनुष्य के नसों से गूँथी हुई माला उत्तम होती है। इसके अतिरिक्त समस्त प्रयोगों में रुई के डोरे से गूँथी हुई माला का प्रयोग करना चाहिए।

माला जपने में उँगलियों का नियम

शान्ति कर्म, वशीकरण तथा स्तम्भन प्रयोग में तर्जनी व अंगूठे के द्वारा आकर्षण में अनामिका और अंगूठे के द्वारा विद्वेषण और उच्चाटन प्रयोगों में तर्जनी व अंगूठे तथा मारण प्रयोग में कनिष्ठिका और अंगूठे द्वारा माला फेरना उत्तम होता है।

कलश विधान

शान्ति कर्म में नवरत्न युक्त स्वर्ण कलश, कदाचित स्वर्ण कलश न हो सके तो चाँदी अथवा ताम्र कलश स्थापित करें। उच्चाटन तथा वशीकरण में मिट्टी का कलश, मोहन में रूपे का कलश तथा मारण में लौह कलश का प्रयोग करना उत्तम और शुभ होता है। यदि समय पर विधान के अनुसार कलश न मिला तो ताम्र कलश समस्त प्रयोगों में स्थापित किया जा सकता है।

माला जाप के नियम तथा भेद

जप तीन प्रकार के होते हैं—प्रथम वाचिक, जिसे जाप करते समय दूसरा व्यक्ति सुन ले उसे वाचिक और जिस जाप में केवल हिलते हुए ओष्ठ दिखलाई पड़ें, किन्तु आवाज न सुनाई देवे, उसे उपांशु कहते हैं तथा जिस जाप के करने में जिम्भा (जीभ) ओठ आदि

कार्य करते न दिखाई पड़ें और साधक मन ही में जप करता रहे उसे मानसिक कहते हैं। मानसिक जाप करने वालों को चाहिए कि अक्षरों का विशेष ध्यान रक्खें। मारण आदि प्रयोगों में वाचिक, शान्ति तथा पुष्टिकर्म में उपांशु जप तथा मोक्ष साधन में मानसिक जाप परम कल्याणकारी और शीघ्र सिद्धि प्रदान करने वाला है। इस प्रकार जाप के करने से साधक के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

षटकर्म में ऋतु विचार

एक दिन तथा रात्रि ६० घड़ी का होता है, जिसमें १०-१० घड़ी में प्रत्येक ऋतु को विभक्त किया जाता है यानी प्रत्येक ऋतु का समय चार घण्टे होता है और इसका क्रम निम्न प्रकार होता है।

प्रथम सूर्योदय से दस घड़ी या चार घण्टे तक बसन्त ऋतु, द्वितीय दस घड़ी में ग्रीष्म, तृतीय दस घड़ी वर्षा, चतुर्थ दस घड़ी शरद, पंचम दस घड़ी हेमन्त तथा षष्टम दस घड़ी में शिशिर ऋतु मानी जाती है। कोई कोई आचार्य ऐसा भी कहते हैं कि प्रातःकाल बसन्त ऋतु, मध्यान्ह में ग्रीष्म, दोपहर ढलने पर वर्षा, संध्या समय शिशिर, आधी रात को शरद और रात्रि के अन्तिम पहर में हेमन्त ऋतु होता है। इस प्रकार हेमन्त ऋतु में शान्ति कर्म, बसन्त ऋतु में वशीकरण, शिशिर में स्तम्भन ग्रीष्म में विद्वेषण, वर्षा में उच्चाटन शरद ऋतु में मारण प्रयोग करना चाहिए

समय विचार

दिवस के प्रथम प्रहर में वशीकरण विद्वेषण और उच्चाटन, दोपहर में शान्ति कर्म, तीसरे पहर में स्तम्भन और मारण का प्रयोग संध्या काल करना चाहिए।

षटकर्म दिशा निर्णय

शान्ति कर्म ईशान में, वशीकरण उत्तर में, स्तम्भन पूर्व में, विद्वेषण नैरित्य में, उच्चाटन वायव्य में तथा मारण प्रयोग आग्नेय कोण में करना चाहिए।

मंत्रजाप में दिशा विचार

शान्ति कर्म, आयु रक्षा और पुष्टि कर्म में उत्तर की ओर मुख करके, वशीकरण में पूर्व की ओर मुख करके, धन प्राप्ति हेतु पश्चिम की ओर मुख करके तथा मारण आदि अभिचार में दक्षिण की ओर मुख करके मंत्र जाप करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

दिन विचार

शान्ति प्रयोग गुरुवार से, वशीकरण सोमवार से, स्तम्भन गुरुवार से, विद्वेषण कर्म शनिवार से, उच्चाटन मंगलवार से, मारण प्रयोग शनिवार से प्रारम्भ करने में सिद्धि प्राप्त होती है।

तिथि विचार

शान्ति कर्म किसी भी तिथि को शुभ नक्षत्र में करना चाहिये, इसमें तिथि का विचार गौड़ है। आकर्षण प्रयोग के लिये नौमी, दशमी, एकादशी, अमावास्या को, विद्वेषण प्रयोग शनिवार एवं रविवार को पड़ने वाली पूर्णिमा को, उच्चाटन प्रयोग 'षष्ठी' (छठी) अष्टमी, अमावास्या को और (प्रदोष काल इस कार्य के लिये विशेष शुभ होता है) स्तम्भन प्रयोग पंचमी, दशमी अथवा पूर्णिमा को तथा मारण प्रयोग अष्टमी, चतुर्दशी और अमावास्या को करने से शीघ्र फल प्राप्त होता है।

दिशाशूल विचार

मंगल बुद्ध उत्तर दिशि काला सोम शनिश्चर पूरब न चाला ॥
रवी शुक्र जो पश्चिम जायें, होय हानि पथ सुख नहिं पाय ॥
गुरु को दक्षिण करे पयाना, "निर्भय" ताको होय न आना ॥

योगिनी विचार

परिवा नौमी पूरब वास, तीज एकादशि अग्नि की आस।
पंच त्रयोदशि दक्षिण बसै, चौथ द्वादशी नैऋत लसै ॥
छठी चतुर्दशि पश्चिम रहै, सप्तम पन्द्रसि वायव्य गहै।
द्वितिया दशमी उत्तर धाय, "निर्भय" आठ ईशान निराय ॥

योगिनी चक्र

ईशान ८	पूरब १ व ९	अग्निकोण ३ व ११
उत्तर २ व १०		दक्षिण ५ व १३
वायव्य ७ व १५	पश्चिम ६ व १४	नैऋत्य ४ व १२

अग्निकोण में चतुर्थी को नैऋत्य कोण में पंचमी को दक्षिण दिशा में परिवा को योगिनी का वास पूर्व म. द्वितिया को उत्तर में, तृतीया छठी को पश्चिम में, सप्तमी को वायव्य कोण में अष्टमी को ईशान कोण में योगिनी का वास रहता है। प्रयोग मे पूर्व साधक को चाहिए कि किसी ज्योतिषी से ग्रह नक्षत्र दिशा-शूल तथा योगिनी का विचार करवा लेना चाहिये, क्योंकि योगिनी सन्मुख-दाहिने हाथ की ओर होने से अत्यन्त अनिष्टकारी होती है ।

षटकर्म में हवन सामग्री

षटकर्म प्रयोग के अनुसार हवन सामग्री पृथक-२ लगती है । साधक को चाहिये कि जैसा प्रयोग करे उसी अनुसार हवन करें । शान्ति कर्म मे दूध, घी, तिल और आम की लकड़ी से, पुष्टिकर्म में दही, घी, वेलपत्र, चमेली के पुष्प, कमल गट्टा, चन्दन, जौ, काले तिल तथा अन्न मिलाकर, आकर्षण प्रयोग में चिरौंजी तिल विल्वफल से, वशीकरण में राई नमक मे. उच्चाटन में काग पंख घी में सानकर धतूरे के बीज मिला कर, तथा मारण प्रयोग में विष, रक्त और धतूरे के बीज मिलाकर हवन करना चाहिये । विशेष—समस्त शुभ कार्यों में घृत, मेवा खीर, धूप मे तथा अशुभ कार्यों में घृत तिल मेवा चावल देवदारु आदि से हवन करने मे सिद्धि प्राप्त होती है । साधकों की विशेष सुविधा के लिए हम षट चक्र दे रहे हैं, इससे आपको समझने में विशेष सुविधा होगी ।



षट्कर्म में देवी, दिशा, ऋतु आदि के ज्ञान का चक्र

षट्कर्म	देवी	दिशा	ऋतु	रंग	दिन	आसन
शान्तिकर्म	रति	ईशान	हेमन्त	श्वेत	गुरुवार	गज चर्म सुखासन
वशीकरण	सरस्वती	उत्तर	बसंत	लाल	सोमवार	भेड़ चर्म भद्रासन
स्तम्भन	लक्ष्मी	पूर्व	शिशिर	पीला	गुरुवार	बाघम्बर पद्मासन
विद्वेषण	ज्येष्ठा	नैऋत्य	ग्रीष्म	लाल	शनिवार	अश्वचर्म कुक्कुटासन
उच्चाटन	दुर्गा	वायव्य	वर्षा	धूम्ररंग	मंगल वार	ऊँटचर्म अर्धस्वस्तिकासन
मारण	भद्रकाली	आग्नेय	शरद	काला	शनिवार	भैंसे का चर्म विकटासन

ज्ञातव्य–उपरोक्त चक्र में वर्णित विधियों के विपरीत कार्य करने से सिद्धि प्राप्त होना असंभव है अतः प्रत्येक कार्य वर्णित विधान के अनुसार ही करे विशेष सुविधा के लिये तांत्रिक का परामर्श लाभदायक रहेगा।

सिद्धयोग तिथि चक्र

नन्दा	१-६-११	शुक्रवार
भद्रा	२-७-१२	बुधवार
जया	३-८-१३	मंगलवार
रिक्ता	४-९-१४	शनिवार
पूर्णा	५-१०-१५	गुरुवार

पड़वा छठि, एकादशी, पड़े जो शुक्रवार।
नन्दा तिथि शुभयोग है, ज्योतिष के अनुसार॥

द्वीज, द्वादशी, सप्तमी, बुध भद्रा पड़ जाय ।
नवमी, चौथ, चतुर्दशी, शनि रिक्ता कहलाय ॥
पड़े पंचमी पूर्णिमा दशमी, गुरु को आन ।
योग पूर्णा जानिये "निर्भय" करे बखान ॥

मार्जन मन्त्र

ॐ क्षा हृदयाय नमः, ॐ क्षीशिरसे स्वाहा ।
ॐ ह्रीं शिवाय वौषट, ॐ हूं कवचाय हुम ।
ॐ क्रों नेत्र भाया वो फटः, ॐ क्रों अस्त्राय फट ।
ओं क्षा क्षीं ह्रीं ह्रीं को के फट स्वाहा ।

इस मंत्र को पढ़कर बायें हाथ की हथेली में जल बीज अक्षर से प्रत्येक अंग का मंत्रानुसार स्पर्श कर लेना चाहिए ।

मंत्र तंत्र यंत्र उत्कीलन विनियोग ॐ अस्य श्री सर्व यंत्र मंत्र तंत्राणाम् उत्कीलन मंत्र स्तोत्रस्य मूल प्रकृति ऋषिः जगती छन्द निरंजन देवता उत्कीलन क्लीं बीजं ह्रीं शक्तिः ह्रौं कीलकं सप्तकोटि यंत्र मंत्र तंत्राणाम् संजीवन सिद्धम जये विनियोगः ।

न्यास

ॐ मूल प्रकृति ऋषये नमः शिरसि ॐ जगति छन्द से नमः मुखे ॐ निरंजन देवतायै नमः हृदि क्लीं बीजाय नमः गुह्ये ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ह्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे ह्रां अगुष्ठाभ्यां नमः ह्री तर्जनीभ्यां नमः हूँ मध्यमाभ्यां नम ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः ह्रः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ।

ध्यानम्

ब्रह्म स्वरूपं मलचं निरजनं तं ज्योतिः प्रकाशम् । न तं सततं महांतं कारुण्य रूप मपि बोध करं प्रसन्नं दिव्यं स्मरणम् सततं मनु जीव नायं एवं ध्यात्वा स्मरे नित्यं तस्य सिद्धिस्तु सार्वदा वांच्छित फल माप्नोति मंत्र संजीवनं ध्रुवं ।

शिवार्चन

पार्वती फणि बालेन्दु भस्म मंदाकिनी तथा
पवर्ग रचितां मूर्तिः अपवर्ग फल प्रदा।

आवश्यक निर्देश

साधक को मंत्र तंत्रादि का प्रयोग करने से पूर्व किसी ज्ञानी गुरु के चरणों में बैठकर उनसे समस्त क्रियाओं के बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए। उसके पश्चात् जहाँ भक्ति एवं प्रबल आत्म विश्वास के साथ गुरु आज्ञा प्राप्त कर साधनमेंप्रवृत्त होना चाहिये। इसके विपरीत यदि साधक के मन में अविश्वास होगा तो उसकी साधना का फल हानिप्रद भी हो सकता है क्योंकि बिना विश्वास के दुनिया का कार्य नही चल सकता। अतः स्थिर चित्त होकर ही कर्म प्रवृत होना चाहिए और जिस दिन से कोई कर्म करना हो प्रातःकाल शय्या त्याग नित्य कर्म से निवृत्त होकर एकान्त स्थान में जा, जो मंत्र सिद्धि करना हो उसे भोजपत्र पर केशर से लिख कर मुख में रख लेना चाहिये तथा जब तक मंत्र क्रिया चले केवल उस समय चावल मूंग की दाल या ऋतु फल का आहार कर रात्रि में पृथ्वी पर शयन करना चाहिये। षट कर्म के अनुसार किसी प्रयोग में यदि कोई वस्तु रात्रि में लाना हो तो नग्न हो स्वयं अपने हाथों से वह वस्तु लावे तथा आते जाते समय पीछे की ओर न देखे इसका प्रमुख कारण यह है कि नग्न होकर जाने से मार्ग में भूत प्रेतादिकों का भय नहीं रहता और पीछे देखने से जो आपके पीछे सिद्धि प्रदान कर्ता आते हैं वे वापस चले जाते हैं। सुकुमार व्यक्तियों और स्त्रियों के लिए तंत्राचार्यों ने यह निर्देश दिया है जहाँ दो पहर रात्रि में जाना हो उसके स्थान में दो पहर दिन में जाय तथा जहाँ नग्न होकर कार्य करना लिखा हो वहाँ बिना सिलाया हुआ एक वस्त्र धारण कर कार्य करें और मनुष्य की खोपड़ी के स्थान पर आधे नारियल से और जहाँ चौराहे में बैठकर प्रयोग निर्देश हो वहाँ घर पर गोबर का

चौकोर चौका लगा कर पूरब से पश्चिम उत्तर से दक्षिण की ओर रेखा खींचकर कार्य करें और यदि श्मशान जाने का निर्देश हो तो केवल श्मशान भस्म लाकर, घर पर जप स्थान में बिछा कर एकाग्र चित्त होकर साधना करें, आपका मनोरथ अवश्य पूर्ण होगा।

अब दशमहाविद्याओं के यंत्र, मंत्र, कवच, जप, होम आदि विधि पूर्वक विस्तृत रूप से लिखे जाते हैं।

दश महाविद्यो नामानि

काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा॥
बगलासिद्धि विद्या च मातङ्गी कमलात्मिका।
एता दशमहाविद्याः सिद्धि विद्याः प्रकीर्तिताः॥

(१) काली (२) तारा (३) महाविद्या (त्रिपुर सुन्दरी) (४) भुवनेश्वरी (५) भैरवी (६) छिन्नमस्ता (७) धूमावती (८) बगलामुखी (९) मातंगी (१०) कमला अर्थात् लक्ष्मी। ये दस देवियाँ दशमहाविद्या के रूप में प्रसिद्ध हैं।

यथार्थ में ये सभी एक ही आदि शक्ति जिसे शिवा दुर्गा, पार्वती अथवा लक्ष्मी कहा जाता है—की प्रति मूर्तियां हैं। सबके मालिक (पति) भगवान सदा शिव हैं। भक्तों, (साधकों) की प्रसन्नता हेतु मुख्य, मुख्य अवसरों पर पराशक्ति महादेवी ने अपने जो नाना रूप धारण किये उन्हीं का दशमहाविद्याओं के रूप में पृथक-पृथक मंत्र, जप, ध्यान, होम एवं पूजनादि विधि पूर्वक नीचे दिया जा रहा है। आदि शक्ति की उपासना का विधान हमारे देश में सहस्त्रों वर्षों से चला आ रहा है तथा शाक्तमत के नाम से इनकी उपासना करने वालो का एक पृथक सम्प्रदाय हीं बन गया है।

ये दशमहाविद्या अभीष्ट फल प्रदान करने वाली हैं। इनके ध्यान स्तव, कवच मंत्रादि मूल संस्कृत भाषा में हैं अतः तंत्र के साधकों

पाठकों की जानकारी हेतु उनकी हिन्दी में टीका कर दी है । साधकों को चाहिए कि ध्यान, कवच, स्तव आदि का पाठ जपादि मूल संस्कृत में ही करें, तभी सिद्धि प्राप्त होगी । मंत्रादि विधि आदि जो भी बात समझ में न आवे उसकी जानकारी किसी विज्ञ तांत्रिक से करनी चाहिए । इन दशमहाविद्याओं के सम्बन्ध में हमें वहुत कुछ विशेष जानकारी श्रद्धेय श्री चन्द्रसेन जी मिश्र तंत्राचार्य सन्डीला-हरदोई से मिली है एतदर्थ मैं उनका आभारी हूँ ।

काली साधन

सर्व प्रथम काली साधन के ध्यान, मंत्र, जप, होम, स्तव, हवन. कवचादि का वर्णन निम्नांकित है ।

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा ।

कालीध्यानम्

करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम् ।
कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमालाविभूषिताम् ।
सद्यश्छिन्नशिर: खड्गवामाधोर्द्धकराम्बुजाम् ।
अभयं वरदञ्चैव दक्षिणाधोर्द्धपाणिकाम् ।।
महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बरीम् ।
कण्ठावसक्तमुण्डालीगलद्रुधिरचर्च्चिताम् ।।
कर्णावतंसतानीतशवयुग्मभयानकाम् ।
घोरदंष्ट्राकरालास्यां पीनोन्नतपयोधराम् ।।
शवानां करसंघातैः कृतकाञ्चीं हसन्मुखम् ।
सृक्कच्छटागलद्रक्तधाराविस्फूरिताननाम् ।
घोररावां महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीम् ।
बालार्कमण्डलाकारलोचनत्रितयान्विताम् ।।

दन्तुरां दक्षिणव्यापिमुक्तालम्बिकचोच्चयाम् ।
शवरूपमहादेवहृदयोपरि संस्थिताम् ।।
शिवाभिर्घोररावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ।।
महाकालेन च समं विपरीतरतातुराम् ।।
सुखप्रसन्नवदनां स्मेराननसरोरुहाम् ।
एवं संचिन्तयेत् कालीं सर्व्वकामसमृद्धिदाम् ।।

कालिकादेवी भयंकरमुखवाली, घोरा, बिखरे केशों वाली, चतुर्भुज तथा मुण्डमाला से अलंकृत हैं । उनकी वाम ओर के दोनों हाथों में तत्काल छेदन किये हुए मृतक का मस्तक एवं खड्ग है । दक्षिण ओर के दोनों हाथों में अभय और वरमुद्रा विद्यमान हैं । कण्ठ में मुण्डमाला से देवी गाढ़े मेघ के समान श्यामवर्ण, दिगम्बरा कण्ठ में स्थित मुण्डमाला से टपकते रुधिर द्वारा लिप्त शरीर वाली, घोरदंष्ट्रा करालवदना और ऊंचेस्तन वाली हैं । उनके दोनों श्रवण (कान) दोमृतक मुण्डभूषणरूप से शोभा पाते हैं, देवी की कमर में मृतक के हाथों की करधनी विद्यमान है, वह हास्य मुखी हैं । उनके दोनों होंठों से रक्त की धारा क्षरित होने के कारण उनका वदन कम्पित होना है, देवी घोर नाद वाली, महाभयंकरी और श्मशान वासिनी हैं. उनके तीनों नेत्र तरुण अरुण की भांति हैं । बड़े दांत और लम्बायमान केशकलाप से युक्त हैं, वह शवरूपी महादेव के हृदय पर स्थित हैं उनके चारों ओर घोर रव गीदड़ी भ्रमण करती हैं । देवी महाकाल के सहित विपरीत विहार में आसक्त हैं, वह प्रसन्नमुखी सुहास्यवदन और सर्व्वकाम समृद्धिदायिनी है, इस प्रकार उनका ध्यान करें ।।

कालीपूजायंत्र

आदौ त्रिकोणमालिख्य त्रिकोणं तद्बहिर्लिखेत् ।
ततो वै विलिखेन्मंत्री त्रिकोणत्रयमुत्तमम् ।।

ततोवृत्तं समालिख्य लिखेदष्टदलं ततः ।
वृत्तं विलिख्य विधिवत् लिखे द्भूपूरमेककम् ।
मध्ये तु बैन्दवं चक्रं बीजमायाविभूषितम् ।।

पहले बिन्दु फिर निजबीज "क्रीं" फिर भुवनेश्वरी बीज "ह्रीं" लिखे इसके बाहर त्रिकोण और उसके बाहर चार त्रिकोण अंकित करके वृत्त अष्टदलपद्म और पुनर्वार वृत्त अंकित करें । उसके बाहर चतुर्द्वार अंकित करना चाहिए।यह काली की पूजा का यन्त्र है॥

नोट—यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखना चाहिए ।

काली के लिए जप-होम ।

लक्षमेकं जपेद्विद्यां हविष्याशी दिवा शुचिः ।
ततस्तु तद्दशांशेन होमयेद्धविषा प्रिये ।।

पूजा के अन्त में मूल मंत्र का एक लक्ष जपकर जप का दशांश घृत होम करना चाहिए ।।

कालीस्तव ।

कर्पूरं मध्यमान्त्यस्वरपररहितं सेन्दुवामाक्षियुक्तं
बीजन्ते मातरेतत्त्रिपुरहरवधु त्रिःकृतं ये जपन्ति ।।
तेषां गद्यानि च मुखकुहरा दुल्लसन्त्येव वाचः
स्वच्छन्द ध्वान्तधाराधररुचिरुचिरे सर्व्वसिद्धि गतानाम् ।।

टीका—हे जननी ! हे सुन्दरी ! तुम्हारे शरीर की कान्ति श्यामवर्ण मेघ की भाँति मनोहर है । जो तुम्हारे एकाक्षरी बीज को तिगुना करके जपते हैं, वह शिव की अणिमादि अष्टासिद्धि को प्राप्त करते हैं, और उनके मुख से गद्य पद्यमयी वाणी निकलती है ।

ईशानः सेन्दुवामश्रवणपरिगतं बीजमन्यन्महेशि
द्वन्द्वं ते मन्दचेता यदि जपति जनो वारमेकं कदाचित् ।

जित्वा वाचामधीशं धनदमपि चिरं मोहयन्नम्बुजाक्षी
वृन्दं चन्द्रार्द्धचूडे प्रभवति स महाघोरबाणावतंसे ।।

टीका—हे महेश्वरी ! तुम्हारी चूडा में अर्द्धचन्द्र शोभायमान है और दोनों कानों में दो महाभयंकर बाण अलंकार स्वरूप से विराजमान हैं । विषय मत्त पुरुष भी तुम्हारे "हूँ" इस बीज को दूना करके पवित्र, अथवा अपवित्र काल में एक बार जप करने से भी विद्या और धनद्वारा सुरगुरु और कुबेर के परास्त करने में समर्थ हो जाता है । वह अपने सौन्दर्य से सुन्दरी स्त्रियों को भी मोहित कर सकता है, इसमें सन्देह नहीं है ।

ईशौ वैश्वानरस्थः शशधरविलसद्वामनेत्रेण युक्तोबीजं
तेद्वन्द्वमन्यद्विगलितचिकुरे कालिके ये जपन्ति
द्वेष्टारं घ्नन्ति ते च त्रिभुवनमपि ते वश्यभावं नयन्ति
सृक्कद्वन्द्वास्त्रधाराद्वयधरवदने दक्षिणे कालिकेति ।।

टीका—हे मुक्तकेशी ! तुम विश्वसंहर्त्ता काल के संग विहार करती हो, तुम्हारा नाम 'कालिका' है । तुम वामा होकर दक्षिणदिक् स्थित महादेव को पराजय करती हुई स्वयं निर्वाण प्रदान करती हो, इसलिए 'दक्षिणा' नाम से प्रसिद्ध हुई हो, तुमने प्रणवरूपी शिव को अपने माहात्म्य से तिरस्कार किया है । तुम्हारे दोनों होंठों से रक्त की धारा क्षरित होने के कारण तुम्हारा मुखमण्डल परम शोभायमान है । जो तुम्हारे "ह्रीं ह्रीं" इन दोनों बीजों का जप करते हैं,वे शत्रुओं को पराजित कर त्रिभुवन को वशीभूत कर सकते हैं और जो इस मन्त्र को जपते हैं वह शत्रु कुल को अपने वश में कर त्रिभुवन में विचरण कर सकते हैं

ऊर्द्धं वामे कृपाणं करतलकमले छिन्नमुण्डं तथाधः
सव्ये चाभीर्वरञ्च त्रिजगदघहरे दक्षिणे कालिकेति ।
जप्त्वैतन्नामवर्णं तव मनुविभवं भावयन्त्येतदम्ब
तेषामष्टौ करस्थाः प्रकटितवदने सिद्धयस्त्र्यम्बकस्य ।।

टीका—हे जगन्मातः ! तुम तीनों लोकों के पातकियों का पाप हरती हो। तुम्हारे दांतों की पंक्ति महाभयंकर है, तुमने ऊपर के बायें हाथ में खड्ग नीचे के बायें हस्त में छिन्नमुण्ड ऊपर के दाहिने हाथ में अभय और नीचे के दाहिने हाथ में वर धारण किये हो। जो तुम्हारे पत्रक विभवस्वरूप "दक्षिणकालिके" यह मंत्र जपते हैं, तुम्हारे स्वरूप की चिन्ता करते हैं, आणिमादि अष्ट सिद्धि उनको प्राप्त होती है।

वर्गाद्यं वह्निसंस्थं विधुरति ललितं तत्त्रयं कूर्च्चयुग्मं
लज्जाद्वन्द्वञ्च पश्चात्स्मितमुखि तदधष्टद्वयं योजयित्वा।
मातर्ये ये जपन्ति स्मरहरमहिले भावयन्ते स्वरूपं
ते लक्ष्मीलास्यलीलाकमलदलदृशः कामरूपा भवन्ति ॥

टीका—हे स्मरहर की महिले ! तुम्हारा मुखमण्डल मृदु-मधुर हास्य से सुशोभित है, जो मनुष्य तुम्हारे स्वरूप की भावना करके तुम्हारा नवाक्षर मंत्र (क्रींक्रींक्रीं हूँहूँ ह्रींह्रीं स्वाहा) जप करते हैं, वह कामदेव के समान मनोहर सौन्दर्य को प्राप्त होते हैं, उनके नेत्र कमल की लीला पद्मदल के समान लम्बी और रमणीय होती है।

प्रत्येकं वा त्रयंवा द्वयमपि च परं बीजमत्यन्तगुह्यं
त्वन्नाम्ना योजयित्वा सकलमपि सदा भावयन्तो जप-
न्ति। तेषां नेत्रारविन्दे विहरति कमला वक्त्रशुभ्रांशुबिम्बे
वाग्देवी दिव्यमुण्डस्त्रगतिशयलसत्कण्ठपीनस्तनाढ्ये ॥

टीका—हे जगन्मातः ! तुम्हारे उपदेश से ही यह त्रिभुवन अपने कार्य में नियुक्त होता है, इसी कारण तुम 'देवी' नाम से प्रसिद्ध हो। तुम्हारा कण्ठ मुण्डमाला धारण से परम सुशोभित है, तुम्हारा वक्षःस्थल पुष्ट ऊंचे स्तनमण्डल से विराजित है। हे महेश्वरी ! जो तुम्हारा ध्यान करते हुए "दक्षिणेकालिके" इस नाम के पहले और अन्त में पूर्वकथित अतिगुह्य एकाक्षर मंत्र, अथवा यह त्रिगुणित तीन अक्षर

मंत्र वा "ईशो वैश्वानरस्थं" इत्यादि श्लोक कथित द्वयक्षर मंत्र, या "वर्गाद्या" इत्यादि श्लोक में कहे नवाक्षर मंत्र, अथवा गुह्या बाइम अक्षर मंत्र मिलाकर जप करते हैं, उनके कमल नयनों में कमला तथा वाग्देवी मुखचन्द्र में विलास करती है ।

गतासूनां बाहुप्रकरकृतकञ्चीपरिलस——
न्नितम्बां दिग्वस्त्रां त्रिभुवनविधात्रीं त्रिनयनाम्
श्मशानस्थे तल्पे शवहृदि महाकालसुरत——
प्रसक्तां त्वां ध्यायञ्जजननि जडचेता अपि कविः ।।

टीका–हें जननि ! त्रिलोक की सृष्टिकर्त्री त्रिलोचना और दिगम्वरी हो, तुम्हारा नितंब देश बाहुनिर्मित काञ्ची से अलंकृत है । तुम श्मशान में स्थितशिवरूपी महादेव की हृदय शय्या पर महाकाल के सग क्रीडा में रत हो । विषयमत्त मूर्ख व्यक्ति भी तुम्हारा इस प्रकार ध्यान करने से अलौकिक कवित्वशक्ति को प्राप्त करता है ।

शिवाभिर्घोराभिः शवनिवसमुण्डास्थिनिकरैः
परं संकीर्णायां प्रकटितचितायां हरवधूम् ।।
प्रविष्टां सन्तुष्टामुपरि सुरतेनातियुवतीं
सदा त्वां ध्यायन्ति क्वचिदपि न तेषां परिभवः ।।

टीका–हे देवि ! कालिके ! तुम महादेव की प्रियतमा हो, विपरीत बिहार में सन्तुष्ट और नवयुवती हो, जिस स्थान में भयंकर शिवा गण भ्रमण करती हैं । तुम उसी मृतक मुंडों की अस्थियों मे आच्छादित श्मशान मे नृत्य करती हो, तुम्हारी इस प्रकार चिंता करने से पराभव को प्राप्त नहीं होना पडता है ।

वदामस्ते किं वा जननि वयमुच्चैर्जडधियो न धाता
नापीशो हरिरपि न ते वेत्ति परमम् ।।
तथापि त्वद्भक्तिर्मुखरयति चास्माकमसिते
तदेतत्क्षन्तव्यं न खलु शिशुरोषः समुचितः ।।

टीका—हे जननि ! जब महादेव, ब्रह्मा और नारायण भी तुम्हारे परमतत्व नहीं जानते, तब मूढ़मति हम तुम्हारा तत्व किस प्रकार से वर्णन करें ? हम जो इस विषय में प्रवृत्त हुए हैं, तुम्हारे प्रति भजन विषय में हमारे मन की उत्सुकता ही उसका कारण है, अन धिकार विषय में हमारे उद्यम करता देखकर तुमको क्रोध उत्पन्न हो सकता हैं, किन्तु मूर्ख संतान जानकर उसको क्षमा करो ।

समन्तादापीनस्तनजघनधृग्यौवनवती
रतासक्तो नक्तं यदि जपति भक्तस्तवमनुम् ।।
विवासास्त्वां ध्यायन् गलितचिकुरस्तस्य वशगाः
समस्ताः सिद्धौघा भुवि चिरतरं जीवति कविः ।।

टीका—हे शिवे प्रिये ! जो पुरुष नग्न और मुक्तकेश होकर पुष्ट ऊँचे स्तन वाली युवती नारी के सहित क्रीडासुख अनुभवपूर्वक रात्रि में तुम्हारी चिन्ता करते हूए तुम्हारे मंत्र का जप करते हैं, वह कवित्व की शक्तियुक्त होकर बहुत समय तक पृथिवी में रहते हैं और सम्पूर्ण अभीष्ट उनके समीप होता है ।।

समः सुस्थीभूतो जपति विपरीतो यदि सदा।
विचिन्त्य त्वां ध्यायन्नतिशयमहाकालसुरताम् ।।
तदा तस्य क्षौणीतलविहरमाणस्य विदुषः
कराम्भोजे वश्याःस्मरहरवधू सिद्धि निवहाः ।।

टीका—हे हरवल्लभे ! तुम महाकाल के संग विहार सुख का अनुभव करती हो, विपरीत रति में आसक्त हुई जो स्थिर होकर मन से तुम्हारा ध्यान करता है सर्वशास्त्र में पारदर्शी हो जाता हैं सिद्धिसमूह हस्त गत होतों हैं ।

प्रसूते संसारं जननि जगतीं पालयति च
समस्तं क्षित्यादि प्रलयसमये संहरति च ।।

अतस्त्वां धातापि त्रिभुवनपतिः श्रीपतिरपि
महेशोऽपि प्रायः सकलमपि किं स्तौमि भवतीम् ॥

टीका—हे जग माता ! तुम से ही जगत के समस्त पदार्थ की उत्पत्ति हुई है, अतः तुम्हीं सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा हो; तुम्हीं सम्पूर्ण जगत को पालती हो, तुम्हीं नारायण हो, महाप्रलय काल के समय यह जगत् तुमसे ही लय होता है इससे तुम्हीं माहेश्वरी हो; किन्तु स्पष्ट समझा जाता है कि तुम्हारे पति होने के कारण ही महेश्वर प्रलयकाल में लय को प्राप्त नहीं होते ॥

अनेके सेवन्ते भवदधिकगीर्व्वाणनिवहान्
विमूढास्ते मातः किमपि न हि जानन्ति परमम् ॥
समाराध्यामाद्यां हरिहरविरिञ्चादिविबुधैः
प्रसक्तोऽस्मि स्वैरं रतिरसमहानन्दनिरताम् ॥

टीका—हे जगदम्बे ! तुम निरन्तर बिहार के आनन्द में निमग्न रहती हो, तुम्हीं सबकी आदिस्वरूपिणी हो, अनेक मूढ़बुद्धि व्यक्ति अन्यान्य देवताओं की आराधना करते हैं किन्तु वे अवश्य ही तुम्हारे उस अनिर्वचनीय परमतत्व का विषय कुछ नहीं जानते, उनके उपास्य ब्रह्मा, विष्णु, शिव इत्यादि देवता लोग भी सदा तुम्हारी उपासना में निरत बने रहते हैं ।

धरित्री कीलालं शुचिरपि समीरोऽपि गगनं
त्वमेका कल्याणी गिरिशरमणी कालि सकलम् ॥
स्तुतिः का ते मातस्तव करुणया मामगतिकं
प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान्मम जनुः ॥

टीका—हे जननी ! क्षिति, जल, तेज, वायु और आकाश यह पंच भूत भी तुम्हारे ही स्वरूप हैं, तुम्हीं भगवान् महेश्वर की हृदय

रञ्जिनी हो, तुम्हीं इस त्रिभुवन का मंगलविधान करती हो, हे जननि ! इस अवस्था में तुम्हारी क्या स्तुति करूँ ? क्योंकि किसी विलक्षण गुण का आरोप न करके वर्णन करने को स्तुति कहते हैं। तुममें कौन गुण नहीं हैं, जो उसका आरोप करके तुम्हारा स्तवन करूँ ? तुम स्वयं जगन्मयी हो, अतः तुम्हारे संबन्ध में जो वर्णन हो, वह सब तुम्हारे स्वरूपवर्णन पर है; हे कृपामयि ! तुम अपनी दया को प्रकट करके इस निराश्रय सेवक के प्रति संतुष्ट होओ, तो फिर इस सेवक को संसार भूमि में फिर से जन्म लेना नहीं पड़ेगा।

श्मशानस्थस्स्वस्थो गलितचिकुरो दिक्पटधरः
सहस्रन्त्वर्काणां निजगलितवीर्य्येण कुसुमम् ।।
जपंस्त्वत्प्रत्येकममुमपि तव ध्याननिरतो
महाकालि स्वैरं स भवति धरित्रीपरिवृढः ।।

टीका—हे महाकालिके ! जो मनुष्य श्मशान भूमि में वस्त्रहीन और बाल खोलकर यथाविधि आसन पर बैठकर स्थिर मन से तुम्हारे स्वरूप का ध्यान करते करते तुम्हारे मंत्र को जपता है और अपने निकले वीर्यसयुक्त सहस्त्र आक के फूलों को एक एक करके तुम्हारे उद्देश्य से अर्पण करता है, वह सम्पूर्ण धरती का अधीश्वर होता है।

गृहे सम्मार्ज्जन्या परिगलितवीर्य्यं हि चिकुरं
समूलं मध्याह्ने वितरित चितायां कुजदिने ।।
समुच्चार्य्य प्रेम्णा जपमनु सकृत कालि सततं
गजारूढो यालि क्षितिपरिवृढः सत्कविवरः ।।

टीका—हे देवी ! जो मंगलवार के दिन मध्याह्नकाल के समय कघी द्वारा शृंगार किये गृहिणी के समूल केश लेकर पूर्व कथित तुम्हारे जिस किसी एक मंत्र का जप करता हुआ भक्ति सहित चिताग्नि में अर्पण करता है, वह धरा का अधीश्वर होकर निरन्तर हाथी पर चढ़

कर विचरण करता है और व्यास कवि कुल की प्रधानता को प्राप्त करता है।

सुपुष्पैराकीर्णं कुसुमधनुषो मन्दिर महो
पुरो ध्यायन् ध्यायन् यदि जपति भक्तस्त्तवममुम् ॥
स गन्धर्व्वश्रेणीपतिरिव कवित्वामृत नदी–
नदीनः पर्य्यन्ते परमपदलीनः प्रभवति ॥

टीका–हे जगन्माता ! साधक यदि स्वयं फूलों से रंजित काम गृह को अभिमुख करके मंत्रार्थ के सहित तुम्हारा ध्यान करते हुए पूर्व कथित किसी एक मंत्र का जप करे, तो वह कवित्व रूपी नदी के संबन्ध में समुद्रस्वरूप होता है, और महेन्द्र की समानता प्राप्त करता है। वह शरीरांत के समय तुम्हारे चरण कमलों में लीन होकर जो स्वरूप मुक्ति को प्राप्त हैं, इसमें कोई विचित्रता नहीं है।

त्रिपञ्जारे पीठे शवशिवहृदि स्मेरवदनां
महाकालेनोच्चैर्मदनरसलावण्यनिरताम् ॥
महासक्तो नक्तं स्वयमपि रतानन्दनिरतो
जनो यो ध्यायेत्त्वामयि जननि स स्यात्स्मरहरः ॥

टीका–हे जगन्माता ! तुम्हारे मुख मण्डल पर मृदुहास्य विराजमान है, तुम सदा शिव के संग विहार सुख का अनुभव करती हो, जो साधक रात्रि में अपना विहार सुख अनुभव करता हुआ शव हृदयरूप आसन पर पांच दशकोण युक्त तुम्हारे यंत्र में तुम्हारी पूर्वोक्त प्रकार से चिन्तन करता है, वह शीघ्र ही शिवत्व लाभ करता है।

सलोमास्थि स्वैरं पललमपि मार्ज्जारमसिते
परञ्चौष्ट्रं मैषं नरमहिषयोश्छागमपि वा ॥
बलिन्ते पूजायामपि वितरतां मर्त्यवसतां
सतां सिद्धिः सर्व्वा प्रतिपदमपूर्व्वा प्रभवति ॥

टीका—हे जननी पृथ्वी वासी साधकगण यदि तुम्हारी पूजा में बिल्ली का मांस, ऊँट का मांस, नरमांस, महिषमास अथवा छाग मांस को रोम युक्त और अस्थियों के सहित अर्पण करें, तो उनके चरणकमल में आश्चर्यजनक विषय सिद्ध होते हैं।

वशा लक्षं मन्त्रं प्रजपति हविष्याशनरतो
दिवा मातर्युष्मच्चरणयुगलध्याननिपुणः ॥
परं नक्तं नग्नो निधुवनविनोदेन च मनुं
जनो लक्षं स स्यात्स्मरहर समानः क्षितितले ॥

टीका—हे जगन्माता ! जो इन्द्रियों को अपने वश में रखकर हविष्य भोजन पूर्वक प्रातःकाल से दिन के दूसरे पहर तक तुम्हारे दोनों चरणों में चित्त लगाकर जप करते हैं और पशुभावानुसार एक लक्ष्य जपरूप पुरश्चरण करते हैं, अथवा जो साधक रात्रिकाल में नग्न और विहार परायण होकर वीर साधनानुसार एकलक्ष जपरूप पुरश्चरण करते हैं, यह दोनों प्रकार के साधक पृथ्वी तल में स्मरहर शिव की भाँति सुशोभित होते हैं।

इदं स्तोत्रं मातस्तवमनुसमुद्धारणजपः
स्वरूपाख्य पादाम्बुजयुगलपूजाविधियुतम् ॥
निशार्द्धं वा पूजासमयमधि वा यस्तु पठति
प्रलापे तस्यापि प्रसरति कवित्वामृतरसः ॥

टीका—हे जननी ! मेरे किये इस स्तव में तुम्हारे मंत्र का उद्धार और तुम्हारे स्वरूप का वर्णन हुआ है, तुम्हारे चरणकमल की पूजाविधि का भी इसमें उल्लेख किया है। जो साधक निशाद्विप्रहर काल में अथवा पूजाकाल में इस स्तव का पाठ करता है, उसकी निरर्थक वाणी भी प्रबन्ध रूप में परिणत होकर कवित्व रूप सुधारस प्रवाहित करती है।

कुरंगाक्षीवृन्दं तमनुसरति प्रेमतरलं
वशस्तस्य क्षोणीपतिरपि कुबेरप्रतिनिधिः ॥
रिपुः कारागारं कलयति च तत्केलिकलया
चिरं जीवन्मुक्तः स भवति च भक्तः प्रतिजनुः ॥

टीका—मृग नयनी (मृग के समान नेत्रोंवाली) स्त्रियाँ इस स्तव पढ़नेवाले साधक को प्रियतम जानकर उसकी अनुगामिनी होती हैं। कुबेर के समान राजा भी उसके वश में रहते हैं और उस साधक के शत्रु गण कारागार में बन्द होते हैं। वह साधक जन्म जन्म में जगदम्बा का भक्त होता है। और सर्वकाल महा आनन्द से बिहार करके शरीरान्त में मोक्ष प्राप्त करता है।

इति श्रीमहाकालविरचितं पंडित रामेश्वर त्रिपाठी, निर्भय कृत, भाषा टीका सहितं श्रीमद्दक्षिणकालिकायाः स्वरूपस्तोत्रम्।

———:०:———

॥ कालीकवचम् ॥

अब काली देवी के कवच को मूल संस्कृत में निम्न दिया जा रहा है और उसका हिन्दी में अर्थ भी दिया है साधक को चाहिए कि पाठ करते समय मूल श्लोक संस्कृत का ही पाठमेंप्रयोग करें ।

भैरव्युवाच ।

कालीपूजा श्रुता नाथ भावाश्च विविधः प्रभो ।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्व सूचितम् ॥
त्वमेव शरणं नाथ त्राहि मां दुःखसङ्कटात् ।
त्वमेव स्रष्टा पाता च संहर्ता च त्वमेव हि ॥

टीका—भैरवी ने कहा हे नाथ ! हे प्राण वल्लभ, प्रभो ! मैंने कालीपूजा और उसके विविध भाव सुने, अब पूर्व सूचित कवच सुनने की इच्छा हुई है, उसको वर्णन करके मेरी दुःख संकट से रक्षा कीजिये आपही रचना कर रक्षा करते और संहार करते हो, हे नाथ ! आपही मेरे आश्रय हो ।

भैरव उवाच ।

रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे ।
श्रीजगन्मंगलं नाम कवचं मंत्रविग्रहम् ।
पठित्वा धारयित्वा च त्रैलोक्यं मोहयेत् क्षणात् ॥

टीका—भैरव नें कहा ! हे प्राण बल्लभे ! 'श्री जगन्मगलनामक' कवच को कहता हूँ। सुनो, इसके पाठ अयवा धारण करन स प्राणी तीनों लोकों को मोहित कर सकता है ।

नारायणोऽपि यध्दृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम् ।
योगेशं क्षोभमनयद्यध्दृत्वा च रघूद्वहः ।
वरदृप्तान् जघानैव रावणादिनिशाचरान् ॥

टीका—नारायण ने इस कवच को धारण करके नारी रुप से योगेश्वर शिव को मोहित किया था। श्रीरामचन्द्र ने इसको धारण करके वर-दृप्त रावणादि राक्षसों का संहार किया था।

यस्य प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्यविजयी प्रभुः।
धनाधिपः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छचीपतिः।
एवं हि सकला देवाःसर्व्वसिद्धीश्वराः प्रिये॥

टीका—हे प्रिये! इस कवच के प्रभाव से मैं त्रैलोक्य विजयी हुआ, कुबेर इसके प्रसाद से धनाधिप, शचीपति सुरेश्वर और सम्पूर्ण देवतागण सर्वसिद्धीश्वर हुए हैं।

श्रीजगन्मङ्गलस्यास्य कवचस्य ऋषि शिवः।
छन्दोऽनुष्टुब्देवता च कालिका दक्षिणेरिता॥
जगतां मोहने दुष्ट निग्रहे भुक्तिमुक्तिषु।
योषिदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्त्तितः॥

टीका—इस कवच के ऋषि शिव, छन्द अनुष्टुप् देवता दक्षिणकालिका और मोहन दुष्टनिग्रह भुक्ति मुक्ति और योषिदाकर्षण में विनियोग हैं।

शिरो में कालिका पातु क्रीङ्कारैकाक्षरी परा।
क्रीं क्रीं क्रीं मेललाटञ्च कालिका खड्ग धारिणी॥
हुँ हुँ पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुती मम।
दक्षिणा कालिका पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी॥
क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हुं हुं पातु कपोलकम्।
वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी॥

टीका—कालिका और क्रीङ्कारा मेरे मस्तक की क्रीं क्रीं क्रीं और खड्गधारिणी कालिका ललाट की, हुँ हुँ दोनों नेत्रों की, ह्रीं ह्रीं कर्ण

की, दक्षिणा कालिका दोनों घ्राण की, क्रीं क्रीं क्रीं रसना की, हुँ हुँ कपोलदेश की और ह्रीं ह्रीं स्वाहास्वरूपिणी संपूर्ण वदन की रक्षा करें।

द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्या सुखप्रदा।
खड्गमुण्डधरा काली सर्वाङ्गमभितोऽवतु ॥
क्रीं हुं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम।
ऐंहुंओंऐं स्तनद्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम् ॥
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका।
क्रीं क्रीं हुं हुं ह्रीं ह्रीं करौ पातु षडक्षरी मम ॥

टीका—बाईस अक्षर की विद्यारूप सुखदायिनी महाविद्या दोनों स्कन्धों की, खड्गमुण्डधरा काली सर्वाङ्ग की, क्रीं हुँ ह्रीं चामुण्डा हृदय की, ऐं हुँ ओ ऐं दोनों स्तनों की, ह्रीं फट् स्वाहा कन्धों की, अष्टौक्षरी महाविद्या दोनों भुजाओं की और क्रीं इत्यादि षडक्षरींविद्या दोनों हाथों की रक्षा करें ॥

क्रीं नाभिं मध्यदेशञ्च दक्षिणा कालिकाऽवतु।
क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठन्तु कालिका सा दशाक्षरी ॥
ह्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके हुँ ह्रीं पातु कटीद्वयम्।
काली दशाक्षरी विद्या स्वाहा पातूरुयुग्मकम्।
ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु कालिका जानुनी मम ॥
कालीहृन्नामविद्येयं चतुर्वर्गफलप्रदा।

टीका—क्रीं नाभिदेश की, दक्षिणा कालिका मध्यदेश की, क्रीं स्वाहा और दशाक्षर मन्त्र पीठ की, ह्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके ह्रीं ह्रीं कटि, दशाक्षरीविद्या उरु की और ॐ ह्रीं क्रीं स्वाहा जानुदेश की रक्षा करें। यह विद्या चतुर्वगफल दायिनी है।

क्रीं ह्रीं ह्रीं पातु गुल्फं दक्षिणे कालिकेऽवतु।
क्रीं हूँ ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरी मम ॥

टीका—क्रीं ह्रीं ह्रीं गुल्फ़ की एवं क्रीं हूँ ह्रीं स्वाहा और चतुर्दशाक्षरी विद्या मेरे पाँवों की रक्षा करें।

खड्गमुण्डधरा काली वरदा भयवारिणी।
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वाङ्गमभितोऽवतु ॥

टीका—खड्ग मुण्डधरा वरदा भयहारिणी काली सब विद्याओं के सहित मेरे सर्वांग की रक्षा करो ॥

काली कपालिनी कुल्वा कुरुकुल्ला विरोधिनी।
विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दिप्ता घनत्विषः ॥
नीला घना बालिका च माता मुद्रामिता च माम्।
एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमालाविभूषिताः ॥
रक्षन्तु मां दिक्षु देवी ब्राह्मी नारायणी तथा।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चापराजिता ॥
वाराही नारसिंही च सर्वाश्चामितभूषणाः।
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु मां विदिक्षु यथा तथा ॥

टीका—काली कपालिनी कुल्वा कुरु कुल्ला, विरोधिनी विप्रचिता, उग्रोग्र प्रभा, दीपा, धनत्विषा, नीला घना, बालिका माता, मुद्रामिता ये सब खड्गधारिणी मुण्डमाला धारिणी देवी हमारी दिशाओं की रक्षा करें। ब्राह्मी, नारायणी, माहेश्वरी, चामुण्डा, कौमारी, अपराजिता, वाराही तथा नारसिंही ये सब असंख्य आभूषणों को धारण करने वाली अपने आयुधों सहित मेरी दिशा, विदिशाओं में रक्षा करें।

इत्येवं कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम्।
श्री जगन्मंगलं नाम महामन्त्रौघविग्रहम् ॥
त्रैलोक्याकर्षणं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम्।
गुरुपूजां विधायाथ गृह्णीयात् कवचं ततः।
कवचं त्रिःसकृद्वापि यावज्जीवञ्च वा पुनः ॥

टीका—यह कवच 'जगन्मंगलनामक' महामंत्र स्वरूप परम अद्भुत कवच कहा गया है। इसके द्वारा त्रिभुवन आकर्षित होता है। गुरु की पूजा करने के उपरान्त कवच को ग्रहण करना चाहिये। इसका यावज्जीवन दिन में एक या तीन बार पाठ करना चाहिये।

एतच्छतार्द्ध मावृत्य त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥
त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव कवचस्य प्रसादतः ॥
महाकविर्भवेन्मासात्सर्व सिद्धीश्वरो भवेत् ॥

टीका—इस कवच की पचास आवृत्ति करने से पुरुष त्रैलोक्य विजयी हो सकता है, इस कवच के प्रताप से त्रिभुवन क्षोभित होता है, इस कवच के पाठ करने से एक मास में सभी सिद्धियों का स्वामी हो सकता है।

पुष्पाञ्जलीन् कालिकायै मूलेनैव पठेत् सकृत्।
शतवर्षसहस्त्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥

टीका—मूल मंत्र द्वारा कालिका को पुष्पाञ्जलि देकर एक बार मात्र इस कवच का पाठ करने से शतसहस्त्रवार्षिकी पूजा का फल प्राप्त होता है।

भूर्जे विलिखितश्चैव स्वर्णस्थं धारयेद्यदि।
शिखायां दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा धारयेद्यदि ॥
त्रैलोक्यं मोहयेत् क्रोधात् त्रैलोक्यं चूर्णयेत्क्षणात्।
बह्वपत्या जीववत्सा भवत्येव न संशयः ॥

टीका—इस कवच को भोजपत्र अथवा स्वर्ण पत्र पर लिखकर शिर, मस्तक या दक्षिण-हस्त या कंठ में धारण करने से अपने क्रोध से त्रिभुवन को मोहित वा चूर्ण करने में समर्थ होता है और जो स्त्री इस कवच को धारण करती है वह बहुत सन्तान वाली और जीववत्सा होती है, इसमें सन्देह नहीं।

न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः ।
शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यश्चान्यथा मृत्युमाप्नुयात् ।।
स्पर्द्धामुद्धूय कमला वाग्देवी मन्दिरे मुखे ।
पौत्रान्तस्थैर्य्यमास्थाय निवसत्येव निश्चितम् ।।

टीका—इस कवच को अभक्त अथवा परशिष्य को नहीं देना चाहिए, भक्तियुक्त अपने शिष्य को दे । इसके विपरीत करने से मृत्यु के मुख में गिरना होता है । इस कवच के प्रभाव से कमला (लक्ष्मी) निश्चल होकर साधक के घर में और वाग्देवी मुख में निवास करती है ।

इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेत्कालिदक्षिणाम् ।
शतलक्षं प्रजप्यापि तस्य विद्या न सिध्यति ।
स शस्त्रघातमाप्नोति सोऽचिरान्मृत्युमाप्नुयात् ।।

टीका—इस कवच को जाने बिना जो पुरुष काली मन्त्र का जप करता है, सो लाख जपने से भी उसको सिद्धि प्राप्त नहीं होती, और वह पुरुष शीघ्र ही शस्त्राघात से प्राण त्याग करता है ।

तारासाधन

अब तारा साधन के मन्त्र, ध्यान, जप, यंत्र, स्तव, होम, तथा, कवच आदि का वर्णन किया जाता है ।

तारामंत्र

(१) ह्रीं स्त्रीं हूँ फट् (२) ओम् ह्रीं स्त्रीं हूँ फट् (३) श्रीं ह्रीं स्त्रीं हूं फट् ।

तीन प्रकार के मंत्र कहे गये हैं, इसमें चाहे जिस किसी मंत्र से उपासना करें ।

ताराध्यान

तारा ध्यान की विधि मूल संस्कृत में दी जा रही है और फिर उसका भाषा में अर्थ भी लिखा है । साधकों को ध्यान करते समय (मूलमंत्र) संस्कृत का ही उपयोग करना चाहिए ।

प्रत्यालीढपदां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम् ।
खर्वां लम्बोदरीं भीमां व्याघ्रचर्म्मावृतां कटौ ।।
नवयौवनसम्पन्नां पञ्चमुद्राविभूषिताम् ।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां महाभीमां वरप्रदाम् ।।
खड्गकर्तृसमायुक्तसव्येतरभुजद्वयाम् ।
कपोलोत्पलसंयुक्तसव्यपाणियुगान्विताम् ।
पिङ्गाग्रैकजटां ध्यायेन्मौलावक्षोभ्यभूषिताम् ।
बालार्कमण्डलाकारलोचनत्रयभूषिताम् ।
ज्वलच्चितामध्यगतां घोरदंष्ट्राकरालिनीम् ।
स्वावेशस्मेरवदनां ह्यलंकारविभूषिताम् ।
विश्वव्यापकतोयान्तः श्वेतपद्मोपरि स्थिताम् ।।

टीका—तारा देवी एक पद (पाँव) आगे किए हुए वीरपद से विराजमान हैं और वे घोररूपिणी, मुण्डमाला से विभूषित सर्वा. लम्बोदरी, भीमा, व्याघ्र चर्म पहिरने वाली नवयुवती, पञ्चमुद्रा विभूषित, चतुर्भुज चलायमान जिह्वा महाभीमा एवम् वरदायिनी है। इनके दक्षिण दाहिने दोनों हाथों में खड्ग और कैंची तथा वाम (बायें) दोनों हाथों में कपाल और उत्पल विद्यमान है। इनकी जटायें पिंगल वर्ण, मस्तक में क्षोभरहित शोभित और तीनों नेत्र तरुण-अरुण के समान रक्तवर्ण हैं। यह जलती हुई चिता में स्थित, घोरदंष्ट्रा, कराला स्वीय आवेश में हास्यमुखी, सब प्रकार के अलंकारों से अलंकृत (विभूषित) और विश्वव्यापिनी जल के भीतर श्वेतपद्म पर स्थिर हैं (नीलतत्व से)

तारायन्त्र

सुवर्णादिपीठे गोरोचनाकुंकुमादिलिप्ते ।
"ओं आः सुरेखे वज्रुरेखे ओंफट् स्वाहा"

इति मन्त्रेणाधोमुखत्रिकोणगर्भाष्टदलपद्मं वृत्तं चतुरस्त्रं चतुर्द्वारयुक्तयंत्रमुद्धरेत् ॥

टीका—स्वर्णादिपीढ़ों (चौकी) पर गोरोचना वा कुंकुमादि से लेप करके "ॐ आ: सुरेखे" इत्यादि मंत्र से अधोमुख त्रिकोण में अष्टदल पद्म (कमल बनावे), उसके बाहर गोलाकार चौकोर और चतुर्द्वार-समन्वित यंत्र खींचे । यह मंत्र हैं, "ॐ ऐं ह्रीं क्रीं हुँ फट्" ।

तारामंत्र का जप, होम

लक्षद्वयं जपेद्विद्यां हविष्याशी जितेन्द्रियः ।
पलाशकुसुमैर्देवीं जुहुयात्तद्दशांशतः ॥

टीका—हविष्याशी और जितेन्द्रिय होकर यह मंत्र दो लक्ष जपकर पलाश पुष्प द्वारा उसका दशांश होम करना चाहिए ।

तारा-स्तोत्र (तारास्तव)

तारा च तारिणी देवी नागमुण्डविभूषिता ॥
ललज्जिह्वा नीलवर्णा ब्रह्मरूपधरा तथा ॥
नागाञ्चितकटी देवी नीलाम्बरधरा परा ।
नामाष्टक मिदं स्तोत्रं यः पठेत् शृणुयादपि ।
तस्य सर्व्वार्थसिद्धिः स्यात् सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥

टीका—(१) तारा, (२) तारिणी, (३) नागमुण्डों से विभूषित, (४) चलायमान जिह्वा, (५) नील वर्ण वाली, (६) ब्रह्मरूप धारिणी, (७) नागों से अंचित कटी और (८) वीं निलाम्बरा, यह अष्टनामात्मक ताराष्टक स्तोत्र का पाठ अथवा श्रवण करने से सर्वार्थसिद्धि होती है । भैरव जी कहते है—हे महेश्वरी ! यह बिल्कुल सत्य है ।

तारा-कवच

भैरव उवाच

दिव्यं हि कवचं देवि तारायाः सर्व्वकामदम् ।
शृणुष्व परमं तत्तु तव स्नेहात् प्रकाशितम् ।।

टीका—भैरव ने कहा हे देवी ! तारा देवी का दिव्य कवच सर्वकाम प्रदऔरश्रेष्ठ है ।तुम्हारे प्रति स्नेह के कारण ही कहता हूँ सुनो।

अक्षोभ्य ऋषिरित्यस्य छन्दस्त्रिष्टुबुदात्दृतम् ।
तारा भगवती देवी मंत्रसिद्धौ प्रकीर्त्तितम् ।।

इस कवच के ऋषि अक्षोभ्य हैं, छंद त्रिष्टुप् है देवता भगवती तारा हैं और मंत्र सिद्धियों में इसका विनियोग है ।

ओंकारो में शिरः पातु ब्रह्मरूपा महेश्वरी ।
ह्रीङ्कारः पातु ललाटे बीजरूपा महेश्वरी ।।
स्त्रीङ्कारः पातु वदने लज्जारूपा महेश्वरी ।
हुङ्कारः पातु हृदये तारिणी शक्तिरूपधृक् ।।

टीका—ॐ ब्रह्मरूपा महेश्वरी मेरे मस्तक की, ह्रीं बीजरूपा महेश्वरी मेरे ललाट की, स्त्री लज्जारूपा महेश्वरी मेरे मुख की और हुँ शक्तिरूपधारिणी तारिणी मेरे हृदय की रक्षा करें ।

फट्कारः पातु सर्व्वांगे सर्वसिद्धि फलप्रदा ।
खर्वा मां पातु देवेशी गण्डयुग्मे भयापहा ।।
लम्बोदरी सदा स्कन्धयुग्मे पातु महेश्वरी ।
व्याघ्र चर्मावृता कटिं पातु देवी शिवप्रिया ।।

टीका—फट् सर्वसिद्धि फलप्रदा सर्वांगस्वरूपिणी भयनाशिनी खर्वा देवी कपोलों की, महेश्वरी लम्बोदरी देवी दोनों कन्धो की और व्याघ्रचर्मावृता शिवप्रिया मेरी कटि (कमर) की रक्षा करें ।

पीनोन्नतस्तनी पातु पार्श्वयुग्मे महेश्वरी ।
रक्तवर्त्तुलनेत्रा च कटिदेशे सदावतु ॥
ललज्जिह्वा सदा पातु नाभौ मां भुवनेश्वरी ।
करालास्या सदा पातु लिङ्गेर्देवी हरप्रिया ॥

टीका—पीनोन्नतस्तनी महेश्वरी दोनों पार्श्व की, रक्तगोलनेत्र वाली कटि की, ललजिह्वा, भुवनेश्वरी नाभि की और करालवदना हरप्रिया मेरे लिंगस्थान की सदैव रक्षा करें ।

विवादे कलहे चैव अग्नौ च रणमध्यतः ।
सर्व्वदा पातु मां देवी झिण्टीरूपा वृकोदरी ॥

झिन्टीरूपा वृकोदरी देवी विवाद में कलह में अग्नि मध्य में तथा रणमध्य में सदैव मेरी रक्षा करें ।

सर्व्वदा पातु मां देवी स्वर्गे मर्त्ये रसातले ।
सर्व्वास्त्रभूषिता देवी सर्व्वदेवप्रपूजिता ॥
क्रीं क्रीं हुं हुं फट् २ पाहि पाहि समन्ततः ॥

टीका—सब देवताओं से पूजित समस्त अस्त्रों से विभूषित देवी मेरी स्वर्ग, मर्त्य और रसातल में रक्षा करें । "क्रीं क्रीं हुँ हुँ फट् फट्" यह क्रीं बीजमंत्र मेरी सब ओर से रक्षा करे ।

कराला घोरदशना भीमनेत्रा वृकोदरी ।
अट्टहासा महाभागा विघूर्णितत्रिलोचना ॥
लम्बोदरी जगद्धात्री डाकिनी योगिनीयुता ।
लज्जारूपा योनिरूपा विकटा देवपूजिता ॥
पातु मां चण्डी मातंगी ह्युग्रचण्डा महेश्वरी ॥

टीका—महाकराल घोर दाँतोंवाली भयंकर नेत्रों और बृकोदरी (भेड़िये के समान उदर वाली) जोर से हँसने वाली, महाभाग वाली,

घूर्णित तीन नेत्र वाली, लम्बायमान उदरवाली, जगत् की माता डाकिनी योगिनियों से युक्त, लज्जारूप, योनिरूप, विकट तथा देवताओं से पूजित, उग्रचण्डा महेश्वरी मातंगी मेरी रक्षा करें ।

जले स्थले चान्तरिक्षे तथा च शत्रुमध्यतः ।
सर्व्वतः पातु मां देवी खड्गहस्ता जयप्रदा ।।

टीका—खड्ग धारिणी, जय देनेवाली देवी मेरी जल में, स्थल में, शून्य में; शत्रुओंके मध्यमें और अन्यान्य सभी स्थानों में रक्षा करें

कवचं प्रपठेद्यस्तु धारयेच्छृणुयादपि ।
न विद्यते भयं तस्य त्रिषु लोकेषु पार्व्वति ।

टीका—जो व्यक्ति (साधक) इस कवच को पढ़ते हैं, धारण करते हैं अथवा सुनते हैं, हे पार्वती ! उन्हें तीनों लोकों में कहीं भी भय नहीं रहता है ।

इति श्रीभाषाटीकासहितं ताराकवचं संपूर्णम् ।

महाविद्या साधन

अब महाविद्या साधन के मंत्र, ध्यान, यंत्र, जप, होम, स्तव एव कवच आदि का वर्णन किया जाता हैं ।

महाविद्या-मंत्र

हुँ श्रीं ह्लीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं ।

टीका—इस मंत्र से महाविद्या की पूजा तथा जप आदि सब कार्य करे । भुवनेश्वरी-यंत्र में ही पूजा होती है । जप और होम का नियम भी इसी प्रकार है ।

महाविद्या-ध्यान

महाविद्याध्यान की विधि मूल श्लोक संस्कृत में निम्नलिखित है साधक को ध्यान करते समय मूल श्लोक का ही प्रयोग करना चाहिये । इसकी हिन्दी में टीका भी कर दी गई है ।

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम् ।
महाभीमां करालास्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम् ।।
मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम् ।
एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये ।।

टीका—महाविद्या देवी चतुर्भुजाओं वाली, सर्प का यज्ञोपवीत धारण करने वाली, महाभीमा, करालवदना, सिद्ध और विद्याधरों से युक्त, मुण्डमाला से अलंकृत, बिखरे हुए केशोंवाली और हास्यमुखी हैं। सर्वकाम अर्थ की सिद्धि देनेवाली देवी का इस प्रकार ध्यान करना चाहिये।

महाविद्या-स्तोत्र (स्तव)

श्रीशिव उवाच

दुर्ल्लभं तारिणीमार्गं दुर्ल्लभं तारिणीपदम् ।
मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं दुर्ल्लभं शवसाधनम् ।।
श्मशानसाधनं योनिसाधनं ब्रह्मसाधनम् ।
क्रियासाधनकं भक्तिसाधनं मुक्तिसाधनम् ।।
तव प्रसादाद्देवेशि सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः ।।

टीका—श्रीशिवजी ने कहा—तारिणी की उपासना का मार्ग अत्यन्त ही दुर्लभ है, इसी प्रकार उनके पद की प्राप्ति भी दुर्लभ है। मंत्रार्थ ज्ञान, मंत्रचैतन्य, शव साधन, श्मशानसाधन, योनिसाधन, ब्रह्मसाधन, क्रियासाधन, भक्तिसाधन और मुक्तिसाधन, यह सब भी दुर्लभ हैं। किन्तु हे देवेशि ! तुम जिसके ऊपर प्रसन्न होती हो, उसको सब विषय में सिद्धि प्राप्त होती है।

नमस्ते चण्डिके चण्डि चण्डमुण्डविनाशिनि ।
नमस्ते कालिके कालमहाभयविनाशिनि ।।

टीका–हे चण्डिके ! तुम प्रचण्डस्वरूपिणी हो । तुमने ही चण्ड-मुण्ड का वध किया । तुम्हीं काल के भय को नाश (नष्ट) करनेवाली हो । हे कालिके तुमको नमस्कार है ।

शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरवल्लभे ।
प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम् ।।
जगत्क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम् ।
करालां विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम् ।।
हरार्च्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम् ।
गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालंकारभूषिताम् ।।
हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम् ।।

टीका–हे शिवे ! जगद्धात्रि हरवल्लभे ! मेरी संसार के भय से-रक्षा करो तुम्हीं जगत् की माता और तुम्हीं अनन्त जगत् की रक्षा करती हो । तुम्हीं जगत् का संहार करने वाली और तुम्हीं उत्पन्न करने वाली हो । तुम्हारी मूर्ति महाभयंकर है, तुम मुण्डमाला से अलंकृत हो, कराल और विकटाकार हो । तुम्हीं हर से सेवित, हर से पूजित और हरप्रिया हो । तुम्हारा गौर वर्ण है, तुम्हीं गुरुप्रिया और श्वेत विभूषणों से अलंकृत हो, तुम्हीं विष्णु प्रिया और महामाया हो, ब्रह्माजी तुम्हारी पूजा करते हैं । तुमको नमस्कार है ।

सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम् ।
मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिंगशोभिताम् ।।
प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ।

टीका–तुम्हीं सिद्धा और सिद्धेश्वरी हो । तुम्हीं सिद्ध तथा विद्याधरों से वेष्टित, मंत्रसिद्धि-दायिनी, योनिसिद्धि देनेवाली, लिंग शोभिता, महामाया, दुर्गा और दुर्गति नाशिनी हो। तुम्हें नमस्कार है ।

५

उग्रामुग्रमयीमुग्रतारामुग्रगणैर्युताम् ।
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम् ।।

टीका—तुम्हीं उग्रमूर्ति, उग्रगणों से युक्त, उग्रतारा, नीलमूर्ति, नील मेघ के समान श्यामवर्ण तथा नीलसुन्दरी हो। तुमको नमस्कार है।

श्यामांगीं श्यामघटितांश्यामवर्णविभूषिताम् ।
प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्व्वार्थसाधिनीम् ।।

टीका—तुम्हीं श्यामलांगी, श्यामवर्ण से विभूषित, जगद्धात्री, सब कार्यों की साधन करने वाली और गौरी हो। तुमको नमस्कार है।

विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम् ।
आद्यामाद्यगुरोराद्यामाद्यनाथप्रपूजिताम् ।।
श्रीदुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम् ।
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम् ।।

टीका—तुम्हीं विश्वेश्वरी, महाभीमाकार (घोराकार), विकटमूर्ति हो, तुम्हारा शब्द महाभयंकर है, तुम्हीं सबकी आद्या, आदि गुरु महेश्वर की भी आदिमा हो, आद्यनाथ महादेव सदा तुम्हारी पूजा करते हैं, तुम्हीं धन देनेवाली अन्नपूर्णा सौर पद्मास्वरूपिणी हो, तुम्हीं देवताओं की ईश्वरी (स्वामिनी) जगत् की माता, हरवल्लभा हो। तुमको नमस्कार है।

त्रिपुरासुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम् ।
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम् ।।
सुन्दरीं तारिणीं सर्व्वशिवागणविभूषिताम् ।
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम् ।।

टीका—हे देवि ! तुम्हीं त्रिपुरासुन्दरी, बाला, अबलागणों से विभूषित शिवदूती, शिव की आराध्या, शिव से ध्यान की हुई,

सनातनी, सुन्दरी, तारिणी, शिवागणों से अलंकृत, नारायणी, विष्णु से पूजनीय और ब्रह्मा विष्णु तथा हर की प्रिया हो ।

सर्वासिद्धिप्रदां नित्यामनित्यगुणवर्जिताम् ।
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्च्चितां सर्व्वसिद्धिदाम् ।।
दिव्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम् ।
महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम् ।।
प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्द्दिनीम् ।।

टीका—तुम्हीं सब सिद्धियो की दात्री, नित्या, अनित्य गुणों से रहित, सगुणा, निर्गुणा, ध्यान के योग्य, अर्चिता (पूजिता), सर्व सिद्धि की देनेवाली, दिव्या, सिद्धिदाता, विद्या, महाविद्या, महेश्वरी, महेश की भक्तिवाली, माहेशी, महाकाल से पूजित, जगद्धात्री और शुंभासुर का मर्दन करने वाली हो । तुमको नमस्कार है ।

रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्द्दिनीम् ।
भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वरीम् ।।
चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम् ।
त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम् ।।
अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम् ।
कमलां छिन्नभालाञ्च मातंगीं सुरसुन्दरीम् ।।
षोडशीं विजयां भीमां धूम्राञ्च बगलामुखीम् ।
सर्व्वसिद्धिप्रदां सर्व्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम् ।
प्रणमामि जगत्तारां साराञ्च मन्त्रसिद्धये ।।

टीका—तुम रक्त से प्रेम करने वाली, रक्तवर्ण, रक्तबीज का विनाश करने वाली, भैरवी, भुवना देवी, चलायमान जीभवाली, सुरेश्वरी, चतुर्भुजा, कभी दशभुजा कभी अठारह भुजा, तिपुरेशी विश्वनाथ की प्रिया, ब्रह्मांड की ईश्वरी, कल्याणमयी, अट्टहास से

युक्त. ऊँचे हास्य से प्रीति करनेवाली, धूम्रासुर विनाशिनी, कमला, छिन्नमस्ता, मातंगी सुर-सुंदरी, षोडशी, विजया, भीमा, धूम्रा, बगलामुखी, सर्वसिद्धिदायिनी, सर्वविद्या और सब मंत्रों का शोधन करनेवाली हो, सारभूत और जगत्तारिणी हो मैं मन्त्रसिद्धि के लिये तुमको नमस्कार करता हूँ ।

इत्येवञ्च वरारोहे स्तोत्रं सिद्धिकरं परम् ।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि ॥

टीका—हे वरारोहे ! यह स्तव परमसिद्धि देनेवाला है इसका पाठ करने से अवश्य ही मोक्ष प्राप्त होता है ।

कुजवारे चतुर्दश्याममायां जीववासरे ।
शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात् ।
त्रिपक्षे मन्त्रसिद्धिः स्यात्स्तोत्रपाठाद्धि शंकरि ॥

टीका—मङ्गलवार चतुर्दशी तिथि में, बृहस्पतिवार अमावस्या तिथि में तथा शुक्रवार को रात्रि काल में यह स्तुति पढ़ने से मोक्ष प्राप्त होता है । हे शंकरि ! तीन पक्ष तक इस स्तव के पढ़ने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं ।

चतुर्दश्यां निशाभागे शनिभौमदिने तथा ।
निशामुखे पठेत्स्तोत्रं मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात् ॥

टीका—चौदश की रात हो तथा शनि और मंगलवार में संध्या के समय इस स्तव का विधिपूर्वक पाठ करनेसे मंत्रसिद्धि होती है ।

केवलं स्तोत्रपाठाद्धि मन्त्रसिद्धिरनुत्तमा ।
जागर्ति सततं चण्डी स्तोत्रपाठाद्भुजंगिनी ॥

टीका—जो पुरुष केवल इस स्तोत्रमात्र को पढ़ता है, वह अनुत्तमा मंत्र सिद्धि प्राप्त करता है । इस स्तवपाठ के फल से चण्डिका

कुलकुण्डलिनी नाड़ी जागरित होती है ।

इति श्रीमुण्डमालातंत्र रामेश्वर त्रिपाठी "निर्भय" कृत भाषाटीकासहितं महाविद्यास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

महाविद्या-कवच

अब महाविद्या कवच को मूल श्लोक संस्कृत में निम्न दिया जा रहा है तथा उसका अर्थ (टीका) भी किया गया है । साधको को चाहिये कि पाठ करते समय मूल पाठ (श्लोक) का ही प्रयोग करें ।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम् ।
आद्याया महाविद्यायाः सर्व्वभीष्टफलप्रदम् ।।

टीका—भैरव ने कहा, हे देवि ! महाविद्या का कवच कहता हूँ— सुनो, यह सब अभीष्ट फल का देनेवाला है ।

कवचस्य ऋषिर्देवि सदाशिव इतीरितः ।
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च महाविद्या प्रकीर्तिता ।।
धर्मार्थकाममोक्षाणां विनियोगश्च साधने ।।

टीका—इस कवच के ऋषि सदाशिव, छन्द अनुष्टुप् है, देवता महाविद्या हैं और धर्म, अर्थ, काम, मोक्षरूप फल के साधन में इसका विनियोग है ।

ऐंकारः पातु शीर्षे मां कामबीजं तथा हृदि ।
रमाबीजं सदा पातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ।।

टीका—ऐं बीज मेरे मस्तक की, क्लीं बीज हृदय की और श्रीं बीज मेरी नाभि, गुह्य, और चरण की रक्षा करें ।

ललाटे सुन्दरी पातु उग्रा मां कण्ठदेशतः ।
भगमाला सर्व्वगात्रे लिंगे चैतन्यरूपिणी ।।

टीका—सुन्दरी मेरे मस्तक की, उग्रा कंठ की, भगमाला सब शरीर की और चैतन्यरूपिणी देवी लिंगस्थान की रक्षा करें ।

पूर्वे मां पातु वाराही ब्रह्माणी दक्षिणे तथा।
उत्तरे वैष्णवी पातु चेन्द्राणी पश्चिमेऽवतु ॥
माहेश्वरी च आग्नेय्यां नैर्ऋते कमला तथा।
वायव्यां पातु कौमारी चामुण्डा हीशकेऽवतु ॥

टीका—पूर्व दिशा में वाराही, दक्षिण में ब्रह्माणी, उत्तर में वैष्णवी, पश्चिम में इन्द्राणी, अग्निकोण में माहेश्वरी, नैर्ऋत्यमें कमला, वायुकोणमें कौमारीऔर ईशानदिशामें चामुण्डामेरीरक्षाकरें ।

इदं कवचमज्ञात्वा महाविद्याञ्च यो जपेत्।
न फलं जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥

टीका—इस कवच को बिना जाने जो मनुष्य महाविद्या का मंत्र जपता है उसे सौ करोड़ कल्प में भी फल प्राप्त नहीं होता ।

इति श्रीरुद्रयामले महाविद्याकवचम् ।

भुवनेश्वरी-साधना

अब भुवनेश्वरी साधन के मंत्र, ध्यान, जप, होम, स्तव एवं कवच का वर्णन किया जाता है। त्र्यम्बक शिव की महाशक्ति भुवनेश्वरी हैं।

भुवनेश्वरी-मंत्र

(१) ह्रीं (२) ऐं ह्रीं (३) ऐं ह्रीं ऐं।

तीन प्रकार का मंत्र कहा गया। इनमें से, किसी भी एक मंत्र से साधक भुवनेश्वरी की आराधना कर सकता है।

॥भुवनेश्वरी का ध्यान॥

उद्यदहर्द्युतिमिन्दुकिरीटां तुंगकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदांकुशपाशाभीतिकरां प्रभजेद् भुवनेशीम् ॥

टीका—भुवनेश्वरी देवी के देह की कान्ति उदीयमान सूर्य के समान है। उनके ललाट में अर्द्धचन्द्र, मस्तक में मुकुट, दोनों स्तन उन्नत (ऊँचे) तीन नेत्र और बदन में सदा हास्य तथा चार हाथ में वर

मुद्रा, अंकुश, पास और अभयमुद्रा विद्यमान है। ऐसी भुवनेश्वरी देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

भुवनेश्वरी का पूजायन्त्र।

पद्ममष्टदलं बाह्ये वृत्त षोडशभिर्दलैः।
विलिखेत्कर्णिकामध्ये षट्कोणमतिसुन्दरम्।
चतुरस्रं चतुर्द्वारमेवं मण्डलमालिखेत्॥

टीका—पहिले षट्कोण अंकित करके उसके बाहर गोल और अष्टदल पद्म लिखे। उसके बाहर षोडशदल पद्म लिखकर तिसके बाहर चतुर्द्वार और चतुरस्र अंकित करके यंत्र निर्माण करे। यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखना चाहिये।

उक्तमंत्रका जप होम।

प्रजपेन्मन्त्रविन्मंत्रं द्वात्रिंशल्लक्षमानतः।
क्षिस्वादुयुक्तैर्जुहुयादष्टद्रव्यैर्दशांशतः॥

टीका—बत्तीस लाख जप से इस मंत्र का पुरश्चरण होता है और तीन लाख बत्तीस हजार की संख्या में होम करे। पीपल, गूलर, पिलखन बड़ इनकी समिधा (लकड़ी) और तिल, सफेद सरसों और खीर इन आठ द्रव्यों में घृत, मधु और शर्करा मिलाकर होम करना चाहिये।

भुवनेश्वरी का स्तव।

मूल श्लोक में भुवनेश्वरी स्तव निम्न प्रकार है।

अथानन्दमयीं साक्षाच्छब्दब्रह्मस्वरूपिणीम्।
ईडे सकलसम्पत्त्यै जगत्कारणमम्बिकाम्॥

टीका—जो साक्षात् शब्द ब्रह्मस्वरूपिणी जगत्कारण जगन्माता हैं, समस्त सम्पत्तियों के लाभ के लिये मैं उन्हीं आनन्दमयी भुवनेश्वरी की स्तुति करता हूँ।

आद्यामशेषजननीमरविन्दयोने-
र्विष्णोः शिवस्य च वपुः प्रतिपादयित्रीम्॥

सृष्टिस्थितिक्षयकरीं जगतां त्रयाणां।
स्तुत्वा गिरं विमलयाम्यहमम्बिके त्वाम्॥

टीका—हे मातः! तुम जगत् की आद्या, ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने वाली, ब्रह्मा, विष्णु, शिव को उत्पन्न करने वाली और तीनों जगत्की सृष्टि, स्थिति, तथा लय करनेवाली हो, मैं तुम्हारी स्तुति करके अपनी वाणी को पवित्र करता हूँ।

पृथ्व्या जलेन शिखिना मरुताम्बरेण
होत्रेन्दुना दिनकरेण च मूर्तिभाजः।
देवस्य मन्मथरिपोरपि शक्तिमत्ता
हेतुस्त्वमेव खलु पर्वतराजपुत्रि॥

टीका—हे पर्वतराजपुत्री! जो पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, यजमान, सोम और सूर्य-मूर्ति में विराजमान हैं, जिन्होंने कामदेव के शरीर को भस्म किया था, उन महादेव की भी त्रैलोक्य संहारशक्ति तुम्हारे ही द्वारा सम्पन्न हुई है।

त्रिस्रोतसः सकललोकसमर्चिताया
वैशिष्ट्यकारणमवैमि तदेव मातः।
त्वत्पादपंकजपरागपवित्रितासु
शम्भोर्जटासु नियतं परिवर्तनं यत्॥

टीका—हे माता! तुम्हारे ही चरण कमलों की रेणु से पवित्र हुई शिव के शिर की जटाजूट में तीन स्रोतवाली भागीरथी सदा शोभा पाती हैं. इस कारण ही उनकी सब पूजा करते हैं और इसी कारण वह सुन्दरी प्रधानता को प्राप्त हुई हैं।

आनन्दयेत्कुमुदिनीमधिपः कलानां
नान्यामिनः कमलिनीमथ नेतरां वा।

एकस्य मोदनविधौ परमेकमीष्टे
त्वन्तु प्रपञ्चमभिनन्दयसि स्वदृष्टया ।।

टीका—हे जननि ! जिस तरह कलानाथ (चन्द्रमा) एकमात्र कुमुदिनी को ही आनन्दित करते हैं और को नहीं, सूर्य भी एकमात्र कमल का आनन्द बढ़ाते हैं और का नहीं, इससे ज्ञात होता है कि जिस प्रकार एक द्रव्य के आनंद करने को एक-एक द्रव्य ही निर्दिष्ट हुआ है, इसी प्रकार इस सब जगत् को, एकमात्र तुम्हीं अपनी दृष्टि डालकर आनन्द देती हो ।

आद्याप्यशेषजगतां नवयौवनासि
शैलाधिराजतनयाप्यतिकोमलासि ।
त्रय्याः प्रसूरपि तथा न समीक्षितासि
ध्येयापि गौरि मनसो न पथि स्थितासि ।।

टीका—हे जननि ! सब जगत् की आदिभूत होकर भी तुम निरंतर नवयुवती हो ओर तुम पर्वतराजपुत्री होकर भी अति कोमला हो। तुम्हीं वेद प्रगट करने वाली हो और वेद तुम्हारे तत्व का निरूपण करने में असमर्थ हैं। हे गौरी ! यद्यपि तुम ध्यान गम्य हो, किन्तु इस प्रकार होकर भी मन में स्थित नहीं होती हो ।

आसाद्य जन्म मनुजेषु चिराद्दुरापं
तत्रापि पाटवमवाप्य निजेन्द्रियाणाम् ।
नाभ्यर्चयन्ति जगतां जनयित्रि ये त्वां
निःश्रेणिकाग्रमधिरुह्य पुनः पतन्ति ।।

टीका—हे जगमाता ! जो प्राणी दुर्लभ नरजन्म धारण कर इंद्रियों की सामर्थ्य को पाकर भी तुम्हारी पूजा नहीं करते, वह मुक्ति की सीढ़ी पर चढ़कर भी गिर जाते हैं ।

कर्पूरचूर्णहिमवारिविलोडितेन
ये चन्दनेन कुसुमैश्च सुजातगन्धैः ।
आराधयन्ति हि भवानि समुत्सुकास्त्वां
ते खल्वशेषभुवनाधिभुवं प्रथन्ते ।।

टीका—हे भवानि ! जो प्राणी कपूर के चूर्णसंयुक्त जल से घिसे हुए चन्दन और सुगंधित पुष्पों के द्वारा उत्कंठित मन से, तुम्हारी उपासना करते हैं, वह सब भुवनों के अधिपति होते हैं ।

आविश्य मध्यपदवीं प्रथमे सरोजे
सुप्ताहिराजसदृशा विरचय्य विश्वम् ।
विद्युल्लतावलयविभ्रममुद्वहन्ती
पद्मानि पञ्च विदलय्य समश्नुवाना ।।

टीका—हे जननी ! तुम मूलाधार पद्म में सोते हुए सर्पराज के समान विराजमान होकर विश्व की रचना करती हो और वहाँ से (बिजली की रेखा) के समूह की भाँति क्रमानुसार ऊर्ध्व में स्थित पंच पद्म को भेदकर सहस्रदल पद्म की कर्णिका के मध्य में स्थित परमशिव के सहित संगत होती हो ! यह विद्युल्लता योग के द्वारा जागती है ।

तन्निर्गतामृतरसैरभिषिच्य गात्रं
मार्गेण तेन विलयं पुनरप्यवाप्ता ।।
येषां हृदि स्फुरति जातु न ते भवेयु-
र्मातर्महेश्वरकुटुम्बिनि गर्भभाजः ।।

टीका—हे जननि, हरगृहिणी ! तुम सहस्रदल कमल से निर्गत हुए सुधारस से शरीर को अभिषिक्त करती हुई सुषुम्ना नाडी के मार्ग में फिर प्राप्त होकर लय हो जाती हो, तुम जिसके हृदय कमल में उदित नहीं होती, वह बार-बार गर्भ-धारण का दुःख पाता है ।

आलम्बिकुन्तलभरामभिरामवक्त्रा-
मापीवरस्तनतटीं तनुवृत्तमध्याम् ।
चिन्ताक्षसूत्रकलशालिखिताढ्यहस्तां,
मातर्नमामि मनसा तव गौरि मूर्तिम् ॥

टीका—हे जननी ! तुम्हारे केश लम्बायमान हो रहे हैं और तुम्हारा मुख अत्यन्त मनोरम है, तुम ऊँचे स्तनवाली हो, तुम्हारी कमर पतली और तुम्हारी चार भुजा में, ज्ञानमुद्रा, जपमाला, कलश और पुस्तक विद्यमान है। हे गौरी ! तुम्हारी ऐसी मूर्ति को नमस्कार करता हूँ।

आस्थाय योगमवजित्य च वैरिषट्क-
मावध्य चेन्द्रियगणं मनसि प्रसन्ने ।
पाशांकुशाभयवराढ्यकरां सुवक्त्रा-
मालोकयन्ति भुवनेश्वरि योगिनस्त्वाम् ॥

टीका—हे भुवनेश्वरि ! योगिजन योगावलम्बन पूर्वक काम, क्रोध, मद लोभादि, शत्रुओंको जीत इन्द्रियोंको रोक प्रफुल्लित चित्तसे पाशांकुशाभय, वरयुक्त हाथवाली सुशोभनमुखी तुम्हारा दर्शन करते हैं।

उत्तप्तहाटकनिभा करिभिश्चतुर्भि-
रावर्जितामृतघटैरभिषिच्यमाना ।
हस्तद्वयेन नलिने रुचिरे वहन्ती
पद्मापि साभयकरा भवसि त्वमेव ॥

टीका—हे जननि ! जो तपे हुए कांचन के समान वर्णवाली हैं चार हाथी जलपूरित घटमें जिनको अभिषिक्त करते हैं, जो एक दोनों हाथोंमें पदम् और अन्य दोनों हाथोंमें अभय मुद्रा तथा वर मुद्रा धारण करने वाली हैं, वह लक्ष्मी देविस्वरूपिणी तुम्हीं हो।

अष्टाभिरुग्रविविधायुधवाहिनीभि-
र्दोर्वल्लरीभिरधिरुह्य मृगाधिराजम् ।
दूर्व्वादलद्युतिरमर्त्यविपक्षपक्षान्
न्यक्कुर्व्वती त्वमसि देवि भवानि दुर्गे ।

टीका—हे देवि भवानि ! जो सिंहके ऊपर चढ़कर नानारूप अस्त्रधारी आठ हाथोंसे विराजमान होती हैं, जो दूर्वादलके समान कान्तिवाली हैं, जिन्होनें देवताओं को परास्तकरके नीचे किया (झुका दिया) है वह दुर्गास्वरूपिणी तुम्हीं हो ॥

आविर्निदाघजलशीकरशोभिवक्त्रां
गुञ्जाफलेन परिकल्पितहारयष्टिम् ।
रत्नांशुकामसितकान्तिमलंकृतान्त्वा-
माद्यां पुलिन्दतरुणीमसकृत् स्मरामि ॥

टीका—जिनका मुख मण्डल पसीनेकी निकली हुई बूंदोंसे शोभा पाता है, जिन्होंने चौंटली घुघुची की बनी हारयष्टि धारण की है. पत्रावली जिनके वसन हैं, उन्हीं कृष्णकान्तिवाली अनंगके वशमें वर्त्तनेवाली वा अनंगको वशमें करनेवाली आद्या पुलिन्दरमणीको बारम्बार स्मरण करता हूँ ॥

हंसैर्गतिक्वणितनूपुरदूरकृष्टै-
र्मूर्तैरिवाप्तवचनैरनुगम्यमानौ ।
पद्माविवोर्ध्वमुखरूढसुजातनालौ
श्री कण्ठपत्नि शिरसैव दधे तवांघ्री ॥

टीका—हे नीलकंठ की पत्नी ! जिस प्रकार नूपुरके शब्द को सुनकर हंस दूरसे खिंचे चले आते हैं, इसी प्रकार वेद तुम्हारे चरणकमलोंका अनुगमन करते हैं, किन्तु तुम्हारे चरणकमल श्रेष्ठ

नीलकमलके समान विराजमान हैं, मैं तुम्हारे उन्हीं दोनों पदों को मस्तक पर धारण करता हूँ ॥

द्वाभ्यां समीक्षितुमतृप्तिमितेन दृग्भ्या-
मुत्पाद्यता त्रिनयनं वृषकेतनेन ।
सान्द्रानुरागभवनेन निरीक्ष्यमाणे
जंघे उभे अपि भवानि तवानतोऽस्मि ॥

टीका–हे भवानि ! वृषध्वज श्रीमहादेवजीने अपने दोनों नेत्रोंसे तुम्हारे रूपका दर्शन करके तृप्त न होनेसेही मानों तीसरे नेत्रकी उत्पन्न कर अत्यन्तगाढ़ अनुरागसहित तुम्हारे जंघादेशका दर्शन किया है, अतएव मैं तुम्हारी उन दोनों जंघोओंको नमस्कार करता हूँ ॥

ऊरू स्मरामि जितहस्तिकरावलेपौ
स्थौल्येन मार्द्दवतया परिभूतरम्भौ ।
श्रोणी भवस्य सहनौ परिकल्प्य दत्तौ
स्तम्भाविवांगवयसा तव मध्यमेन ॥

टीका–हे जननि ! तुम्हारी ऊरु हाथियोंकी सूंडका गर्व खर्व करती है; उसने अपनी स्थूलता और कोमलतासे केलेके वृक्षको परास्त किया है और तुम्हारे नितम्ब को देखने से ऐसा बोध होता है, मानो मध्यदेशनेही स्तम्भस्वरूप में उसकी कल्पना की है, मैं उसका स्मरण करता हूँ ।

श्रोण्यौ स्तनौ ज युगपत्प्रथयिष्यतोच्चै-
र्बाल्यात्परेण वयसा परिकृष्टसारः ।
रोमावलीविलसितेन विभाव्य मूर्त्ति-
र्मध्यन्तव स्फुरति मे हृदयस्य मध्ये ॥

टीका–हे देवि ! तुम्हारे मध्यदेश को देखने से ऐसा अनुमान होता है कि मानो तुम्हारे नितम्ब और स्तनमण्डल दोनोंने

उच्चताविस्तारके कारण यौवन् द्वारा मध्यदेशका सार खेंचा हैं। इसी कारण तुम्हारा मध्यदेश (कटिभाग) अत्यन्त क्षीण हो गया हैं। हे जननि ! तुम्हारा यह मध्यदेश मेरे हृदय में स्फुरित हो।

सख्यः स्मरस्य हरनेत्रहुताशभीरो
र्लावण्यवारिभरितं नवयौवनेन।
आपाद्य दत्तमिव पल्वलमप्रधृष्यं
नाभिं कदापि तव देवि न विस्मरेयम्।

टीका—हे जननी ! शिवकी नेत्राग्निसे डरी हुई नवयुवती रतिका लावण्य जलपूर्ण करके छुद्र सरोवर की भाँति तुम्हारी नाभि बनाई गई है, तुम्हारी इस नाभिको मैं कभी नहीं भूलूं।

ईशोपगूहपिशुनं भसितं दधाने
काश्मीरकर्द्दममनु स्तनपंकजे ते।
स्नानोत्थितस्य करिणः क्षणलक्षफेनौ
सिन्दूरितौ स्मरयतः समदस्य कुम्भौ।।

टीका—हे जननी ! तुम्हारे दोनों कुच कमलों में भस्म लगी हुई है, इसके द्वारा हर (शिव) का आलिंगन सूचित होता है। और यह कुचयुगल पद्ममूलसे अनुलिप्त होने के कारण स्नानसे उठे मदयुक्त हाथीके क्षणमात्रको फेनसे लक्षित गण्डस्थलका स्मरण कराते हैं।

कण्ठातिरिक्तगलदुज्जवलकान्तिधारा
शोभौ भुजौ निजरिपोर्मकरध्वजेन।
कण्ठग्रहाय रचितौ किल दीर्घपाशौ
मातर्म्मम स्मृतिपथं न विलंघयेताम्।।

टीका—हे माता ! तुम्हारे दोनों हाथ देखने से अनुमान होता है, मानों कामदेवने अपने शत्रु हर का कंठ ग्रहण करने के लिये दीर्घ पाश बनाया है। हे मातः तुम्हारे इन दोनों हाथों का मैं कभी न भूलूं।

नात्यायतं रचितकम्बुविलास चौर्य्यं
भूषाभरेण विविधेन विराजमानम् ।
कण्ठं मनोहरगुणं गिरिराजकन्ये
सञ्चिन्त्य तृप्तिमुपयामि कदापि नाहम् ।

टीका—हे गिरिराजपुत्री ! न बहुत दीर्घ अनेक प्रकार से अलङ्कृत मनोहरगुण तुम्हारे कबुकंठकी मैं भावना करता हुआ कभी भी तृप्त न हूँ।

अत्यायताक्षमभिजातललाटपट्टं,
मन्दस्मितेन वरफुल्लकपोलरेखम् ।
बिम्बाधरं वदनमुन्नतदीर्घनासं
यस्ते स्मरत्यसकृदम्ब स एव जातः ।।

टीका—तुम्हारे मुखमण्डल में विशाल आकृति वाले नयन विराजमान हैं, भाल परम मनोहर दिखाई देता है, मृदुहास्य द्वारा कपोल प्रफुल्लित हैं, अधर बिम्बाफल की भाँति शोभा पाते हैं, और उन्नत दीर्घ नासिका विराजमान रहती है. जो पुरुष तुम्हारे ऐसे वदन का स्मरण करते हैं, उनका ही जन्म सफल है ।

आविस्तुषारकरलेखमनल्पगन्ध-
पुष्पोपरि भ्रमदलिव्रजनिर्विशेषम् ।
यश्चेतसा कलयते तव केशपाशं
तस्य स्वयं गलति देवि पुराणपाशः ।।

टीका—हे देवि ! तुम्हारे केशपाश भाल के चन्द्रमा की चाँदनी में प्रकाशित होते हैं; वह स्वल्प गन्धयुक्त पुष्प (फूल) के ऊपर भ्रमण करने वाले भौंरे की समानता कर रहे हैं, जो पुरुष तुम्हारे ऐसे केशपाशों का स्मरण करते हैं उसका सनातन संसार पाश कट जाता है ।

श्रुतिसुरचितपाकं धीमतां स्तोत्रमेतत्
पठति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तरात्मा ।

स भवति पदमुच्चैः सम्पदां पादनम्रः
क्षितिपमुकुटलक्ष्मीलक्षणानां चिराय ॥

टीका—जो पुरुष ! बुद्धिमानों के श्रुति सुख दायक इस स्तोत्रका आर्द्र चित्त से प्रतिदिन पाठ करते हैं, वह संपूर्ण सम्पदाओं के आधार होते हैं और राजा लोग सदैव, उनके चरण कमलों में झुकते हैं ।

पं० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी कानपुर निवासी द्वारा हिन्दी टीका सहित भुवनेश्वरीस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

भुवनेश्वरी कवच

अब भुवनेश्वरी के कवच को मूल श्लोक में नीचे दिया जा रहा है तथा उसकी हिन्दी में टीका भी की गई है । साधक पाठ करते समय मूल श्लोक का ही पाठ प्रयोग करें ।

शिव उवाच !

पातकं दहनं नाम कवचं सर्व्वकामदम् ।
शृणु पार्व्वति वक्ष्यामि तव स्नेहात्प्रकाशितम् ॥

टीका—श्री शिव जी बोले— हे पार्वती! पातक दहन नामक भुवनेश्वरी का कवच कहता हूं । इसके द्वारा सभी कामनायें पूर्ण होती है। तुम्हारे प्रति स्नेह के कारण इसको प्रकाशित करता हूँ, सुनो ॥

पातकं दहनस्यास्य सदाशिव ऋषिः स्मृतः ।
छन्दोऽनुष्टुप् देवता च भुवनेशी प्रकीर्त्तिता ।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्त्तितः ॥

टीका—इस कवच के ऋषि सदाशिव हैं, छन्द अनुष्टुप्, देवता भुवनेश्वरी है और धर्मार्थ काम मोक्ष में इसका विनियोग है ॥

ऐं बीजं मे शिरः पातु ह्रीं बीजं वदनं मम ।
श्रीं बीजं कटिदेशन्तु सर्वाङ्गं भुवनेश्वरी ॥
दिक्षु चैव विदिक्ष्वीयं भुवनेशी सदावतु ॥

टीका—ऐं बीज मेरे मस्तक की, ह्रीं बीज मुख की, श्रीं बीज कमर की और भुवनेश्वरी सर्वांग की रक्षा करें । भुवनेश्वरी देवी दिशा-विदिशाओं में सर्वत्र रक्षा करें ।

अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोऽपि धनेश्वरः ।
तस्मात्सदा प्रयत्नेन पठेयुर्म्मानवा भुवि ॥

टीका—इस कवच के पढ़ने पाठ मात्र से कुबेर जी तत्काल धनाधिप (देवताओं के कोषाध्यक्ष) हुए हैं, अतएव मनुष्य यत्न सहित इसका सदा पाठ करता रहे ।

भैरवी साधन

अब भैरवी साधन के मंत्र, ध्यान, यंत्र, जप, होम, स्तव एवं कवच का वर्णन किया जाता है ।

भैरवी-मन्त्र

हसरैं हसकलरीं हसरौः ।
हसरैं हसकलरीं हसरोः ।

इस मंत्र से भैरवी की पूजा और जापादि करना चाहिये ।

भैरवी—ध्यान

भैरवी के ध्यान की विधि, विधान निम्न मूल श्लोक (संस्कृत) में दिया जाता है । साधकों को चाहिये कि वह ध्यान करते समय मूल श्लोक का ही प्रयोग करें ।

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम् ।
हस्ताब्जैदधतीं त्रिनेत्रविलसद्रक्तारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्दे समन्दस्मिताम् ॥

टीका—देवी के देह की कान्ति उदय हुए सहस्र सूर्य की भाँति है। वे, रक्त वर्ण क्षौम वस्त्र धारण किये हुई हैं । उनके कण्ठ में मुण्डमाला

तथा दोनों स्तन रक्त से लिप्त हैं। इनके चारों होथों में जपमाला, पुस्तक, अभयमुद्रा तथा वर और ललाट में चन्द्रकला विराजंती है, इनके तीनों नेत्र लाल कमल की भाँति हैं। मस्तक में रत्न-मुकुट और मुख में मृदु हास्य सुशोभित है।

भैरवी-पूजायन्त्र।

पद्ममष्टदलोपेतं नवयोन्याढ्यकर्णिकम्।
चतुर्द्वारसमायुक्तं भूगृहं बिलिखेत्ततः॥

नव योनिमय कर्णिका अंकित करके फिर उसके बाहर अष्टदल पद्म एवं बाहर चतुर्द्वार और भूगृह अंकित करके यन्त्र निर्माण करे। यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखना चाहिये।

उक्तपूजाका जप होम।

दीक्षां प्राप्य जपेन्मत्रं तत्त्वलक्षं जितेन्द्रियः।
पुष्पैर्भानुसहस्राणि जुहुयाद्ब्रह्मवृक्षजैः॥

दस लाख मन्त्र जप से इसका पुरश्चरण होता है और ढाक के फूलों से बारह हजार की संख्या में होम करना चाहिये॥

भैरवी—स्तव।

स्तुत्याऽनया त्वां त्रिपुरे स्तोष्येऽभीष्टफलाप्तये।
यया व्रजन्ति तां लक्ष्मीं मनुजाः सुरपूजिताम्॥

टीका—हे त्रिपुरे! मैं वांञ्छित फल प्राप्त होने की आशा से तुम्हारी स्तुति स्तवन करता हूँ। इस स्तुति के द्वारा मनुष्यगण देवताओं से पूजित कमला को प्राप्त होते हैं॥

ब्रह्मादयः स्तुतिशतैरपि सूक्ष्मरूपां
जानन्ति नैव जगदादिमनादिमूर्त्तिम्।
तस्याद्वयं कुचनतां नवकुंकुमाभां
स्थूलां स्तुमः सकलवाङ्मयमातृभूताम्॥

टीका—हे जननि ! तुम जगत् की आद्या हो, तुम्हारा आदि नहीं है, इसी कारण ब्रह्मादि देवतागण भी सैकड़ों स्तुति करके सूक्ष्मरूपिणी तुमको जानने में समर्थ नहीं हैं। अर्थात् उनकी ऐसी वाक्सम्पत्ति नहीं है, जो तुम्हारी स्तुति करने को समर्थ्य हों। इस कारण हम नवकुंकुम की भाँति कांतिवाली वाक्य रचना से जननी स्वरूपिणी पुष्ट कुचवाली (स्तनवाली) तुम्हारी स्तुति करते हैं ॥

सद्यः समुद्यतसहस्रदिवाकराभां
विद्याक्षसूत्रवरदाभयचिह्नहस्ताम् ।
नेत्रोत्पलैस्त्रिभिरलंकृतवक्त्रपद्मां
त्वां हारभाररुचिरां त्रिपुरे भजामः ॥

टीका—हे त्रिपुरे ! तुम्हारी देह की कांति नये उदित हजार सूर्य के समान समुज्ज्वल है, तुम अपने चारों हाथों में विद्या, अक्षसूत्र, वर और अभय धारण किये हो। तुम्हारे तीनों नेत्र कमलों से मुख कमल अलंकृत है और तुम्हारा गला तारहार (तारे के हार) से शोभायमान है, ऐसे स्वरूप वाली, तुम्हारी मैं आराधना करता हूँ ॥

सिन्दूरपूररुचिरं कुचभारनम्रं
जन्मान्तरेषु कृतपुण्यफलैकगम्यम् ।
अन्योन्यभेदकलहाकुलमानसास्ते
जानन्ति किं जडधियस्तव रूपमम्ब ॥

टीका—हे जननि ! तुम्हारा रूप सिन्दूर के समान लाल वर्ण का है, तुम्हारा देहांश (शरीर) कुचभार से झुका है, जिन्होंने जन्मान्तर में बहुत पुण्य संचय किया है, वही उस पुण्य के प्रभाव से तुम्हारा ऐसा रूप देखने में समर्थ होते हैं और जो पुरुष निरन्तर परस्पर कलह से कुंठित मन हैं, वह जड़मति पुरुष तुम्हारा ऐसा रूप किस प्रकार जान व समझ सकते हैं ? ॥

स्थूलां वदन्ति मुनयः श्रुतयो गृणन्ति
सूक्ष्मां वदन्ति वचसामधिवाममन्ये ।
त्वां मूलमाहुरपरे जगतां भवानि
मन्यामहे वयमपारकृपाम्बुराशिम् ॥

टीका—हे भवानी ! मुनिगण तुमको स्थूल कहकर स्तुति करते हैं, और श्रुतियाँ तुमको सूक्ष्म कहकर स्तुति करती हैं, कोई जन तुमको वाक्य की अधिष्ठात्री देवी कहते हैं और अपरापर अनेक विद्वान पुरुष जगत् का मूल कारण कहते हैं, किन्तु मैं तुम्हें केवलमात्र दयासागरी जानता व समझता हूँ ॥

चन्द्रावतंसकलितां शरदिन्दुशुभ्रां
पञ्चाशदक्षरमयीं हृदि भावयन्ति ।
त्वां पुस्तकं जपवटीममृताढ्यकुम्भं
व्याख्याञ्च हस्तकमलेद्दधतीं त्रिनेत्राम् ॥

टीका—हे जननि ! तुम चन्द्रभूषण से विभूषित हो, तुम्हारे शरीर की कान्ति शरद् के चन्द्रमा की भाँति शुभ्र है, तुम्हीं पचास वर्णोंवाली वर्णमाला हो, तुम्हारे चारों हाथों में पुस्तक, जपमाला, सुधापूर्ण कलश और व्याख्यानमुद्रा विद्यमान है, तुम्हीं त्रिनेत्रा हो, साधकगण इस प्रकार से तुमको अपने हृदय कमल में तुम्हारा ध्यान करते हैं ॥

शम्भुस्त्वमद्रितनया कलितार्द्धभागो
विष्णुस्त्वमन्यकमलापरिबद्धदेहः ।
पद्मोद्भवस्त्वमसि वागधिवासभूमिः
येषां क्रियाश्च जगति त्रिपुरे त्वमेव ॥

टीका—हे जननि ! तुम्हीं अर्द्धनारीश्वर शंभुरूप में शोभायमान हो तुम्हीं कमलाश्लिष्टा विष्णु रूपिणी, तुम्हीं कमलयोनि

ब्रह्मस्वरूपिणी हो, तुम्हीं वागधिष्ठात्री-देवी, और तुम्ही ब्रह्मादिक की सृष्टिक्रियाशक्ति भी हो ॥

आकुञ्च्य वायुमवजित्य च वैरिषट्क-
मालोक्य निश्चलधियो निजनासिकाग्रम् ।
ध्यायन्ति मूर्ध्नि कलितेन्दुकलावतंसं
तद्रूपमम्ब कृतितस्तरुणार्क मत्रम् ॥

टीका—हे अम्ब ! विद्वान पुरुष वायु निरोधपूर्वक काम क्रोधादि छै शत्रुओं को जीतकर अपनी नासिका का अग्रभाग देखते हुए चन्द्रभूषण, नये उदय हुए सूर्यरूपी, तुम्हारे रूप का सहस्र कमल में ध्यान करते हैं ।

त्वां प्राप्य मन्मथरिपोर्वपुरर्द्धभागं
सृष्टिं करोषि जगतामिति वेदवादः ।
सत्यं तदद्रितनये जगदेकमात-
र्नोचेदशेषजगत स्थितिरेव न स्यात् ।

टीका—हे पर्वतराज-पुत्री ! तुमको मदन दहन कारी महादेव के शरीर का अर्द्धांश अवलम्बन करके जगत् को पैदा किया है, वेदों में जो इस प्रकार का वर्णन है, वह सत्य ही जान पड़ता है । हे विश्वजननि ! यदि ऐसा न होता, तो कभी जगत् की स्थित संभव नहीं होती ।

पूजां विधाय कुसुमैः सुरपादपानां
पीठे तवाम्ब कनकाचलगह्वरेषु ।
गायन्ति सिद्धवनिताः सह किन्नरीभि-
रास्वादितामृतरसारुणपद्मनेत्राः ॥

टीका—हे जननि ! जो सिद्धों की स्त्रियों ने किन्नरीगणों के सहित एकत्र मिलकर (एकत्र होकर आसव रस पान किया, इस कारण उनके

नेत्रकमलों ने लोहित कांति धारण की है। वह पारिजातादि सुरतरु के फूलों से तुम्हारी पूजा करती हुई सुमेरु पर्वत की कन्दराओं में तुम्हारे नाम का यशो गान करती हैं।

विद्युद्विलासवपुषं श्रियमुद्वहन्तीं
यान्तीं स्ववासभवनाच्छिवराजधानीम्।
सौन्दर्यराशिकमलानि विकाशयन्तीं
देवीं भजे हृदि परामृतसिक्तगात्राम्॥

टीका—हे देवी! जिसने बिजली की रेखा के समान दीप्तमान् देह धारण किया है, जो अतिशय शोभा युक्त है, जो अपने वासस्थान मूलाधार पद्म से सहस्रवार कमल में जाने के समय सुषुम्णा में स्थित पद्म समूह को विकासित करती है, जिनका शरीर परम अमृत से अभिषिक्त है, वह देवी तुम्हीं हो। मैं तुम्हारी आराधना करता हूँ।

आनन्दजन्मभवनं भवनं श्रुतीनां
चैतन्यमात्रतनुमम्ब तवाश्रयामि।
ब्रह्मेशविष्णुभिरुपासितपादपद्मां
सौभाग्यजन्मवसतीं त्रिपुरे यथावत्॥

टीका—हे त्रिपुरे! तुम्हारा शरीर आनन्द भवन है, तुम्हारे शरीर से ही श्रुतियाँ उत्पन्न हुई हैं, यह देह चैतन्यमय है, ब्रह्मा, विष्णु और महादेव तुम्हारे चरणकमलों की आराधना करते हैं, सौभाग्य तुम्हारे शरीर का आश्रय करके शोभा पाता है अतएव मैं तुम्हारे ऐसे शरीर का आश्रय लेता हूँ।

सर्वार्थभावि भुवनं सृजतीन्दुरूपा
या तद्विभर्त्ति पुनरर्कतनुः स्वशक्त्या।
ब्रह्मात्मिका हरति तत् सकलं युगान्ते
तां शारदां मनसि जातु न विस्मरामि॥

टीका—हे जननि ! जो चन्दरूप से भवनों की सृष्टि, सूर्यरूप से पालन और प्रलय काल में अग्नि रूप से उन सबको ध्वंस करती है, उन शारदा देवी को मैं कभी न भूलूँ ।

नारायणीति नरकार्णवतारिणीति
गौरीति खेदशमनीति सरस्वतीति ।
ज्ञानप्रदेति नयनत्नयभूषितेति
त्वामद्रिराजतनये विबुधा वदन्ति ।।

टीका—हे पर्वतराज कन्ये ! साधकगण तुम्हारी नारायणी, नरकार्णवतारिणी (नरक रूपी सागर से तारनेवाली) गौरी, खेदशमनी, (दुखनाशिनी), सरस्वती, ज्ञानदाता, और तीन नेत्रों से भूषिता, इत्यादि अनेक रूप में आराधना करते हैं ।

ये स्तुवन्ति जगन्मातः श्लोकैर्द्वादशभिः क्रमात् ।
त्वामनुप्राप्य वाक्सिद्धि प्राप्नुयुस्ते परां गतिम् ।।

टीका—हे जगन्माता ! जो पुरुष इन बारह श्लोकों से तुम्हारी स्तुति करते हैं, वह तुमको प्राप्त करके वाक्सिद्धि प्राप्त करते हैं और देह के अन्त से परमगति को प्राप्त होते हैं ।

इति श्रीभैरवीतन्त्रे भैरवभैरवीसंवादे पं० रामेश्वर त्रिपाठी "निर्भय" कानपुर निवासी कृत भाषाटीकासहितं श्रीभैरवीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

भैरवी—कवच

अब भैरवी कवच के मूल मंत्र को मूल श्लोक में संस्कृत में निम्न दिया जा रहा है और उसकी टीका हिन्दी में की गई है । साधक को चाहिए कि पाठ करते समय मूल श्लोक का ही प्रयोग करें ।

भैरवी कवचस्यास्य सदाशिव ऋषिः स्मृतः ।
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च भैरवी भयनाशिनी ।
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।।

टीका–भैरवी कवच के ऋषि सदाशिव हैं, छंद अनुष्टप् हैं, देवता भयनाशिनी भैरवी हैं और धर्मार्थ काममोक्ष की प्राप्ति के लिए इसका विनियोग कहा गया है।

हसरैं मे शिरः पातु भैरवी भयनाशिनी।
हसकलरीं नेत्रञ्च हसरौश्च ललाटकम्॥
कुमारी सर्वगात्रे च वाराही उत्तरे तथा॥
पूर्व्वे च वैष्णवी देवी इन्द्राणी मम दक्षिणे।
दिग्विदिक्षु सर्व्वत्रैव भैरवी सर्व्वदावतु॥
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्देविभैरवीम्।
कल्पकोटिशतेनापि सिद्धिस्तस्य न जायते॥

टीका–हसरैं मेरे मस्तक की, हसकलरीं नेत्रों की, हसरौंः ललाट की, तथा कुमारी सर्व गात्रकी रक्षा करें। वाराही उत्तर दिशा में, वैष्णवी पूर्व दिशा में, इन्द्राणी दक्षिण दिशा में और भैरवी दिशा-विदिशा में सर्वत्र सदा रक्षा करें। इस कवच को बिना जाने जो कोई भैरवी मन्त्र का जप करता है, सो करोड़ कल्प में भी उसको सिद्धि प्राप्त नहीं होती।

छिन्नमस्ता-साधना

अब छिन्नमस्ता साधन के मंत्र ध्यान, यंत्र, जप, होम, स्तव और कवच आदि का वर्णन निम्न प्रकार है।

छिन्नमस्ता-मन्त्र।

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा।

इस मंत्र से छिन्नमस्ता की पूजा एवं जप आदि करना चाहिये।

छिन्नमस्ता-ध्यान

छिन्नमस्ता के ध्यान का विधान मूल श्लोक में निम्न लिखित है कृपया साधक गण ध्यान करते समय मूल श्लोक का ही प्रयोग करें।

प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्त्तृकां
दिग्वस्त्रां स्वकबन्धशोणितसुधाधरां पिबन्तीं मुदा ।
नागाबद्धशिरोमणिं त्रिनयनां हृद्युत्पलालंकृतां
रत्यासक्तमनोभवोपरि दृढां ध्यायेज्जपासन्निभाम् ।।
दक्षे चातिसिताविमुक्तचिकुरा कर्तृस्तथा खर्परं
हस्ताभ्यां दधती रजोगुणभवो नाम्नापिसा वर्णिनी ।
देव्याश्छिन्नकबन्धतः पतदसृग्धारां पिबन्तीं मुदा
नागाबद्धशिरोमणिर्म्मनुविदा ध्येया सदा सा सुरैः ।।
वामे कृष्णतनूस्तथैव दधती खड्गं तथा खर्परं
प्रत्यालीढपदाकबन्धविगलद्रक्तं पिबन्ती मुदा ।
सैषा या प्रलये समस्तभुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी
शक्तिःसापि परात् परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी ।।

टीका— छिन्नमस्ता देवी प्रत्यालीढ पदा हैं, अर्थात् वे युद्ध के लिये सन्नद्ध चरण किये (एक आगे एक पीछे) वीरवेष से खड़ी हैं । यह छिन्नशिर और खड्ग धारण किये हैं । देवी नग्न और अपने छिन्नगले से निकली हुई शोणितधारा पान करती हैं और वे मस्तक में सर्पाबद्धमणि, तीन नेत्रों के धारण किये हैं और वक्षःस्थल कमलों की माला से अलंकृत है । यह रतिमें आसक्त काम पर दंडायमान हैं । इनके देह की कांति जपापुष्प के समान रक्तवर्ण है । देवी के दाहिने भाग में श्वेत वर्णवाली, खुले केशों, कैंची और खर्पर धारिणी एक देवी हैं उनका नाम "वर्णिनी" है । यह वर्णिनी देवी के छिन्न मस्तक, गले से गिरती हुई रक्तधारा पान करती हैं । इनके मस्तक में नागबद्ध मणि है । वाम भाग में खड्ग खर्पर धारिणी कृष्णवर्णा दूसरी देवी हैं, यह देवी के छिन्नगले से निकली हुई रुधिरधारा पान करती है । इनका दाहिना पाद आगे और वाम पाद पीछे के भाग में स्थित है । यह

प्रलयकाल के समय संपूर्ण जगत् को भक्षण करने में समर्थ हैं, इनका नाम 'डाकिनी' है ये भगवती छिन्न मस्ता की परात्परा शक्ति हैं।

छिन्नमस्ता पूजन यंत्र

छिन्नमस्ता पूजन यंत्र भैरवी पूजन यंत्र की तरह है, अतः साधक लोगों को उसी का पूजन करना चाहिये।

उक्तमन्त्रका जप होम।

लक्ष (एक लाख) जपने से छिन्नमस्ता मन्त्र का पुरश्चरण होता है और उसका दशांश होम करना चाहिये। होम की सामग्री भैरवी के होम की भाँति है।

छिन्नमस्ता-स्तोत्र (स्तव)

नाभौ शुद्धसरोजरक्तविलसद्बन्धूकपुष्पारुणं
भास्वद्भास्करमण्डलं तदुदरे तद्योनिचक्रम्महत्।
तन्मध्ये विपरीतमैथुनरतप्रद्युम्नतत्कामिनी
पृष्ठस्थां तरुणार्ककोटिविलसत्तेजःस्वरूपां शिवाम्॥

टीका—नाभि में शुद्ध खिला हुआ कमल है, जिसके मध्य में बन्धूकपुष्प के समान लालवर्ण प्रदीप्त सूर्यमण्डल है, उस सूर्य मण्डल के मध्य में बड़ा योनिचक्र है, उसके मध्य में विपरीत मैथुनक्रीड़ा में आसक्त कामदेव और रति विराजमान हैं, इन कामदेव और रति की पीठ परप्रचण्ड चण्डिका (छिन्नमस्ता) स्थित हैं, यह करोड़ तरुण सूर्य की भाँति तेजशालिनी और मंगलमयी हैं॥

वामे छिन्नशिरोधरां तदितरे पाणौ महत्कर्तृकां
प्रत्यालीढपदां दिगन्तवसनामुन्मुक्तकेशव्रजाम्।
छिन्नात्मीयशिरः समुल्लसदसृग्धारां पिबन्तीं परां
बालादित्यसमप्रकाशविलसन्नेत्रत्रयोद्भासिनीम्॥

टीका—इनके बायें हाथ में छिन्न मुण्ड है और दाहिने हाथ में भीषणकृपाण शोभित है। देवी जी एक पाँव आगे एक पीछे किये

वीरवेष में स्थित हैं, दिशारूपी वस्त्रों को धारण किये हुए हैं और केश उनके खुले हुए हैं। ये अपने ही शिर को काटकर उससे बहनेवाली रुधिरधारा को पान कर रही हैं, इनके तीनों नेत्र बाल, सूर्य (आदित्य) के समान प्रकाशमान हैं ॥

वामादन्यत्र नालं बहु बहुलगलद्रक्तधाराभिरुच्चैः
पायन्तीमस्थिभूषां करकमललसत्कर्तृकामुग्ररूपाम् ।
रक्तामारक्तकेशीमपगतवसनां वर्णिनीमात्मशक्तिः
प्रत्यालीढोरुपादामरुणिततनयनां योगिनीं योगनिद्राम् ॥

टीका—देवी जी के दक्षिण और वाम भाग में निज शक्तिरूपा दो योगिनी विराजमान हैं। इनके दक्षिण भाग स्थित योगिनी के हाथ में बड़ी कैंची है और योगिनी की उग्र मूर्ति है, रक्तवर्ण और केश (बाल) भी रक्त वर्ण हैं। नग्नवेष और प्रत्यालीढ पद से स्थित हैं, इनके नेत्र भी लाल-लाल हैं, इसको छिन्नमस्ता देवी अपनी देह से निकालती हुई रुधिरधारा पान करा रही हैं ॥

दिग्वस्त्रां मुक्तकेशीं प्रलयघनघटाघोररूपांप्रचण्डां
दंष्ट्रादुष्प्रेक्ष्यवक्त्रोदरविवरलसंल्लोलजिह्वाग्रभागाम् ।
विद्युल्लोलाक्षियुग्मां हृदयतटलसद्भोगिभीमां सुमूर्ति
सद्यश्छिन्नात्मकण्ठप्रगलितरुधिरैर्डाकिनीं वर्द्धयन्तीम् ॥

जो योगिनी वाम भाग में स्थित हैं, वह नंग्न और खुले केश हैं, उनकी मूर्ति प्रलयकाल के मेघ की भाँति भयंकर (भयानक) है, प्रचंड स्वरूपा है। इनका मुखमण्डल दांतों से दुर्निरीक्ष हो रहा है, ऐसे मुखमण्डल के मध्य में चलायमान जीभ शोभित हो रही है और इनके तीनों नेत्र बिजली की भाँति चंचल हैं, हृदय में सर्प विराजमान है, इनकी अत्यन्त ही भयानक मूर्ति है। छिन्नमस्ता देवी ऐसी डाकिनी को अपने कंठ के रुधिर से वर्द्धित कर रही हैं।

ब्रह्मेशानाच्युताद्यैःशिरसि विनिहितामंदपादारविंदा
मात्मज्ञैर्योगिमुख्यैः सुनिपुणमनिशं चिन्तिताचिंत्यरूपाम् ।
संसारे सारभूतां त्रिभुवनजननीं छिन्नमस्तां प्रशस्ता-
मिष्टां तामिष्टदात्रीं कलिकलुषहरां चेतसा चिन्तयामि ।।

टीका—ब्रह्मा, शिव और विष्णु आदि आत्मज्ञ योगिन्द्रगण इन छिन्नमस्ता देवी के पादारविन्द (चरण) मस्तक में धारण करते हैं, तथा प्रतिदिन सदा इनके अचिन्त्यरूप का चिन्तवन करते रहते हैं, यह संसार में सारभूत वस्तु हैं । तीनों लोकों को उत्पन्न करनेवाली तथा मनोरथों को सिद्धि प्रदान करनेवाली हैं, इस कारण कलि के पापों को हरनेवाली इन देवीजी का मैं मन में ध्यान (स्मरण) करता हूँ ।।

उत्पत्तिस्थितिसंहृतीर्घटयितुं धत्ते त्रिरूपां तनुं
त्रैगुण्याज्जगतो मदीयविकृतिब्रह्माच्युतः शूलभृत् ।
तामाद्यां प्रकृतिं स्मरामि मनसा सर्व्वार्थसंसिद्धये
यस्याः स्मेरपदारविन्दयुगले लाभं भजन्तेऽमराः ।।

टीका—यह देवी संसार की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश के निमित्त ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र इन तीन मूर्तियों को धारण करती हैं । देवता इनके प्रस्फुटित खिले कमल की भाँति दोनों चरणों का सदा भजन करते हैं, संपूर्ण अर्थों की सिद्धि के निमित्त इन आद्या प्रकृति छिन्नमस्ता देवी का मैं मन में चिन्तवन करता हूँ ।।

अपि पिशित—परस्त्री— योगपूजापरोऽहं
बहुविधजडभावारम्भसम्भावितोऽहम् ।
पशुजनविरतोऽहं भैरवीसांस्थितोऽहं
गुरुचरणपरोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् ।।

टीका—मैं सदैव मद्यमांस, पर-स्त्री में आसक्त तथा योगपरायण हूँ । मैं जगदम्बा के चरणकमल में संलिप्त हो बाह्य जगत् में रहकर

जड़भावापन्न हूँ। मैं पशुभावापन्न साधक के अंग से भिन्न हूँ। सदा भैरवीगणों के मध्य में स्थित रहता हूँ तथा गुरु के चरणकमलों का ध्यान करता हूँ। मैं भैरवस्वरूप तथा मैं ही शिवस्वरूप हूँ ।।

इदं स्तोत्रं महापुण्यं ब्रह्मणा भाषितं पुरा
सर्व्वसिद्धिप्रदं साक्षान्महापातकनाशनम् ।।

टीका—इस महापुण्य दायक स्तोत्र को ब्रह्माजी ने कहा है। यह स्तोत्र सम्पूर्ण सिद्धियों का देनेवाला तथा बड़े-बड़े पातकों और उपपातकों का नाश करनेवाला है।

यः पठेत प्रातरुत्थाय देव्याः सन्निहितोऽपि वा ।
तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि वाञ्छितार्थप्रदायिनी ।।

टीका—हे देवि ! जो मनुष्य प्रातः काल के समय शय्या से उठकर अथवा छिन्नमस्ता देवि के पूजाकाल में इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसके सभी मनोरथों की सिद्धी शीघ्र ही प्राप्त होती है।

धनं धान्यं सुतां जायां हयं हस्तिनमेव च ।
वसुन्धरां महाविद्यामष्टसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ।।

टीका—इस स्तोत्र का पाठ करनेवाला मनुष्य धन, धान्य, पुत्र कलत्र अश्व, हाथी और पृथ्वी को प्राप्त करता है तथा अष्टसिद्धि और नव निद्धियों को निश्चय ही पाता है।

वैयाघ्राजिनरञ्जितस्वजघने रम्ये प्रलम्बोदरे ।
खर्व्वेऽनिर्वचनीयपर्व्वसुभगे मुण्डावलीमण्डिते ।
कर्त्री कुन्दरुचिं विचित्ररचनां ज्ञानं दधाने पदे ।
मातर्भक्तजनानुकम्पितमहामायेऽस्तु तुभ्यं नमः ।।

टीका—हे माता ! तुमने व्याघ्रचर्म द्वारा अपनी जंघाओं को रंजित किया है। तुम अत्यन्त मनोहर आकृतिवाली हो। तुम्हारा उदर (पेट) अधिक लम्बायमान है। तुम छोटी आकृतिवाली हो।

तुम्हारी देह अनिर्वचनीय त्रिवली से शोभित है। तुम मुक्तावली से विभूषित हो। तुम हाथ में कुन्दवत् श्वेतवर्ण विचित्र कर्त्री (कत्तरनी शस्त्र) धारण की हुई हो। तुम भक्तों के ऊपर सदा दया करती हो। हे महामाये ! तुमको मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ।

इति श्री तंत्राचार्य पण्डित रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय' कृत
भाषा टीका सहितं छिन्नमस्तास्तोत्र संपूर्णम् ।

छिन्नमस्ता-कवच

अब छिन्नमस्ता के कवच को मूल श्लोक (संस्कृत) में निम्न दिया जा रहा है तथा अर्थ हिन्दी भाषा में दिया है। साधकगण पाठ करते समय मूल श्लोक का ही प्रयोग करें।

हुं बीजात्मिका देवी मुण्डकर्तृधरापरा ।
हृदयं पातु सा देवी वर्णिनी डाकिनीयुता ।।

टीका—वर्णिनी डाकिनी से युक्त मुण्डकर्त्तृको धारण करनेवाली, हुं, बीजयुक्त महादेव जी मेरे हृदय की रक्षा करें ।।

श्रीं ह्रीं हुं ऐं चैव देवी पूर्व्वस्यां पातु सर्वदा ।
सर्व्वाङ्गं मे सदा पातु छिन्नमस्ता महाबला ।।

टीका—श्रीं ह्रीं हुं ऐं बीजात्मिका देवी मेरी पूर्व दिशा में और महाबला छिन्नमस्ता सदा मेरे सर्वांग की रक्षा करें।

वज्रवैरोचनीये हुं फट् बीजसमन्विता ।
उत्तरस्यां तथाग्नौ च वारुणे नैर्ऋतेऽवतु ।।

टीका—'वज्रवैरोचनीये हुं फट्' इस बीजयुक्त देवी उत्तर, अग्निकोण, वारुण और नैऋत्य दिशा में मेरी रक्षा करें ।।

इन्द्राक्षी भैरवी चैवासितांगी च संहारिणी ।
सर्व्वदा पातु मां देवी चान्यान्यासु हि दिक्षु वै ।।

टीका—इन्द्राणी भैरवी, असितांगी और संहारिणी देवी मेरी अन्यान्य सब दिशाओं में सर्वदा रक्षा करें ।।

इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेच्छिन्नमस्तकाम् ।
न तस्य फलसिद्धिः स्यात्कल्पकोटिशतैरपि ।।

टीका—इस कवच को जाने बिना जो पुरुष छिन्नमस्ता के मंत्र को जपता है, सो करोड़ कल्प में भी उसको मंत्र जप के फल प्राप्त नहीं होता।।

इति छिन्नमस्ताकवचम ।

धूमावती साधना

अब धूमावती साधन के मंत्र, जाप, ध्यान, यंत्र, जप होम और कवच आदि का वर्णन निम्न किया जाता है ।

धूमावती—मंत्र

धूँ धूँ धूमावती स्वाहा ।

इस मंत्र से धूमावती की आराधना पूजा, जपादि करें ।।

धूमावती ध्यान

विवर्णा चञ्चला रुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विवर्णकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ।।
काकध्वजरथारूढा विलम्बितपयोधरा ।
सूर्यहस्तातिरूक्षाक्षी धृतहस्ता वरान्विता ।।
प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहप्रिया ।।

टीका—धूमावती देवी विवर्णा, चंचला, रुष्टा और दीर्घांगी तथा मलिन (मैले) वस्त्र धारण करने वाली हैं, इनके केश विवर्ण और रुक्ष (रूखे) हैं, यह विधवारूपधारिणी संपूर्ण दाँत छीदे (बिखरे हुए) और दोनों स्तन लम्बे हैं, तथा ये काकध्वजवाले रथ में विराजमान हैं, देवी के दोनों नेत्र रुक्ष हैं । इनके एक हाथ में सूर्य और दूसरे हाथ में वरमुद्रा है । नासिका बड़ी और देह तथा नेत्र कुटिल हैं । यह भूख प्यास से व्याकुल हैं। इसके अलावा यह भयंकर मुखवाली और कलह में तत्पर हैं।।

धूमावती पूजन का यन्त्र

धूमावती पूजन के यंत्र की कोई व्यवस्था नहीं कही गई है। इसके लिये साधक को काली पूजन के यंत्र का प्रयोग करना चाहिये।

धूमावती मंत्रका जप होम।

एक लक्ष (एक लाख) मंत्र जपने से इसका पुरश्चरण होता है तथा गिलोय (गुर्च) की समिधाओं से उसका दशांश होम करे॥

धूमावती—स्तोत्र

भद्रकाली महाकाली डमरूवाद्यकारिणी।
स्फारितनयना चैव टकटंकितहासिनी॥
धूमावती जगत्कर्त्री शूर्पहस्ता तथैव च।
अष्टनामात्मकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिसंयुतः॥
तस्य सर्व्वार्थसिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं हि पार्वति॥

टीका—१ भद्रकाली, २ महाकाली, ३ डमरू बाजा बजानेवाली, ४ स्फारित नयन खोले हुए नेत्रवाली, ५ टकटैकित हासिनी, ६ धूमावती, ७ जगत्कर्त्री, ८ सूपहस्ता छाज हाथ में लिये, धूमावती का यह अष्टनामात्मक स्तोत्र पढ़ने से सभी कार्यों की सिद्धि होती है॥

धूमावती—कवच

धूमावती मुखं पातु धूं धूं स्वाहास्वरूपिणी।
ललाटे विजया पातु मालिनी नित्यसुंदरी॥

टीका—धूंधूंस्वाहास्वरूपिणी धूमावती मेरे मुख और नित्य सुंदरी मालिनी और विजया मेरे ललाट की रक्षा करें॥

कल्याणी हृदयं पातु हसरीं नाभिदेशके।
सर्व्वांगं पातु देवेशी निष्कला भगमालिनी॥

टीका—कल्याणी हृदय की, हसरीं नाभि की और निष्कला भगमालिनी देवी मेरे सर्वांग की रक्षा करें॥

सुपुण्यं कवचं दिव्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः ।
सौभाग्यमतुलं प्राप्य चांते देवीपुरं ययौ ।।

इस पवित्र दिव्य कवच को श्रद्धा भक्ति पूर्वक पाठ करने से इस लोक में अतुल सुख संभोग करके अन्त समय में देवी-पुर में जाता है ।।

बगला के विषय में

पाठकों व साधक गणों से निवेदन

अब सभी ग्रहारिष्टों की शान्ति, शत्रुनाश, एवं विपत्ति नाशन हेतु इस कलिकाल में बगलामुखी स्तोत्र से बढ़कर अन्य कोई दूसरा साधन नहीं है । मारण, मोहन, उच्चाटन, एवं वशीकरण के लिये तो यह अमोघ वाण है । यद्यपि मंत्र, कवच, स्तोत्र आदि में तंत्र भेद से पाठ भेद मिला करते हैं तथापि मंत्र महोदधि धन्वंतरि तन्त्र शिक्षा, मंत्र महार्णव, आदि मंत्र शास्त्र के वृहद् ग्रंन्थ ही प्रामाणिक माने जाते हैं । वनदुर्गा, महाविद्या, प्रत्यंगिरा तथा बगलामुखी स्तोत्रादि विशेष रूप से प्रचलित हैं । कोई भी मंत्रानुष्ठान, जप, पाठ, विधि के ज्ञान बिना सिद्ध नहीं होता । महाभाष्यकार ने लिखा है कि—

एकः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थ माह ।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्र शत्रुः स्वरतोऽपराधात् ।।

अर्थात एक भी अशुद्ध शब्द चाहे स्वर हो या व्यंजन, व्यर्थ में प्रयोग किया गया या बिना अर्थ जाने कोई भी वाणी रूपी वज्र, यजमान का वैसे ही अनिष्ट करता है जैसे इन्द्र ने वृत्रासुर को मारा था । अतः बिना अर्थ या विधि जाने भी देवी (शक्तियों) का पाठ जप नहीं करना चाहिये ।

बगला—साधन

अब बगला साधन के मंत्र, ध्यान, यंत्र, जप होम-स्तव कवच-आदि का वर्णन निम्न प्रकार है ।

बगला मुखी की उपासना में विशेष बात यह है कि साधक

पीतवर्ण (पीलेरंग) के वस्त्र पहन कर, पीले फूलों से देवी का पूजन करे तथा मंत्र जाप की संख्या प्रतिदिन निश्चित रक्खे, यानी प्रथम दिन से जितनी संख्या आरम्भ करे उसी क्रमानुसार प्रतिदिन उतनी ही संख्या रहनी चाहिये तथा जपमाला के विषय में भी शास्त्रों में लिखा है कि–

हरिद्रा मालया कुर्यात् जपं स्तम्भन कर्माणि।
स्फटिकैः पद्म बीजैश्च रुद्राक्षैः शुभ कर्मणि।।

बगला साधना के मंत्र, साधन, यंत्र, जप-होम, स्तव, कवच आदि का वर्णन निम्नलिखित है।

बगला–मंत्र

ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व्वदुष्टानां
वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय
कीलय बुद्धिं नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।।

इस षट्त्रिंशदक्षर मंत्र के द्वारा बगलामुखी की पूजा आराधना करे।

बगलामुखी-ध्यान

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेदी-
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीं-
देवीं स्मरामि धृतमुग्दरवैरिजिह्वाम्।।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं-
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।
गदाभिधातेन च दक्षिणेन-
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।।

टीका–सुधासागर के मणिमय मण्डप में रत्ननिर्मित वेदी के ऊपर जो सिंहासन है, बगलामुखी देवी उसी सिंहासन पर विराजमान

हैं । यह देवी पीतवर्ण और पीले वस्त्र पहिने हुई हैं पीतवर्ण के गहने और पीतवर्ण की ही माला से विभूषित हैं, इनके एक हाथ में मुग्दर और दूसरे हाथ में वैरी (शत्रु) की जिह्वा (जीभ) है । अपने बायें हाथ में शत्रु की जीभ का अग्रभाग धारण करके दाहिने हाथ के गदाघात से शत्रु को पीड़ित कर रहीं हैं । ये बगला देवी पीतवस्त्र से आवृत और दो भुजावाली हैं ।।

बगलामुखी यन्त्र

त्र्यस्त्रं षडस्त्रं वृत्तमष्टदलपद्मभूपुरान्वितम् ।

प्रथम त्रिकोण और उसके बाहर षट्कोण अंकित करके वृत्त और अष्टदल पद्म अंकित करें । उसके बहिर्भाग में भूपूर अंकित करके यंत्र प्रस्तुत करे । यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखना चाहिये ।।

बगलामुखी मन्त्र का जप-होम

पीले वस्त्र पहिनकर हल्दी की ग्रन्थि से निर्मित अर्थात् हल्दी की गांठों की बनी माला से नित्य प्रति एक लाख जप करें और पीले वर्ण के पुष्पों से उसका दशांश होम करें ।।

बगला-स्तोत्र (स्तव)

बगला सिद्ध विद्या च दुष्टनिग्रहकारिणी ।

स्तम्भिन्याकर्षिणी चैव तथोच्चाटनकारिणी ।।

भैरवी भीमनयना महेशगृहिणी शुभा ।

दशनामात्मकं स्तोत्रं पठेद्वा पाठयेद्यदि ।।

स भवेत् मंत्रसिद्धश्च देवीपुत्र इव क्षितौ ।।

टीका -बगला, सिद्धविद्या दुष्टों का निग्रह करनेवाली, स्तम्भिनी, आकर्षिणी, उच्चाटन करनेवाली, भैरवी, भयंकर नेत्रोंवाली महेश की गृहिणी तथा शुभा, यह दशनामात्मक देवी स्तोत्र का जो पुरुष पाठ करता है, अथवा दूसरे से पाठ कराता है, वह मन्त्र सिद्ध होकर पार्वती के पुत्र की भाँति पृथ्वी में विचरण करता है ।।

बगलामुखी—कवच

ओं ह्रीं मे हृदयं पातु पादौ श्रीबगलामुखी ।
ललाटे सततं पातु दुष्टनिग्रहकारिणी ॥

टीका—'ॐ ह्रीं' यह बीज मेरे हृदय की, श्रीबगलामुखी दोनों पैरों और दुष्ट निग्रहकारिणी मेरे ललाट की सदैव रक्षा करें ॥

रसनां पातु कौमारी भैरवी चक्षुषोर्म्मम ।
कटौ पृष्ठे महेशानी कर्णौ शङ्करभामिनी ।

टीका—कौमारी मेरी जीभ की, भैरवी नेत्रों की, महेशानी कमर तथा पीठ की और महेशभामिनी मेरे कानों की रक्षा करें ॥

वर्ज्जितानि स्थानानि यानि च कवचेन हि ।
तानि सर्व्वाणि मे देवी सततं पातु स्तम्भिनी ॥

टीका—जो जो स्थान कवच में नहीं कहे गये हैं, स्तम्भिनी मेरे उन सभी स्थानों की सदा रक्षा करें ।

अज्ञात्वा कवचं देवि यो भजेद्बगलामुखीम् ।
शस्त्राघातमवाप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ॥

टीका—हे देवि ! इस कवच को बिना जाने जो पुरुष बगलामुखी की उपासना करता है, उसकी शस्त्राघात से मृत्यु होती है, इसमें सशय नहीं, यह सत्य है ॥

मातंगी साधन

अब मांतमी साधन के मंत्र, ध्यान, यंत्र, जप-होम-स्तव एवं कवच का वर्णन निम्न लिखित है ।

मातंगी—मन्त्र ।

ॐ ह्रीं क्लीं हूँ मातङ्ग्यै फट् स्वाहा ।

इस मंत्र के द्वारा मातंगी देवी की पूजा, जप, उपासनादि करना चाहिये ।

मातंगी–ध्यान

श्यामाङ्गीं शशिशेखरां त्रिनयनां रत्नसिंहासनस्थिताम् ।
वेदैर्बाहुदण्डैरसिखेटकपाशांकुशधराम् ।।

टीका–मातंगी देवी श्यामवर्ण वाली अर्द्धचन्द्रधारिणी और त्रिनयन हैं, यह अपने चारों हाथों में खड्ग, खेटक, पाश और अंकुश, यह चारों अस्त्र धारण करके रत्ननिर्मित (रत्न जटित) सिंहासन पर विराजमान हैं ।।

मातंगी–यंत्र ।

षट्कोणाष्टदलं पद्मं लिखेद्यन्त्रं मनोहरम् ।

टीका–षट्कोण अङ्कित करके उसके बाहर अष्टदलपद्म अङ्कित करें । फिर इस षट्कोण में देवी का मूल मंत्र लिखकर यंत्र प्रस्तुत करें । यह यंत्र भोजपत्र पर अष्टगंध द्वारा लिखना चाहिये ।।

जप–होम ।

छै हजार की संख्या के जप से इस मंत्र का पुरश्चरण होता है और जपका दशांश घृत, शर्करा और मधुमिश्रित ब्रह्मवृक्ष की समिधा से हवन करना चाहिये ।।

मातंगी–स्तव ।

ईश्वर उवाच ।

आराध्य मातश्चरणाम्बुजे ते ब्रह्मादयो विश्रुतकीर्त्तिमापुः ।
अन्ये परं वा विभवं मुनीन्द्राःपरां श्रियं भक्तिभरेण चान्ये ।।

हे माता ! ब्रह्मादि देवताओं ने तुम्हारे चरणकमलों की आराधना करके विश्रुतकीर्ति-लाभ की है, तथा मुनीन्द्र भी परम विभव को प्राप्त हुए हैं और अनेकों ने भक्तिभाव से तुम्हारे चरण कमलों की आराधना करके अत्यन्त श्री लाभ प्राप्त किया है ।।

नमामि देवीं नवचन्द्रमौलिं मातङ्गिनीं चन्द्रकलावतंसाम् ।
आम्नायकृत्यप्रतिपादितार्थंप्रबोधयन्तीं हृदि सादरेण ।।

टीका—जिनके माथे में चन्द्रमा की कला सुशोभित है, जो वेद द्वारा प्रनिपादित अर्थ को सर्वदा आदर से हृदय में प्रबोधित करती हैं, उन्हीं मातंगिनी देवी को नमस्कार है ।।

विनम्रदेवासुरमौलिरत्नैर्विराजितं ते चरणारविन्दम् ।
अकृत्रिमाणां वचसां विगुल्फं पादात्पदं सिञ्जितनूपुराभ्याम् ।
कृतार्थयन्तीं पदवीं पदाभ्यामास्फालयन्तीं कुचवल्लकीं ताम् ।
मातङ्गिनीं मद्धृदये धिनोमि लीलांकृतां शुद्धनितम्बबिम्बाम् ।।

टीका—हे देवी ! तुम्हारे चरण कमल शिर झुकाये देवासुरों के शिरों के रत्नों द्वारा सुशोभित हैं । तुम अकृतिम वाक्य के अनुकूल हो तुम्हीं शब्दायमान नूपुरयुक्त अपने दोनों चरणों से इस पृथ्वीमण्डल को कृतार्थ करती हो और तुम्हीं सदा वीणा बजाती हो । तुम्हारे नितम्बबिम्ब अत्यन्त शुद्ध हैं, मैं अपने हृदय में तुम्हारा चिन्तन करता हूँ ।।

तालीदलेनार्पितकर्णभूषां माध्वीमदाघूर्णितनेत्रपद्माम् ।
घनस्तनीं शम्भुवधूं नमामि तडिल्लताकान्तवलक्षभूषाम् ।।

टीका—तुमने तालीदल (ताड़) का कानों में विभूषण (आभूषण) धारण किया है, माध्वीक मद्यपान से तुम्हारे नेत्रकमल विघूर्णित हो रहे हैं, तुम्हारे स्तन अत्यन्त कठिन हैं, तुम महादेवजी की वधू हो और तुम्हारी कान्ति विद्युल्लता (बिजली) की भाँति मनोहर है । मैं तुमको नमस्कार करता हूँ ।।

चिरेण लक्षं प्रददातु राज्यं स्मरामि भक्त्याजगतामधीशे ।
वलित्रयाङ्कं तव मध्यमम्ब नीलोत्पलं सुश्रियमावहन्तीम् ।।

टीका—हे माता ! मैं भक्ति सहित तुम्हारा स्मरण करता हूँ, तुम चिरनष्ट अर्थात् वहुत काल का नष्ट हुआ राज्य प्रदान करनेवाली हो, तुम्हारी देह का मध्यभाग तीन वलियों से अंकित है । तुम नीलोत्पल की भाँति श्री (शोभा) धारण किये हो ।।

कान्त्या कटाक्षैर्जगतां त्रयाणां विमोहयन्तीं सकलान् सुरेशि।
कदम्बमालाश्चितकेशपाशां मातङ्गकन्यां हृदि भावयामि॥

टीका– हे सुरेश्वरी ! तुम अपने शरीर की कांति और कटाक्ष द्वारा त्रिजगत्वासी मनुष्यों को मोहित करती हो, तुम्हारे केशपाश कदम्बमाला से बंधे हुए हैं। तुम्हीं मातंग कन्या हो, मैं अपने हृदय में तुम्हारा चिन्तन करता हूँ।

ध्यायेयमारक्तकपोलबिम्बं बिम्बाधरन्यस्तललाममवश्यम्।
अलोललीलाकमलायताक्षं मन्दस्मितं तेवदनं महेशि॥

टीका–हे देवि ! तुम्हारे जिस मुखकपोल-तटपर रक्तवर्ण बिम्बाधर परम सुन्दरता से पूर्ण हैं, जिसमें चञ्चल अलकावली विराजमान हैं, नेत्र बड़े और जिस मुख में मंद-मंद हास्य शोभा पाता है, मैं उसी मुखकमल का ध्यान करता हूँ॥

स्तुत्याऽनया शंकरधर्मपत्नीं मातंगिनीं वागधिदेवतां ताम्।
स्तुवन्ति ये भक्तियुता मनुष्याः परां श्रियं नित्यमुपाश्रयन्ति॥

टीका–जो पुरुष भक्तिमान् होकर शंकर की धर्मपत्नी वाणी की अधिष्ठात्री मातंगिनी की इस स्तव द्वारा स्तुति करता है, वह सदैव परम श्री को प्राप्त करता है॥

मातंगिनी–कवच।

शिरो मातंगिनी पातु भुवनेशी तु चक्षुषी।
तोतला कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं मम॥

टीका–मातंगिनी मेरे मस्तक की, भुवनेशी चक्षु (नेत्रों) को तोतला कर्ण (कानों) की और तिपुरा मेरे मुख की रक्षा करें॥

पातु कण्ठे महामाया हृदि माहेश्वरी तथा।
त्रिपुरा पार्श्वयोः पातु गुह्ये कामेश्वर मम॥

टीका–महामाया मेरे कण्ठ की, माहेश्वरी हृदय की, त्रिपुरा पार्श्व और कामेश्वरी गुह्यभाग की रक्षा करें॥

ऊरुद्वये तथा चण्डी जङ्घायाञ्च रतिप्रिया।
महामाया पदे पायात्सर्व्वाङ्गेषु कुलेश्वरी ॥

टीका–चण्डी दोनों उरुकी, रतिप्रिया जंघाकी, महामाया पद की और कुलेश्वरी सर्व्वांग की रक्षा करें ॥

य इदं धारयेन्नित्यं जायते सर्व्वदानवित्।
परमैश्वर्य्यमतुलं प्राप्नोति नात्र संशयः ॥

टीका–जो पुरुष इस कवच को धारण करते हैं, वह सर्व-दानज्ञ (सदा दानी) होते हैं और अतुल ऐश्वर्य्य के प्राप्त होते करते हैं। इसमें सन्देह नहीं है ॥

कमला (लक्ष्मी) साधन

अब कमला साधन के मन्त्र, यंत्र, तंत्र, जप-होम तथा कवच का वर्णन निम्न है।

कमला (लक्ष्मी) मंत्र

श्रीं इस एकाक्षर मंत्र से ही कमला(लक्ष्मी) की उपासना करें ॥

कमला–ध्यान

कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरिप्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै-
र्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम्।
बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः कीरीटोज्ज्वलां
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

टीका–कमला देवी का शरीर स्वर्ण के समान कान्तिमान् है, इनको हिमगिरि के समान बड़े आकारवाले चार हाथी सूंड उठाकर सुधासे पूर्ण सुवर्ण घड़ों से (कमला का) अभिषेक करते हैं, इनके चार हाथ में वर और अभयमुद्रा तथा दो कमल हैं। मस्तक में रत्नमुकुट तथा पट्टवस्त्र धारे हैं और यह पद्म (कमल) पर स्थित हैं ॥

कमला के निमित्त जप होम

बारह लक्ष जपने से इस मन्त्र का पुरश्चरण होता है और घृत मधु तथा शर्करायुक्त बारह हजार पद्म वा तिलद्वारा होम करना चाहिये ॥

कमला-स्तोत्र

श्रीलक्ष्मी नमः

श्रीशंकर उवाच।

अथातः संप्रवक्ष्यामि लक्ष्मीस्तोत्रमनुत्तमम्।
पठनात् श्रवणाद्यस्य नरो मोक्षमवाप्नुयात्।।

टीका—श्री महादेवी जी बोले हे पार्वति! अब अति उत्तम लक्ष्मीस्तोत्र कहता हूँ, इसको पढ़ने वा सनने से मनुष्यों को मुक्ति (मोक्ष) की प्राप्ति होती है।।

गुह्याद् गुह्यतरं पुण्यं सर्व्वदेवनमस्कृतम्।
सर्व्वमंत्रमयं साक्षाच्छृणु पर्व्वतनन्दिनि।।

हे पर्वतनन्दिनि! यह गुह्य से गुह्यतर सर्वदेवों से नमस्कृत और सर्व मन्त्रमय है, इसको सुनो।।

अनन्तरूपिणी लक्ष्मीरपारगुणसागरी।
अणिमादिसिद्धिदात्री शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका—हे देवि लक्ष्मि! तुम अनन्तरूपिणी और अपार गुणों की सागरस्वरूप हो और तुम्हीं प्रसन्न होकर अणिमादि सिद्धि देती हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।।

आपदुद्धारिणी त्वं हि आद्या शक्तिः शुभा परा।
आद्या आनन्ददात्री च शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

हे लक्ष्मी देवि! तुम्हीं प्रसन्न होकर नम्र हुए भक्तों को विपदसे उद्धार करती हो, तुम्हीं कल्याणी और आद्या शक्ति हो, तुम्हीं सबकी आदि और तुम्हीं आनन्ददायिनी हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।।

इन्दुमुखी इष्टदात्री इष्टमंत्रस्वरूपिणी।
इच्छामयी जगन्मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

हे देवि जगन्माता लक्ष्मी! तुम्हारा मुख पूर्णचन्द्रमा की भाँति प्रकाशमान है, तुम्हीं इष्टमन्त्रस्वरूपिणी और इच्छामयी हो और तुम्हीं अभीष्ट फल देती हो, तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।।

उमा उमापतेस्त्वन्तु ह्युत्कण्ठाकुलनाशिनी।
उर्व्वीश्वरी जगन्मातर्लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका—हे देवि लक्ष्मि! तुम्हीं उमापति की उमा हो, तुम्हीं उत्कण्ठित मनुष्यों की उत्कण्ठा का नाश करती हो, तुम्हीं पृथ्वी की स्वामिनी (ईश्वरी) हो, तुमको नमस्कार करता हूँ।।

ऐरावतपतिपूज्या ऐश्वर्याणां प्रदायिनी।
औदार्य्यगुणसम्पन्ना लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

हे देवि! तुम्हीं ऐरावतपति देवराज इन्द्र की वन्दनीया हो, तुम्हीं प्रसन्न होने पर सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान कर सकती हो तुम्हीं उदारतापूर्ण गुणों से विभूषित हो, तुमको नमस्कार करता हूँ।

कृष्णवक्षःस्थिता देवि कलिकल्मषनाशिनी।
कृष्णचित्तहरा कर्त्री शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

हे कमले देवी! तुम सदा श्रीकृष्ण के वक्षःस्थल में विराजमान रहती हो, तुम्हारे बिना और कोई भी कलिकल्मषध्वंस करने में समर्थ नहीं है, तुमने ही श्रीकृष्ण का चित्त हरण किया है, अतः तुम्हीं सर्वकर्त्री हो, तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।।

कन्दर्पदमना देवि कल्याणी कमलानना।
करुणार्णवसम्पूर्णा शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका—हे देवि! तुमने ही कामदेव के दर्प का हरण किया है, तुम्हीं कल्याणमयी हो, तुम्हारा मुख कमल की भाँति मनोहर है और तुम्हीं दया की एकमात्र सागरस्वरूपा हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।।

खञ्जनाक्षी खंजनासा देवि खेदविनाशिनी।
खंजरीटगतिश्चैव शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

टीका—हे देवि! तुम खञ्जनाक्षी अर्थात् खञ्जन के नेत्रों की भाँति सुनयना हो, तुम्हारी नासिका गरुड़ की नासिका के समान मनोहर है, तुम अपने आश्रित जनों का खेद विनाश करती हो और तुम्हारी गति (चाल) खञ्जरीट के समान है, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

गोविन्दवल्लभा देवी गन्धर्वकुलपावनी।
गोलोकवासिनी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

हे जननि! तुम्हीं वैकुण्ठाधिपति गोविन्द की प्रियतमा अर्थात् प्यारी हो, तुम्हारे अनुग्रह से ही गन्धर्वकुल पवित्र हुआ तथा तुम सर्वदा गोलोकधाम में विहार (निवास) करती हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ॥

ज्ञानदा गुणदा देवी गुणाध्यक्षा गुणाकरी।
गन्धपुष्पधरा मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

हे माता! तुम्हीं एकमात्र ज्ञानकी देनेवाली और गुणों की दायिनी हो, तुम्हीं गुणों की अध्यक्षा और तुम्हीं गुणों की आधार हो। हे माता तुम गन्धपुष्प द्वारा निरन्तर शोभित रहती हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ॥

घनश्यामप्रिया देवि घोरसंसारतारिणी।
घोरपापहरा चैव शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

टीका—हे कमले! तुम्हीं घनश्याम हरि की प्रियतमा अर्थात् प्यारी हो, तुम्हीं घोरतर संसार सागर से रक्षा कर सकती हो, तुम्हारे अतिरिक्त और कोई भी भयंकर पापों से उद्धार करने में समर्थ नहीं है अतः मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

चतुर्वेदमयी चिन्त्या चित्तचैतन्यदायिनी ।
चतुराननपूज्या च शिरसा प्रणमाम्यहम् ।।

हे लक्ष्मी ! तुम्हीं चतुर्वेदमयी और एकमात्र तुम्हीं योगिगणों की चिन्तनीया हो, तुम्हारे प्रसाद से ही चित्त में चैतन्यता का संचार होता है, जगत्पति चतुरानन (ब्रह्मा) भी तुम्हारी पूजा करते हैं, अतएव हे माता मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ ।

चैतन्यरूपिणी देवि चन्द्रकोटिसमप्रभा ।
चन्द्रार्कनखरज्योतिर्लक्ष्मि देवि नमाम्यहम् ।।

टीका—हे देवि ! तुम चैतन्यरूपिणी हो, तुम्हारे देह की कांति करोड़ों चन्द्रमा के समान रमणीय है, तुम्हारे चरणों की दीप्ति चन्द्र सूर्य की कांति से भी अधिक देदीप्यमान है, हे लक्ष्मी मैं तुमको नमस्कार करता हूँ ।

चपला चतुराध्यक्षी चरमे गतिदायिनी ।
चराचरेश्वरी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ।।

टीका—हे देवि लक्ष्मि ! तुम सदा एक ही स्थान में वास नहीं करती, इसी लिए तुम्हारा 'चपला' (चंचला) नाम हुआ है, अंतकाल में एकमात्र तुम्हीं गति देती हो, तुम्हीं चराचर जीवों की अधीश्वरी (स्वामिनी) हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ ।।

छत्रचामरयुक्ता च छलचातुर्य्यनाशिनी ।
छिद्रौघहारिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ।।

हे जननि ! तुम्हीं शोभायमान छत्र और चामर से परम शोभा पाती हो, छल चातुरी (छल चातुर्य) सब ही तुम्हारे प्रभाव से नाश होते है, तुम्हीं छिद्र अर्थात् पाप समूहों को नष्ट करती हो; अतः मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ ।।

जगन्माता जगत्कर्त्री जगदाधाररूपिणी।
जयप्रदा जानकी च शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

हे जननि! तुम्हीं जगत् की माता हो, तुम्हीं जगत् का एक मात्र आधार तथा जयदात्री हो और तुम्हीं जानकी रूप से पृथ्वी में अवतीर्ण हुई हो, अतः मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

जानकीशप्रिया त्वं हि जनकोत्सवदायिनी।
जीवात्मनां च त्वं मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका–हे मातुः! तुम्हीं जानकीपति श्रीरामचन्द्र की सहधर्म्मिणी (प्रियतमा) हो तुम्हीं राजा जनक को आनन्द देने वाली हो और तुम्हीं सर्वजीवों (प्राणियों) की आत्मस्वरूपा (आत्मा) हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।।

झिञ्जीरवस्वना देवि झंझावातनिवारिणी।
झर्झरप्रियवाद्या च शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका–हे देवि! तुम्हारे कण्ठ का स्वर झिञ्जी-रव की भाँति मधुर है, तुम झंझावात वर्षायुक्त वायु के हाथ से सहज में ही रक्षा करने वाली हो। तुम गोवर्द्धनादि पर्वतों में झर्झरवाद्य में अत्यन्त अनुरक्त हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।।

अर्थप्रदायिनी त्वंहि त्वञ्च ठकाररूपिणी।
ढक्कादिवाद्यप्रणया डम्फवाद्यविनोदिनी।।
डमरूप्रणया मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका–हे मातः! एकमात्र तुम्हीं अर्थ प्रदान करने वाली हो, तुम्हीं ठकाररूपिणी (चन्द्र मण्डलस्वरूपिणी) हो, डमरू और डम्फ वाद्य से तुमको अत्यन्त प्रसन्नता होती है और ढक्कादि वाद्य (एक प्रकार का बाजा) तुम्हें प्रिय है, मैं मस्तक झुकाकर चरण कमलों में तुम्हें प्रणाम करता हूँ।।

तप्तकांचनवर्णाभा त्रैलोक्यलोकतारिणीम्।
त्रिलोकजननी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका—हे देवि लक्ष्मी! तुम्हारे शरीर का वर्ण तपे हुए काञ्चन की भांति उज्ज्वल है, तुम त्रैलोक्यवासी जीवी की रक्षा करती हो, तुम्हीं त्रिलोक की जननी हो मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।।

त्रैलोक्यसुन्दरी त्वं हि तापत्रयनिवारिणी।
त्रिगुणधारिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका—हे जननि! तुम त्रैलोक्य सुन्दरी हो, तुम्हीं तीनों प्रकार के तापों को विनाश करती हो, तुम्हीं सत्व, रज और तमोगुण धारिणी हो मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।।

त्रैलोक्यमंगला त्वं हि तीर्थमूलपदद्वया।
त्रिकालज्ञा त्राणकर्त्री शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका—हे देवि! तुम्हीं तीनों लोकों का मंगल करती हो, तुम्हारे दोनों चरण सम्पूर्ण तीर्थ के मूल रूप हैं। तुम "त्रिकाल" भूत, भविष्य और वर्तमान को जानती हो, तुम्हीं जीवों की रक्षा करने वाली हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।।

दुर्गतिनाशिनी त्वं हि दारिद्यापद्विनाशिनी।
द्वारकावासिनी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका—हे जननि! तुम आपदा, दुर्गति और दरिद्र मनुष्य की दरिद्रता दूर करती हो, तुम्हीं द्वारकापुरी में निवास करने वाली हो। मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।

देवतानां दुराराध्या दुःखशोकविनाशिनी।
दिव्याभरणभूषांगी शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका—हे देवि! देवता भी बहुत आराधना अथवा बहुत कष्ट से तुम को पाते हैं, तुम प्रसन्न होने पर सम्पूर्ण शोक दुःख नष्ट कर देती हो,

तुम दिव्य भूषणों, वस्त्रालंकारों से शोभायमान हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।।

दामोदरप्रिया त्वं हि दिव्ययोगप्रदर्शिनी।
दयामयी दयाध्यक्षी शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका—हे जननि! तुम दामोदर की प्रिया हो, तुम्हारे प्रसाद से ही दिव्य योग प्राप्त होते हैं, तुम्हीं दयामयी और दया को अधिष्ठात्री हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।।

ध्यानातीता धराध्यक्षा धनधान्यप्रदायिनी।
धर्म्मदा धैर्यदा मातःशिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका—हे मातः! तुम ध्यान से परे ही तुम्हीं पृथ्वी की अध्यक्ष और तुम्हीं भक्तों को धन धान्य इत्यादि प्रदान करती हो, तुम्हीं धर्म्म और धैर्य देती हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।।

नवगोरोचना गौरी नन्दनन्दनगेहिनी।
नवयौवनचार्वङ्गी शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका—हे देवि! तुम नवगोरोचन की भाँति गौरवर्ण हो, तुम्हीं नन्दनन्दन हरि की प्रियतमा हो, तुम्हीं नवयौवन के कारण परम कान्तिमती हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।।

नानारत्नादिभूषाढ्या नानारत्नप्रदायिनी।
नितम्बिनी नलिनाक्षी लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका—हे देवि! तुम अनेक प्रकार के रत्नादि आभूषणों से विभूषित होकर परम शोभा पाती हो, तुम्हीं प्रसन्न होने पर नानारत्न प्रदान करती हो, तुम्हीं विशाल नितम्बवती और तुम्हारे नेत्र कमल के पत्ते की भांति चौड़े हैं, मैं तुमको शिर झुकाकर प्रणाम करता हूँ।।

निधुवनप्रेमानन्दा निराश्रयगतिप्रदा।
निर्व्विकारा नित्यरूपा लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका–हे देवि लक्ष्मी! तुम विकाररहित तथा नित्यरूपिणी हो, निधुवन में बिहार करने से तुमको प्रेमानन्द की प्राप्ति होती है, तुम्हीं निराश्रय जन को गति देती हो, मैं तुमको नमस्कार करती हूँ।।

पूर्णानन्दमयी त्वं हि पूर्णब्रह्मसनातनी।
परा शक्तिः परा भक्तिर्लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका–हे देवि लक्ष्मी! तुम पूर्णनन्दमयीनी हो, तुम्हीं पूर्णब्रह्म स्वरूपिणी हो, तुम्हीं परमशक्ति और तुम्हीं परम भक्तिस्वरूप हो, मैं तुमको नमस्कार करता हूँ।।

पूर्णचन्द्रमुखी त्वं हि परानन्दप्रदायिनी।
परमार्थप्रदा लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका–हे देवि लक्ष्मी! तुम्हारा वदन पूर्णचन्द्रमा की भाँति शोभायमान है, तुम्हीं परमानन्द और परमार्थ दान करती हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।।

पुण्डरीकाक्षिणी त्वं हि पुण्डरीकाक्षगेहिनी।
पद्मरागधरा त्वं हि शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका–हे माता! तुम्हारे नेत्र कमल की भाँति विस्तृत हैं, तुम्हीं पुण्डरीकाक्ष हरि की गृह स्वामिनी हों, तुम्हीं पद्मरागमणि धारण, करके शोभा पाती हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।।

पद्मा पद्मासना त्वं हि पद्ममालाविधारिणी।
प्रणवरूपिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका–हें मातः तुम पद्मासन पर विराजमान रहती हो इसी लिए तुम्हारा 'पद्मा' नाम हुआ है, तुम्हारे गले में मनोहर पद्ममाला रहती है, तुम्हीं ओंकाररूपिणी हो, मैं तुमको मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।।

फुल्लेन्दुवदना त्वं हि फणिवेणिविमोहिनी।
फणिशायिप्रिया मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

हे जननि! तुम्हारा मुख शुभ्र चन्द्रमा की किरण की भाँति निर्मल है, तुम्हारे शिर की वेणी सर्प (नागिन) की भाँति लम्बायमान होकर परम शोभा पाती है। तुम शेष-शायी देवदेव हरि की गृहिणी हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।।

विश्वकर्त्री विश्वभर्त्री विश्वत्रात्री विश्वेश्वरी।
विश्वाराध्या विश्वबाह्या लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका—हे लक्ष्मी देवी तुम्हीं विश्व का निर्माण करने वाली, तुम्हीं विश्वका पालन करने वाली और तुम्हीं सम्पूर्ण विश्वकी ईश्वरी हो, तुम्हीं विश्ववासी जीवों की आराध्या और तुम्हीं विश्व में सर्वत्र दीप्ति मान रहती हो, तुम्हीं विश्व से परे हो, मैं तुमको नमस्कार करता हूँ।।

विष्णुप्रिया विष्णुशक्तिर्बीजमंत्रस्वरूपिणी।
वरदा वाक्यसिद्धा च शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका—हे देवि! तुम विष्णुकी प्रिया हो और तुम्हीं विष्णु की एक मात्र शक्ति हो, तुम्हीं बीजमंत्र स्वरूपिणी, तुम्हीं वर दायिनी वाक्य सिद्धा हो, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।।

वेणुवाद्यप्रिया त्वं हि वंशीवाद्यविनोदिनी।
विद्युद्गौरी महादेवि लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका—हे महादेवि! हे कमला! तुम विद्युत की भाँति गौरवर्ण हो, वेणुवाद्य और दूसरे शब्द से तुमको परम प्रीतिका संचार होता है, तुमको नमस्कार है।।

भुक्तिमुक्तिप्रदा त्वं हि भक्तानुग्रहकारिणी।
भवार्णवत्राणकर्त्री लक्ष्मि देवी नमोऽस्तु ते।।

टीका—हे कमला! तुम भक्ति और मुक्ति दाता हो; तुम भक्तों के प्रति अनुग्रह दिखाती हो और तुम्हीं आश्रित जनोंको भवसागर में पार करती हो। मैं तुमको नमस्कार करता हूँ।।

भक्तप्रिया भागीरथी भक्तमंगलदायिनी।
भयदा भयदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका—हे लक्ष्मी! तुम भक्तों के प्रति आन्तरिक स्नेह प्रकाशित करती हो, तुम्हीं भागीरथी गंगास्वरूपिणी और कल्याणदायिनी हो, तुम्हीं दुष्टों को भय देती और शरणागतों को अभय देती हो! तुमको नमस्कार है।

मनोऽभीष्टप्रदा त्वं हि महामोहविनाशिनी।
मोक्षदा मानदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका—हे लक्ष्मी देवि! तुम मनोरथ पूर्ण करती और महामोक्षका नाश करती हो, तुम्हीं मोक्ष और मान सम्मान देती हो, तुमको नमस्कार है।।

महाधन्या महामान्या माधवस्यात्ममोहिनी।
मुखराप्राणहन्त्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका—हे लक्ष्मी देवि! हे कमले! तुम्हीं परम धन्या और माननीया हो, धन्यवाद में क्या सम्मान में तुम्हारी अपेक्षा श्रेष्ठ दूसरा नहीं है, तुमने ही माधवका मन मोहित किया है, जो स्त्रियाँ बहुत बोलने वाली हैं तुम उनका विनाश करती हो, तुमको नमस्कार है।।

यौवनपूर्णसौन्दर्य्या योगमाया तथेश्वरी।
युग्म श्रीफलवृक्षा च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका—हे लक्ष्मी! तुम पूर्ण यौवन के कारण परम कान्तिमान हो। तुम्हीं मूर्तिमान् योगमाया और तुम्हीं योग की ईश्वर हो, तुम्हारे हृदय पर नारियल के समान ऊँचे दो कुच (स्तन) शोभा पाते है मैं तुमको नमस्कार करता हूँ।

युग्माङ्गदविभूषाढ्या युवतीनां शिरोमणिः।
यशोदासुतपत्नी च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका–हे कमले देवि! तुम्हारी दोनों बाहुओं में दो अंग बाजूबन्द धारण किये हैं, तुम्हीं युवतियों में शिरोमणि हो, तुम्हीं यशोदानन्दन की पत्नी हो, तुमको नमस्कार है।।

रूपयौवनसम्पन्ना रत्नालंकारधारिणी।
राकेन्दुकोटिसौन्दर्य्या लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका–हे लक्ष्मी देवि! तुम परम रूपवती और यौवन सम्पन्न, रत्नालंकारों से विभूषित होकर परम शोभा धारण करती हो, तुम्हारी कान्ति करोड़ों पूर्ण चन्द्रमासे भी उज्ज्वल है, तुमको नमस्कार है।।

रमा रामा रामपत्नी राजराजेश्वरी तथा।
राज्यदा राज्यहन्त्री च लक्ष्मिदेवि नमोऽस्तु ते।।

टीका–हे लक्ष्मी देवि! तुम्हीं 'रमा' 'रामा' रामपत्नी जानकी, राजराजेश्वरी और प्रसन्न होने पर राज्य प्रदान करने वाली हो और तुम्हीं कुपित होकर राज्य विनाश करती हो, तुमको नमस्कार है।।

लीलालावण्यसम्पन्ना लोकानुग्रहकारिणी।
ललना प्रीतिदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका–हे लक्ष्मीं! तुम लीला में प्रीति करती और लावण्य सम्पन्न हो, तुम्हीं लोगों पर अनुग्रह करती हो, स्त्रीजन तुम्हारे द्वारापरम प्रीति लाभ करती है, तुमको नमस्कार है।।

विद्याधरी तथा विद्या वसुदा त्वन्तु वन्दिता।
विन्ध्याचलवासिनी च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका–हे लक्ष्मी देवि! तुम विद्या, विद्याधरी, धनदायक (धनदात्री) और तुम्हीं एकमात्र वंदनीय हो, तुम्हीं विन्ध्यवासिनी रूप विन्ध्याचल में निवास करती हो, तुमको नमस्कार है।।

शुभकाञ्चगौराङ्गी शङ्खकंकणधारिणी।
शुभवा शीलसम्पन्ना लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका–हे कमले देवि! तुम निर्मल काञ्चन की भाँति और वर्ण हो, तुम्हारे हाथ में शंख और कंकण विराजमान रहता है, तुम कल्याण दायिनी और सच्चरितसम्पन्न हो, तुमको नमस्कार है।।

षट् चक्रभेदिनी त्वं हि षडैश्वर्य्यप्रदायिनी।
षोडशी वयसा त्वन्तु लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका–हे लक्ष्मी देवी! तुम्हीं षड्चक्रभेदिनी हो और तुम्हीं छः प्रकार का ऐश्वर्य प्रदान करती हो, तुम्हीं सोलह वर्ष की अवस्था वाली नवयुवती हो, तुमको नमस्कार है।।

सदानन्दमयी त्वं हि सर्व्वसम्पत्तिदायिनी।
संसारतारिणी देवि शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका–हे कमले देवि! तुम सुन्दर केशों वाली परमसुन्दरी, मनमोहिनी हो, तुम्हीं देवताओं की ईश्वरी और सिद्धिप्रदायिनी हो, तुम्हारे अनुग्रह से ही सुख प्राप्त होती है, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।।

सुकेशी सुखदा देवि सुन्दरी सुमनोरमा।
सुरेश्वरी सिद्धिदात्री शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका–हे देवि! तुम सुन्दर केशों वाली परमसुन्दरी, मनमोहिनी हो, तुम्हीं देवताओं की ईश्वरी और सिद्धिप्रदायिनी हो, तुम्हारे अनुग्रह से ही सुख प्राप्त होता है, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।।

सर्व्वसंकटहन्त्री त्वं सत्यसत्त्वगुणान्विता।
सीतापतिप्रिया देवि शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका–हे देवि! तुम सम्पूर्ण संकट दूर करती हो, तुम सत्यपरायण और सत्वगुणशालिनी हो, तुमने ही सीतापति रामचन्द्र की पत्नी रूप से अयोध्यापुरी को पवित्र किया है, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।।

हेमांगिनी हास्यमुखी हरिचित्तविमोहिनी।
हरिपादप्रिया देवि शिरसा प्रणमाम्यहम्।।

टीका–हे देवि! तुम तप्तकांचन की भाँति गौरवर्ण हो, तुमने हरि का मन मोहित किया है, हरि के चरणों में ही तुम्हारा मन अत्यन्त आसक्त रहता है, मैं मस्तक झुकाकर तुमको प्रणाम करता हूँ।।

क्षेमंकरी क्षमादात्री क्षौमवासोविधारिणी।
क्षीणमध्या च क्षेत्राङ्गी लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते।।

टीका–हे लक्ष्मी देवि! तुम कल्याण करने वाली, मोक्षदात्री क्षौम वस्त्र धारिणी हो, तुम्हारी कमर क्षीण होने से परम शोभा पाती है, तुम्हारे अंग में संपूर्ण तीर्थ और क्षेत्र विद्यमान है, तुमको नमस्कार है।

।। श्रीशंकर उवाच।।

अकारादि क्षकारान्तं लक्ष्मीदेव्याः स्तवं शुभम्।
पठितव्यं प्रयत्नेन त्रिसन्ध्यञ्च दिने दिने।।

टीका–श्री महादेव जी बोले हे पार्वती! तुम्हारे पूछने के अनुसार मैं लक्ष्मीमाहात्म्य और अकारादि क्षकारान्त वर्णमय लक्ष्मीस्तोत्र का वर्णन करता हूँ। इस कल्याण कारी स्तोत्र का प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में यत्नपूर्वक पाठ करना चाहिये।।

पूजनीया प्रयत्नेन कमला करुणामयी।
वाञ्छाकल्पलता साक्षाद्भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी।।

टीका–जो अभिलषित देने से कल्पलतिका स्वरूप है, जो कि भुक्ति और मुक्ति प्रदान करता हैं, उन्हीं करुणामयी कमला की यत्नसहित पूजा करें।।

इदं स्तोत्रं पठेद्यस्तु शृणुयात् श्रावयेदपि।
इष्टसिद्धिर्भवेत्तस्य सत्यं सत्यं हि पार्वति।।

टीका–जो मनुष्य इस लक्ष्मी स्तोत्र को पढ़ते, अथवा सुनते हैं तथा दूसरे मनुष्य को सुनाते हैं, हे पार्वती! उनके सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होते हैं, इसमें सन्देह नहीं है।।

इदं स्तोत्रं महापुण्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः।
तञ्च दृष्ट्वा भवेन्मूको वादी सत्यं न संशयः।।

टीका–हे गिरजा! जो पुरुष भक्तिसहित इस पवित्र स्तोत्र का पाठ करते हैं, उनके दर्शन मात्र से ही वादी मूकता को प्राप्त होता है इसमें संशय नहीं है।।

श्रणुयाच्छ्रावयेद्यस्तु पठेद्वा पाठयेदपि।
राजानो वशमायान्ति तं दृष्ट्वा गिरिनन्दिनि।।

टीका–हे गिरिनंदिनी! जो इस स्तोत्र को सुनते तथा दूसरे को सुनाते व अध्ययन करते हैं, दूसरे को पढ़ाते हैं, उनके दर्शन मात्र से ही राजा लोग वशीभूत होते हैं।।

तं दृष्ट्वा दुष्टसङ्घाश्च पलायन्ते दिशो दश।
भूतप्रेतग्रहा यक्षा राक्षसाः पन्नगादयः।।
विद्रवन्ति भयार्ता वै स्तोत्रस्यापि च कीर्त्तनात्

टीका–जो मनुष्य इस लक्ष्मी स्तोत्रका कीर्तन करते हैं, उनके दर्शनमात्र से ही दुष्टगण दशों दिशा में भाग जाते हैं, यानी भूत, प्रेत, ग्रह, यक्ष राक्षस, सर्प आदि सभी डरकर चले जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं।।

सुराश्च ह्यसुराश्चैव गन्धर्वकिन्नरादयः।
प्रणमन्ति सदा भक्त्या तं दृष्ट्वा पाठकं मुदा।।

टीका–जो पुरुष इस स्तोत्र का पाठ करते हैं, उनको देवता दानव गन्धर्व, किन्नर आदि दर्शनमात्र से ही आनन्द और भक्ति सहित प्रणाम करते हैं।

धनार्थी लभते चार्थं पुत्रार्थी च सुतं लभेत्।
राज्यार्थी लभते राज्यं स्तवराजस्य कीर्त्तनात्।।

टीका–इस स्तव को कीर्त्तन करने से धनार्थी धन, पुत्रार्थी पुत्र और राज्यार्थी सज्य को प्राप्त होता है।

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्व्वंगनागमः।
महापापोपपाञ्च तरन्ति स्तवकीर्त्तनात्।।

टीका–इस स्तव के कीर्तन करनेसे ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु स्त्रीगमन जैसे महापातक, उपपातक आदि सम्पूर्ण पापों से छुटकारा होता है।

गद्यपद्यमयी वाणी मुखात्तस्य प्रजायते।
अष्टासिद्धिमवाप्नोति लक्ष्मीस्तोत्रस्य कीर्तनात्।।

टीका–इस लक्ष्मी स्तोत्रके कीर्त्तन, पाठ करने से अपने आपही मुख से गद्य पद्य मयी वाणी प्रादुर्भूत होती है और कीर्त्तन करने वाली को आठ प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती है।

वन्ध्या चापि लभेत् पुत्रं गर्भिणी प्रसवेत्सुतम्।
पठनात्स्मरणात् सत्यं वच्मि ते गिरिनन्दिनी।।

हे पर्वतनन्दिनि! इस स्तोत्र के पढ़ने वा स्मरण करने से, वंध्या (बाँझ) स्त्री भी पुत्र प्राप्त करती है और गर्भवती स्त्री को श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त होती है।

भूर्ज्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुंकुमेन तु।
भक्त्या संपूजयेद्यस्तु गन्धपुष्पाक्षतैस्तथा।।
धारयेद्दक्षिणे बाहौ पुरुषः सिद्धिकांक्षया।
योषिद्वामभुजे धृत्वा सर्व्वसौख्यमयी भवेत्।।

टीका–जो पुरुष लक्ष्मी की कामना करते हैं, वे भोजपत्र पर रोचना और कुंकुमद्वारा इस स्तव को लिखकर गन्धपुष्पादिस भक्ति

पूर्वक अर्चना करके दाहिने भुजा में धारण करें और स्त्रियाँ वाम भुजा में धारण करने से सर्वसुखों से सुखी होती हैं।

विषं निर्विषतां याति अग्निर्याति च शीतताम्।
शत्रवो मित्रतां यान्ति स्तवस्यास्य प्रसादतः।।

टीका—इस स्तवके प्रसादसे विष में निर्विषता, अग्नि में शीतलता और शत्रुओं में मित्रता होती है।

बहुना किमिहोक्तेन स्तवस्यास्य प्रसादतः।
वैकुण्ठे च वसेन्नित्यं सत्यं वच्मि सुरेश्वरि।।

हे सुरेश्वरि! इसका माहात्म्य और अधिक क्या वर्णन करूँ? इसके प्रसाद से अन्त समय में वैकुण्ठ धाम में वास होता है, इसमें सन्देह नहीं।

कमला (लक्ष्मी) कवच को मूल संस्कृत श्लोक में दिया जा रहा है और उसकी हिन्दी में टीका भी है। साधकों को चाहिये कि पाठ करते समय मूल संस्कृत श्लोक का ही प्रयोग करें।

लक्ष्मीकवच

लक्ष्मीर्मे चाग्रतः पातु कमला पातु पृष्ठतः।
नारायणी शीर्षदेशे सर्व्वांगे श्रीस्वरूपिणी।।

टीका—लक्ष्मीं मेरे अग्र भाग की रक्षा करें, कमला मेरी पीठ की रक्षा करें, नारायणी मेरे मस्तक की और श्रीस्वरूपिणी देवी मेरे सर्व्वांग की रक्षा करें।

रामपत्नी प्रत्यंगे तु सदावतु रमेश्वरी।
विशालाक्षी योगमाया कौमारी चक्रिणी तथा।।
जयदात्री धनदात्री पाशाक्षमालिनी शुभा।
हरिप्रिया हरिरामा जयंकरी महोदरी।।
कृष्णपरायणा देवी श्रीकृष्णमनोमोहिनी।
जयंकरी महारौद्री सिद्धिदात्री शुभंकरी।।

सुखदा मोक्षदा देवी चित्रकूटनिवासिनी।
भयं हरेत्सदा पायाद् भवबन्धाद्विमोचयेत्।।

टीका–जो रामपत्नी और रमेश्वरी है, वह विशालनेत्र योगमाया लक्ष्मी मेरे सम्पूर्ण अंगो की रक्षा करें। वही कौमारी, चक्रधारिणी, जय देने वाली, धनदात्री, पाश पक्षमालिनी, कल्याणी, हरि की प्रिया, हरिरामा, जय करने वाली, महोदरी, कृष्णपरायणा, श्रीकृष्णमनोमोहिनी, महारौद्री सिद्धि देने वाली, शुभ करने वाली, सुख देनेवाली, मोक्ष देने वाली और वही चित्रकूटनिवासिनी आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। वही अनपायिनी लक्ष्मी देवी मेरा भय दूर करें, सर्वदा रक्षा करें और मेरा भवपाश छेदन करें।

कवचन्तु महापुण्यं यः पठेत् भक्तिसंयुतः।
त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यम्वा मुच्यते सर्व्वसंकटात्।।

टीका–जो व्यक्ति भक्तियुक्तहोकर प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में वा एकसन्ध्या में, इसे परम पवित्र लक्ष्मीकवच का पाठ करता है, वह सम्पूर्ण संकट से छूट जाता है।।

पठनं कवचस्यास्य पुत्रधनविवर्द्धनम्।
भीतिविनाशनञ्चैव त्रिषु लोकेषु कीर्त्तितम्।।

टीका–इस कवच के पाठ करने से पुत्र और धनादिकी वृद्धि होती है और भय दूर होता है। इसका माहात्म्य त्रिभुवन में प्रसिद्ध है।।

भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुंकुमेन तु।
धारणाद्गलदेशे च सर्वसिद्धिर्भविष्यति।।

टीका–भोजपत्र पर रोचना और कुंकुम द्वारा इसको लिखकर कण्ठ में धारण करने से सर्व्वकामना सिद्ध होती हैं।।

अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थी लभते धनम्।
मोक्षार्थी मोक्षमाप्नोति कवचस्य प्रसादतः।।

इस कवच के प्रसाद से अपुत्री को पुत्र, धनार्थी को धन और मोक्षार्क्षी को मोक्ष, प्राप्त होती है।

गर्भिणीं लभते पुत्रं बन्ध्या च गर्भिणी भवेत्।
धारयेद्यदि कण्ठे च अथवा वामबाहुके।।

टीका—यदि स्त्रियाँ कण्ठ अथवा बाम बाहु में इस कवच को यथानियम धारण करें, तो गर्भवती उत्तम पुत्र को प्राप्त होती हैं और वन्ध्या (बांझ) स्त्री से गर्भवती होती है।।

यः पठेन्नियतो भक्त्या स एव विष्णुंवद्भवेत्।
मृत्युव्याधिभयं तस्य नास्ति किञ्चिन्महीतले।।

टीका—जो व्यक्ति नित्य भक्ति सहित इस कवच का पाठ करते हैं, वह विष्णु की समानता को प्राप्त होते हैं और पृथ्वी में मृत्यु, अथवा आधि-व्याधि-भय उनके ऊपर आक्रमण नहीं कर सकता।।

पठेद्वा पाठ्येद्वापि श्रणुयाच्छ्रावयेदपि।
सर्व्वपापविमुक्तस्तु लभते परमां गतिम्।।

टीका—जो पुरुष इस कवच को पढ़ते या पढ़ाते हैं, अथवा स्वयं सुनते या दूसरे को सुनाते हैं, वह सम्पूर्ण पापों से छूट कर परमगति को प्राप्त करते हैं।

विपदि संकटे धीरे तथा च गहने वने।
राजद्वारे च नौकायां तथा च रणमध्यतः।
पठनाद्धारणादस्य जयमाप्नोति निश्चितम्।।

टीका—इस कवच के पाठ करने से विपद, घोर संकट, गहन बनराज द्वार, नौका मार्ग, रणमध्य, कोई स्थान क्यों न हो, इसे विधान पूर्वक पाठ अथवा धारण करने से सर्वत्र जय प्राप्त हो सकती है।

अपुत्रा च तथा वन्ध्या त्रिपक्षं श्रणुयादपि।
सुपुत्रं लभते सा तु दीर्घायुष्कं यशस्विनम्।।

टीका–बांझ स्त्री, जिसके पुत्र उत्पन्न नहीं होता हो, वह यदि तीन पक्ष पर्य्यन्त विधान पूर्वक यह कवच सुने, तो दीर्घायु महायशस्वी सुपुत्र प्राप्त कर सकती है, इसमें सन्देह नहीं ॥

शृणुयाद्यः शुद्धबुद्ध्या द्वौ मासौ विप्रवक्त्रतः ।
सर्व्वान्कामानवाप्नोति सर्व्वबन्धाद्विमुच्यते ॥

टीका–जो पुरुष शुद्ध मन से दो महीने तक ब्राह्मण के मुखसे यह कवच सुनता है, उसकी संपूर्ण मनो कामनायें पूर्ण होती हैं और वह सर्व प्रकार के भवबन्धनसे छूट जाता है ।

मृतवत्सा जीववत्सा त्रिमासं शृणुयाद्यदि ।
रोगी रोगाद्विमुच्येत् पठनान्मासमध्यतः ॥

टीका–जिस स्त्रीके पुत्र उत्पन्न होकर जीवित नहीं रहते हों, वह तीन महीने तक कवचको भक्तिसहित सुने, तो जीववत्सा होती है और रोगी पुरुष पाठ करे, तो एक महीने में रोग मुक्त होता है ।

लिखित्वा भूर्जपत्रे च ह्यथवा ताड़पत्रके ।
स्थापयेन्नियत गेहे नाग्निचौरभयं क्वचित् ॥

टीका–जो व्यक्ति भोजपत्र पर या ताड़पत्रपर इस कवच को लिखकर घरमें स्थापन करे, तो उसको अग्नि वा चोर आदि का भय नहीं रहता ॥

शृणुयाद्धारयेद्वापि पठेद्वा पाठयेदपि ।
यः पुमान्सततं तस्मिन्प्रसन्ना सर्व्व देवताः ॥

जो पुरुष प्रतिदिन यह कवच सुनता, पढ़ता, अथवा दूसरे को पढ़ाता है वा इसको धारण करता है उसपर देवतागण सदा सन्तुष्ट रहते हैं।

बहुना किमिहोक्तेन सर्व्वजीवेश्वरेश्वरी ।
आद्या शक्तिः सदा लक्ष्मीर्भक्तानुग्रहकारिणी ।
धारके पाठके चैव निश्चला निवसेद् ध्रुवम् ॥

टीका—मैं अधिक और क्या कहूं ? जो पुरुष इस कवच को पाठ करते, अथवा धारण करते हैं, तो सर्व जीवेश्वरी भक्तों पर अनुग्रह करनेवाली आद्या शक्ति लक्ष्मी देवी अचल होकर उसमें वास करती हैं, इसमें सन्देह नहीं ।

डॉ० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी निर्भय कृत
इति श्रीमहाकालविरचितं भाषा टीका सहितं
श्री मद्दक्षिणकालिया: स्वरूपाख्यस्तोत्रम् ।

——:००:——

अष्टनायिका साधन

जया–साधन

मंत्र–ओं ह्रीं ह्रीं नमो नमः जया हुं फट् ।।

एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या तक प्रति दिन इस मंत्र का पांच हजार जप करें (समीप के शून्य शिवमन्दिर में बैठ कर जप करना चाहिये), इस प्रकार जप शेष होने पर अर्द्ध रात्रि के समय जयानाम्नी साधक के निकट प्रगट होकर उसकी इच्छानुसार वर प्रदान करती है।।

विजया–साधन

मंत्र–ओं हिलिहिलि कुटीकटी तुहतुह मे वशमानय
विजये अः अः स्वाहा।। त्रिलक्षजपेन सिद्धिः।
नदीतीरस्थश्मशानवृक्षे स्थित्वा रात्रौ प्रजपेत्।।

नदी तीरस्थ श्मशान में जो कोई वृक्ष हो, उस वृक्ष पर चढ़कर रात्रि के समय उपरोक्त मंत्र का जप करें। तीन लक्ष जपने से सिद्धि होती हैं। नित्य जप करके जिस दिन लक्ष जप पूर्ण हो, उसी दिन विजयानाम्नी नायिका सन्तुष्ट होकर साधक के वशीभूत होती है।

रतिप्रिया–साधन

मंत्र–हुँ रतिप्रिये साधेसाधे जलजल धीर-धीर आज्ञा-
पय स्वाहा।। षण्मासात्सिद्धिः। रात्रौ नग्नो
भूत्वा हविष्याशी नाभिजले स्थित्वा जपेत्।।

रात्रिकाल के समय नग्न ही नाभि के बराबर जल में बैठ कर उक्त मंत्र का जप करें। छै महीन तक हविष्याशी होकर समस्त रात्रियों में जप करना चाहिये। इस प्रकार करने से रतिप्रिया नाम्नी नायिक वशीभूत होती है।

कांञ्चनकुण्डली–सिद्धिः

मंत्र–ओं लोलजिह्वे अट्टाट्टासिनि सुमुखि काञ्चन-
कुण्डलिनि खे चक्षे हुँ ।। सम्वत्सरेण सिद्धिः ।
गोमयपुत्तलिकां कृत्वा पाद्यादिभिः पूजयेत् ।
त्रिपथस्थवटमूले प्रजपेत् ।।

गोबर की पुतली बनाकर एक वर्ष तक पाद्यादिद्वारा काञ्चन कुण्डली नाम्नी नायिका की पूजा और ऊपर लिखित मंत्र का जप करने से सिद्धि होती है। त्रिपथस्थित वट की जड़ में रात्रिकाल के समय अदृश्य भाव से जप करे।।

स्वर्णमाला–सिद्धिः

मंत्र–ओं जय जय सर्वदेवासुरपूजिते स्वर्णमाले हुँ हुँ
ठः ठः स्वाहा ।। ग्रीष्मे मरौ पञ्चाग्निमध्ये
स्थित्वा जपेतु । त्रिमासात्सिद्धिः ।।

ग्रीष्मकाल (गर्मी के समय) में चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ , इन तीन महीनों में मरुभूमि के मध्य पञ्चाग्नि स्थापित कर, यानी चारों ओर चार अग्निकुण्ड तथा सूर्य जब मस्तक के ऊपर हो तब मंत्र जपने से स्वर्णमाला की सिद्ध होती हैं।।

मंत्र–ओं ह्रीं क्लीं स्त्रीं हुं ब्रुं व्लुं जयावती यमनिकृ-
न्तनि क्लीं क्लीं ठः ।। आषाढादित्रिमासानविरलं
काननस्थसरसि स्थित्वा रात्रौ जपेत् ।।

आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, इन तीन महीनों में निर्जन स्थान, वन में सरोवर के जल में रात्रि समय बैठ कर उक्त मन्त्र का जप करने से जयावती सिद्ध होती है।।

सुरंगिणि–सिद्धिः

मन्त्र–ओं ओं हुँ हुँ हुँ शीघ्रं सिद्धिं प्रयच्छ सुर–

सुरंगिणि महामाये साधकप्रिये ह्रीं ह्रीं स्वाहा ।।
षड्वर्षेण सिद्धिः। प्रत्यहं रात्रौ शय्यायामुप
विश्य सहस्रं जपेत् ।।

छै वर्ष तक लगतार नित्य रात्रिकाल के समय शय्या से बैठकर उक्त मंत्र एक हजार बार जपने से सिद्धि होती है ।।

विद्राविणी—सिद्धिः ।

मंत्र—ह्यँरँलँवँदेवि रुद्रप्रिये विद्राविणि ज्वल ज्वल साधय साधय कुलेश्वरि स्वाहा ।। रणमृतास्थीनि गले धृत्वा प्रान्तरे जपेत् । द्वादशलक्षजपेन सिद्धिः।।

युद्ध में मरे हुये मनुष्य की अस्थि (हड्डी) गले में बांध कर प्रान्त में रात्रि समय बैठकर उक्त मंत्र का जप करना चाहिये। जिस दिन बारह लक्ष जप समाप्त होता है, उसी दिन सिद्धि होती है ।

वैतालसिद्धिः ।

निम्बवृक्षोद्भवं काष्ठं श्मशाने साधकोत्तमः ।
भौमवारे मध्यरात्रौ गत्वा कुलयुगान्वितः ।।
खनित्वा चाष्टलक्षं वै दण्डपादुकचिह्नितम् ।
कृत्वा दुर्गाष्टमीरात्रौ श्मशाने निक्षिपेत्ततः ।।
तस्योपरि शवं कृत्वा पूजयित्वा यथाविधि ।
शवासनगतो वीरो जयेदष्टसहस्रकम् ।।
ततो मातृबलिं दत्त्वा काष्ठमामंत्रयेत्ततः ।
स्फेंस्फेंदण्डमहाभाग योगिनीहृदयप्रिय ।।
मम हस्तस्थितो नाथ ममाज्ञां परिपालय ।
एवमामंत्र्य वेतालं यत्र यत्र प्रयुज्यते ।।
तं तं चूर्णी यथायाथ पुनरायाति कौलिकम् ।।

मंगलवार अर्द्धरात्रि के समय साधक नीमकी लकड़ीको श्मशान में गाड़कर उस स्थान में बैठ दस हजार महिषमर्दिनीका मन्त्र जप करें।

मंत्र—'महिषमर्दिन्यै स्वाहा' और श्मशान में रहकर एक सहस्र होम करें, तदनन्तर वह निम्बकाष्ठ निकाल उसमें दण्ड और पादुका अङ्कित करनी चाहिये, फिर दुर्गाष्टमीकी रात्रिमें यह निम्ब काष्ठ (नीम की लकड़ी) श्मशान में डालकर उसके ऊपर शव रख यथाविधि पूजा करनी चाहिए। फिर उस शवासनपर बैठ ऊपर लिखित अष्टाधिकसहस्र जप करके मातृगणोंके उद्देश्यसे बलि दे, "स्फें स्फें" इत्यादि मन्त्रसे काष्ठ को आमन्त्रण करें, इसके उपरान्त जिस जिस स्थान में बैताल को नियुक्त करें, यह दण्ड उसी उसी वृत्तिको चूर्ण कर फिर साधक के निकट आता है। जिस किसी कार्य में उस दण्ड को नियुक्त करें, वही बैताल सिद्ध होगा॥

योगिनी—साधन

अथ प्रातः समुत्थाय कृत्वा स्नानादिकं शुभम्।
प्रसादञ्च समासाद्य कुर्य्यादाचमनं ततः॥
प्रणवान्ते सहस्रारहुँफट्दिग्बन्धनं चरेत्।
प्राणायामं ततः कुर्य्यान्मूलमंत्रेण मंत्रवित्॥
षडङ्गमायया कुर्य्यात्पद्मष्टदलं लिखेत्।
तस्मिन्पद्मे महामंत्रं बीजन्यासं समाचरेत्॥
पीठदेवीं समावाह्य ध्यायेद्देवीं जगत्प्रियाम्।
पूर्णचन्द्रनिभां गौरीं विचित्राम्बरधारिणीम्॥
पीनोत्तुंगकुचां वामां सर्वेषामभयप्रदाम्।
इति ध्यात्वा च मूलेन दद्यात्पाद्यादिकं शुभम्॥
पुनर्धूपं निवेद्यैव नैवेद्यं मूलमन्त्रतः।

गन्धचन्दनताम्बूलं सकर्पूरं सुशोभनम् ।।
प्रणवान्ते भुवनेशि ह्यागच्छ सुरसुन्दरि ।
वह्नेर्भार्य्या जपेन्मत्रं त्रिसन्ध्यन्तु दिने दिने ।।
सहस्रैकप्रमाणेन ध्यात्वा देवीं सदा बुधः ।
मासान्ते व्याप्य दिवसं बलिपूजां सुशोभनाम् ।।
कृत्वां च प्रजपेन्मंत्रं निशीथे सति सुन्दरि ।
सुदृढं साधकं मत्वाऽऽयाति सा साधकालये ।।
सुप्रसन्ना साधकाग्रे सदा स्मेरमुखी ततः ।
दृष्ट्वा देवीं सधकेन्द्रो दद्यात्पाद्यादिकं शुभम् ।।
सुचन्दनं सुमनसो दत्त्वाभिलषितं वदेत् ।
यद्यत्प्रार्थयते सर्व्वं सा ददाति दिने दिने ।।

प्रातः समय उठकर स्नानादि नित्य क्रिया करके "ह्रीं" इस मंत्र से आचमन कर "ओं ह्रीं फट्" इस मन्त्र से दिग्बन्धन करे, फिर मूलमंत्रसे प्राणायाम कर "ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः" इत्यादिक्रमसे करान्यास करे; फिर अष्टदल पद्म अंकित कर उस पद्ममें देवीका बीज न्यास करे और पीठ देवता का आवाहन करके सुर सुन्दरी का ध्यान करे "पूर्णचन्द्रनिभाम्" पूर्ण चन्द्रमा के समान कान्तिवाली गौरी विचित्र वस्त्र धारण किये पीन और ऊँचे कुचोंसे युक्त सबको अभय प्रदान करने वाली, इत्यादि ऊपर लिखित को नियम से ध्यान करे । ध्यान के अन्त में मूल मंत्र से देवी की पूजा करें मूल मंत्र उच्चारण पूर्वक पाद्यादि देकर धूप दीप नैवेद्य गन्ध चन्दन और ताम्बूल निवेदन करे, "ओं ह्रीं आगच्छ भुवनेशि सुरसुन्दरी स्वाहा" इस मंत्र से पूजा करनी चाहिये । साधक प्रतिदिन (त्रिकालसंध्या) तीनों सन्ध्याओंमें ध्यान करके एक एक हजार मंत्र जप करें इस प्रकार एक मास जप करके महीने के अंतिम दिन में बलि इत्यादि विविध उपहार से देवी की पूजा

करे, पूजा के अन्त में पूर्वोक्त मंत्र जप करता रहे, इस प्रकार जप करने से अर्द्धरात्रि के समय देवी साधक के निकट आती हैं, देवी साधक को दृढ़ प्रतिज्ञ जान कर उसके गृह में आती हैं। साधक देवी को अपने सम्मुख प्रसन्न और हास्यमुखी देखकर फिर पाद्यादि द्वारा पूजा करे और उत्तम चन्दन तथा सुशोभन पुष्प प्रदान करके अभिलषित वरकी प्रार्थना करें, साधक देवी के निकट जो-जो प्रार्थना करेगा, देवी नित्य उपस्थित होकर वही प्रदान करेंगी।

डाकिनी—सिद्धिः।

मंत्र—डँ डाँ डिं डीं द्रीं धूँ धूँ चालिनि मालिनि डाकिनि सर्व्वसिद्धि प्रयच्छ हुँ फट् स्वाहा। शाल्मलीतरौ स्थित्वा ऊर्द्धबाहुना रात्रौ जपेत्। एवं षड्वर्षेण सिद्धिः॥

लगातार छः वर्ष तक रात्रि के समय सेमल के वृक्षपर चढ़, ऊर्ध्वबाहु हो उक्त मंत्र का जप करें, रात्रि में ही जप करना चाहिये। एकादक्रम से छै वर्ष में डाकिनी सिद्ध होती है। डाकिनी सिद्ध होने पर अद्भुत अद्भुत सामर्थ्य उत्पन्न होती है॥

भूत और प्रेत सिद्धिः

मंत्र—ओं ह्रीं क्रों क्रों क्रुं फट् फट् त्रुट त्रुट ह्लीं ह्लीं भूत प्रेत भूतिनि प्रेतिनि आगच्छ आगच्छ ह्लीं ह्लीं ठः ठः॥

इस मंत्र से भूत भूतिनी, प्रेत प्रेतिनी सिद्धि होती हैं।

वटवृक्षतले रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम्।
धूपञ्च गुग्गुलं दत्त्वा पुना रात्रौ जपेन्मनुम्॥
अर्द्धरात्रिगते चैव साध्यश्चागच्छति ध्रुवम्।
दद्याद्गन्धोदकेनार्घ्यं तुष्टो भवति तत्क्षणात्॥
वरं दत्त्वा ततः सोऽपि चिरवश्यो भवेत्सदा॥

रात्रिकाल के समय निर्जन में वटके वृक्ष (बरगद के पेड़) की जड़ में बैठकर उक्त मंत्र आठ हजार जप करे, इसके दूसरे दिन धूप और गुग्गलद्वारा पूजा करके फिर रात्रिमें जप करे। अर्द्धरात्रि व्यतीत होने पर भूत प्रेत भूतिनी वा प्रेतनी साधक के सामने उपस्थित होंगी, तब उनकी गन्धादि और अर्घ्यादिद्वारा पूजा करने पर भूतादि प्रसन्न होकर साधकको वर प्रदान करते हैं और चिरकाल साधक के वशीभूत रहते हैं॥

पिशाच–पिशाच, सिद्धिः।

पहलामंत्र–ओं प्रथ प्रथ फट् फट् हुँ हुँ तर्ज तर्ज विजय विजय जय जय प्रति हत कटु कटु विसुर विसुर स्फुर स्फुर पिशाच साधकस्य मे वशं आनय आनय पच पच चल चल स्वाहा॥

दूसरामंत्र–ओं फट् फट् हुँ हुँ अः भोः भोः पिशाचि भिन्द भिन्द छिन्द छिन्द लह दह दह पच पच मर्द्दय मर्द्दय पेषय पेषयं धून धून महासुरपूजिते हुँ हुँ स्वाहा॥ दशलाख जपात्सिद्धिः। रात्रौ उच्छिष्टमुखेन श्मशाने जपेत्॥

प्रथम मंत्र से पिशाच और दूसरे मंत्र से पिशाची का ध्यान करना चाहिये। रात्रिकाल के समय उच्छिष्ट मुख से श्मशान में बैठकर जप करें। दशलक्ष जपने से सिद्धि प्राप्त होती है। जप काल के समय अन्य किसी के देखने पर, अथवा साधक के अन्य किसी को देखने से जप निष्फल होता है। यानी कोई देखे नहीं।

गुटिका–सिद्धिः।

साधकश्चिल्लालयं गत्वा नित्यं तस्मै निवेदयेत् देवताबुद्ध्यातिभक्त्या भक्षणार्थंकिञ्चित् किञ्चि-

ग्राममांसं निक्षिपेत् । यावत् प्रसूता भवति ततः पारदं रसं सार्द्धनिष्कत्रयं कस्मिंश्चिन्ना-लिकाद्वये निक्षिपेत् । तस्याधोऽर्द्धच्छिद्रं-सिक्थकेन रुद्धा चिल्लालयं गत्वा अण्डद्वयस्यो-परि नालिकाद्वयं निधाय लौहशलाकया नालिका-मध्यमार्गेण तदण्डं लघुहस्तेन वेधयित्वा शलाकामुद्धरेत् । तेनैव मार्गेण अण्डमध्ये यथासमं गच्छति तथा युक्तं कुर्य्यात् । ततश्छिद्रं चिल्लविष्ठया लिपेत् । ततस्तद्वृक्षाधो नित्यं बल्युपहारेण पूजां कुर्य्यात् । यावत् स्वयमे-वाण्डानि स्फोटन्ति तावन्नित्यमुपरि गत्वा निरी-क्षयेत् । स्फुटिते सति गुटिकाद्वयं ग्राह्यं ततो वृक्षादुत्तीर्य्य यो गिलति मनुष्यस्तस्मै एका देया, अपरां स्वयं मुखे धारयेत् । योजनद्वादशं गत्वा पुनरेव निवर्त्तते । ओं ह्रीं हूं फट् चिल्लचक्रेश्वरि परात्परेश्वरि पादुकामासनं देहि मे देहि स्वाहा । अनेन मंत्रेण जपं पूजाञ्च कुर्य्यात् ।। इति सिद्धियोगः ।

जिस प्रकार गुटिका सिद्धि होती है, वह विधि निम्न प्रकार है—साधक चील के वास स्थान में (जिस पेड़ पर चील का घोंसला हो) उसको देवता जान पूजा करके उसे प्रति दिन खाने को थोड़ा थोड़ा कच्चा मांस प्रदान करे। प्रसवकाल तक इस प्रकार आहार देता रहे। प्रसव के उपरान्त दो नल प्रस्तुत कर उनके ऊपर और नीचे के दोनों छिद्र मोम से बन्द करदे। फिर उनमें साढ़े तीन तोला परिमाण में पारा डाल कर इन दोनों नलों को दोनों अण्डों के ऊपर स्थापन करे

और लोहशलाका नल के ऊपर मुख में प्रवेशित कर अत्यन्त सावधानी से दोनों अण्डों को छेदकर शलाका निकालें; इस प्रकार सतर्कता पूर्वक और कोमल हस्त से अण्डे वेधने चाहिये, क्योंकि इन छिद्रों द्वारा अण्डों में नल स्थित पारा प्रवेश कर सके और अण्डे न टूटें, इसके उपरान्त इन अण्डों के छिद्र उसी चील की विष्ठा से बन्द कर वृक्ष के नीचे अण्डे फूटने तक प्रतिदिन बलि और विविध उपहारों से पूजा करता रहे। जब तक यह अण्डे स्वयं न फूटें, तब तक नित्य इस वृक्ष के ऊपर चढ़कर देखें। इन अण्डों के फूटने पर दिखाई देगा कि उनमें दो गुटिका हुई हैं, तब इन दोनों गुटिकाओं को ला कर एक दूसरे को दे और अन्य को स्वयं मुख में धारण करे, इस प्रकार क्रिया करने से साधक शतयोजन जाकर, फिर उसी स्थान में तत्काल लौटकर आ सकता है। "ओं ह्रीं हूँ फट् खिल्लचक्रेश्वरि परात्परेश्वरि पादुकामासनं देहि मे देहि स्वाहा" इस मंत्र से पूजा और जप करे।

शिखा पारावतभवा खञ्जरीटपुरीषजा।
गुटिकास्पर्शमात्रेण तालयन्त्रं भिनत्त्यलम् ॥

मोर, पारावत और खञ्जन पक्षी, इनकी विष्ठा लेकर गुटिका कर इस गुटिका के स्पर्श करने से तत्काल सम्पूर्ण वाद्य यन्त्र (बाजे) टूट जाते हैं। गुटिका करने के पहले पूर्वोक्त मंत्र से पूजा कर एक लक्ष जाप करे ॥

षट्कर्म प्रयोग (यंत्र प्रकरण)

शान्तिकर्म प्रयोग

सर्व विघ्न हरण मंत्र

ॐ नमः शांते प्रशांते ॐ ह्रीं ह्रां सर्व क्रोध प्रशमनी स्वाहा ॥

उपरोक्त मंत्र को प्रति दिन प्रातः काल इक्कीस बार पाठ कर मुख मार्जन करने से परिवार के समस्त प्राणी सदा शान्त एवं निर्विघ्न

जीवन व्यतीत करते हैं। सायंकाल पीपल की जड़ में शर्बत चढ़ा, धूप दीप प्रज़्वलित करें।

शरीर रक्षा मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को बज्र बजी बज्र-किवाड़ बज्री में बांधा दशोद्वार को घाले उलट वेद बाही को खात पहली चौकी गणपति की दूजी चौकी हनुमन्तजी की तीजी चौकी भैरों की चौथी राम रक्षा करने को श्री नृसिंह देवजी आये शब्द साँचा पिण्ड काँचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।

सिद्धि करने के विधि

किसी भी शनिवार से इस मंत्र का जाप प्रारम्भ करें और इक्कीस दिनों तक प्रतिदिन प्रातः २२६८ बार मंत्र जाप कर और गूगुल, ॠतु फूल, मिठाई, तेल सन्मुख रख घी का दीपक जलावे। इक्कीस दिन नियम पूर्वक जाप करने से यह मंत्र सिद्धि हो जायगा। जब सिद्धि हो जाय तब प्रयोग करने के लिये १०८ बार मंत्र पढ़ अंग में भभूत लगावे तो शरीर सुरक्षित होवे।

गृह बाधा हरण मन्त्र

ॐ शं शं शिं शिं शुं शूं शें शैं शों शौं शं शः स्वः सं स्वाहा।

सिद्धि करने की विधि

बारह अंगुल लम्बी पलास की लकड़ी लेकर उपरोक्त मंत्र से एक हजार बार अभिमन्त्रित कर वह लकड़ी जिस मकान में गाड़ दी जायगी उस घर के रहने वाले सदा निर्विघ्न रहेंगे।

सर्व दोष निवारण मन्त्र

शनि दिन संध्या के समय घर कुम्हार के जाय।
चाक पे चौंसठ दीप को उल्टी चाक फिराय॥

प्रयोग विधि—समस्त दीपकों को घी की बाती जलाकर रोगी के मुख पर संध्या समय उतारे तथा दूध भात शक्कर रोगी को स्पर्श करा चौराहे पे रखने से सर्व दोष नष्ट होते हैं ।

"भूत आदि हटाने का बाग मन्त्र"

तह कुष्ठ इलाही का बान कूडूम की पित्ती चिरावत भाग भाग अमुकं अंग से भूत मारूँ धुनवान कृष्ण वर पूत आज्ञा कामरूकामाख्या हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई ।।

एक मुट्ठी धूल तीन बार मंत्र पढ़कर मारने से भूत भय दूर होते है ।

——— : ० : ———

"धन वृद्धि करने का मन्त्र"

ॐ नमो भगवती पद्म पद्मावी ॐ ह्री ॐ ॐ पूर्वाय दक्षिणाय उत्तराय आष पूरय सर्वजन वश्य कुरु कुरु स्वाहा ।

सिद्धि करने की विधि

विधान पूर्वक दीपावली की रात्रि को सिद्धि कर ले, तत्पश्चात् प्रात:शय्यात्याग से पूर्व १०८ बार मंत्र पढ़कर चारों दिशाओं के कोणों में दस दस बार फूंके तो साधक को सभी दिशाओं से धन प्राप्ति हो ।

"चुड़ैल भगाने का मन्त्र"

बैर बर चुड़ैल पिशाचनी बैर निवासी
कहुँ तुझे सुनु सर्व नासी मेरी गाँसी

——— : ०. : ———

"भूत भय नाशन मन्त्र"

ॐ नमः श्मशान वासिने भूतादीनां पलायनं कुरु कुरु स्वाहा ।।

प्रयोग विधि—दीपावली की रात्रि को १००८ बार मंत्र जाप कर सिद्धि कर ले फिर जब प्रयोग करना हो तो रविवार को दिन में कुत्ता बिल्ली और घुग्घू का मल (विष्ठा) ऊंट के बाल, सफेद घुंघुची,

गन्धक, गोबर, कड़ुवा तेल सिरस नामक वृक्ष के फूल तथा पत्ते लाय हवन कर उपरोक्त मंत्र का १०८ बार जाप करने से भूत-प्रेन-वैताल-राक्षस डाकिनी, शाकिनी, प्रेतनी, आदि समस्त बाधायें दूर होती हैं ।

वर बैल करे तू कितना गुमान
काहे नहीं छोड़ता यह जान स्थान
यदि चाहै तूँ रखना आपन मान
पल में भाग कैलाश लै अपनो प्रान
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई
आदेश हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई

सिद्धि करने की विधि

इस मंत्र को विजया दशमी की रात्रि को १०८ बार जाप कर सिद्धि करे, फिर रोगिणी पर इक्कीस बार पढ़कर फूंक मारे तो डायन, चुड़ैल, पिचाशनी आदि से छुटकारा प्राप्त हो ।

—— : ० : ——

"डायन की नजर झारने का मन्त्र"

हरि हरि स्मरिके हम मन करुँ स्थिर
चाउर आदि फेंक के पाथर आदि वीर
डायन बूतिन दानवी देवी के आहार
बालक गण पहिरे हाड़ गला हार
राम लषण दूनों भाई धनुष लिये हाथ
देखि डायनी भागत छोड़ शिशु माथ
गई पराय सब डायनी योगिनी
सात समुद्र पार में खावें खारी पानी

आदेश हाड़ी डासी चण्डी माई
आदेश नैना योगिनी के दोहाई

विधि—उपरोक्त मंत्र विधि के अनुसार सिद्धि कर झारने से दृष्टि बाधा दूर होती है।

"आपत्ति निवारण मन्त्र"

शेष फरिद का कामरी निसि अस अन्धियारी।
तीनों को टालिये अनल ओला जल विष॥

विधि—इस मंत्र को पढ़कर ताली बजाने से ओला, अग्नि, जल, विष आदि भय दूर होता है।

———:०:———

"मस्तक पीड़ा निवारण मन्त्र"

ॐ नमः आज्ञा गुरु को केश में कपाल, कपाल में भेजा बसै भेजा में क्रीड़ा करै न पीड़ा कंचन की छेनी रूपे का हथौड़ा पिता ईश्वर गाड़ इनको थापे श्री महादेव तोड़े शब्द सांचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच।

विधि—इस मंत्र को पहले १०८ बार पढ़कर सिद्धि करले, फिर प्रयोग करते समय राख को सात बार पढ़कर काटे तो मस्तक पीड़ा दूर होवे।

"असामयिक मृत्यु भय निवारण मन्त्र"

"ॐ अघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः स्वाहा।"

सिद्धि करने की विधि

इस मंत्र को किसी भी शुभ नक्षत्र और शुभ वार में दस सहस्त्र बार जाप कर सिद्धि करलें और जब प्रयोग करना हो तो जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र होवे, उस दिन प्रातः काल गुरमा वृक्ष की जड़ लाकर गर्म जल में मसले और फ़िर १०८ बार उपरोक्त मंत्र पढकर आठ माशा नित्य पान करने से अकाल मृत्यु निवारण होती है।

———— : ० : ————

"अधिक अन्न उपजाने का मन्त्र"

ॐ नमः सुरभ्यः बलजः उपरि परिमिलि स्वाहा"

विधि—सर्व प्रथम इस मंत्र को दस सहस्त्रा बार जाप कर सिद्धि करे, फिर जब प्रयोग करना हो तो जब पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र होवे तो बहेड़े नामक वृक्ष का बाँदा लेकर १०८ बार मंत्र से अभिमन्त्रित करे तथा जिस खेत की उपज बढ़ानी हो उस खेत में गाड़ देने से अन्न की उपज अधिक होती है।

———— : ० : ————

"आत्म रक्षा मन्त्र"

"ॐ क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं फट्"

उपरोक्त मंत्र का नित्य ५०० बार जाप करने से साधक को समस्त सुख प्राप्त होते हैं और आत्म भय दूर होकर व्यक्ति "निर्भय हो जाता है।

———— ० ————

"गाय भैंस आदि का दूध बढ़ाने का मन्त्र"

"ॐ नमो हुकारिणी प्रसव ॐ शीतलम्"

उपरोक्त मंत्र १०८ बार पढ़कर पशुओं को चारा खिलाने से दूध की वृद्धि होती है।

———— ० : ————

"अति दुर्लभ निधि दर्शन मन्त्र"

"ॐ नमो विघ्नविनाशाय निधि दर्शनं कुरु कुरु स्वाहा"

विधि—शुभ दिवस तथा नक्षत्र में दस सहस्र बार जाप कर सिद्धि हो जाने पर जब प्रयोग करना हो तब जिस स्थान मे धन गड़े होने की सम्भावना होवे उस स्थान पर धतूरे के बीज हलाहल सपेद घुघुची

गन्धक मैनसिल उल्लू की विष्ठा तथा शिरीष वृक्ष का पंचांग बराबर बराबर ले सरसो के तेल में पकावे तथा इसी से धूप देकर दस सहस्र बार मंत्र का जाप करने से भूत प्रेत तथा पितृ आदि की साया उस स्थान से हट जाती है और भूमि में गड़ी धनराशि साधक को दृष्टिगोचर होने लगती है।

—— : ० : ——

"विपत्ति विदारण मन्त्र"

शेष फरिद की कामरी निसि अंधियारी
तानौ को टालिये अनल ओला जल विष।

ऊपर लिखे मंत्र को सिद्धि कर लेने के बाद पढ़कर ताली बजावे तो आग पानी विष ओला आदि का भय दूर होता है।

—— : ० : ——

"सर्वाङ्ग वेदना हरण मन्त्र"

निम्न लिखित मंत्र पढ़कर २१ बार झारने से समस्त शरीर का दर्द दूर हो जाता है।

मन्त्र—ॐ नमो कोतकी ज्वालामुखी काली दोबर रंग पीड़ा दूर कर सात समुद्र पार कर आदेश कामरू देश कामाक्षा माई हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।

——०——

आधा शीश का दर्द दूर करने का मन्त्र"

ॐ नमो बन में बिआई बंदरी।
खाय दुपहरिया कच्चा फल कंदरी॥
आधी खाय के आधी देती गिराय।
हूकत हनुमंत के आधा शीशी चलि जाय॥

प्रयोग विधि

भूमि पर छुरी से सात रेखा खींच कर रोगी को सन्मुख बैठाय सात बार मन्त्र पढ़ कर झारने से आधा शीश का दर्द दूर होता है।

---o---

"उदर वेदना निवारक मन्त्र"

ॐ नून तूं सिन्धु नून सिंध बाया।
नून मन्त्र पिता महादेव रचाया।।
महेश के आदेश मोही गुरुदेव सिखाया।
गुरु ज्ञान से हम देऊं पीर भगाया।।
आदेश देवी कामरु कामाक्षा माई।
आदेश हाड़ी रानी चण्डी की दुहाई।।

प्रयोग विधि—दाहिने हाथ की केवल तीन उँगलियों से सेंधा नमक का एक टुकड़ा लेकर ऊपर लिखे मन्त्र से तीन बार पढ़कर, अभिमन्त्रित करे बाद में वह टुकड़ा रोगी को खिलाने से पेट की पीड़ा शान्त होती है।

---o---

'नेत्र पीड़ा निवारण मन्त्र"

ॐ नमः झिलमिल करे ताल की तलइया।
पश्चिम गिरि से आई करन भलइया।।
तहँ आय बैठेउ वीर हनुमन्ता।
न पीड़ै न पाकै नहीं फूहन्ता।।
यती मनुमन्त राखे होड़ा।।

विधि—सात दिन तक नित्य सात बार नीम की टहनी द्वारा झारने से नेत्र पीड़ा शान्त होती है।

---o---

"रोग निवारण मन्त्र"

पर्वत ऊपर पर्वत और पर्वत ऊपर फटिक शिला फटिक शिला ऊपर अञ्जनी जिन जाया हनुमन्त नेहला टेहला कांख की कखराई पीछे की आदटी कान की कनफटे रान की बद कठ की कंठमाला धूटने का डहरु डाढ़ की डढ़ शूल पेट की ताप तिल्ली किया इतने को दूर करे भस्मन्त नातर तुझे माता का दूध पिया हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा सत्य नाम आदेश गुरु का ।

सिद्ध करने की विधि—सात शनिवार हनुमान जी की मूर्ति के सम्मुख धूप दीप प्रज्वलित कर नैवेद्यादि अर्पित कर नित्य १०८ बार मन्त्र का जाप करे, मन को सर्वथा शुद्ध रखे, कामेच्छा आदि विकार मन में न आने पावे, इस प्रकार सिद्धि प्राप्त हो जाने पर कखवारी, बद, कंठमाला, दाढ़ शूल, कन फेर, अदीठ, रोगों को राख से १०८ बार मन्त्र पढ़ कर झारे तथा ताप, तिल्ली को छुरी से १०८ बार मन्त्र पढ़ कर झारने से उपरोक्त रोग दूर होते हैं ।

विशेष—रोग दूर हो जाने पर रोगी से हनूमान जी को प्रसाद चढ़वा कर वितरित करे और किसी से कोई द्रव्य ग्रहण न करे ।

———o———

"ऋतु वेदना निवारण मन्त्र"

ॐ नमो आदेश देवी मनसा माई बड़ी बड़ी अदरख पतली पतली रेश बढ़े विष के जल फांसी दे शेष गुरु का बचन जाय खाला पिया पञ्च मुण्ड के बाम पद ठेली विषहरी राई की दुहाई फिरै ॥

प्रयोग विधि—अदरख को तीन बार मन्त्र पढ़ कर रोगिनी को खिलाने से ऋतुमती की वेदना शान्त होती है ॥

———o———

"मासिक विकार दूर करने का मन्त्र"

आदेश श्री रामचन्द्र सिंह गुरु को तोड़ूँ गाठ औंगा ठाली तोड़ दूँ लाय तोड़ि देऊँ सरित परित देकर पाय यह देखि मनुमन्त्त दौड़ कर आय अमुक का देह शांति वीर भगाय श्री गुरु नरसिंह की दुहाई फिरै ॥

प्रयोग विधि—एक पान का बीड़ा ले तीन बार मन्त्र पढ़ कर खिलाने से समस्त प्रकार के मासिक विकार दूर होते हैं ॥

———o———

प्रसव कष्ट निवारण मंत्र

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा। आं मुक्ता पाशा विपाशश्च मुक्ता सूर्य्येण रश्यमः ॥ मुक्ता सर्व्व फयादर्भ एहि मारिच स्वाहा। एतन्मत्रेणाष्ट बार जयनभि मनय पितम तत्क्षणात सुख प्रसवो भवति ॥

प्रयोग विधि—केवल एक हाथ से खींचा हुआ कुयें का जल लाकर ८ बार मंत्र पढ़कर पिलाने से प्रसव वेदना दूर होती है तथा बालक सुख पूर्वक होता है।

विशेष—एक हाथ से कुएँ का जल खींचने के बाद जमीन पर न रखना चाहिये अन्यथा प्रभाव निष्फल होगा।

———o———

"मृगी रोग हरण मंत्र"

ॐ हलाहल सरगत मंडिया पुरिया श्री राम जी फूंके, मृगी बाई सूखे, सुख होई ॐ ठः ठः स्वाहा ।।

प्रयोग विधि—भोज पत्र पर अष्टगंध से इस मंत्र को लिखकर गले में बाँधने मात्र से मृगी रोग चला जाता है ।

—o—

"स्तौंधी विनाशक मंत्र"

ॐ भाठ भाटिनी निकली कहे चलि जाई उस पार जाइब हम जाऊं समुद्र । भाटिनी बोली हम बिआइब उसकी छाली बिछाइब हम उप्समाशि पर मुन्डा मुन्डा अंडा ।

—o—

"स्त्री सौभाग्य वर्द्धक मंत्र"

ॐ ह्रीं कपालिनि कुल कुण्डलिनि में सिद्धिं देहि भाग्यं देहि देहि स्वाहा ।।

प्रयोग विधि—यह मंत्र कृष्ण पक्ष की चौदस से प्रारम्भ करके अगले महीने की कृष्ण पक्ष की तेरस तक—यानी एक मास तक नित्य एक सहस्र बार जाप करने से स्त्रियों की समस्त आधि व्याधियाँ दूर होती हैं और स्त्री पति पुत्र परिवार आदि की प्रिय हो जाती है ।

—o—

"चोर भय हरण मंत्र"

ॐ करालिनी स्वाहा ॐ कपालिनी स्वाहा चोर बंधय ठः ठः ।

यह मंत्र १०८ बार जाप करने से सिद्धि होता है । प्रयोग के समय सात बार मंत्र पढ़कर थोड़ी सी मिट्टी द्वार पर भूमि में गाड़ दे तो भवन में चोर घुसने का भय नहीं रहता ।।

—o—

"धन सहित चोर पकड़ने का मंत्र"

ॐ भ्रूमाजक हुँकार स्फटिका दह दह ॐ ।।

प्रयोग विधि—मंगलवार या रविवार के दिन कर्मटिका वृक्ष के नीचे मृगासन पर बैंठ कर गांधूली की लकड़ी जलाय सरसों तथा गूगुल से उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुये हवन करने से चोरी किये धन सहित चोर वापस आ जाता है ।

"चोर पकड़ने का मन्त्र"

ॐ नमो इन्द्राग्नि बन्ध बान्धाय स्वाहा ।।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर सफेद मुर्गा के गले में बाँध कर मुर्गा को किसी बड़े टोकरे के नीचे बन्द कर दे, फिर जिन आदमियों पर चोर होने का शक होवे उन लोगों का हाथ टोकरे पर धरावे तो जब चोर टोकरे पर हाथ धरेगा तब मुर्गा बोल पड़ेगा और चोर मिल जायेगा ।

"कुश्ती विजय करने का मन्त्र"

ॐ नमो आदेश कामरु कामाक्षा देवी अग पहरु भुजंगा पहरु लोहे शरीर आवत हाथ तोड़ूं पांव तोड़ूं सहाय हनुमन्त वीर उठ अब नृसिंह वीर तेरो सोलह सौ भृंगार मेरी पीठ लगे नाहीं तो वीर हनुमन्त लजाने तू लेहु पूजा पान सुपारी नारियल सिन्दूर अपनी देहु सबल मोही पर देहु भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा ।।

इस मन्त्र को किसी भी मंगलवार से जाप प्रारम्भ करे और चालीस दिन तक नित्य गेरु का चौका लगा लाल लंगोटा पहन हनुमान जी की मूर्ति सन्मुख रखकर लड्डू का भोग लगा १०८ बार जाप करे तो दंगल में शत्रु से अवश्य जीते ।।

"अदालत में मुकदमा जीतने का मन्त्र"

ॐ क्रां क्रां क्रां धूम्रसारी बदाक्षं विजयति जयति ओं स्वाहा।

प्रयोग विधि—जिस त्रयोदशी को पुनर्वसु नक्षत्र पड़े तब मृगछाला के चर्मासन पर किसी सरिता के निकट मूंगे की मालासे जपे तो यह मंत्र सिद्धि हो और जब प्रयोग करना हो तो सात बार मन्त्र पढ़ हाकिम के सम्मुख जाने से मुकदमे में विजय अवश्य प्राप्त होती है।

———o———

"द्यूत (जुआ) जीतने का मन्त्र"

ॐ नमः ठुं ठुं ठुं ठुं क्लीं क्लीं बानरी विजयपति स्वाहा॥

सिद्धि करने की विधि—दीपावली के दिन आधीरात में पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर १०८ बार मन्त्र पढ़कर कादम्बरी के फूल से हवन करने से यह मन्त्र सिद्धि हो जाता है और जब प्रयोग करना हो तो एक फूल ले सात बार मन्त्र पढ़कर दाहिने हाथ में बाँध जुआ खेले तो निश्चय जीते।

———o———

"ऋद्धि करण मन्त्र"

ॐ नमो पद्मावती पद्मानने लक्ष्मी दायिनी वाछां भूत-प्रेत विंध्यवासिनी सर्व शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहनी सिद्ध ऋद्धि वृद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॐ नमः क्लीं श्री पद्मावत्यै नमः

विधि—छार छबीला कपूर कचरी गूगुल गोरोचन सम भाग ले मटर के समान गोलियां बनाकर रविवार या शनिवार की आधी रात से जाप प्रारम्भ करे और २२ दिन तक प्रति दिन १०८ बार मन्त्र जाप करे तथा १०५ बार मन्त्र जाप कर हवन करे तथा पूजन में लाल वस्तु ही धरें तथा लाल वस्त्र ही पहने तो २२ दिन पश्चात लक्ष्मी जी की अनुकम्पा से ऋद्धि प्राप्त होवे॥

———o———

"आकस्मिक धन प्राप्ति मन्त्र"

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ध्वः ध्वः ।।

विधि—मृगशिरा नक्षत्र में वध किये श्याम मृगचर्म पर आसीन हो किसी सरिता के तट कनका गुदी वृक्ष के नीचे बैठ श्रद्धा विश्वास पूर्वक २१ दिन में एक लाख बार मन्त्र जपने से अनायास धन प्राप्त होता है ।।

———o———

"भूख प्यास निवारण मन्त्र"

ॐ सा सं शरीर अमृत मांषाय स्वाहा ।।

इस मन्त्र को पहले दस सहस्र बार शुभ मुहूर्त में जाप कर सिद्धि करले और जब प्रयोग करना हो तो लटजीरा और केकर के बीज बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर मिठाई में सानकर गोली बनावे और १०८ बार मन्त्र पढ़कर तांबेके यन्त्र में भर मुख में रखने से भूख तथा प्यास दोनों नष्ट हो जाती हैं ।।

———o———

"पीलिया झारने का मन्त्र"

ॐ नमो वीर बैताल असराल नारसिंहदेव खादी तुषादी पीलियांक मिटाती कारै झारै पीलिया रहै न नेक निशान जो कहीं रह जाय तो हनुमंत की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

प्रयोग विधि—कांसे के कटोरे में तेल भर कर रोगी के शीश पर रखे और हाथ में कुश लेकर मन्त्र पढ़ते हुए तेल में घुमावे और जब तेल पीला हो जाय तब नीचे उतार ले, इस प्रकार तीन दिन झारने से पीलिया दूर हो जाता है ।।

मारण प्रयोग

मारण मन्त्र–१

ॐ नमो अमुकस्य हन हन स्वाहा ।।

प्रयोग विधि–सरसों के तेल में कनेर के पुष्प मिला दस हजार बार मन्त्र पढ़कर हवन करे तो शत्रु निश्चितमृत्यु को प्राप्त होता है ।।

शत्रु मरणं मन्त्र–२

ओम् नमः काल भैरो कालिका तीर मार तोड़ बैरी छाती घोट हाथ काल जो काढ़ बत्तीसी दांती यदि यह न चले तो नोखरी योगिनी का तीर छूटे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

प्रयोग विधि–इक्कीस टुकड़े गूगुल तथा २१ फूल कनेर के लेकर श्मशान में जा चिता की अग्नि में एक टुकड़ा गूगुल तथा एक कनेर का फूल मन्त्र पढ़ते हुए हवन करे, इस प्रकार इक्कीस दिन करने से शत्रु अवश्य मर जाता है ।।

शत्रु सन्तान विनाशक मन्त्र–३

ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा ।।

प्रयोग विधि–अश्विनी नक्षत्र में घोड़े की चार अंगुल की हड्डी ला उपरोक्त मन्त्र एकलक्ष जप कर सिद्ध करें फिर सत्रह बार पढ़कर बैरी के भवनमें गाड़ देने से शत्रु का परिवार सहित विनाश हो जाता है ।।

"बैरी विनाशक मन्त्र"–४

ॐ नमो हनुमंत बलवंत माता अंजनी पुत्र हल हलंत आओ चढ़त आओ गढ़ किल्ला तोरंत आओ लंका जाल बाल भस्मकरि आओ ले लागूँ लंगूर ते लपटाय सुमिरते पटका ओ

चन्दी चन्द्रावली भवानी मिल गावे मंगल चार जीते राम लक्ष्मण हनुमान जी आओ जी तुम आओ सात पान का बीड़ा चाबत मस्तक सिंदूर चढ़ाओ आओ मंदोदरी के सिंहासन डुलता आओ यहाँ आओ हनुमान माया जागते नृसिंह माया आगे मैरु किल्किलाय ऊपर हनुमंत गाजे दुर्जन् को डार दुष्ट को मार संहार राजा हमारे सत्त गुरु हम सत्तगुरु के बालक मेरी भक्ति गुरु की शक्ति मन्त्र फुरो ईश्वरो वाचा ।।

सिद्धि करने की विधि—मंगलवार के दिन सात लड्डू और सात पान का बीड़ा ले हनुमान मन्दिर में जाकर दस हजार बार मन्त्र जाप कर लड्डू तथा पान का बीड़ा अर्पित करे । इसी प्रकार निरन्तर इकतालिस दिन तक इस मन्त्र का जाप करे और जाप की समाप्ति पर धूप दीप नैवेद्यादि से हनुमान जी का पूजन करे; सिंदूर लगावे तो यह मन्त्र सिद्ध होता है । और जब प्रयोग करना हो तो जमीन पर शत्रु की शकल का पुतला बना कर सीने पर शत्रु का नाम लिख अंग प्रत्यंग में बीज प्रदर्शित करे और सात बार मन्त्र पढ़कर उसके कपाल पर जूते लगावे तो शत्रु के शीश में चोट आवे बुद्धि भ्रष्ट हो जाय पागल होकर छः दिनों में मृत्यु को प्राप्त हो ।

विशेष—भूमि पर शत्रु की मूर्ति बनाकर मोम की चार कीलें मन्त्र पढ़ मूर्ति के चारों कोनों में गाड़ दे तथा हनुमान जी की पूजा कर के बीज मन्त्र पूर्व की ओर मुख कर के लिखे और खीर का भोग लगावे । बीज मन्त्र ज्ञात करने के लिये प्रस्तुत चित्र का अनुकरण करें ।

"शत्रु प्राण हरण मन्त्र"—५

ॐ ऐं ह्रीं महा महा विकराल भैरवाय, ज्वाला काय मल शत्रु दह दह हन हन पच पच उन्मूलय उन्मूलय ॐ ह्रीं ह्रीं हुँ फट् ।।

प्रयोग विधि—श्मशान में जाकर भैंसे के चर्मासन पर बैठे काले ऊन से सात रात्रि १०८ बार प्रति रात्रि मन्त्र जाप कर सवा सेर सरसों से हवन करे तो शत्रु का प्राण हरण होवे ॥

"शत्रु मारण मन्त्र"—६

ओम् चण्डालिनि कामाख्या वासिनि वन दुर्गे क्लीं क्लीं ठः स्वाहा ।

प्रयोग विधि—प्रथम दस हजार बार मन्त्र जाप कर यह मन्त्र सिद्धि करले फिर शनिवार के दिन गोरोचन तथा कुंकुम से भोज पत्र के ऊपर "स्वाहा मारय हुँ अमुक ह्री फट्" लिखे और अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम लिख ऊपर लिखे मन्त्र से अभिमन्त्रित कर के गले में धारण करे तो शत्रु नाश होवे ॥

मारण मन्त्र—७

ओम् शुखले स्वाहा ॥

सर्व प्रथम दस हजार बार जाप कर मन्त्र सिद्धि करले और जब प्रयोग करना हो तो बिच्छू का डंक तज कौंच के बीज और छैबुंदिया नामक कीड़ा ले उपरोक्त मन्त्र से अभिमंत्रित कर के जिस प्राणी के कपड़े पर डाल दोगे वह प्राणी केवल सात दिवस में गुल्म रोग से पीड़ित हो काल कलवित हो जायेगा ।

"मारण मन्त्र"—८

ओम् सुरेश्वराय स्वाहा

इस मन्त्र को भी पहले दस हजार बार जाप कर सिद्धि करले, उसके बाद जब प्रयोग करना होवे तो एक अंगुल लम्बी साँप की हड्डी लाय अश्लेषा नक्षत्र में जिस व्यक्ति के घर गाड़ दे और दस हजार बार मन्त्र जाप करे तो शत्रु परिवार का कोई व्यक्ति न बचे ॥

"शत्रु मन, मोहन मन्त्र"

ओम् नमो महाबल महा पराक्रम शस्त्र विद्या विशारद

अमुकस्य भुजबलं बंधय बंधय दृष्टि स्तम्भय स्तम्भय अंगानि धूनय धूनय पातय पातय महीतले हुँ।।

इस मन्त्र को पहले दस हजार बार जाप कर के सिद्धि कर ले फिर जब प्रयोग करना हो तो लटजीरा वृक्ष की पत्तियों का रस निकाल कर उक्त मन्त्र से अभिमंत्रित कर अस्त्र-शस्त्र पर लेप करे तो युद्ध भूमि में शत्रु देखते ही मोहित हो जाय।।

विशेष–अमुक शब्द के स्थान पर शत्रु का नाम उच्चारण करें।।

"अश्व मारण मन्त्र"

ओम् नमो पच पच स्वाहा।।

जिस दिन अश्विनी नक्षत्र हो घोड़े की सात अंगुल लम्बी हड्डी ले घुड़शाल में गाड़ दे और एक हजार बार उपरोक्त मन्त्र का जाप करे तो घोड़ा मृत्यु को प्राप्त हो।।

मारण मन्त्र

ओम् डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डं डः अमुकं गृह्ण गृह्ण हुं हुं ठः ठः।

यह मन्त्र दस हजार बार जाप कर सिद्धि करने के बाद जब प्रयोग करना हो तो चार अंगुल लम्बी आदमी की हड्डी लाकर इक्कीसबार मन्त्र पढ़ अभिमन्त्रित कर श्मशान में गाड़ देने से शत्रु की मृत्यु शीघ्र ही होती है।।

"उच्चाटन महामंत्र"

ॐ तुङ्ग स्फुलिंग बक्रिम चाचिंका विध्दद्रहन सांघ वने स्फर स्फर ॐ ठः ठः अमुकं।।

रविवार या मंगलवार की अमावस्या की अर्द्ध रात्रि में ॐ चर्मासन पर गुंजा की माला से एक हजार अस्सी वार इस मंत्र का जाप करे तो शत्रु उच्चाटन होवे।।

"उच्चाटन मंत्र"

श्रीं श्री श्रीं अमुक शत्रु उच्चाटन स्वाहा ।।

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में सात अंगुल लम्बी कुंकुम की लकड़ी को एक सौ आठ बार मंत्र पढ़कर शत्रु के द्वार पर गाड़ देवे तो सात दिन में शत्रु उच्चाटन होवे ।।

"उच्चाटन मंत्र"

ॐ नमो मोमास्याय अमुकस्य गृहे उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा ।।

ॐ इस मंत्र को पहले एक हजार बार जाप करके सिद्धि करले फिर जब प्रयोग करना हो तो मंगलवार के दिन जिस जगह गदहा लोटा हो वहाँ की मिट्टी बायें हाथ से उत्तर की ओर मुख करके ले आवे और इक्कीसबार मंत्र पढ़ शत्रु के घर में डाल दे तो उच्चाटन अवश्य होवे।

"उच्चाटन मंत्र"

ॐ लोहिता मुख स्वाहा ।।

इस मंत्र को एक हजार बार जाप कर सिद्धि कर ले फिर जब प्रयोग करना हो तो चार अंगुल लम्बी उमरी वृक्ष की लकड़ी लाकर उक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिसके मकान में डाले उसका उच्चाटन अवश्य होवे ।।

"उच्चाटन महामंत्र"

ॐ हं हं वां हुं हुं ठः ठः ।।

इस मंत्र को पहले केवल एक हजार बार जाप करके सिद्धि करले फिर जब प्रयोग करना हो तो चार अंगुल लम्बी कौवे की हड्डी लाकर एक हजार बार मंत्र पढ़ कर अभिमन्त्रित कर जिसका उच्चाटन करना होवे उसके घर में डाल दे तो शीघ्र उच्चाटन होवे ।।

"उच्चाटन मंत्र"

ॐ घुं घूंते ठः ठः स्वाहा ।

इस मंत्र की प्रयोग विधि अत्यन्त सरल है । इसको केवल एक हजार बार जाप करने से ही यह सिद्धि हो जाता और जब इसका प्रयोग करना हो तोअरुवावृक्ष कीएक टहनी ले एक सौआठ बार मंत्र पढ़ जिसव्यक्तिका नाम लेकर हवन करेउसका उच्चाटन अवश्यहोगा ।।

"उच्चाटन मंत्र"

ॐ ह्रीं दण्डीनं हीन महा दण्डि नमस्ते ठः ठः ।।

इस मंत्र को भी उपरोक्त मंत्र की भाँति एक हजार बार जाप कर सिद्धि करले फिर जब प्रयोग करना होवे तो सात अंगुल लम्बी मनुष्य की हड्डी ले उक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिस व्यक्ति के निवास स्थान में गाड़ दे तो उसका उच्चाटन अवश्य होवे ।।

जगत मोहन मंत्र

ॐ उड्डा महेश्वराय सर्व जगन्मोहनाय अं आं इं ईं उं ऊं ॠं ॠं फट् स्वाहा ।।

इस मंत्र को प्रथम एक लाख बार जाप करके सिद्धि करे फिर जब प्रयोग करना हो तो–

(१) पान की जड़ को जल में पीस कर सात बार उक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले मोहित हो जाते हैं ।।

सर्वजन सम्मोहन मंत्र

ॐ नमो भगवते कामदेवाय यस्य यस्य दृश्यो भवामि यश्च यश्च मम मुखं पश्यति तं तं मोहयतु स्वाहा ।।

इस मंत्र को एक हजार बार जप कर सिद्धि कर लेने के बाद जब प्रयोग करना हो निम्नांकित प्रयोग करें ।

(१) गोरोचन असगन्ध तथा हरताल को सम भाग लेकर केले के रस में पीस सात बार मंत्र जाप कर अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से समस्त प्राणी मात्र सम्मोहित हो जाते हैं ।।

(२) सफेद मदार (आक) की जड़ को सफेद चन्दन के साथ

घिसकर सात बार मंत्र जाप कर मस्तक पर तिलक लगाने से अमोघ सम्मोहन होता है ॥

(३) अनार के पांचो अंग (फल, फूल, जड़, पत्ते, छाल) सफेदघुंघुंची के साथ पीस कर इक्कीस बार मंत्र जाप कर तिलक लगाने से समस्त प्राणी मोहित होते हैं ॥

(४) कपूर तथा मैनसिल केले के रस से पीस कर उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर तिलक लगावे तो सब लोग मोहित होवें ॥

(५) गोरोचन कुंकुम तथा सिन्दूर को धात्री के रस के सहयोग से पीस उपरोक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने मे जगत के समस्त प्राणी मोहित हो जाते हैं ॥

(६) शंखाहुली सिरस तथा राई (आसुरी) को सफेद रंगवाली गाय के दूध के संयोग से अभिमन्त्रित कर तन में लेप करके गर्म जल से स्नान कर केशर का तिलक लगा जहां भी जाय वहां के समस्त प्राणी मोहित होते हैं ॥

(७) तुलसी के बीजों को सहदेई के रस में पीस करके उक्त मंत्र सेअभिमन्त्रितकरके तिलकलगाने से समस्त लोगसम्मोहितहोत हैं ॥

मोहन मंत्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्व जगन्मोहनं कुरु कुरु स्वाहा ।

इस मंत्र को दस हजार बार जाप कर सिद्धि करले फिर निम्नांकित प्रयोग करे—

(१) गोरोचन सिन्दूर तथा केशर को आंवले के रस से पीस करके उक्त मंत्रसेअभिमन्त्रित कर मस्तक पर तिलक लगाने से सभी लोग मोहित होते हैं ॥

(२) कड़ुई तुम्बी (तोरई) के बीजों का तेल निकलवा करके उसमें कपड़े की बत्ती बना काजल पार उक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर आँखों में आंजने से प्राणी मात्र सम्मोहित होते हैं ॥

मोहन मंत्र

ॐ नमो अनरुठनी अशव स्थनी महाराज क्षनी फट् स्वाहा।

उल्लू के पंख की लेखनी बना बकरे के रक्त से कागज पर १०८ बार यह मंत्र लिखे और कागज को पगड़ी या टोपी में रख कर जहाँ भी जाय वहाँ के वासी अवश्य मोहित होवें ।।

मोहन मन्त्र

ओम् श्रीं धूं धूं सर्व मोहयतु ठः ठः ।।

इस मन्त्र को प्रथम एक हजार बार जप कर सिद्धि कर ले फिर जब प्रयोग करना हो तो तब चिचिक पक्षी के पंख को कस्तूरी में पीस १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर मस्तक पर तिलक लगाने से देखने वाले समस्त जन मोहित हो जाते हैं ।।

महा मोहन मोहनी मन्त्र

ओम् नमः पद्मनी अंजन मेरा नाम इस नगरी में जाय मोहूँ । सर्व ग्राम मोहूं राज करन्तारा मोहूं । फर्श प्रे बैठाय मोहूं पनिघट पनिहारिन मोहूं । इस नगरी केछत्तीस पवनिया मोहूं । जो कोई मार मार करन्त आवे उसे नरसिंह वीर बाम पद अंगूठा तर धरे और घेर लावे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

इस मन्त्र को शनिवार या रविवार की रात्रि में नृसिंह देव की विधिवत पूजा कर गूगुल जलावे तथा सुपारी घी शकर पान आदि अर्पित कर एक सौ आठ बार मन्त्र जाप कर हवन करके सिद्धि कर ले तथा जब प्रयोग करना होवे तब चन्दन बन रुई में लटजीरा के संयोग से बत्ती बना काजल पारले और उस काजल को सात बार मंत्र पढ़ आँख में लगाने से सकल नगर वासी मोहित होते हैं ।।

ग्राम मोहन मन्त्र

ओम् यती हनुमन्त यह जाय मरे घट पिडकर कौन है और छत्ती मय बन पेड़ जेहि दश मोहूं जेहि दश मोहूं गुरु को शक्ति मेरी भक्ति फुरो ईश्वरो वाचा ।।

इस मन्त्र को रविवार से प्रारम्भ करके शनिवार के दिन तक नित्य १४४ बार हनुमान जी की प्रतिमा के सामने जाप कर सिद्धि करे, फिर जब प्रयोग करना हो तो चौराहे की सात कंकड़ी उठा १४४ बार मन्त्र पढ़ जिस कूप में डाले उस कूप का जल पीने वाले सभी लोग मोहित हों ।।

सभा मोहन मन्त्र

कालू मुंह धोई करूं सलाम मेरे नैन सुरमा बसे जो निरखे सो पायन पड़े गोसुल आजम दस्तगीर की दुहाई ।।

यह मन्त्र इस्लामी है, इसको जुमा (शुक्रवार) को सवा लाख गेहूँ के दाने ले प्रत्येक दाने पर एक बार मन्त्र पढ़ इसको सिद्धि कर ले और आधा गेहूँ पिसवाय घी से हलुवा बना गौसुल आजम को अर्पित कर स्वयं भी खाय फिर सात बार मंत्र जाप कर आँखों में सुर्मा लगा कर जिस सभा में जाय वहाँ के लोग मोहित हों ।।

कामिनी मन मोहन मन्त्र

अल्लाह बीच हथेली के मुहम्मद बीच कपार । उसका नाम मोहनी जगत् मोहे संसार । मोह करे जो मोर मार उसे मेरे बायें पोत वार डार । जो न माने मुहम्मद पैगम्बर की आन । उस पर मुहम्मद मेरा रसूलिल्लाह ।।

यह मन्त्र भी इस्लामी है । इसको शनिवार से प्रारम्भ कर अगले शनिवार तक नित्य धूप दीप लोबान सुलगा कर एक बार जाप कर सिद्धि कर ले फिर जब प्रयोग करना हो स्त्री पैरों तले की मिट्टी उठा कर सात बार मन्त्र पढ़ जिस स्त्री के शीश पर डाले वह मोहित हो जावे।।

कामिनी मनमोहन महा मंत्र

ॐ नमो आदेश श्री गुरु को यह गुड़ राती यह गुड़ माती यह गुड़ आवे पड़ती । जो मांगू वही पाऊँ सोवत तिरिया को जगाय लाऊँ । चल अगियाबैताल अमुक हृदय पैठ घलावै चाल निशि लो चैन न दिन को सुख, घूम फिर ताके मेरा मुख । जब मकड़ा मकड़ से टले तो माथ फार दो टूक हो पड़े । माला कलवा काली एक कलवा सोइ धाय चाटे मेरा तलवा आंख के पान कवारी इसे धन और यौवन सो खरी पियारी रेन रंग गुड़ में लसे शीघ्र "अमुको" आवे फलाना पास हनुमन्त जी की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाच ।

इस मत्र को शनिवार से प्रारम्भ करके शनिवार तक नित्य इक्कीस बार मंत्र जाप, विधिवत हनुमान जी की पूजा करे तो यह सिद्धि हो जावे और जब प्रयोग करना हो तो थोड़े से गुड़ में अपनी अनामिका उँगली का रक्त मिला २१ बार मंत्र पढ़ वह गुड़ जिस स्त्री पुरुष को खिलादे वह तन मन से मोहित हो जाय ।।

सुपारी मोहन मंत्र—१

ॐ नमो देव देवेश्वर महारये ठं ठं स्वाहा ।।

इस मंत्र को पहले दस हजार बार जाप करके सिद्धि करले, फिर जब प्रयोग करना हो तो एक सुपारी ले एक सौ आठ बार मंत्र पढ़ जिसको खिलादे वही मोहित हो जाय ।।

सुपारी मोहन मंत्र—२

ॐ नमो गुरु का आदेश पीर में नाथ प्रीत में माथे जिसे खिलाऊँ तिसे मोहित करूँ फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

इस मंत्र को सूर्य ग्रहण के समय कमर तक जल में तालाब के अन्दर खड़े होकर सात बार मंत्र पढ़ कर एक खड़ी सुपारी निगल जाय

और वह सुपारी जब पाखाने के द्वारा पेट से बाहर आवे तो उसको ले जल से साफ कर फिर दूध से स्वच्छ कर सात बार मंत्र पढ़ जिसको भी खिलावे वह कैसा ही पत्थर दिल क्यों न हो अवश्य ही मोहित हो जाय।

पुष्प मोहन मन्त्र

ओम् नमो कामरु कामख्या देवी जहाँ बसे इस्माइल जोगी इस्माइल योगी ने लगाई फुलवारी फूल लोढ़े लोना चमारी एक फूल हँसे दूजे मुस्काय तीजे फूल में छोटे बड़े नरसिंह आय जो सूँघे इस फूल की बास वह चल आवे हमारे पास दुश्मन को जाई लिया फटै मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को रविवार से प्रारम्भ करके इक्कीस दिन तक नित्य लौंग पान फूल सुगन्ध घी में मिला १०८ बार मंत्र पढ़ हवन करे तो यह सिद्धि होता है और जब प्रयोग करना हो तो सुगन्धित फूल ले इक्कीस बार मंत्र पढ़ जिसको सुंघावे वही मोहित हो जाय ॥

आकर्षण मन्त्र

ओम् नमः ह्रीं ठं ठः स्वाहा।

यह मन्त्र मंगलवार के दिन दस हजार बार जाप कर सिद्धि कर ले फिर जब प्रयोग करना हो तो चूहे के बिल की मिट्टी सरसों तथा बिनौला हाथ में ले तीन बार मन्त्र पढ़ कर जिसके कपड़ों पर डाल देवे वह अवश्य आकर्षित होगा ॥

आकर्षण मन्त्र

ओम् हुँ ओम् हुं ह्रीं ॥

जिस व्यक्ति को आकर्षित करना हो उसका ध्यान कर पन्द्रह दिन तक नित्य इस मंत्र का जाप करे तो कैसा ही पत्थर दिल प्राणी हो अवश्य आकर्षित होवे ॥

आकर्षण मन्त्र

ओम् ह्रों ह्रीं ह्रां नमः ।।

इस मन्त्र को भी पूर्व मन्त्र की ही भाँति नित्य दस हजार बार पन्द्रह दिन तक जाप करे तो अवश्य ही आकर्षित होवे ।।

आकर्षण मन्त्र

ओम् नमः भगवते रुद्राय सदृष्टि लींपना हर स्वाहा कंसासुर की दुहाई ।।

इस मन्त्र का जाप मंगलवार से प्रारम्भ कर दश मंगल तक निरन्तर नित्य १२ बार मन्त्र जाप कर दशांश हवन कर ब्राह्मण भोजन करावे और जब प्रयोग करना होवे तब सरसों बिनौला और चूहे के बिल की मिट्टी से तीन बार मन्त्र पढ़ जिसके वस्त्रों पर डाले वह अवश्य ही आकर्षित होवे ।।

स्त्री आकर्षण महा मन्त्र

ओम् नमो देव आदि रूपाय अमुकस्य आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा ।।

इस मन्त्र को विधि पूर्वक दस हजार बार जाप कर सिद्धि करले फिर निम्न प्रकार से इसका प्रयोग करे ।

(१) मृतक मनुष्य की खोपड़ी लाकर गोरोचन से उस पर यह मन्त्र लिख खैर वृक्ष की लकड़ी जला कर मन्त्र पढ़ कर तपावे । इस प्रकार तीन दिन तक नित्य करे तो कैसी पाषाण हृदया कामिनी क्यों न हो अवश्य ही आकर्षित होती है ।

(२) अपनी अनामिका नामक उंगली चीर रक्त से भोजपत्र पर मन्त्र लिख जिसको आकर्षित करना हो उसका नाम लिखे और शहद में डुबा दे तो वह कामिनी अवश्य आकर्षित होवे ।।

(३) गोरोचन में काले धतूरे का रस मिला कर कनेर की लकड़ी की लेखनी बना भोजपत्र पर उक्त मन्त्र लिख जिसे आकर्षित करना

होवे उसका नाम लिख खैर नामक वृक्ष की लकड़ी जलाकर अग्नि में तपावे तो वह कामिनी चाहे चार सौ कोस (सौ योजन) दूर क्यों न होवे अवश्य आकर्षित होती है ॥

कामिनी आकर्षण मन्त्र

ओम् चामुण्डे तरु वतु अमुकाय कर्षय आकर्षय स्वाहा ।

यह महा मन्त्र इक्कीस दिवस तक तीनों समय की संध्या अवधि में नित्य एक हजार बार जपने से सिद्धि हो जाता है । इसकी विधि निम्न प्रकार है–

(१) काले साँप की केंचुल का चूर्ण अग्नि में डाल इस मन्त्र का जाप कर उसका धुआँ अपने अंग प्रत्यंग पर लेने से कैसी ही रूपवती गर्विता कामिनी हो अवश्य आकर्षित होती है ।

(२) उत्तर की ओर मुख कर लाल चन्दन से लाल कपड़े पर यह मन्त्र लिख विधान पूर्वक पूजा करे और फिर उसे पृथ्वी में गाड़ इक्कीस दिवस तक नित्य चावल के धोवन से उसे सींचते हुए इक्कीस बार मन्त्र जाप करे (अमुकाय के स्थान पर उस स्त्री का नाम उच्चारण करें) तो उर्वशी के समान रूप गर्विता कामिनी भी खिची चली आती है ॥

स्त्री आकर्षण मन्त्र

ओम् ह्रीं नमः

यह मन्त्र एक सप्ताह तक नित्य लाल वस्त्र तथा कुंकुम की माला पहन एक हजार बार जाप करने से साधारण स्त्री तो क्या स्वर्ग की देवांगना भी आकर्षित हो साधक के समीप खिची चली आती है ॥

स्त्री आकर्षण मन्त्र

ओम् क्षौ ह्रीं ह्रीं आं ह्रां स्वाहा ।

यह मन्त्र भी उपरोक्त विधि से लाल कपड़ा पहन कुंकम की माला गले में पहन कर एक सप्ताह तक नित्य दस हजार बार जाप करने से मन वांछित स्त्री आकर्षित हो खिची चली आती है ॥

वशी करण मन्त्र

ओम् नमो चामुण्ड जय जय वश्य मानय जय जय सर्व सत्वा नमः स्वाहा ।।

इस मन्त्र को एक लाख बार जाप कर सिद्धि कर लेने के बाद रविवार के दिन गुलाब का फूल सात बार मन्त्र पढ़ कर जिसे देवे वह वश में हो जाता है ।।

त्रैलोक्य वशी करण मन्त्र

ओम् नमो भगवती मातंगेश्वरी सर्व मल रंजनि सर्वषां महा तंगे कुवरी के नन्द नन्द जिवहे जिवहे सर्व जगत वश्य-मानय स्वाहा ।।

इस मन्त्र को दस हजार बार जाप कर सिद्धि कर लेने के बाद वशीकरण के लिये निम्न प्रकार प्रयोग करे ।

(१) चन्द्र ग्रहण के अवसर पर सफेद विष्णु कान्ता की जड़ लाकर तीन बार मन्त्र पढ़ आंख में अंजन की तरह आंजने से देखने वाले सभी लोग वश में होते हैं ।।

(२) शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को सफेद घुंघुची की जड़ लाकर सात बार मंत्र से अभिमन्त्रित कर जिसको भी खिला देवे वह तन मन से साधक के वश में हो जाता है ।।

वशी करण मन्त्र

ओम् सर्व लोक वश कराय कुरु कुरु स्वाहा ।।

इस मन्त्र को प्रथम १०८ बार जाप कर सिंद्धि करलेवे और जब प्रयोग करना हो तो निम्न प्रकार प्रयोग करे ।।

(१) लटजीरा के बीज काली गाय के दूध में पीस कर सात बार मन्त्र पढ़ मस्तक पर तिलक लगाये तो देखने वाले वश में हो जाते हैं ।।

(२) नागर मोथा, हरताल, कुंकुम, कूट और मैनसिल को अनामिका नामक उंगली के रक्त से पीस सात बार मन्त्र पढ़ मस्तक पर तिलक लगावे तो जो व्यक्ति उस तिलक को देखे वह वश में होजाता है।

(३) बरगद की जड़ जल में घिसकर सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से देखने वाला वश में हो जाता है ।।

(४) सफेद मदार (आक) के फूल छाया में सुखा कर काली गाय के दूध में पीस २१ बार मन्त्र पढ़ मस्तक पर तिलक लगाने से उत्तम वशी करण होता है ।।

(५) काली गाय के दूध में सफेद दूब पीस करके २१ बार मन्त्र पढ़ तिलक लगावे तो स्त्री वशी करण होवे ।।

(६) छाया में सुखाई सहदेवी को उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर चूर्ण बनाकर पान में जिस व्यक्ति को खिला देवे वही वश में हो जाता है ।।

(७) बच-कूठ और ब्रह्मदण्डी का चूर्ण बराबर ले इस मन्त्र से आभिमन्त्रित कर पान में जिसे खिलादे वही वश में हो जावे ।।

वशी करण महामन्त्र

ओम् मों ड्रो ।

यह मन्त्र निराहार अवस्था में १००८ बार जाप कर सिद्धि कर लें और जब प्रयोग करना हो तो जिसे वश में करना हो उसका ध्यान कर पाँच सौ बार जाप करे तो बन्धु बांधव मित्र स्त्री राजा मन्त्री आदि सभी वश में हो जाते हैं ।।

भूतनाथ वशीकरण मन्त्र

ओम् नमो भूतनाथ समस्त भुवन भूतानि साधय हुँ ।।

इस मन्त्र को एक लाख बार जाप करने से यह सिद्धि हो जाता है और जब प्रयोग करना हो तो जिस प्राणी को वश में करना हो उसका ध्यान करते हुए १०८ बार जाप करने से वह वश में हो जाता है ।।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ओम् चिटि चाण्डाली महा चाण्डाली अमुकं मे वश-मानय स्वाहा ॥

इस मन्त्र को सात दिवस तक अविराम जाप करके सिद्ध करले और आवश्यकता के समय निम्न प्रकार प्रयोग करे।

यह मन्त्र बेल के कांटे की लेखनी बना ताल पत्र पर लिखे और उक्त ताल पत्र को दूध में पकावे फिर उक्त ताल पत्र को तीन दिन पर्यन्त कीचड़ में गाड़ दे और तीन दिन बीतने पर निकाल कर जिस स्थान पर दुर्गा पूजा महोत्सव होता हो वहाँ के मण्डप द्वार पर गाड़ देने से इच्छित व्यक्ति वश में हो जाता है ॥

वशीकरण मन्त्र

ओम् ह्लीं ह्लीं कालि कालि स्वाहा ॥

इस मन्त्र को किसी तिराहे (जहां से तीन दिशाओं को मार्ग जाता हो) पर आसीन हो एक लाख बार जाप करके सिद्ध कर लें फिर जब आपको प्रयोग करना हो तो इच्छित स्त्री पुरुष पर १०८ बार मन्त्र पढ़ कर फूंक मार दें तो कैसा ही हृदय हीन क्यों न हो आपके वश में हो जायेगा।

राजा वशीकरण मन्त्र

ओम् नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा'॥

इस मन्त्र को केवल १००८ बार जाप करके सिद्धि कर लें और आवश्यकता के समय कपूर कुंकुम चन्दन और तुलसी की पत्ती गोदुग्ध में घिसकर उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके मस्तक पर तिलक लगा राज सभा में जावें तो राजा वश में होवे और साधक की इच्छानुसार कार्य करे।

सौ मित्र वशीकरण मन्त्र

वीनोन तरयोध सरक्ता सतोत विष्टाँग ।

रक्त चन्दन लिप्तांगा भक्तानांच शुभ प्रदम् ।।

गाय के गोबर से त्रिकोणाकार चौका लगाकर उसके तीनों कोनों पर कुंकुम की रेखा खींचे और बीच में जिसको वश में करना हो उसका नाम लिख सिन्दूर लगाकर एकाग्रता पूर्वक दस हजार बार मन्त्र जाप करके हवन करे तो सौ मित्र वश में हो जाता है ।।

पति वशीकरण मन्त्र

ओम् काम मालिनी ठः ठः स्वाहा ।।

इस मन्त्र को पहले १००८ बार जाप करके सिद्धि कर लें फिर आवश्यकता के समय निम्न प्रयोग करें ।

मछली के पित्ते में गोरोचन मिला सात बार मन्त्र पढ़ मस्तक पर लगाने से पति वश में हो जाता है ।

पुरुष वशीकरण मन्त्र

ओम् नमो महायक्षिणी मम पतिं वश्य मानय कुरु कुरु स्वाहा ।।

इस मन्त्र को पहले एक हजार बार जाप करके सिद्धि कर लें फिर जब प्रयोग करना हो तो—

(१) बृहस्पतिवार के दिन कदली का रस सिन्दूर और योनि का रक्त मिला सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर मस्तक पर लगावें तो पति कैसा निष्ठुर क्यों न हो वशीभूत हो जाता है ।

(२) अनार के फूल फल पत्ता छाल और जड़ लेकर सफेद सरसों के साथ पीसकर सात बार मन्त्र से आभिमन्त्रित कर योनि में लेप कर पति समागम करे तो मृत्यु पर्यन्त वश में रहता है ।।

पति वशीकरण सिन्दूर मन्त्र

ओम् नमो आदेश गुरु को सिन्दूर कोमया सिन्दूर नाम तेरी पत्ती । कामाख्या सिर पर तेरी उत्पत्ती । सिन्दूर पढ़ि

अमुकी लगावें बिन्दी हो वश अमुक होके निर्बुद्धी । ओम् महादेव की शक्ति गुरु की भक्ति कामरू कामाख्या माई की दुहाई आदेश हाड़ी दासी चण्डी की, अमुक मन लाव निकार न तो पिता महादेव वाम पाद जाय लगे ॥

इस मन्त्र को पहले दस हजार बार जाप करके सिद्धि कर लें और आवश्यकता के समय सरसों के तेल में मालती के पुष्प डाल दें और जब कुछ दिनों में वह फूल सड़ जायँ तब १०८ बार मन्त्र पढ़ योनि में लगा पति समागम करे तो पति वश में हो जाता है ॥

पति वशीकरण महामन्त्र

ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं थिरिं ठः ठः अमुकं वशं करोति ॥

इस मंत्र को दस हजार बार जाप कर सिद्धि कर लें, आवश्यकता के समय शुक्ल पक्ष की परेवा को गौरैया चिड़िया का मांस ले इक्कीस बार मंत्र पढ़ थोड़ा सा मांस पान में पति को खिला दे तो पति वश में हो जाता है ॥

पति वशीकरण तन्त्र

(१) मासिक धर्म से शुद्ध हो चार लौंग युक्ति पूर्वक अपनी योनि में चार दिन तक रखे, चार दिन बाद निकाल कर पीस ले और पति के शीशपर डालदे अथवा खिला दें तो पति जीवन पर्यन्त वश में रहताहै ।

(२) सफेद धतूरे के बीज सफेद सरसों तुलसी के बीज और लटजीरा के बीज तिल्ली के तेल में पीस कर योनि में लेप कर पति समागम करे तो पति सदैव के लिये वश में हो जाता है ॥

(३) रविवार के दिन तुलसी के बीजलेकर सहदेई के रस मे पीस ले और उसे योनि में लगा पति से समागम करे तो पति वश में होजाताहै।

(४) कुंकुम और गोरोचन एक साथ पीस अनार की लकड़ी की लेखनी बना षटकोण यंत्र बनावे और यंत्र के दक्षिण तथा उत्तर कोण पर क्रमशः श्रीं क्षा श्रीं लिखे और पूर्व के कोण में क्षा तथा पश्चिम के

कोण में श्रीं लिख श्रद्धा पूर्वक पूजा करे और दूसरे दिन मगवा रख उत्तम मुहूर्त में चोटी में बांध ले और दो दिन मौन रहकर केवल फल खाकर व्यतीत करे फिर चोटी से यन्त्र खोल अष्टधातु के तावीज में भर गले में बांध ले और प्रत्येक रविवार को धूप दे पति समागम करे तो रूठा हुआ पति भी आकर्षित हो जाता है ॥

कामिनी वशीकरण मन्त्र

ॐ कुम्भुनीं स्वाहा ॥

इस मन्त्र को पहले एक हजार बार जाप करके सिद्धि कर ले और फिर आवश्यकता के समय गुलाब का फूल १०८ बार मन्त्र पढ़ जिस स्त्री को सुंघाया जाय वह वश में हो जाती है ॥

नारी वशीकरण मन्त्र

ॐ चिमि चिमि स्वाहा ॥

इस मन्त्र को पहले दस हजार बार जाप कर सिद्धि कर ले और आवश्यकता के समय प्रातःकाल उठ मुख धोकर सात चुल्लू पानी सात बार मन्त्र पढ़ कर जिसस्त्रीकानामलेकर पिये वह वश में हो जातीहै ॥

स्त्री वशीकरण मन्त्र

ॐ कामिनी रंजिनी स्वाहा ॥

यह मन्त्र एक हजार बार जाप करने से सिद्ध हो जाता है। आवश्यकता के समय लाख की स्याही से जिस स्त्री को वश में करना हो उसकी कलाई पर लिख दे तो वह वश में हो जाती है ॥

स्त्री वशीकरण मन्त्र

ॐ नमः कामाख्या देवि अमुकीं मे वशंकरी स्वाहा ॥

इस मन्त्र को १०८ बार जाप कर सिद्ध कर लेने के पश्चात् आवश्यकता के समय निम्न प्रकार करना चाहिये।

(१) चिता की राख तथा ब्रह्म दण्डी को उक्त मन्त्र पढ़ जिस स्त्री के शरीर पर डालेवहकामिनीसदैव के लिये वश में हो जातीहै।

(२) मनुष्य और नीलगाय का दाँत तेल के साथ घिस उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर मस्तक पर तिलक लगाने से देखनेवाली रूपवाला जीवन पर्यन्त वश में रहती है ॥

स्त्री वशीकरण महामन्त्र

कामोऽनंगः पुष्प शरः कन्दर्पो मीन केतनः । श्री विष्णु तनयो देवः प्रसन्नो भव मे प्रभो ॥

प्रयोग विधि—गोरोचन, कुंकुम, लाल चन्दन, कस्तूरी—इन सब वस्तुओं को एकत्र कर भोजपत्र पर चमेली की लेखनी से कामराज यन्त्र बनावे और लकड़ी के ऊपर (आसुरी) राई से कामदेव की मूर्ति बना उसके हृदय में कामराज यन्त्र स्थापित करे और धूप दीप फल फूल नैवेद्य आदि अर्पित कर इक्कीस रात्रि पर्यन्त उपरोक्त मन्त्र से कामदेव का पूजन करे तो वह तरुणी सुर सुन्दरी देव कन्या क्यों न हो सदैव के लिये वशीभूत हो जाती है । कामराज यन्त्र निम्न प्रकार बनावे और रिक्त स्थान में अभिलषित स्त्री का नाम लिखना चाहिये ॥

स्त्री वशीकरण मन्त्र

ॐ नमः ह्रीं ह्रौं का चिकरालिनी ह्रीं क्षी फट स्वाहा ॥

इस मन्त्र को मरघट में जाकर प्रतिदिन १०८ बार सात दिन पर्यन्त जाप करे तथा कालीं देवी की पूजा कर काले धतूरे के पेड़ से पुष्य नक्षत्र में फल, भरणी नक्षत्र में फूल, विशाखा नक्षत्र में पत्ते, हस्त नक्षत्र में मूल तथा कृष्ण पक्ष की संक्रान्ति में जड़ लाकर कुंकुम कपूर गोरोचन के साथ पीस मस्तक पर तिलक लगा जिस स्त्री के सामने जाय वह कैसी ही स्त्री क्यों न हो अति शीघ्र वश में हो जाती है ॥

महाकाल भैरव स्त्री वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो काली भैरव निशि राती काल आया आधा राती चलती कतार बंधे तू बावन बार पर नारी से राखे मीर

मन पकरि वाको लावे सोवति को जगाय लावे बैठी को उठाय लावे फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

रविवार को होली या दीपावली जब भी पड़े नंगे होकर लाल एरण्ड का वृक्ष या डाल एक ही झटके में तोड़ मन्त्र जाप करते हुये उसकी भस्म बनाकर कामिनी के शीश पर २१ बार मन्त्र पढ़कर डालने से उत्तम वशीकरण होता है ।

स्त्री वशीकरण मन्त्र

पीर में नाथ प्रीत में माथ जिसे खिलाऊँ वह मेरे साथ फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ॥

सूर्य ग्रहण के अवसर पर नदी में जाय नाभि पर्यन्त चल में पैठ सात बार उक्त मन्त्र पढ़ समूची सुपारी निगल जाय और जब वह सुपारी मलत्याग द्वारा निकले तब सात बार जल से स्वच्छ करे तथा सात बार दूध से स्वच्छ कर सात बार मन्त्र पढ़ कर धूनी देवे और अभिलषित स्त्री को पान में खिला देवे तो वह रूप बाला निश्चय ही वश में हो जाती है ॥

स्त्री वशीकरण मन्त्र

ॐ नमः धूली धूलेश्वरी मातु परमेश्वरी चचंती जय-जय कार छनारन चोप भरे छार छारते में हटे देता घर बार मरे तो मशान लौटे जीवे तो पांव लोटे वचन बांधौ अमुकी को धाई लाव मातु धूलेश्वरी फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ठः ठः स्वाहा ॥

इस मन्त्र को सात शनिवार की रात्रि में १४४ जाप करें तो यह सिद्धि होता है । सातवें शनिवार के बाद रविबार को किसी सुन्दरी की चिता की राख लाकर चौराहे की धूल मिला १४४ बार मन्त्र पढ़ जिस स्त्री के ऊपर डाल दे वह तत्काल वश में हो जाती है ।

वशीकरण तन्त्र

(१) पुष्य नक्षत्र में धोबी के पैर की धूल जिस सुन्दरी के शीश पर डाल दे वह सदैव वश में रहे ।

(२) उल्लू के पीठ की रीढ़ लेकर केसर कस्तूरी और कुंकुम के साथ घिस कर मस्तक पर तिलक लगा जिस स्त्री के सन्मुख जाय वह सुन्दरी तुरन्त वश में हो जाती है ॥

(३) जिस स्त्री को वश में करना हो उसके बायें पैर के नीचे की मिट्टी लाकर उसकी मूर्ति बनावे और वस्त्र पहना कर अभिलाषित स्त्री के केश सिर में लगा कर सिन्दूर लगावे और उसकी योनि में वीर्य डाल उस कामिनी के द्वार पर गाड़ दे, जब वह स्त्री पार करेगी तब वश में हो जायेगी ॥

(४) जब रविवार पुष्य नक्षत्र को अमावस्या हो उस दिन अपना वीर्य मिठाई में मिला जिस स्त्री को खिला दे वह सदा वश में रहे ॥

(५) घी के साथ कनेर के फूलों से जिस स्त्री की इच्छा कर हवन करे वह कामिनी सात दिवस के अन्दर साधक की इच्छा पूर्ण करती है ॥

(६) कनेर फूलों से छै मास तक हवन करने से देवांगनायें वश में होकर मनोकामना पूर्ण करती हैं ॥

वशीकरण कर्म प्रयोग

जगत् वशीकरण मंत्र

ओम् नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहय-मोहय मिलि मिलि ठः ठः

विधि—उपरोक्त मंत्र को एकाग्र चित्त से तीस हजार जप कर सिद्ध कर लें। सिद्ध होने के पश्चात् सात बार अभिमंत्रित करें।

स्त्री वशीकरण मन्त्र

मंत्र—नमो आदेश गुरु को लौंगा लौंगा मेरा भाई, इन लोगों ने सकत चलाई, एक लौंग राती एक लौंग माती, दूजे लौंग बतावे छाती, तीजा लौंगा अंग मरोड़, चौथा लौंगा दोऊ कर जोड़, पाँच लौंग जो मेरा खाय, मुझको छोड़ अन्त ना जाय, घरमें सुख नाहीं चाहे, मुख फिरि फिर देखे मेरा मुँह जीवन चाटे पग तली, मुझे सेवे समान, मोहि छोड़ अन्त जाय तो गुरु गोरखनाथ की आन। शब्द साँचा पिंड काँचा, चलो मंत्र ईश्वरी वाचा।

विधि—पहले दीपावली पर इस मंत्र को दस हजार बार विधिपूर्वक जप कर सिद्ध कर ले। चौदस या अमावस्या के दिन ५ फूलदार लौंग हाथ पर रखकर और नीचे लोबान जलाकर ११ बार मंत्र पढ़कर फूंके और पाँचों लौंगों को पीस कर जिसे खिला दें वह हमेशा के लिये वश में हो जाय, यह परीक्षित है।

दूसरा मन्त्र

ओम् नमो नारायणाय सर्व लोकानां मम वशान् कुरु कुरु स्वाहा ॥

विधि—इस मंत्र को भी उपरोक्त विधि से १०,००० (दस हजार) बार जप कर सिद्ध कर लें।

वशीकरण मन्त्र

ओम् नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनाय, त्रिपुर वाहनाय "अमुकं" ममवश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

विधि—इस मन्त्र को सिद्ध योग में १०८ बार जप करके सिद्ध कर लें और सिद्ध हो जाने के बाद १०८ बार मंत्र जपकर सुपारी पढ़के ज़िसे वह सुपारी खिला दें वह वश में हो।

नोट—'अमु' की जगह उसका नाम लेना चाहिये जिसे वश में करना है।

१—स्त्री वशीकरण मन्त्र

ओम् नमो कट विकट घोर रुपिणी अमुकं मे वशमानय स्वाहा।

विधि—जब ग्रहण पड़े तब पहले इस मन्त्र को ग्रहण में १०,००० (दस हजार) बार विधिवत जप करके सिद्ध कर ले और फिर रविवार को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके स्वयं भोजन करे और भोजन करते समय जिस स्त्री को वश में करना हो उसका ध्यान करे और उसी का नाम लेता आवे वह शीघ्र ही वश में होगी।

२—स्त्री वशीकरण मन्त्र

ओम् चामुण्डे जय जय वश्यंकरि जय २ सर्वसत्वान्नमः स्वाहा ॥

विधि—इस मन्त्र को शुभ योग में दस हजार बार जप करके सिद्ध कर ले। फिर रविवार या भौमवार को इस मन्त्र से पुष्प अभिमन्त्रित करके वह पुष्प (फूल) जिसे दिया जावे वह अवश्य वश में होगी।

३—स्त्री वशीकरण मन्त्र

या आम्मीन या कामील हमारे दिल से, "फलाँ" का दिल मिलादे।

विधि—जिस स्त्री को वश में करना हो उसके सामने अग्नि के निकट बैठकर उसे गूगुल, लोबान, धूप दिखाये और जब उस स्त्री की

दृष्टि उस गूगुल धूप आदि पर पड़े तब मन्त्र पढ़कर उस गूगुल लोबान आदि को अग्नि में डाल दे। इस प्रकार २१ बार हवन करे और लगातार २१ दिन तक इसी प्रकार हवन करे तो वह शीघ्र ही वश में होगी। यह मन्त्र स्त्रियों के ऊपर बहुत ही शीघ्र अपना असर दिखाता हैं। परीक्षित है। 'फलां' की जगह उसका नाम लेना चाहिये।

४—स्त्री वशीकरण मन्त्र

ओम् हुँ, स्वाहा।

विधि—काली विष्णु कान्ता की जड़, ताम्बूल (पान) में मिलाकर 'ॐ हुँ स्वाहा' इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री को खिलाया जाय वह निश्चय वश में होगी।

५—स्त्री वशीकरण मन्त्र

ओम् नमो भगवति चामुण्डे महा हृदयकंपिन स्वाहा।

इस मन्त्र से पान के बीड़े (लगा हुआ पान) को २१ बार अभिमंत्रित करके जिसे खिलाया जाय तो वह वशीभूत होगा।

"स्त्री वशीकरण सिद्ध यन्त्र"

जो मनुष्य रविवार पुष्य नक्षत्र में इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर अपनी दाहिनी भुजा में बाँधे तो उस मनुष्य की स्त्री उससे प्रसन्न रहेगी और कभी भी पर पुरुष की तरफ नजर उठाकर नहीं देखेगी तथा और भी उसके कार्य सिद्ध होंगे।

२२	३५	३४	२६
३३	२८	२३	३४
२७	३०	३७	१४
३६	३५	२६	२१

"वशीकरण यन्त्र"

२	८	५७	२५
७	२	२१	७
२४	७०	५	४
५१	१६	३	६

रवि पुष्य योग में इस यन्त्र को प्याज के रस से भोजपत्र पर लिखकर अपनी बाईं भुजा पर बाँध कर जो स्त्री पुरुष को देखेगी वह वश में हो।

"स्त्री वशीकरण मन्त्र"

शनिवार को जब पुष्य नक्षत्र हो इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर पलाशन की जड़ में लपेट कर धूनी दे तो वह स्त्री वशीभूत होती है।

१।।	९।।	४।।	१९१
१४।।	१४।।	२४	४।।
१	५१	२५०	२३९
२१	२७।।	५	३९

"स्त्री वशीकरण यन्त्र"

७	३०	६१	६०
०४	६	६९	६२
५७	५	२	८
६३	५८	९	०१

जिस स्त्री को वश में करना हो उसकी योनि के रक्त को किसी प्रकार प्राप्तकर अपनी बाईं हथेली पर रक्त से इस मंत्र को लिख कर उसी स्त्री को दिखावे तो वह निश्चित वशमें होवेगी।

"स्त्री वशीकरण यन्त्र"

जिस स्त्री को वश में करना हो उस स्त्री के स्तन के दूध से, शनिवार पुष्य नक्षत्र में उसी के दूध से मन्त्र को लिखे तो वह स्त्री पैरों पर आकर पड़ेगी और वश में हो जावेगी, तथा जो कहे वही करेगी

५९	६६	२	८
७	३	६३	६२
६५	६०	९	१
४	६	६१	६४

"स्त्री वशीकरण यन्त्र"

ओं	ओं	ओं
ओं	अमुकी	ओं
ओं	वशमा	ओं
ओं	मानय	ओं

इस यन्त्र को किसी ऊनी वस्त्र पर अष्टगंध से कमलाक्ष की कलम से लिखकर मंगलवार या रविवार को विधिवत पूजन कर खीर की ग्यारह आहुति अग्नि में देवे और कहे कि अमुकी वश मनाय और

एकादशी, जब मंगल को पड़े तब तक इसका प्रयोग करते रहने में स्त्री अवश्य वश में होगी, यानी पीछे-पीछे चल देगी। अमुक की जगह उस स्त्री का नाम लिखना चाहिये।

स्त्री वशीकरण तन्त्र

खस, चंदन, शहद इन तीनों चीजों को एक में मिलाकर तिलक लगाकर जिस स्त्री के गले में हाथ डाले वही स्त्री वश में हो जावेगी। यह साधन सब प्रकार की नारियों के लिये है।

दूसरा तन्त्र

चिता की भस्म, वच, कूट, केशर और गौरोचन इन सबको बराबर-बराबर लेकर एक में पीस कर चूर्ण बना करके जिस स्त्री के सिर पर वह चूर्ण छोड़े, वह वश में हो जावेगी।

तीसरा तन्त्र

चिता की भस्म, कूट, तगर, वच और कुंकुम यह सब एक में पीसकर स्त्री के सिर पर और मनुष्य के पाँव तले डाले तो जब तक वह जीते रहेंगे तब तक वह दोनों एक दूसरे के दास बने रहेंगे।

चौथा वशीकरण तन्त्र

मनुष्य की खोपड़ी लाकर उसमें धतूरे के बीज रक्खे, फिर उसमें शहद और कपूर मिलाकर पीसे और अपने माथे पर तिलक करे तो देखनेवाले चाहे स्त्री हो या पुरुष, सभी उसके वशीभूत हो जाते हैं। यह वशिष्ठ जी का बनाया हुआ उत्तम कापालिक योग है।

पाँचवाँ वशीकरण तन्त्र

जब पुष्य नक्षत्र हो तब नदी के किनारे से झाऊ की जड़ मँगावे और उसमें कुड़े की छाल मिलाकर फिर उसके बराबर चिता की भस्म मिला दे। जो बुकनी तैयार होगी वह जिस स्त्री के सर पर डाल दी जावेगी वह वश में होगी।

छठवाँ स्त्री वशीकरण तन्त्र

काले कमल, भौंरा के दोनों पंख, तगरधूल सफेद कौवा ठोठी, (कौव्वा वोडी एक फल होता है) इन सबका चूर्ण बनाकर जिस किसी स्त्री के सिरके ऊपर डाल दिया जावे वह स्त्री शीघ्र दासी हो जावेगी।

सातवाँ स्त्री वशीकरण तन्त्र

माघ के महीने में, दिन बुधवार तिथि अष्टमी और स्वाती नक्षत्र हो उसी दिन आक (मदार) के वृक्ष को एक पैसा और सुपाड़ी (कसैली) न्योत आवे और दूसरे दिन उसकी नवीन कपोल तोड़ लावे, फिर उसे जिस स्त्री के हाथ पर डाले वह वश में हो जायेगी।

आठवाँ स्त्री वशीकरण तन्त्र

रविवार या मंगलवार को जब पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन धोबी के पैर की धूलि लाकर रविवार के दिन जिस स्त्री के सर पर डाले वह वश में होवे।

नवाँ स्त्री वशीकरण तन्त्र

रति के पश्चात् जो पुरुष अपने बायें हाथ से अपना वीर्य लेकर स्त्री के बायें चरण के तलुवे में मल दे, तो वह स्त्री सदा के लिये उसकी दासी हो जाती है।

स्त्री वशीकरण तिलक

रविवार के दिन काले धतूरे का पंचाग (फल-फूल-पत्ता, जड़, शाखा) यानी पाँचों अंग लेकर केसर, गोरोचन, गोरी के साथ पीस कर तिलक करे और फिर जिस स्त्री को देखे वह अवश्य वश में हो जावे, चाहे वह इन्द्रासन की परी ही क्यों न हो। परीक्षित है। इसे बनाने में, पुष्य नक्षत्र, दिन रविवार या मंगल हो, उसी दिन सब सामान लाकर बनाना चाहिये। नक्षत्र योग, दिन समय का विशेष ध्यान रखना चाहिये, अन्यथा लाभ न होगा।

नोट—जो व्यक्ति विधिवत न बना सकें वे २१) मनीआर्डर द्वारा लेखक निर्भय जी के पास भेजकर उनसे मंगा सकते हैं।

"पति वशीकरण"

गोरोचनं, योनि रक्तं कदलीरस संयुतम्
एभिस्तु तिलकं कृत्वा पतीवश्यं करं परम्

अर्थ–गोरोचन और योनि का रक्त केले के रस में मिला कर इसका तिलक लगावे और अपने पति के सम्मुख जावे तो उसका पति वशीभूत हो जाता है।

दूसरा पति वशीकरण

सफेद सरसों और अनार का पंचांग (फल, फूल, शाखा, पत्ती, जड़) को एक में पीस कर अपनी योनि पर लेप करने से यदि स्त्री दुर्भागा (कुरूप) भी हो तो अपने पति को दास के समान अपने वश में कर लेती है।

तीसरा पुरुष वशीकरण

कड़ुवे तेल में मालती वृक्ष के फूल पका कर इस तेल की यदि स्त्री अपनी योनि में लगाकर पुष्प से विषय भोग करे तो उसका पति उसके ऊपर मोहित हो जाता है।

चौथा पति वशीकरण तन्त्र

गोरोचन, मछली का पित्त, मोरशिखा तथा शहद व घी इन सबको मिलाकर स्त्री अपनी योनि पर लेप करके फिर जिससे विषय भोग करे तो वह उसका दास हो जाता है तथा उसके सिवा, सुन्दरी से सुन्दरी स्त्री की इच्छा कदापि नहीं करेगा। परीक्षित है।

पाँचवाँ वशीकरण तन्त्र

कुलथी, बिल्व पत्र, गोरोचन और मैनसिल इन सबको बराबर लकर तांबे के पात्र में सात रात तक सरसों के तेल में पकावे और फिर इस बने हुये तेल को योनि में लेप करते पति के पास जावे, तो मैथुन भाव से कामासक्त होकर उसका पति उसका दास हो जाता है, इसमें संशय नहीं।

छठवाँ वशीकरण तन्त्र

नीम की लकड़ी की धूप बनाकर उसी नीम की लकड़ की धूप में योनि को धूपित करके जो स्त्री अपने पति से विषय करती है, वह उसे अपना दास बना लेती है।

सातवाँ वशीकरण तन्त्र

कांगनी, मौंम, केसर, बंशलोचन इन सबको घोड़े के मूत्र में लेप बनाकर योनि पर लेप करे। यह लेप पुरुषों को वश में करने वाला होता है।

पति वशीकरण यन्त्र

यन्त्र

<table>
<tr><td rowspan="6">गं गं गं गं गं गं गं गं गं गं गं</td><td>गं गं गं गं गं गं गं गं गं गं</td></tr>
<tr><td>ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं</td></tr>
<tr><td>क्लौं ह्रीं औं गं अमुकः गं</td></tr>
<tr><td>क्लीं ह्रीं क्लीं ह्रीं क्लीं ह्रीं</td></tr>
<tr><td>ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं</td></tr>
<tr><td>गं गं गं गं गं गं गं गं गं गं</td></tr>
</table>

विधि—एक बड़ा सा साफ सुथरा भोजपत्र लेकर फिर अनामिका उंगली का रक्त, हाथी का मद, जावद और गोरोचन इन सब चीजों को मिलाकर चमेली की लकड़ी की कलम से इस यंत्र को भोज पत्र पर लिखें फिर एक शुद्ध खेत की साफ काली मिट्टी लेकर उस मिट्टी की गणेश जी की मूर्ति बनावें और गणेश जी के पेट में इसी लिखे हुये भोजपत्र को रख कर बन्द कर दें, फिर धूप दीप फूल माला आदि से गणेश जी की पूजा करे और नैवेद्य लगाकर निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करे।

देव देव गणाध्यक्ष सुरा सुर नमस्कृत।

देवदत्ते महावश्यं यावज्जीव कुरु प्रभो।

इस मन्त्र को तीन बार पढ़कर एक हाथ गहरा गढ़ा खोदकर गाड़ दें और फिर मिट्टी डालकर बन्द कर दें, तो श्री गणेश जी की कृपा से उस स्त्री का पति जन्म जन्मान्तर उसका दास रहेगा। परीक्षित है।

दूसरा-पुरुष वशीकरण यन्त्र

रविवार पुष्य नक्षत्र में गेहूँ के आटे की एक रोटी बनाकर इस यन्त्र को प्याज के रस से उस पर लिख कर जिस पुरुष को खिलावे तो वह पुरुष स्त्री के वश में हो।

६३	४७	२	८
८	३	६६	३७
३६	३४	६	१
४	६	३५	३८

पति वशीकरण मन्त्र

ओम् ह्रीं, ध्रीं, क्रीं, ठः, ठः

विधि—परेवा तिथि के दिन 'परेवा पक्षी' को मार कर लावे, फिर इस मन्त्र को पढ़ कर उसका थोड़ा-सा मांस पान में डाल कर पुरुष को खिला दे तो उसका पति वश में हो।

वशीकरण परीक्षित प्रयोग

मन्त्र—ओम् भगवति भग भाग दयिनी (अमुकीं) मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मंत्र से वृहस्पतिवार के दिन थोड़े नमक को अभिमंत्रित करके जिस स्त्री को पान में खिला दें वह वश में होगी। पहले १०,०००(दस हजार)बार जप कर मंत्र को सिद्ध कर लेना चाहिये।

दूसरा प्रयोग

ओम् कुम्भनी स्वाहा

इस मन्त्र से १०८ बार मालती पुष्प (फूल) को अभिमंत्रित करके स्त्री को सुंघाने से वह वश में होती है।

तीसरा मन्त्र

ऐं भग भुगे भगनि भागोदरि भगमाले योनि भगनिपातिनि सर्व भग संकरी भाग रूपे नित्यं क्लैं भागस्वरूपं

सर्वभागिनी मे वश मानव वरदेरेते सुरेते भगल्किने ल्कीं न द्रवे ल्केदय द्रावय अमोघे भग विघे क्षुभ क्षोभय सर्व सत्वा भगेश्वरि ऐं ल्कं जं व्लूं भैं व्लूं मोव्लू हे हें ल्किन्ने सर्वाणि भगानि तस्मै स्वाहा ।।

विधि—पहले शभ योग में इस मन्त्र को १००८ बार जप कर सिद्ध कर ले, फिर जिस स्त्री को वश में करना हो उसे देखता जाय और इस मन्त्र को जपे तो वह वश में हो जावेगी । परीक्षित है ।

चौथा प्रयोग

सेंधा नमक, शहद और कबूतर की विष्टा को पीस कर जो पुरुष अपने लिंग पर लेप करके जिस स्त्री के साथ विषय भोग करेगा वह स्त्री उसे अत्यन्त प्रेम करेगी और उसे अपने हृदय का देवता ही मानेगी ।

पांचवां प्रयोग

गोरोचन, कुमुद, पारा, केसर और चंदन—इन सबको धतूरे के रस में पीस कर जो पुरुष अपने लिंग में लगा कर जिस स्त्री के साथ मैथुन करता है वह उस स्त्री का प्यारा हो जाता है ।

सर्वोत्तम वशीकरण

घीक्वार की जड़ लाकर इसमें भाँग के बीज मिलाकर उसे पीस कर तिलक लगावे तो वशीकरण होता है ।

वेश्या वशीकरण मन्त्र

ओंम् कनक कामिनी आठा वांठा शूलमलाका पाजल पंचाल ओं यं यं यः यः ।

विधि—विल्व (बेल) के वृक्ष के नीचे काले मृग की खाल (चर्म) पर सफेद (श्वेत) कार्क्सी के फूल और विल्व पत्र को मन्त्र पढ़कर अग्नि में हवन करे और उस वेश्या का ध्यान मन में करे तथा उसका [illegible] नाम मालूम हो तो उसका नाम भी लेना जावे तो वह निश्चय [illegible] होगी ।

राजा वशीकरण मन्त्र

ओम् क्षरां क्षरं क्षर:॥१२॥ सौं हं हं स: ठ: ठ: ठ: ठ: स्वाहा।

विधि–पहले शुभ मुहूर्त में इस मन्त्र को दस हजार बार १०,०००)सिद्ध कर ले । फिर इस मन्त्र से भोजन को अभिमंत्रित करके (राजा का नाम) लेकर भोजन करे तो राजा वश में हो और जिस मनुष्य का नाम लेकर भोजन करे तो वह व्यक्ति वश में हो और यदि इसी मन्त्र से पुष्पों की माला को अभिमंत्रित कर वह माला अपने गले में धारण करके जिस स्त्री के सामने जावे तो वह स्त्री वश में हो । और यदि इसी मंत्र से जायफल को अभिमंत्रित करके इस जायफल को खावे तो कामोद्दीपन होता है ।

(दूसरा) राजा वशीकरण यन्त्र

	अ	आः	अ	आ	
[illegible]	व	व		व	[illegible]
[illegible]	व	राजा का नाम		व	[illegible]
[illegible]	व	व		व	[illegible]
[illegible]					[illegible]
	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	

एक छोटे से काँसे के टुकड़े पर अथवा भोज पत्र पर गोरोचन [illegible] । चन्दन से चमेली की कलम से [illegible] दिन रविवार या मंगलवार को पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन शुद्ध होकर इस यंत्र को लिखकर तथा मल्लिका-चमेली व सफेद कमल के फूलों से पूजा करे और सुगंधित धूप दीप नैवेद्य आदि से अभिमंत्रित करके फिर १ स्वच्छ सफेद कपड़े से ढक दे । दूसरे दिन इसे सोने अथवा चाँदी के ताबीज में मढ़ाकर गले या बाँह पर धारण कर ले । यह महामोहन मंत्र है । इसके धारण करने से सभी स्त्री, पुरुष, राजा, मंत्री तथा उच्च पदाधिकारी जिसके लिये यंत्र बनावेंगे वह अवश्य वश में होगा । ध्यान रहे–सही नक्षत्र दिन आदि किसी योग्य पंडित से पूछ लेना चाहिये, अन्यथा यंत्र काम न देगा ।

जो सज्जन बना बनाया चाहें वे २१) मनीआर्डर द्वारा भेजकर

चाँदी के यंत्र में लेखक श्री निर्भयजी के पते से मँगा सकते हैं। जिसके लिये मँगाना हो उसका नाम अवश्य लिखें। यह परीक्षित है।

(तीसरा) राजा वशीकरण यन्त्र

	भू	मनाय
श्री	प	शारेत
ह्रीं	सिं.	

इस यंत्र को श्याम (काले) कमल के पत्र पर, सफेद गौ के दूध, लाजवंती और केसर की स्याही बनाकर सारस पक्षी के पंख की कलम से लिख करके प्रदोष व्रत कर १२ महीने तक १११ यंत्र शिवजी पर चढ़ावे तब फिर सिद्ध हुआ जाने। फिर उस उपरोक्त विधि से लिखकर ताँबे के यंत्र में भरकर भुजापर बाँधे तो राजा वंश में होवेगा।

क्रोधित राजा को प्रसन्न करने का यन्त्र

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्री
ह्री	राजा का नाम		ह्री
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्री

इस यंत्र को भोजपत्र पर गोरोचन केशर चंदन और अपनी कनिष्ठिका उगली का लहू (रक्त) मिलाकर चमेली की कमल से लिखे और अनेक तरह के फूल फल मिठाई और गोश्त (मांस) से विधिवत पूजन करे, फिर श्रद्धानुसार कन्या ब्राह्मणों को भोजन करावे और भगवान व गुरु योगियों को नमस्कार (प्रणाम) करके राजा के पास अथवा कचहरी में जावे और यंत्र को दाहिने हाथ की मुट्ठी में रक्खे तो क्रुद्ध राजा तथा अधिकारी आदि शान्त होगा और कार्य सिद्ध होगा।

राजा वशीकरण का तन्त्र प्रयोग

पहला

कुंकुम, चंदन, गोरोचन, भीमसेनी कपूर आदि को लेकर सफेद गाय के दूध में पीसकर तिलक लगाकर जिस राजा के सामने जावे वह वशीभूत होता है।

दूसरा

चम्पा पेड़ के वाद को भरणी या पुष्य नक्षत्र में विधि पूर्वक पूजन करके फिर धूप दीप देकर दाहिने हाथ में बाँधे तो उसे देखते ही राजा व अन्य व्यक्ति वश में हो जाते हैं।

तीसरा

सुदर्शन वृक्ष की जड़ को पुष्य नक्षत्र में जिस दिन रविवार या मंगलवार ही उस दिन लाकर के अपने दाहिने हाथ में धारण करके राजा या किसी व्यक्ति के सम्मुख जावे तो वह उस पर प्रभावित होगा।

देवी वशीकरण यन्त्र

विधि-वसन्त पंचमी के दिन दोपहर के पहले आक (मदार) की लकड़ी को पूरब की तरफ मुख करके तोड़ लावे और उसकी कलम बनाकर उस कलम से भोजपत्र पर इस पत्र को लिखकर यदि कोई व्यक्ति अपने मस्तक (माथे)पर धारण करे तो देवता भी वश में हो जावें।

६५	७२	२	८
४	६	६७	७०
७१	६३	९	१
७	३	३६	६८

वशीकरण धूप

मेपसिंगी, वच, खस, चन्दन, राल तथा छोटी इलायची इन सबको बराबर-बराबर लेकर कूटपीस कर, सब एक ही में रख ले, जब आवश्यकता पड़े तब अपने कपड़ों को इसी धूप से धूनी देकर वह कपड़े पहन कर यदि स्त्री के सामने जाते तो वह वश में हो तथा व्यापार के लिये जावे तो उसमें लाभ हो और राजा के पास जाने में राजा प्रसन्न हों।

नोट—यह सब चीजें पुष्य नक्षत्र में लाकर उसी दिन कूट छान कर रखना चाहिये।

वशीकरण काजल

जिस दिन चन्द्र ग्रहण हो उस दिन सफेद विष्णु कान्ता की जड़ को लाकर उसी दिन उसका अंजन(काजल)बनाकर आँखों में लगाने

में निस्सन्देह प्रत्येक व्यक्ति स्त्री पुरुष यहाँ तक कि पशु पक्षी तक मोहित होते हैं।

वशीकरण

बसन्त ऋतु में पुष्य नक्षत्र में उल्ल पक्षी तथा बकरे का माँस (दोनों माँस) लगभग १ रती के पानी में मिलाकर जिसे पिला दिया जावे वह जन्म जन्मान्तर उसका दास रहेगा।

शत्रु वशीकरण तन्त्र

१—शनिवार पुष्य नक्षत्र में लालचन्दन से भोजपत्र पर अपने शत्रु का नाम लिखकर शहद में डुबा दें तो वह शत्रु वश में हो जावेगा।

२—उल्लू पक्षी की विष्टा छाँह में सुखा कर पान में रखकर शनिवार के दिन शत्रु को खिलावें तो वह वश में हो।

३—सहदेई और ओंगा के रस को विलोह के पाव में घोट क-तलक लगाकर शत्रु के सामने जाने से शत्रु वश में ही जाता है।

४—पुष्य नक्षत्र या शनिवार के दिन सहदेई ओंगा अगरा अकोव, बच, सफेद आक, इन सबका अर्क निकालकर विलोह के पात्र में तीन दिन तक घोंटे और उसका तिलक लगाकर शत्रु के सामने जाने से वह वश में हो जावेगा।

शत्रु वशीकरण मन्त्र

ओम् नमो भगवते 'अमुकस्य' बुद्धि स्तम्भन शत्रु फट् स्वाहा।

विधि—वसन्त ऋतु में कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को जिस दिन शनिवार हो उस दिन श्मशान में जाकर शब (मुर्दा) की छाती पर काले रंग के वस्त्र पहन कर स्फटिक की माला से विधिवत ग्यारह हजार मंत्र जपकर मन्त्र सिद्ध करके (मन्त्र में अमुकस्य की जगह जप का नाम लेना चाहिये), फिर आव के पके पीले पत्ते और पीली सरसों से १०८ बार उक्त मंत्र द्वारा हवन करे तो शत्रु तत्काल वश में होवेगा और शत्रु की मति पलट जावेगी। परीक्षित है।

वाणिज्य वशीकरण मन्त्र

विधि—वसंत ऋतु में शनिवार के दिनअपने रुधिर तथा गोरोचन मिलाकर भोजपत्र पर इस यंत्र को लिख करके फिर धूप दीप सुगन्धित वस्तुओं से इसे अभिमंत्रित करके धूप दे तथा एकान्त स्थान में निम्न मन्त्र को १०८ बार जपे तो तत्काल वाणिज्य वश में हो। अमुकीं की जगह उसका नाम लिखना चाहिये।

ॐ ॐ
ॐ आकर्षय स्वाहा ॐ
आकर्षय स्वाहा ह्रीं अमुकीं आकर्षय स्वाहा
ॐ आकर्षय स्वाहा ॐ
ॐ ॐ

मन्त्र—"ओम् आकर्षय स्वाहा" मन्त्र जपें।

जगत वशीकरण यन्त्र

ॐ	वं	जे	ह्रीं	डं	
डं	ह्रीं	ॐ	डं		
वं	डं	जगत	वं	डं	ह्रीं

विधि—जब शनिवार के दिन पुष्य नक्षक्ष हो उस दिन गोरोचन कपूर, कस्तूरी, सफेद चंदन व लाल चंदन आदि की स्याही बनाकर और चमेली की कलम से इस यंत्र को भोजपत्र पर लिख फिर धूप, दीप, आदि सुगन्धित वस्तुओं से पूजन करे (तीन दिन तक पूजन धूप आदि देवे) फिर इस यंत्र को ताँबे के यंत्र से भर कर दाहिनी भुजा पर बाँध कर जिसके पास जावे तो वह वश में हो। स्त्री को बायें हाथ की भुजा पर बाँधना चाहिये।

काला नल महामोहन यन्त्र

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं रा ह्रीं म ह्रीं र ह्रीं त ह्रीं न ह्रीं ई ह्रीं श्व ह्रीं र ह्रीं

विधि—इसी प्रकार दो खानों का एक चतुष्कोण उतना ही बड़ा बनाने के जितने में उसका यंत्र बन सके। ऊपर के खानेमें उतना ही

गिन कर ह्लीं लिखे, जितने उस साध्य के नाम में अक्षर हों और नीचे के खाने में नाम के अक्षरों को ह्लीं के मध्य में रक्खे, जैसें साध्य का नाम रामरतन हो तो रामरतन मैं पाँच अक्षर हैं। अतः ऊपर के खाने में ५ वार ही ह्लीं ह्लीं लिखा गया है और नीचे के खाने में ह्लीं के बाद रा फिर ह्लीं म इस प्रकार पूरा नाम के अक्षरों को ह्लीं के मध्य में रक्खे और अंत में ईश्वर लिख दें, जैसा कि मंत्र बना कर समझा दिया गया है। इसी प्रकार बनाना चाहिये। इस यंत्र को गोरोचन से चमेली की कलम से भोजपत्र पर लिख कर फिर एक चाँदी की प्रतिमा (मूर्ति) बनवा कर उस मूर्ति के हृदय में उसी यंत्र को रखकर उस मूर्ति का पूजन करे, फिर चौदस की रात को उस प्रतिमा को चूल्हे में जमीन खोद कर गाड़ दे, फिर बकरे के खून (रक्त) और चावल (भात) से उसकी पूजा करे और निम्न मन्त्र पढ़कर १०० आहुती दे।

"मन्त्र"—ओंम् महा कालाय स्वाहा ॥

ऐसा करने से स्त्री या पुरुष कैसा ही हठी और सख्त दिल क्यों न हो वह तुरन्त वश में हो जावेगा। यह कालानल नामक महा मोहन यन्त्र है

"वशीकरण पान"

शुद्ध गोरोचनको, पानमें रखकर जिसेखिलायाजाय वह वशमें होता है।

वशीकरण तिलक

मैनसिल, गोरोचन और पान इन तीनों को एक में मिलाकर तिलक करके जिसके सामने जाकर बात करेगा वह व्यक्ति स्त्री या पुरुष वश में होगा।

वशीकरण चूर्ण

वसन्त ऋतु में शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी (तेरस) को सफेद घूंघची का पंचांग (फल, फूल, जड़, डाली, पत्ती) को लेकर उसका चूर्ण बनाकर जिसे पान में रख कर खिला दिया जावे वह वश में होगा।

स्वामी वशीकरण यन्त्र

४९	४२	४	५
३	६	४८	४३
४६	४५	१	८
२	७	४७	४४

शुभ मुहूर्त्त में गोरोचन से भोजपत्र पर इस मन्त्र को लिख कर यंत्र में भर कर दाहिनी भुजा पर बाँधकर नौकरी पर जाये तो मालिक खुश रहे।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ओम् तालतुं वरी दह दह दरैभाल भाल अं अं हुं हुं हुं हें हें हें कालकमानी कोट काटिया अं ठः ठः ।

विधि–राजहंस पक्षी का पंख और कोंचनी के फूलों की, शनिवार को प्रातःकाले रंग की गौ के दूध में खीर पकावें और उपरोक्त मंत्र पढ़कर अग्नि में उस खीर से १०८ बार हवन करे और हवन करते समय चित्त में उस व्यक्ति का ध्यान करता रहे तो उससे सर्वजन को वश में करने की सिद्धि प्राप्त होती है।

वशीकरण चूर्ण

बसन्त ऋतु में जब कभी शनिवार के दिन धनिष्ठा नक्षत्र हो, उस दिन शुद्ध पवित्र होकर बबूल वृक्ष की जड़ को खोद कर ले आवे और कूट कर रख ले, तो उसे जिसके ऊपर डाले वह वश में हो।

प्रेत वशीकरण मन्त्र

ओम् साल सलीला मोसल वाई काग पठंता धाई अ ई ओं लं लं लं ठः ठः ।

विधि–पहले इस मन्त्र को विधिवत १००० मन्त्र द्वारा जप कर सिद्ध करे और फिर बसन्त ऋतु में शनिवार को दिन रात्रि १२ बजे नग्न होकर बबूल के वृक्ष के नीचे आक (मदार) की लकड़ी जलाकर काले तिल और काले उरद की आहुती दे और हवन करता रहे, यही

मन्त्र पढ़-पढ़ कर हवन करे तो प्रेत सम्मुख आकर उससे बातें करेगा, उस समय खूब दृढ़ होकर रहे और अपने हाथ को काटकर खून की सात बूँद वहीं पृथ्वी पर टपका देवे तो प्रेत वश में हो जावेगा।

"स्वामी वशीकरण मन्त्र"

ओम् छं छुं छुं छां छां डः

विधि—सोमवती अमावस्या के दिन खोदे हुये कुशों की आसनी बनावे और फिर सूर्य ग्रहण के दिन नदीकेकिनारे अंजनी वृक्ष के नीचे बैठ कर इसी मन्त्र को जपे तो स्वामी वश में हो जायेगा। मन्त्र जपने की माला गंधोली के फल की गुठली की होनी चाहिये तभी लाभ होगा।

विद्वेषण मन्त्र

आं क्रीं क्रीं क्रीं क्रां क्रां क्रां स्फरे स्फरे धां धां ठः ठः ।।

अमावस्या की रात्रि में मरघट पर जाकर खड़े उरद को हांडी में पकावे, पकाने के बाद सुखा कर रख लें तथा आवश्यकता के समय रविवार या मंगलवार को उक्त मन्त्र पढ़ कर जिसके मकान में डाल दे तो उसमें निवास करनेवालों में विद्वेष उत्पन्न हो भयंकर लड़ाई होती है।।

मित्र विद्वेषण मन्त्र

ओम् नमो आदेश गुरु सत्य नाम को बारह सरसों तेरह राई, बाट की मीठी मसान की छाई, पटक मारु कर जलवार, अमुक फूटे न देख अमुक द्वार, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।।

राई सरसों तथा चिता की राख लाकर मदार तथा ढाक की लकड़ी के चूर्ण द्वारा हवन करें और १०८ वार उक्त मन्त्र का जाप करे इसके बाद जब प्रयोग करना हो तो दोनों मित्र जिस स्थान पर बैठते हो वहाँ पर हवन की राख डाल देने से कैसे भी मित्र हों द्वेष उत्पन्न हो जाता हैं।

महा विद्वेषण मन्त्र

ओम् नमो नारदाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा ।।

इस मन्त्र को पहले एक लाख बार जाप कर सिद्ध कर लें तत्पश्चात् जब प्रयोग करना हो तब निम्न प्रकार प्रयोग करें।

(१) बिल्ली के नाखून और कुत्ते के बाल लेकर उपरोक्त मन्त्र, पढ़ जिस स्थान पर डाल देवे वहाँ के निवासियों में द्वेष उत्पन्न हो जायेगा।

(२) माही नामक जीव के कांटे उपरोक्त मन्त्र पढ़ जिसके द्वार पर गाड़ दे उसमें निवास करने वालों में विद्वेषण हो जायेगा।

(३) घोड़े के बाल और भैंसे के बाल लेकर उपरोक्त मन्त्र पढ़ जिस स्थान पर धूप देवे वहाँ अशांति उत्पन्न हो कर द्वेष पैदा हो जाए।।

(४) सांप का दांत तथा मोर पक्षी की बीट लेकर साथ साथ घिसे और उपरोक्त मन्त्र पढ़ जिन दो व्यक्ति के सम्मुख जावे उनमें परस्पर द्वेष उत्पन्न हो जाता है ।।

स्तम्भन कर्म प्रयोग

अग्नि स्तम्भन मन्त्र

ओम् नमः अग्निरूपाय मे देहि स्तम्भय कुरु कुरु स्वाहा ।।

प्रयोग विधि—मेढक की चर्बी को एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़ शरीर पर मलने से शरीर पर अग्नि का प्रभाव नहीं होता है ।।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र

ओम् ह्लीं महिष मर्दिनी लह लह लह कठ कठ स्तम्भन स्तम्भन अग्नि स्वाहा ।।

खैर की लकड़ी को हाथ में ले इस मन्त्र को १०८ बार पढ़ अग्नि में प्रवेश करने पर जलने का भय नहीं रहता है ।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र

ओम् नमो अग्नि रूपाय मम शरीरे स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ।।

इस मन्त्र को प्रथम दस हजार बार जाप कर सिद्धि कर लेवें उसके पश्चात् निम्नांकित प्रकार प्रयोग में लावें ।

(१) देशी घी के साथ चीनी का सेवन करके सोंठ को एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमंत्रित कर चबाने के बाद आग के अंगारे चबाने मे भी मुख नहीं जलता है ।

(२) सोंठ काली मिर्च तथा पीपल को एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमंत्रित कर चबावे और उसके पश्चात् प्रज्ज्वलित अग्नि के टुकड़े चबाने में मुख नहीं जलता ।

(३) कपूर के साथ मेढक की चर्बी मिला कर शरीर पर मलने के बाद अग्नि स्पर्श से शरीर नहीं जलता।

(४) केला तथा ज्वार पाठे के रस को उक्त मन्त्र से अभिमंत्रित कर देह पर लगाने से शरीर अग्नि से नहीं जलता।।

(५) ज्वार पाठे के रस में मदार (आक) का दूध मिश्रित कर मन्त्र पढ़ शरीर पर मलने से अग्नि स्पर्श से तन नहीं जलता।।

अद्भुत अग्नि स्तम्भन मन्त्र

ओम् अहो कुम्भकर्ण महा राक्षस कैकसी गर्भ
सम्भूत पर सैन्य भंजन महा रुद्रो भगवान रुद्र आज्ञा
अग्नि स्तम्भय ठः ठः ।।

यह उपरोक्त मन्त्र प्रथम दो लाख बार जप कर सिद्धि कर लेना चाहिये, फिर आवश्यकता होने पर केवल एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमंत्रित करने से शरीर को अग्नि ताप का भय नहीं रहता।

जल स्तम्भन मन्त्र

ओम् नमो भगवते रुद्राय जल स्तम्भय ठः ठः ठः ।।

इस उपरोक्त मन्त्र को प्रथम एक बार जाप कर सिद्धि करें और आवश्यकता होने पर निम्न प्रकार प्रयोग करें।

(१) केकड़ा नामक जल जीव के पाँव दांत तथा रुधिर, कछुये का हृदय, सूँस की चर्बी और भिलावें का तेल उपरोक्त समस्त वस्तुयें एकत्र कर अग्नि में पका १०८ बार मन्त्र पढ़ सर्वांग पर लेप करने से अद्भूत जल स्तम्भन होता।

(२) लिस्होड़े तथा तुंबी के बीज और फलों को जल के संयोग से पीस कर एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमंत्रित कर प्रवाहित जलमें रात्रि के समय डालने से जल स्तम्भन हो जाता है और जल तक जल में नमक न डाला जाय जल प्रवाहित नहीं होता है।

(३) पद्माक्ष का चूर्ण एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमंत्रित कर जल में डालने से जल स्तम्भन होता है।

(४) नेवला साँप तथा नाका (घड़ियाल) की चर्वी और डुण्डुम की खोपड़ी, इन चारों वस्तुओं को भिलावे के तेल में पका कर तेल को लोहे के बर्तन में रख कर कृष्ण पक्ष की अष्टमी को शिवजी की पूजा कर हवन करे और उसमें १००८ घी की आहुति देवे, तत्पश्चात् उक्त सिद्धि तैल को अंग में लेप करके मनुष्य जल की सतह पर निर्विघ्न विचरण कर सकता है, जैसे पृथ्वी पर विचरण करता है।

जल स्तम्भन मन्त्र—२

ओम् नमो भागवते रुद्राय जल स्तम्भय स्तम्भय ठः ठः स्वाहा ॥

उपरोक्त मन्त्र को सात बार पढ़ कर पद्माक्ष का चूर्ण जल में डालने से जल स्तम्भन होता है।

जल स्तम्भन मन्त्र—३

"ओम् थं थं थं थाहि थाहि"

दुलारा नामक पक्षी के पंख लाकर एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमंत्रित कर जल में डालने से जल का स्तम्भन होता है।

जल स्तम्भन मन्त्र—४

'ओम् अस्फोट पति धारा उल्मलूका क्रां क्रां क्रां'

रविवार के दिन खटकुली नामक पक्षी के पंख ला कर एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमंत्रित कर बगल में दबा कर दरिया के बीच में खड़ा होने से जल प्रवाह रुक जाता है, यानी जल स्तम्भन होता है।

मेघ स्तम्भन मन्त्र

'ओम् मेघान् स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा'

श्मशान की भस्म लाकर नई ईंट पर चार सम रेखायें खींच उसके ऊपर एक ईंट रखे, तत्पश्चात् १०८ बार मन्त्र से अभिमंत्रित कर निर्जन वन में गाड़ दे, तो जल वृष्टि रुक जाती है, यानी मेघ स्तम्भन होता है।

बुद्धि स्तम्भन मन्त्र १

'ओम् नमो भगवते शत्रुणां बुद्धिं स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा' ॥

उपरोक्त मन्त्र को उत्तम काल में एक लाख बार जाप कर सिद्धि कर लेवे और जब प्रयोग करना हो तो निम्न प्रकारसेप्रयोग में लावे विशेष–मन्त्र में प्रयुक्त शत्रुणां शब्द के स्थान पर अभिलषित शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिये और आवश्यकता के समय निम्न प्रकार प्रयोग में लावे।

(१) उल्लू नामक पक्षी की विष्ठा को छाया में सुखा कर एक रत्ती १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमंत्रित कर पान में जिसे खिला दे उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

(२) जमीकन्द, सहदेई, ओंगा, सफेद सरसों, बच, इन समस्त वस्तुओं को लोहे के पात्र में चूर्ण कर तिलक लगा कर शत्रु के सामने जाने से उसकी बुद्धि तत्काल नष्ट हो जाती है।

बुद्धि स्तम्भन मन्त्र २

ओम् नमो भगवते मम शत्रु बुद्धि विनष्टाय आगच्छ स्वाहा ॥

इस मन्त्र को पहले एक हजार बार जाप करके सिद्धि कर लेवे. तत्पश्चात् जब प्रयोग करना हो तो निम्न प्रकारसेकरें। हरताल और हल्दी को जल के संयोग से पीस भोज पत्र पर अनार की कलम से उपरोक्त मन्त्र लिख ताबीज बना हरे वस्त्र में लपेट शत्रु के द्वार पर गाड देने से. उसकी बुद्धि निष्क्रिय हो जाती है।

मुख स्तम्भन मन्त्र

ओम् ह्रीं रक्षके चामुण्डे कुरु कुरु अमुक मुखं स्तम्भनं स्वाहा ।।

(१) इस मन्त्र को किसी सरिता के निर्जन तट पर एक लाख बार जाप कर सिद्धि कर लेवे और जब प्रयोग करना हो पलाश की जड़ लाकर १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तालू में रख शत्रु के सामने जाने से उसकी बोलने की शक्ति नष्ट हो जाती है।

(२) अर्जुन की छाल तथा जड़ को २१ बार मन्त्र से अभिमंत्रित कर मुख में धरे जिसके सन्मुख जाय उसी की वाक् शक्ति नष्ट हो जाती है ।

पति स्तम्भन मन्त्र

'ओम् नमो भागवते वासुदेवाय मम पुरुषस्य स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा' ।।

उपरोक्त मन्त्र को किसी निर्जन स्थान में दस हजार बार जप कर सिद्धि कर लेना चाहिये और जब प्रयोग करना हो तो शनिवार को गोरोचन, केशर, महावर की स्याही बना भोजपत्र पर उक्त मन्त्र लिख तावीज गले में धारण करने से पति स्तम्भन होता है ।

सिंह स्तम्भन मन्त्र

'क्रीं ह्लीं ओम् ह्लीं ह्लीं' ।

उपरोक्त मन्त्र को किसी निर्जन स्थान में दस हजार बार जाप करके सिद्धि करने के पश्चात् जब प्रयोग करना होवे तो लोहे का एक टुकड़ा लेकर उसे १०८ बार मन्त्र से अभिमंत्रित करके सिंह के सामने फेंक देने से उसकी शक्ति स्तम्भित हो जाती है ।

सिंह स्तम्भन मन्त्र २

'ओम् वं वं वं हं हं हं क्षां ठः ठः' ।।

इस मन्त्र को किसी सरिता के तट पर दस हजार बार जाप कर सिद्धि कर लेना चाहिये और जब प्रयोग की आवश्यकता हो तो रविवार या मंगलवार को निगोही के बीज लाकर इक्कीस बार मन्त्र से अभिमंत्रित कर सिंह के सामने फेंक देने से उसकी आक्रामक शक्ति एवं गर्जन शक्ति स्तम्भित होजाती है और वह निष्क्रिय हो जाता है।

सिंह स्तम्भन मन्त्र ३

ओम् ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रों श्रों स्वाहा ।।

इस मन्त्र को किसी उत्तम एकान्त स्थान में पूर्ण मनोयोग पूर्वक दस हजार बार जाप करके सिद्धि कर लेने के पश्चात् जब प्रयोग करना हो तो बाण या कोई अन्य शस्त्र अथवा लोहे का कोई टुकड़ा १०८ बार मन्त्र से अभिमंत्रित कर सिंह के सन्मुख फेंक देवे तो उसका स्वर एवं आक्रामक शक्ति स्तम्भित होती है।

आसन स्तम्भन मन्त्र

ओम् नमो दिगम्बराय अमुकासन स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ।।

इस मन्त्र को प्रथम किसी सरिता या सरोवर के तट पर एकान्त में दस हजार बार जाप कर के सिद्धि कर लेना चाहिये और आवश्यकता के समय निम्न प्रकार से प्रयोग में लाना चाहिये ।

(१) मरघट की अग्नि लाकर नमक की आहुति देते हुये उपरोक्त मन्त्र से १०८ आहुति दें हवन करें और अमुक के स्थान पर अभिलषित व्यक्ति का नाम उच्चारण करें तो वह व्यक्ति स्तम्भित होता है।

(२) कोई सरिता जिस स्थान पर समुद्र में गिरती हो उस संगम स्थल की मिट्टी लाकर उसमें कुत्ते की पूंछ के बाल मिला करके गोली बनावें और १०८ बार उक्त मन्त्र से अभिमंत्रित कर अकोल के

तेल में डाल करके जिसका स्तम्भन करना हो उसे दिखाने से वह व्यक्ति उक्त स्थान को त्याग अन्यत्र तब तक नहीं जा सकता जब तक गोली अकोल के तेल से न निकाली जावे।

(३) मरघट से किसी मृतक व्यक्ति की खोपड़ी लाकर उसमें सफेद घुंघुची के बीच बो देवे और नित्य प्रति उसको दूध से सींचता रहे और वृक्ष उत्पन्न होने पर उसकी डाली जड़ तथा लता को १०८ बार मन्त्र से अभिमंत्रित करके जिस व्यक्ति के सन्मुख डाल दिया जायेगा वह अपने स्थान को त्याग कहीं न जायेगा यह अद्भुत स्तम्भन मन्त्र कभी निष्फल नहीं होता।

संर्प स्तम्भन मन्त्र—१

सर्पाप सर भद्रं ते दूरम् गच्छ महाविष।
जनमेजय यज्ञान्ते आस्तिक्य वचनं स्मर॥
आस्तिक्य वचनं स्मृत्वा यः सर्पो न निवर्तते।
सप्तधा व्रियते मूर्ध्नि शिश वृक्ष फलं यथा॥

उपरोक्त मन्त्र को प्रथम किसी एकान्त स्थान में दस हजार बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये और जब प्रयोग की आवश्यकता हो तो केवल २१बार मन्त्र पढ़ कर फूंक मार देने से अद्भुत सर्प स्तम्भन होता है।

सर्प स्तम्भन मन्त्र—२

ॐ नमो तक्षक कुलाय सर्प स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा॥

उपरोक्त मन्त्र को दीपावली की रात्रि को किसी निर्जन स्थान में २१ हजार बार जाप कर सिद्धि कर लेवें और जब प्रयोग की आवश्यकता हो तो मिट्टी के सात ढेले २१ मंत्र से अभिमन्त्रित कर सर्प की दिशा में फेंक देने से सर्प स्तम्भन होता है।

सैन्य स्तम्भन मन्त्र

ॐ नमः चण्डिकायै अरि सैन्य स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा॥

इस उपरोक्त मन्त्र को क्वार या चैत्र की नवदुर्गा में रात्रि समय देवी के मन्दिर में ५१हज़ारबारजापकरसिद्धि कर लेवें और जब शत्रु सेना के आक्रमण का भय हो तो सात जोड़ा लौंग २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु दल के सामने डाल देने से आक्रमण के लिये आती हुई शत्रु सेना तत्काल स्तम्भित हो जाती है।

विशेष–मन्त्र की समाप्ति पर देवी का पूजन कर बलि प्रदान करने से ही सफलता प्राप्त होती है,ऐसा प्राचीनतन्त्राचार्योंकामत है।

शस्त्र स्तम्भन मन्त्र

ओम् नमो भैरवे नमः। मम शत्रु शस्त्र स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ।।

उपरोक्त मन्त्र को सर्वार्थ सिद्धि योग में रात्रि समय श्मशान में जा निर्वसन होकर २१ हजार बार जप करके अन्त में मांस मदिरा से भैरव की पूजा करके बलि प्रदान करे, तत्पश्चात जब प्रयोग की आवश्यकता हो तब खरमंजरी के बीज हाथ में ले २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु के सन्मुख फेंक देने से शत्रु का वार करने के लिये उठा हुआ हाथ भी तत्काल रुक जाता है।

शस्त्र स्तम्भन मन्त्र–२

ओम् नमो भगवते महाबल पराक्रमाय शत्रूणां शस्त्र स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ।।

इस उपरोक्त मन्त्र को किसी एकान्त स्थल में एक लाख बार जप कर सिद्धि कर लेना चाहिये, तत्पश्चात् आवश्यकता के समय निम्न प्रकारसेप्रयोग में लावे।

(१) चमेली की जड़ को पुष्य नक्षत्र में उखाड़ लावे और २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर मुख में रखने से शत्रु शस्त्र स्तम्भन होता है।

(२) रविवासरी पुष्य में विष्णुकान्ता नामक बूटी को जड़ से उखाड़ लावे और २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर मुख में रखे तो शस्त्र स्तम्भन होता है।

(३) जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो अपामार्ग की जड़ लाकर जल के साथ पीस २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शरीर पर लेप करने से शरीर में शस्त्र का प्रभाव नहीं होता।

(४) किसी भी शुभ दिन में खजूर की जड़ को लाकर हाथों तथा पांवों में बाँधने से भी शस्त्र स्तम्भन होता है।

क्षुधा स्तम्भन मन्त्र १

ओम नमो सिद्धि रूप मे देहि कुरु कुरु स्वाहा ॥

सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण के अवसर पर किसी सरिता जल के मध्य खड़े होकर दस हजार बार जप करने से यह मन्त्र सिद्धि हो जाता है और जब प्रयोग करना हो तो ओंगा के बीज ला २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर खीर बनाकर खाने से क्षुधा स्तम्भन होता है।

क्षुधा स्तम्भन मन्त्र—२

ओम् गा जुहदख्यां उन्मुख मुख माँसर धिल ताली अहुम ॥

इस मन्त्र को जिस रविवार को हस्त नक्षत्र होवे, किसी भी देव मन्दिर में एकाग्रतापूर्वक दस हजार बार जाप करके सिद्धि कर लें, फिर आवश्यकता होने पर निम्न प्रकार प्रयोग करें।

(१) रविवार के दिन चर्चिका के बीज इक्कीस बार मन्त्र पढ़ कर खाने से भूख रुक जाती है।

(२) तुलसी, क्षत्री, पद्म तथा अपामार्ग के बीज समभाग लेकर जल के साथ पीस कर गोली बनावे और आवश्यकता के समय एक गोली २१ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर खावे और ऊपर से दुग्ध पान करे तो भूख नहीं लगती है।

(३) रविवार के दिन गाय के दूध में लटजीरा के चावलों की खीर बना कर अपामार्ग की धूनी देकर गुड़ व चना मिला कर मिट्टी की हड़िया में रख उसका मुख मिट्टी से अच्छी तरह बन्द कर प्रवाहित जल के नीचे गड्ढा खोद कर गाड़ दें तो जितने दिन का निश्चय मन में करे उतने दिन भूख नहीं लगेगी ।

निद्रा स्तम्भन मन्त्र

अलक बाँधू पलक बाँधू, सारा खलक बाँधू गुरु गोरख की दुहाई मेरी निद्रा दे भगाई छू छू छू ।।

इस मन्त्र को सूर्य ग्रहण के समय किसी सरिता के तट पर नग्न होकर दस हजार वार जाप करके सिद्धि कर लेवें फिर जब प्रयोग करना हो निम्न प्रकारसेप्रयोग करें ।

(१) हरियल पक्षी की बीट, दोमनि घोड़े की लीद में पीस कर आँखों में अंजन की भाँति लगाने से निद्रा स्तम्भन होता है ।

(२) नमक मिर्च तथा सोंठ का चूर्ण बना सुरमे की भाँति लगाने से निद्रा नहीं आती है ।

(३) ककरी एवं महुवा की जड़ को जल के साथ पीस कर सूंघने से अद्भुत निद्रा स्तम्भन होता है ।

वीर्य स्तम्भन तन्त्र

(१) सोमवार को सायंकाल लाल अपामार्ग (लटजीरा) की ज़ड़ को निमन्त्रण दे आये और मंगल को प्रातः उखाड़ कर लावे और उसे कमर में बाँध मैथुन करे तो वीर्य स्तम्भन होता है ।

(२) घुग्घू नामक पक्षी की जीभ (जुबान) को एक रत्ती गोरोचन के साथ पीस कर ताँवे के तावीज में भर मुख में रख स्त्री प्रसंग करने से वीर्य स्तम्भन होता ।

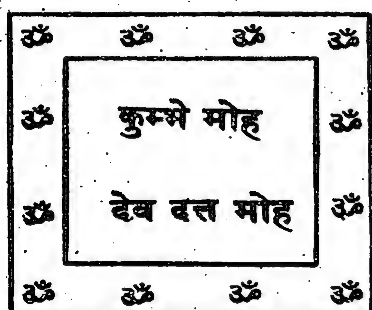
(३) इमली के चियाँ दो दिन जल में भिगो कर छिलका उतार दे

और बराबर का पुराना गुड़ मिला गोली बना एक गोली खाने से वीर्य स्तम्भन होता है ।

(४) श्याम कौंच की जड़ को मुख में रख स्त्री प्रसंग करने से वीर्य स्तम्भन होता है ।

(५) शनिवार के दिन आक के वृक्ष को निमन्त्रण दे तथा रविवार को उसके फल तोड़ लावे और उस फल की रूई निकाल बत्ती बना दीप जलावे तो जब तक दीप जलता रहेगा वीर्य स्तम्भन होगा ।

यात्रा स्तम्भन यन्त्र



विधि—इस यंत्र को एक पत्थर के टुकड़े पर कुमकुम, हरताल मैनसिल और गोरोचन से लिख कर फूलों से पूजा करे और धूप, दीप, नैवेद्य चढ़ाकर उस पत्थर पर लिखे यंत्र को बराबर की भूमि में खोद कर गाड़ दें तो उसकी यात्रा बन्द हो जावेगी ।

नोट—जहाँ देवदत्त नाम लिखा है, वहाँ पर उस व्यक्ति का नाम लिखना चाहिये ।

अग्नि स्तम्भन यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

विधि—इस यन्त्र को दीपावली को सिद्ध कर लें और केशर, हल्दी की स्याही से भोजपत्र पर लिख कर विधिवत पूजन करके ब्राह्मण भोजन करावे फिर इसे पृथ्वी में गाड़ दे और उस पर पानी की धार छोड़ते जावे तो अग्नि ठण्डी हो जावेगी ।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र

मन्त्र–अपार बांधौ विज्ञान बांधौ घोरा घाट अरु कोटि वैसन्दर बांधौ हस्त हमारे भाइ आनाहि देखे झझके मोंहि देखे बुझाइ हनुमन्त बांधौ पानी होइ जाइ अग्नि भवने के भवै जस मद माती हाथी हो वैसन्दर बांधौ नारायण भाषौ मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाच।

विधि–इस मन्त्र को विधिवत (विधान पूर्वक) १० हजार बार जप कर सिद्ध कर ले। सिद्ध हो जाने पर जहाँ कहीं अग्नि का स्तम्भन करना हो वहाँ इस मन्त्र को पढ़ कर सात बार पानी के छींटे मारे तो अग्नि शान्ति हो जावे।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र दूसरा

ओम् अहो कुम्भकर्ण महाराक्षस कैकशी गर्भ सम्भूत पर सैन्य भंजन महा रुद्रो भगवान रुद्र आज्ञा. अग्नि स्तम्भन ठः ठः।

विधि–इस मन्त्र को शिशिर ऋतु में दो लक्ष (दो लाख) जप कर सिद्ध कर ले, फिर जहाँ काम पड़े इस मन्त्र से जल अभिमन्त्रित कर के मारे तो जलती हुई अग्नि रुके।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र तीसरा

ओम् नमो नमो ह्रीं ह्रीं अग्निरूपाय स्तम्भनं मल शरीरे कुरु स्वाहा॥

विधि–यह अग्नि स्तम्भन मन्त्र दीपावली की रात में विधि पूर्वक दस हजार बार जप कर सिद्ध कर लें और जब प्रयोग करना हो तो १०८ बार जप करे तो अग्नि बँध जावेगी।

अग्नि स्तम्भ मन्त्र चौथा

ओम् नमो अग्नेय ज्वालामुखी मनाय, शंकर

सहाय,अग्नि शीतल हो जाय, पार्वती जी की दोहाई, नोना चमारिन की दोहाई, गुरु गोरखनाथ शब्द साँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाच।

विधि--इस मन्त्र को शिशिर ऋतु में बृहस्पति के दिन एक हजार जप कर विधिवत सिद्ध कर ले। फिर जहाँ आग लगी हो नहा धोकर शुद्ध पवित्र एक लोटा जल कुवें से इस विधि से खींचे कि रस्सी तथा लोटा जमीन में न लगने पावे। फिर लोटे को हाथ देकर मन्त्र पढ़ता जावे और जल का छींटा जोर से फेंकता रहे तो जहाँ तक जल का छींटा पहुँचेगा अग्नि ठण्डी होती जावेगी।

अग्नि स्तम्भन मन्त्र पाँचवा

जल बांधौ थल बांधौ आगी की लपट बांधौ दोहाई हनुमान की, दोहाई महावीर की, दोहाई नोना चमारिन की।

विधि--इस मन्त्र को दीपावली की रात में एक हजार बार जप कर सिद्ध कर ले। जब आग बाँधना हो तो मन्त्र पढ़ता जावे और जहाँ आग लगी हो चारों तरफ परिक्रमा करे तो अग्नि ठण्डी हो जावेगी।

अग्नि बाँधने का मन्त्र

मन्त्र--ओम् मतक ढीटे छय घने भेक टीय भूलोयसी आलिम्यग्रख शनक बोले मन्त्री ह्रीं फट् ओम् ह्रीं महिष वाहिनी स्तम्भन मोहन भेदये अग्नि स्तम्भय ठः ठः॥

विधि--इस मन्त्र को शिशिर ऋतु में एक लाख जप कर सिद्ध कर ले। फिर ग्वार (घीकवार) के पाठे के रस को हथेली में खूब मल कर अग्नि रक्खे तो हाथ नहीं जले।

अग्नि शीतल करने का मन्त्र

मन्त्र--ओम् नमो कोरा करिया, जलसों भरिया, ले गोरा के सिर पर धरिया, ईश्वर वाले गौर नहाय,

जलती अग्नि शीतल हो जाय, शब्द साँचा पिंड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाच सत्य नाम आदेश गुरु को ।।

विधि—इस मन्त्र को शिशिर ऋतु में विधिपूर्वक एक लाख जप कर सिद्ध कर ले । फिर काम पड़ने पर एक मिट्टी का कोरा कलसा जल से भर कर मँगवा ले और स्नान करके २१ बार मन्त्र पढ़ कर उसी कलसे के जल से छींटा मारे । जहाँ जहाँ पर छींटे लगेंगे आग ठण्डी हो जावेगी । अग्नि के शान्त हो जाने पर २१ ब्राह्मणों को भोजन करावे और १०८ मन्त्र की आहुती देवे ।

अग्नि भय निवारण मन्त्र

मन्त्र—उत्तर स्यांम दिग्वभोग, मारी चौनाकाराक्षसः तस्य मूत्र पुरीषाभ्यां हुतः वह्निः स्तम्भः स्वाहाः ।।

विधि—पहले इस मन्त्र को शिशिर ऋतु में दस हजार बार जप कर सिद्ध कर ले । जब काम पड़े तब इस मन्त्र को गरम जल से एक अंजुली जल अग्नि के बीच में डाले तो अग्नि का निवारण हो ।

अग्नि निवारण मन्त्र

मन्त्र—ॐ फः फः फः ।।

विधि—इस मन्त्र को शिशिर ऋतु में एक हजार बार विधिवत जप कर सिद्ध करे । जब काम पड़े तब कुलीर पक्षी की चोंच को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उस चोंच को अग्नि में डालने से अग्नि निवारण होता है ।

वर्षा स्तम्भन यन्त्र

३४५	१	८	३४७
७	३८	४१	४
३	३४०	१६	६
३४६	६	२	३४४

विधि—पहले विधि पूर्वक इस मन्त्र को दीपावली की रात में सिद्ध कर ले । फिर इस यन्त्र को केसर और हल्दी से कागज़ पर लिख कर दिखाने से वर्षा होना बन्द हो जाती है ।

जल स्तम्भन मन्त्र

मन्त्र—ओम् थं थ थ थाहि थाहिः ।

विधि—पहले इस मन्त्र को वृहस्पतिवार को शिशिर ऋतु में दस हजार बार जप कर सिद्ध कर ले, फिर कुलीर पक्षी के पंख को इस मन्त्र मे सात बार अभिमन्त्रित करके जल में डुबो दे तो जल रुक जाय।

अथवा

आग और पानी को सात बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उसे जमीन में गाड़ दें तो पानी न बरसे।

जल स्तम्भन तन्त्र

कुलीर (मेगटा) की टाँग, दाँत, रक्त, कछुवा का हृदय और शिशुमार (एक प्रकार का जल-जन्तु) की चर्वी और वहेड़े का तेल, इन सब चीजों को पकाकर शरीर पर लेप करे तो जल के ऊपर आसानी पूर्वक ठहरा रहे, यानी डूबे नहीं।

पशु-पक्षी स्वर ज्ञान मन्त्र

इस प्रकरण में हम अनेक पशु-पक्षियों के स्वर सम्बन्धी मन्त्रों को लिख रहे हैं जो कि लोक में प्रचलित होने के साथ साधक की इच्छा पूर्ण करने वाले माने जाते हैं।

साधक को मन्त्र साधन से पूर्व स्थिर चित्त से विचार करके ही साधन में प्रवृत होना चाहिये।

खंजन स्वर ज्ञान मन्त्र—१

ओम् तिमिर विष्ठाय स्वाहा ।।

उपरोक्त मन्त्र अमावस्या की रात्रि को निर्जन सरिता के तट पर निर्वस्त्र (नग्न) होकर दस हजार बार जाप करने से साधक खंजन की बोली समझने में समर्थ हो जाता है।

खंजन स्वर ज्ञान मन्त्र—२

ओम् तिमिर नाशयें ह्रौं ।।

इस मन्त्र को एकान्त स्थान में एकाग्रता से "तिमिर विनाशिनी" की पूजा तथा हवन करके दस हजार बार मन्त्र का जाप करने से खंजन स्वर सिद्धि प्राप्त होती है और साधक खंजन की बोली जानने योग्य हो जाता है।

शृगाल (सियार) स्वर ज्ञान मन्त्र

ओम् क्रीं क्रीं क्लीं क्लीं स्वाहा ॥

उपरोक्त मन्त्र की सिद्धि करने के लिये साधक को चाहिये कि अमावस्या की रात्रि में वन में जाकर केवल एक आघात से शृंगाल का वध करके पृथ्वी पर चर्मासन बिछा कर उसे स्थापित कर मनोयोग पूर्वक उसकी पूजा करे। पुष्प गंधादि अर्पित कर मांस मदिरा का नैवेद्य समर्पित करे। आधी रात को निर्वसना होकर उपरोक्त मन्त्र का एक लाख बार जाप करे। जाप सम्पूर्ण होते ही वह शृगाल पुनः जीवित हो उठता है और साधक को ससम्मान सम्बोधन करके पूछता है ऐ पुत्र ! तेरी अभिलाषा क्या है ? प्रकट करो। उस समय साधक को निर्भय होकर उससे कहना चाहिये कि मेरे जीवन-पर्यन्त आप मेरे वश में रहकर सदैव मेरी रक्षा तथा कल्याण करें और उसे पुनः मांसयुक्त भोज्य पदार्थ अर्पित करे। इस भाँति साधन से शृगाल साधक को मनवांछित वर प्रदान करता है साधक को भविष्य में घटने वाली घटनाओं को छः मास पूर्व ही कान में बता देता है और साधक उसकी बोली सुगमता पूर्वक समझ लेता है।

विशेष–साधक को जब कभी भी शृंगाल का स्वर सुनाई पडे तो उसे विनम्रता पूर्वक प्रणाम कर सम्मान प्रदान करना चाहिये।

मूषक सिद्धि मन्त्र–१

"ऐं श्री श्री ह्रीं ॐ ह्रीं ओं ओं मूषक विचीव स्वाहा"।

उपरोक्त मन्त्र को जिस गुरुवार को पुष्य नक्षत्र हो, अपनी पत्नी के साथ पूर्व मुख बैठ मनोयोग पूर्वक दस हजार बार जाप करने से

साधक मूषक शब्द समझने योग्य हो जाता है और वह जिस कार्य को हाथ में लेगा उसको कभी असफलता न मिलेगी।

मूषक सिद्धि मन्त्र—२

"श्री श्री मूष्यै स्वाहा"।

इस मन्त्र को भी उपरोक्त मन्त्र की विधि से सिद्धि कर लेने से साधक को मूषक स्वर का ज्ञान प्राप्त हो जाता है और सफलता उसकी चरण चेरी बन जाती है।

हंस सिद्धि मन्त्र

"हं हं के के हसं हंसः"।

उपरोक्त मन्त्र किसी सरोवर के तट पर पवित्र स्थान में गुह्य कालिका देवी की प्रतिष्ठा कर मनोयोग पूर्वक पूजा करे, तत्पश्चात् एक लाख बार मन्त्र जाप करे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है और साधक हंस की बोली समझने योग्य हो जाता है तथा उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित हंस विष्ठा का तिलक लगाने से साधक सर्वदर्शी शक्ति को प्राप्त कर लेता है, जिसके प्रभाव से उसे भूत, भविष्य, वर्तमान और तीनों काल का ज्ञान हो जाता है।

बिलारी साधक मन्त्र

"ॐ ह्रीं कंकिटाय स्वाहा"।

श्रावण मास में एक समय फलाहार करते हुये ककंटा देवी का नित्य नियम पूर्वक पूजन करे तथा पूजन के पश्चात् नित्य उपरोक्त मन्त्र का तीस हजार बार जाप करे तो साधक बिल्ली का स्वर समझने योग्य हो जाता है और उसके द्वारा भूत, भविष्य, वर्तमान तीनो काल का ज्ञान स्वतः प्राप्त हो जाता है।

शूकर स्वर ज्ञान मन्त्र

"ॐ घुरु घुरु घुतु घुतु स्वाहा" ।

उपरोक्त मन्त्र को कीचड़ तथा दलदल के मध्य अर्धरात्रि समय सत्तर हजार बार जाप करने से सिद्धि प्राप्त होती है, जिससे साधक शूकर स्वर का ज्ञाता बनकर सकल सुख सम्पन्न हो जाता है।

काक स्वर ज्ञान मन्त्र

"ॐ क्रीं का का" ।

श्मशान से चिता की भस्म लाकर अर्धरात्रि को उस पर आसन लगा कर एकाग्र चित्त से छः हजार बार उपरोक्त मन्त्र का जाप करने से साधक काक स्वर का ज्ञाता, भविष्यदर्शी हो जाता है।

———o———

लोक प्रचलित मन्त्र

इस प्रकरण में हम उन लोक प्रचलित विविध मन्त्रों का वर्णन कर रहे हैं, जिनके द्वारा पूर्व काल से ही साधक अपनी कार्य सिद्धि प्राप्त करते आये हैं।

इन लोक प्रचलित मन्त्रों का संकलन अनेक प्राचीन संस्कृत हिन्दी एवं उर्दू के ग्रंथों एवं अनेक सिद्धि प्राप्त महात्माओं द्वारा किया गया है।

मन्त्र सिद्धि से पूर्व साधक स्थिर बुद्धि मे विचार करने के बाद ही साधन प्रवृत्त होना चाहिये। इन सभी वर्णित मन्त्रों में विशेष पूजन हवन आदि की आवश्यकता नहीं है। आवश्यक विधान एवं मन्त्र जप संख्या समस्त मन्त्रों के साथ दे दी गई है। वर्णित विधान के अनुसार यदि इन मन्त्रों को सिद्ध किया जाय तो यह मन्त्र विशेष लाभकारी प्रतीत होंगे।

उक्त मन्त्र अनेक मन्त्र साधकों, महात्माओं आदि से प्राप्त अनुभूत मन्त्र हैं, अतः इन मन्त्रों को कार्यानुसार विभाजित नहीं किया गया है। साधक को अपनी आवश्यकतानुसार ही उक्त मन्त्रों से चुनाव करना चाहिये।

विशेष—इन सभी मन्त्रों को सिद्धि करने के लिए आवश्यक है कि साधक इन पर श्रद्धा एवं विश्वास के साथ अमल करे। हृदय में आस्था लगन एवं आत्मविश्वास न होने की दशा में सभी मन्त्र प्रभावहीन प्रतीत होंगे।

मस्तक शूल विनाशक मन्त्र

निसुनीह रोई बद कर मेघ गरजहि निसु न दीपक हलुधर फुफुनिबेरि फूनि डमरु न बजै निसुनहि कलह निन्न पुटु काच मई।"

इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि को २,१८० बार जाप कर सिद्ध कर लेना और प्रयोगावसर पर केवल २१ बार मन्त्र को पढ़ कर फूंक मार देने से दर्द देवता भाग जाते हैं।

आँखों का दर्द दूर करने का मन्त्र

सातों रीदा सातों भाई सातों मिल के आंख बराई दुहाई सातों देव की, इन आंखिन पीड़ा करै तो धोबी को नाँद चमार के चूल्हे परै। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फूरो मन्त्र ईश्वरो वाचा" ।

इस मन्त्र को दीपावली या होली की रात्रि मे प्रारम्भ कर इक्कीस दिवस तक नित्य १०८ बार जाप कर पूजन करने से यह सिद्ध हो जाता है और आवश्यकता के समय केवल २१ बार मन्त्र पढ़ फूंक मार देने से दर्द देवता विदा हो जाते हैं ।

सर्व संकट नाशक वन दुर्गा मन्त्र

ओम् ह्लीं उत्तिष्ठ पुरिषि किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितम् । यदि शक्यम शक्य वा तन्मेभगवति शमय स्वाहा ह्लीं ओम् ॥

इस मन्त्र को नवरात्र के अवसर पर पवित्रतापूर्वक प्रतिदिन प्रातः देवी के मन्दिर में दस हजार बार जाप करके सिद्ध कर लेना चाहिये। इस मन्त्र का प्रतिदिन एक माला जाप करने से मनुष्य अकाल मृत्यु, मार्ग दुर्घटना भय आदि अनेक विपत्तियों से सुरक्षित रहता है।

दन्त शूल नाशक मन्त्र

अग्नि बाँधौं अग्नीश्वर बाँधौं सौलाल बिकराल बाँधौं लोहा लुहार बाँधौं बज्र के निहाय वज्र घन दाँत विहाय तो महादेव की आन ॥

इस मन्त्र को केवल नौ दिन तक रात्रि में नित्य २,१०० बार जाप करके सिद्धि कर ले, फिर जब प्रयोग करना हो तो तर्जनी उंगली से २१ बार मन्त्र पढ़कर झार देने से दाँत का दर्द दूर हो जाता है।

तपेदिक (टी०बी०) आदि सर्व ज्वर नाशक अद्भुत मन्त्र

ओम् कुबेर ते मुखं रौद्रं नन्दिन्ना नन्द मावह ।
ज्वरं मृत्यु मयं घोरं विषं नाशक मे ज्वरम् ।।

आम के १०८ ताजे पत्ते तोड़ शुद्ध गाय के घी में डुबा दे, यदि घी कुछ कम होवे तो पत्तों पर चुपड़ दें और जिस स्थान पर रोगी की शय्या पड़ी हो आम, बेरी अथवा पलाश की लकड़ी की समिधा में अग्नि प्रज्वलित करके उपरोक्त मन्त्र से १०८ आहुति देवे. यदि रोगी बैठने योग्य हो तो उसे हवन कुण्ड के समीप बैठा देवे यदि रोगी बैठने के योग्य न हो तो उसकी चारपाई हवन कुण्ड के समीप ही डलवा देवे और हवन के समय रोगी का मुँह खुला रखें । इस प्रकार की क्रिया से साधारण ज्वर तो केवल तीन या पाँच दिन मे ही दूर हो जाते है और पन्द्रह या इक्कीस दिवस में टी० बी० जैसे राज रोग भी [illegible] लिये दूर हो जाते है । हवन सामग्री मे निम्न वस्तुयें बराबर-बराबर लेकर मिला लेना चाहिये । मण्डूक पर्णी, गूगल, इन्द्रायण की जड़, अश्वगन्ध, विधारा, शालपर्णी, मकोय, अडूसा, बांसा, गुलाब के फूल, शतावरी, जयमांसी, जायफल, वंशलोचन, रास्ना, तगर, गोखरू, पाण्डरी, क्षीर काकोली, पिश्ता, बादाम की गिरी, मुनक्का, हरड़ बड़ी, लौंग, आंवला, अभिप्रवाल, जीवन्ती, पुनर्नवा, नगेन्द्र वामड़ी, खूब कला, अपामार्ग, चीड़ का बुरादा उपरोक्त सब चीजें बराबर भाग तथा गिलोय चार भाग, कुष्ठ १/४ भाग, केशर, शहद, देशी कपूर, चीनी, दस भाग तथा गाय का घी सामर्थ्य के अनुसार जितना डाल सकें । समिधा ढाक, शुष्क बांसा या आम की ही होनी चाहिये । हवन काल में अन्य कोई औषधि न देना चाहिये ।

पसली झारने (दूर करने) का मन्त्र

हं मन्दिर के किनारे सुरहा गाय सुरहा गाय के पेट में उच्छा बच्छा के पेट में कलेजा कलेजा के पेट में डब डब कर उमा बढ़े दुहाई लेना [illegible]ना चमारी की ।

उपरोक्त मन्त्र को होली, दिवाली की रात्रि अथवा ग्रहण के अवसर पर पवित्रता पूर्वक १००८ बार लोहबान की धूनी देते हुये जाप करें सिद्धि कर लेवे और जब प्रयोग की आवश्यकता हो तो एक सेर लकड़ी और उंगली के नाप की सात सींकें लेकर २१ बार मंत्र पढ़कर अग्नि में पसली रोग से मुक्ति मिल जाती है।

चोरी गया धन निकलवाने का मन्त्र

ओम् नमो नाहर वीर, चलते तेग में तेरा सीर बहता चलता थामे नीर, सोये अनपे लागे तीर, ज्यों-ज्यों चालै नरसिंह वीर, चित्त चोर का धरै न धीर, चोर का हाथ काँपै, सिर काँपै, छाती थर्रावै, जहाँ धरै चुराया धन, तहाँ सूं हटन न पावै, दुहाई गुरु गौरख नाथ की दुहाई चौरासी सिद्धि की दुहाई पूरन पूतकी। शब्द साँचा पिण्ड काचा फुरो मन्त ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

इस मंत्र को सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण के अवसर पर किसी सरिता के तट पर पीपल के नीचे बैठ एक लाख बार जाप करके सिद्धि कर ले और प्रयोग अवसर पर उत्तर दिशा की ओर मुख करके एक कांसे की कटोरी सामने रख मन्त्र पढ़ कर चावल मारने से कटोरी अपने आप चलने लगेगी और जिस स्थान पर धन रक्खा होगा वहीं जाकर रुक जायेगी।

अनाज की राशि उड़ाने का मन्त्र

ओम् नमो हकाँलौ चौसठि योगिन हकालौ बावन वीर कार्तिक अर्जुन वीर बुलाऊँ आगे चौसठ वीर जल बाँध थल बाँध आकाश बाँध तीन देश की दिशा बाँध उत्तर जो अर्जुन राजा दक्षिण तो कार्तिक बिराजै आसमान लो

वीर गाजैं नीचे चौसठि योगनी विराजै वीर तो पास चलि आवै छप्पन भैरो राशि उड़ावै एक बंध असमान में लगाया दूजे बांधि घर में लाया शब्द साँचा पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचः ।

दीपावली की अर्द्धरात्रि को जंगल में जाकर नग्न होकर दस हजार बार उपरोक्त मन्त्र का जाप कर सिद्धि कर लेवे और जब प्रयोग करना हो तो रात्रि में मसा की मींगनी लाकर सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर अन्न की राशि पर रख कर चला आये तो उसके पीछे ही समस्त अन्न राशि उड़कर चली आती है ।

सावधान—जितनी राशि आपको प्राप्त हो उसका आधा भाग दान अवश्य कर दें अन्यथा फलीभूत न होंगे ।

अगिया बैताल का मन्त्र

ओम् नमो अगिया बैताल वीर—बैताल पैठो सातवें पाताल लाव अग्नि की जलती झाल बैठ ब्रह्मा के कपाल मछली चील कागली गूगल हरताल इन बस्ता लैं चोलि न लै चलै तो माता कालिका की आन शब्द साँचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

होली की रात्रि में श्मशान में जाकर गूगल, हरताल से हवन कर चील्ह कागली तथा मछली के माँस का भोग लगावे और एक लाख बार मंत्र जाप कर सिद्ध कर ले, तत्पश्चात् जब प्रयोग करना हो तो २१ मिट्टी के ढेले लेकर २१ बार मन्त्र पढ़कर जिस स्थान पर डाल देवे वहीं अग्नि प्रज्वलित हो उठे ।

कार्य साधन मन्त्र

बिसमिल्ला रहमानिर्ररहीम गजनी सो चला मुहम्मदा पीर चला२सवा सेर का तोसा खाय

अस्सी कोस का धावा जाय श्वेत घोड़ा श्वेत पलान जापै चढ़ा मुहम्मदा ज्वान नौ सौ कुत्तक आगे चले नौ सौ कुत्तक पीछे चलै काँधा पीछे भात डाला ध्याया चलै चालि चालि रे मुहम्मदा पीर तेरे सम नहि कोई वीर हमारे चोर को ल्याव सात समुद्र की खाईं से ल्याव ब्रह्मा के वेद सों ल्याव काजी की कुरान सो ल्याव अठारह पुराण सों ल्याव जाव जाव जहाँ होय तहाँ सों ल्याव गढ़ा सों पर्वत सों कोट सों किला सों ल्याव मुहल्ला गली सों ल्याव कुचा सों चौहटा सों ल्याव सेत खाना सों ल्याव बारह आभूषण सोलह सिंगार सो ल्याव काजल कजराटो सों ल्याव मढ़ की मौंठ सों रोली मोली सों हाट बाजार सों ल्याव खाट सों पाया सों नौ नाड़ी बहत्तर कोण की घूमती बलाय को ल्याव हाजिर करौ हाड़ हाड़ चाम नख शिख रोम-रोमसों ल्याव रे ताइया सिलार जिन्द पीर मारतौ पीटतौ तोड़तौ पछाड़तौ हाथ हथकड़ी पाँव बेड़ी गला में तौक उलटा कब्जा चढ़ाय मुख बुलाय सींम खिलाय कैसे हूँ लाव बिन लिये मत आव ओम् नमो आदेश गुरु को ।

इस मन्त्र को किसी भी दिन शुभ मुहूर्त में गौ के गोबर का चौका लगा धूप, दीप, लोहबान की धूनी देकर १,००८ बार मन्त्र जाप कर सवा सेर लड्डू का भोग लगावे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाय । प्रयोग के समय सात दाना उर्द को लेकर २१ बार मंत्र पढ़कर मस्तक पर छोड़ दे तो कार्य सफल होता है ।

दृष्टि बाँधने का मन्त्र

ओम् नमो काला भैरो घुंघरा वाला हाथ खंग फूलों की माला चौसठ योगिन संग में चाला देखो खोलि नजर का ताला राजा परजा ध्यावे तोहि सबकी दृष्टि बँधादे मोहि मैं पूजौ तुमको नित ध्याय राजा परजा मेरे पाय लगाया भरी अथाई सुमिरौं तोहि तेरा किया सब कुछ होय देखूं भैरो तेरे मन्त्र की शक्ति चलै मन्त्र ईश्वरो वाचा शब्द साचा पिंड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र को रविवार की रात्रि को श्मशान में जा भैरो की पूजा कर १,००८ बार जाप करके सिद्धि कर लेवे और प्रयोग अवसर पर एक चुटकी भस्म ११ बार मन्त्र पढ़ फूंक मारे तो सबकी दृष्टि बँध जाय और साधक का कार्य किसी को दिखाई न पड़ेगा।

एक मन्त्र से तीन कार्य

ओम क़लमुल आम्मिया वादी हो अहबुल बीस्फ़े स्फ़े स्फ़े।

नर्क चतुर्दशी को एक आघात में मुर्गा नामक पक्षी को मार उसके मुख में धान भर देवे और किसी सरिता के किनारे मिट्टी में गाड़ आवे और दूसरे दिन प्रातः उनको उखाड़ लावे (किन्तु ध्यान रहे आते समय किसी की नजर न पड़ने पावे) और ऐसे स्थान पर बोवे जहाँ स्त्री की छाया न पड़ती हो, कुछ दिनों बाद उसमें जो धान निकले तब केवल हाथ द्वारा चावल निकाल कर अपने पास रख ले और निम्न प्रकार प्रयोग में लावे—

(१) यदि किसी बाजीगर का खेल बिगाड़ना हो तो सात चावल ले २१ बार मन्त्र पढ़ बाजीगर पर छोड़ दे तो उसका खेल बिगड़ जावेगा।

(२) यदि किसी नट का तमाशा खराब करना हो तो सात दाना चावल २१ बार मन्त्र पढ़ कर मारे तो नट कलाबाजी में अवश्य ही चूक जाता है।

(३) यदि सात दाना चावल के २१ बार मन्त्र पढ़ कर जल या जिस वस्तु पर डाल दे तो उस पर कोई जादू नहीं चल सकता ।

अकेला दश काम देने वाला मन्त्र

ओम् सार्पे सार्पे उनमूलितांगुलीय के आवेहि आवेहि कामिका दोहद वः वः ।

दीपावली के एक दिन पहले श्मशान में जाकर आदमी की खोपड़ी को उलटा कर उस पर सात बेर मन्त्र पढ़ कर सात रेखा खींच कर चला आवे और दीपावली के दिन रात्रि में उसी स्थान पर जाय नग्न होकर उसी खोपड़ी में जल भरे और चिता की लकड़ी जला खोपड़ी में उड़द और चावल की खिचड़ी बनावे और जब तक खिचड़ी पकती रहे आप खड़ा होकर मन्त्र पढ़ता रहे और पक जाने पर जल से धोकर हाथ में ले अपने घर को चल देवे और मार्ग में न किसी से बोले और न पीछे मुड़ कर देखे और आवश्यकतानुसार निम्न प्रकार प्रयोग में लावे ।

(१) रविवार के दिन जिसका नाम १०८ बार मन्त्र पढ़ उर्द चांवल फेंके तो उस व्यक्ति के गोली के जैसी चोट लगती है । यह मारण प्रयोग है ।

(२) जिस ओर से गोली बाण या मूठ आती दृष्टि पड़े, सात दाना ले १०८ बार मन्त्र पढ़कर मारे तो वह वहीं रुक जाय । यह स्तम्भन प्रयोग है ।

(३) शत्रु से घिर जाने पर सात दाना ले १०८ बार मन्त्र पढ़कर मारने से शत्रु का वार निष्फल हो जाता है ।

(४) सात दाना २१ बार पढ़ सँपेरे की महुवर पर मारने से महुवर बन्द हो जाती है ।

(५) यदि कहीं बाजा बन्द करना हो तो सात दाना २१ बार मन्त्र पढ़ कर मारने से बजते हुये बाजे बन्द हो जाते हैं ।

(६) जिस घर में चूहा अधिक हों सात दाना मन्त्र पढ़ कर घर में फेंक दे तो एक चूहा घर में न रहे।

(७) जहाँ मच्छर अधिक होवे वहाँ सात दाना मन्त्र पढ़ कर मारने से मच्छर दूर हो जाते हैं।

(८) यदि किसी शत्रु से बदला चुकाना हो तो सात दाना २१ बार मन्त्र पढ़ किसी प्रकार उसको खिला दे तो शत्रु पागल हो जाता है।

(९) यदि किसी फले फूले वृक्ष पर सात दाना मन्त्र पढ़ कर मार दे तो वह अवश्य सूख जाता है।

(१०) सात दाना मन्त्र पढ़कर खेत में मारने से खेत की फसल सूख जाती हैं।

निधि दर्शन मन्त्र—१

ओम् नमः श्री ह्रीं क्लीं सर्व्व निधि प्रखत नमा बिन्चे स्वाहा।

रविवार के दिन काला मार उसकी जीभ निकाल ले, काली गाय के दूध में मिला दही जमावे, तत्पश्चात् उसका घी निकाल कर काजल बनावे तथा १०८ बार मन्त्र पढ़ काजल को आँख में लगाने से जमीन में गड़ा धन दिखाई देता है।

निधि दर्शन मन्त्र—२

ओम् नमो चिड़ा चिड़ाला चक्रवतीन में सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

कौवा को कृष्ण पक्ष में तीन दिन तक घी तथा मक्खन खिलावे तत्पश्चात् उसकी बीट रूई में लपेट कर जलावे और काजल पार ले। इस काजल को १०८ बार मन्त्र पढ़ कर आँखों में आँजने से जमीन में गड़ी हुई दौलत दिखाई देने लगती है।

महा लक्ष्मी मन्त्र

श्री शुक्लें महा शुक्ले कमल दल निवासे श्री महा-लक्ष्म्ये नमो नमः। लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो

माई करो भलाई न करो सात समुद्र की दुहाई
ऋद्धि सिद्धि खावोगी तो नौनाथ चौरासी की दुहाई।

दीपावली की रात्रि को एकान्त में पवित्रता पूर्वक बैठकर दस हजार बार मन्त्र का जाप कर ले और प्रतिदिन दूकान खोल गद्दी पर बैठ १०८ बार मन्त्र पढ़ व्यापार करे तो लक्ष्मी वृद्धि होती है ।

कड़ाही बाँधने को मन्त्र

ओम् नमो जल बाँधूं जलवाई बाधूं बाधूं कुवा
वाहीं नौ सौ गाँव का वीर बोलाऊँ बाँधे तेल कड़ाही
जती हनुमन्त की दुहाई शब्द सांचा पिंड काचा फुरो
मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को ।

दीपावली की रात्रि को इसको १००८ बार जाप करके सिद्धि कर लें और जब प्रयोग करना हो तो रास्ते के सात कंकड़ ले करके एक कंकड़ को सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर कड़ाही पर मारे तो चाहे कितना लकड़ी या कोयला जलावे कड़ाही गरम न होगी ।

मारण मंत्र

ओम् डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डं डः अमुकं
गृह्णण गृह्णण हुँ हुँ ठः ठः ।

इस मन्त्र को श्मशान पर सात रात्रि नित्य दस हजार बार जाप करे और जब किसी मनुष्य पर प्रयोग करना हो तो मनुष्य के हाड़ की कील बना १००० मन्त्र से अभिमंत्रित कर प्रज्वलित चिता में गाड़ देवे तो शत्रु ज्वर पीड़ित होकर मृत्यु को प्राप्त होता है ।

पुनश्च–

उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित मानव हाड़ की कील जिस शत्रु के घर में गाड़ देवे वह सपरिवार मृत्यु को प्राप्त होता है ।

शत्रु नाशक (मारण) महा मन्त्र

ओम् ऐं ह्रीं महा विकराल भैरव ज्वलल्ताय मम

बैरी वह वह हन हन हन पच पच यन्मूल्य उन्मूल्य ओम् ह्रीं ह्रीं ह्रूँ फट ।

श्मशान में जाकर भैंस के चर्मासन पर बैठ ऊन की माला द्वारा २१०० जाप कर सवा सेर सरसों से हवन करे । इस प्रकार सात रात्रि पर्यन्त कार्य करने से बैरी अवश्य ही मृत्यु को प्राप्त होता है ।

मृत आत्मा आकर्षण मन्त्र

ओम् ह्रीं क्लीं अं श्री महासर्वस्व प्रदान्यै नमः ।

उपरोक्त मन्त्र श्मशान में जाकर किसी बरगद के वृक्ष के नीचे खड़े होकर सवा लाख बार जाप करने से मृतक आत्मा आकर्षित होती और साधक की सभी कामनायें पूर्ण करती है ।

प्रेत आकर्षण मन्त्र

ओम् श्री बं बं भुं भुतेश्वरी मम कुरु स्वाहा ।

इस मन्त्र को निर्जन बन में जाकर बबूल वृक्ष के नीचे तीन दिन तक नित्य १००८ बार जाप करने से तीसरे दिन प्रेत प्रकट होकर माँग-माँग क्या माँगता है ? उच्चारण करता है । उस समय साधक को चाहिये कि निर्भय होकर मन चाही वस्तु उससे माँग ले, प्रेत से किसी प्रकार डरना नहीं चाहिये ।

नैन वेदना विनाशक मन्त्र

नमो राम जी धनी लक्ष्मण के बान । आँख दर्द करे तो लक्ष्मण कुवंर की आन । मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु का ।

इस मन्त्र का किसी शुभ मुहूर्त में जाप प्रारम्भ करके २१ दिवस तक दस हजार बार नित्य जाप कर धूप दीप और नैवेद्य आदि से मनोयोग पूर्वक लक्ष्मण जी की पूजा करे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है । प्रयोग की आवश्यकता होने पर केवल एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़ झार देने से नेत्रों का दर्द दूर हो जाता है ।

यक्षिणी साधन प्रयोग

इस प्रकरण में हम अति दुर्लभ तथा गुप्त यक्षिणियो का साधन प्रयोग लिख रहे हैं। इसमें वर्णित किसी एक के सिद्धि हो जाने से साधक की समस्त मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं। साधक को चाहिये कि अत्यन्त शान्तिपूर्वक यक्षिणी को माँ बहन कन्या अथवा पत्नी के समान जान कर उनकी साधना तथा ध्यान करे। थोड़ी सी असावधानी में ही बाधा पड़ सकती है। यक्षिणी साधन में भोजन इत्यादि सात्विक यानी माँस रहित होना चाहिये। पान, तम्बाकू आदि विलासी वस्तुओं को त्याग देना ही उचित है। साधन काल में किसी को स्पर्श नहीं करना चाहियें। प्रातःकाल शय्या त्याग नित्य कर्म से निवृत्त होकर स्नान करके मृगछाला पर बैठ एकाग्रता पूर्वक जाप करना चाहिये और तब तक जाप करते रहना चाहिये जब तक कि यक्षणी सामने प्रकट न हो जावें।

कर्ण पिशाचिनी प्रयोग

मंत्र—ओम् क्री समान शक्ति भगवती कर्ण पिशाचनी चन्द्र रोपनी वद वद स्वाहा।

किसी सरिता या सरोवर के तट या किसी अन्य एकान्त स्थान में पवित्रता पूर्वक एकाग्र चित्त होकर इस मन्त्र का दस हजार बार जाप कर ले उसके बाद ग्वार पाठे के गुच्छे को दोनों हथेलियों पर मल कर रात्रि में शयन करने से यह देवी स्वप्न में समय का शुभाशुभ फल साधक को बतला जाती है।

चिचि पिशाचिनी प्रयोग

मंत्र—ओम् क्रीं ह्रीं चिचि पिशाचिनी स्वाहा।

केशर गोरोचन तथा दूध इन चीजों को मिला कर नीले भोजपत्र पर अष्टदल कमल बना प्रत्येक कमल पर माया बीज लिख शीश पर

धारण करे और सात दिन तक नित्य दस हजार बार नियम पूर्वक मन्त्र जाप करने से यह देवी स्वप्न में भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों काल का शुभाशुभ हाल साधक को बतला जाती हैं।

कालकर्णिका प्रयोग

मंत्र—ओं ह्रीं क्लीं काल कर्णिके कुरु कुरु ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र को एकान्त स्थान में एक लाख बार जप करके मन्दार (ढाक) की लकड़ी, घी, शहद से हवन करें तो कालकर्णिका देवी प्रसन्न होकर साधक को अनेक प्रकार से रत्न धन आदि ऐश्वर्य प्रदान करती हैं।

नटी यक्षिणी प्रयोग

मंत्र—ॐ ह्रीं की नटी महा नटी रूपवती स्वाहा।

अशोक नामक वृक्ष के नीचे गोबर का चौका लगा, ललाट में चन्दन का मण्डल लगा कर विधिवत देवी का पूजन करके धूप दीप दे, एक मास तक नित्य एक हजार बार उपरोक्त मन्त्र का जाप करे तो देवी प्रसन्न होकर के साधक को अनेक प्रकार की दिव्य वस्तुयें प्रदान करती है। ज्ञातव्य—साधन काल में साधक को केवल एक समय भोजन करके अर्ध रात्रि के बाद ही पूजन करना चाहिये।

चण्डिका प्रयोग

ओं चण्डिके हसः क्रीं क्रीं क्रीं क्लीं स्वाहा।

इस मन्त्र को शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जपना प्रारम्भ करके पूर्णमासी तक नित्य चन्द्रोदय से चन्द्रास्त तक सम्पूर्ण पक्ष में नौ लाख बार जाप करने से अन्तिम दिन देवी प्रत्यक्ष प्रकट होकर साधक को अमृत प्रदान करती हैं, जिसको पान करने से साधक मृत्यु भय से मुक्त हो जाता है।

सुर सुन्दरी साधन

मंत्र—ओम् ह्रीं ह्रीं आगच्छ आगच्छ सुर सुन्दरी स्वाहा।

किसी एकान्त स्थल में पवित्रतापूर्वक शिवलिंग की स्थापना कर प्रातः मध्यान्ह संध्या तीनों समय विधिवत पूजन करके तीन हजार बार उपरोक्त मन्त्र का जाप करे। इस प्रकार बारहवें दिन सुर सुन्दरी देवी सम्मुख प्रकट होकर साधक से पूछती हैं कि तुमने मेरा स्मरण किस हेतु किया है। तब साधक देवी की अनेक प्रकार पूजा कर विनय पूर्वक कहे कि हे कल्याणी! भक्तों को प्रतिपाल करनेवाली माता! मैं धनाभाव से ग्रस्त निर्धन प्राणी हूँ। हे माता! मैंने जीवन कल्याण की भावना से प्रेरित होकर आपका स्मरण किया है। हे जगती जननी! कृपा करके मेरा कल्याण करो। इस प्रकार विनय करने से देवी धन आदि समस्त सांसारिक ऐश्वर्य प्रदान करती हैं।

विप्र चाण्डालिनी साधन

ओम् नमश्चामुण्डे प्रचण्डे इन्द्राय ओम् नमो विप्र चाण्डालिनी शोभिनि प्रकर्षिणी आकर्षय द्रव्य मानय प्रबल मानय हूँ फट् स्वाहा॥

प्रथम एक दिन शील पूर्वक निराहार रहकर रात्रि में शय्या त्याग भूमि पर शयन करे तथा मधुर भोजन खाते हुये अधूरा त्याग करके ऐसे स्थान पर जाकर मन्त्र जाप करे, जो किसी भी प्रकार पवित्र न होवे। इस प्रकार अपवित्र दशा में नित्य २१०० बार मन्त्र जाप करे तो उपरोक्त मन्त्र सिद्धि हो जाता है और सात दिन बाद रात्रि में विंस्मय जनक दृश्य दिखाई पड़ता है। दूसरे-तीसरे दिवस स्वप्न में रुद्र स्वरूप दृष्टि गोचर होता है। यदि उक्त दृश्य साधक को न दिखाई पड़े तो पुनः इक्कीस दिवस तक मन्त्र जाप करना चाहिये। तब किसी स्त्री स्वरूप का दर्शन होगा और वह छल युक्त अभक्ष्य पदार्थ प्रस्तुत करेगा और अनाचार करता हुआ साधक को भयभीत करने का प्रयास करेगा। यदि साधक इन सब दृश्यों, कार्यों से निशंक होकर साधना में लीन रहेगा तो देवी प्रकट हो साधक की समस्त कामनायें पूर्ण करेगी।

सकल यक्षिणी साधन

मंत्र—ओं ह्रों क्रूं क्रूं क्रूं कट्टु कट्टु अमुकी देवी वरदा सिद्धदाच भव ओं अः ॥

इस मन्त्र को रात्रि के समय एकान्त में चम्पा नामक वृक्ष के नीचे बैठ कर गूगुल की धूप देकर आठ हजार बार जप करें। इस प्रकार सात दिवस करे तो सातवें दिवस उक्त देवी साधक के सम्मुख प्रकट होकर दर्शन देती है। उस समय साधक को चाहिये कि निर्भय होकर चन्दन के जल से देवी को अर्घ्य देकर भली भांति पूजा करे तो देवी प्रसन्न होकर माता के रूप में अठारह व्यक्तियों के लिये नित्य भोजन, वस्त्र एवं आभूषण प्रदान करती है। बहन के रूप में प्रकट होने पर दूर दूर के स्थानों से रूपवती स्त्रियां भोजन एवं अनेक प्रकार के रसायन आदि वस्तुयें प्रदान करती हैं तथा स्त्री के रूप में प्रकट होने पर साधक को अपने साथ ले जाकर अनेक देव लोकों का भ्रमण करा साधक की प्रत्येक मनोकामना पूर्ण करती हुई उसके पास ही निवास करती है। आवश्यक—रात्रि समय किसी भी देव मन्दिर में एक उत्तम शय्या सजाकर रख दें और चमेली पुष्पों, श्वेत वस्त्रों तथा चन्दन से देवी की पूजा कर उपरोक्त मन्त्र का जाप करें तो जाप के समाप्त होने पर देवी सुन्दरी तरुणी के रूप में प्रकट होकर साधक को आलिंगन करती हुई चुम्बन करके अनेक प्रकार से रतिकेलि करती हुई साधक को आनन्द प्रदान करती हैं। तत्पश्चात कुवेर के कोषागार से द्रव्य लाकर प्रदान करती है।

पति वशीकरण यन्त्र

६	७	२
१	५	६
८	३	४

पति वशीकरण यन्त्र

कदाचित आपका पति आपसे रुष्ट होकर आपके प्रेम की उपेक्षा करने लगा है तो आप निम्नांकित यन्त्र को केशर से भोजपत्र पर लिख कर धूप में तथा तांबे अथवा चाँदी के यन्त्र में भर कर गले अथवा बाहु

में धारण करें तो आपका चाँदी के यन्त्र में भर कर गले अथवा बाहु में आपको पूर्व की भाँति चाहने लगेगा और फिर कभी किसी स्त्री की ओर आकर्षित न होगा ।

प्रेम उत्पन्न करने का यन्त्र

११	८	१	१०
२	१३	१२	७
१९	३	६	९
५	१०	१५	४०

प्रेम उत्पन्न करने का यन्त्र

यदि आप किसी से प्रेम करते हैं और चाहते हैं कि वह भी आप से प्रेम प्रदर्शित करे, किन्तु वह निष्ठुर हृदय आपकी ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता तथा उसको आकर्षित करने के आपके सारे प्रयत्न निष्फल हो चुके हैं तो आप हमारे इस अद्भुत यन्त्र को भोजपत्र पर केशर से लिख कर उसकी बत्ती बना लें और मिट्टी के कोरे दीपक में कुजब का तेल डाल प्रज्ज्वलित करें और दीपक का मुख जिसको वश में करना हो उसके घर की ओर रखें, इस प्रकार सात दिवस तक प्रयोग करें तो आपकी मनोकामना ईश्वर अवश्य पूरी करेगा और उसका पाषाण हृदय पिघल कर मोम हो जायेगा तथा वह स्वयं ही यन्त्र के प्रभाव से चुम्बक की तरह खिंचा चला आयेगा ।

कामिनी आकर्षण यन्त्र

कदाचित आप किसी रूपवती तरुणी के मोहक सौन्दर्य पर आसक्त है और चाहते हैं कि वह सौन्दर्य बाला किसी प्रकार आपके समीप आकर आप की मनोकामना पूर्ण करें, परन्तु वह सौन्दर्य की साम्राजी आपकी निरन्तर उपेक्षा करती है और आपके समस्त प्रयत्न विफल हो चुके हैं तो आप निम्नांकित मन्त्र को कुंकुम तथा गोरोचन से भोजपत्र पर लिख कर मन्त्र के नीचे रूप बाला का नाम लिख घड़े के नीचे रख दें तो सात दिन के अन्दर ही वह कोमलांगी आकर्षित हो आपकी अभिलाषा पूर्ण करेगी ।

कामिनी आकर्षण यन्त्र

५१	७	९	२२	१८	११	८	५	२	राम
ऐं	ह्लीं	क्लीं	श्रीं	ग्रीं	श्रीं	ग्रीं	घ्रीं	ह्लीं	ह्लीं
८	४१	५	२८	७	१२	३	८	६	राम

प्रेमिका वशीकरण यन्त्र

यदि आप किसी अविवाहित रूपवती से प्रेम करते हैं, परन्तु वह रमणी आपके लाख प्रयत्न करने पर भी आपकी ओर आकर्षित नहीं होती और आप उसके प्रेम से व्याकुल तथा निराश हो चुके हैं तो आप निम्नलिखित यन्त्र का प्रयोग करें। ईश्वर चाहेगा तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी और वह रूपगर्विता तरुणी आपके चरण चुम्बन करेगी।

४	२४	२२	२९	१०
१८	१५	२७	११	२०
२५	२१	१२	१६	१९
१३	२३	२६	२८	१७

प्रेमिका वशीकरण यन्त्र

प्रयोग विधि—जुमेरात को प्रातः काल अन्धेरे में ही उठ जंगल में जाकर आम के पेड़ के नीचे थोड़ी जमीन साफ कर आसन बिछा लोबान की धूनी सुलगा उक्त यन्त्र को एक धागे से बाँध कर ऊपर दाहिनी डाल पर लटका दें और प्रतिदिन १२१ बार आमंत 'कुला वल्ला' पढ़े और यह क्रिया अगले महीने की जुमेरात तक बराबर करते रहें, मालिक चाहेगा तो आपकी कामना पूरी होगी।

अप्रसन्न प्रेमिका मनाने का यन्त्र

यदि आपकी प्रेमिका किसी कारण वश आपसे नाराज हो गई है

और आपकी शक्ल भी देखना नहीं चाहती और आप उसके वियोग में व्याकुल व परेशान हैं तो निम्न मन्त्र का प्रयोग करें, आपकी अभिलाषा अवश्य पूरी होगी।

	८	१२	५	
७८६	११	१	१०	७८६
	७	१३	६	

अप्रसन्न प्रेमिका मनाने का यन्त्र

प्रयोग विधि—एक साफ देशी पान जो कटा फटा न होवे चौदहवीं की रात को लाकर जब चाँद पूरी तरह निकल आवे, केशर से उक्त यन्त्र लिखना प्रारम्भ करें और चाँद डूबने से पहले ही पूरी तरह लिख डालें और हजार बार आयत "कुला वल्ला" पढ़ें और यन्त्र के दायें बायें अमुक को अमुक यानी अपना और प्रेमिका का नाम लिखे, सबेरा होते ही किसी प्रकार प्रेमिका को खिला देवें तो पत्थर दिल प्रेमिका भी मोम हो जायेगी।

पति पत्नी की अनबन दूर करने का यन्त्र

यन्त्र

११	०	४	८
७	३	१५	१४
२७	१२	१६	१
४	६	१३	६

यदि आपकी पत्नी से जरा-जरा सी बात पर खट पट होती रहती है, एक भी दिन प्रेम स्नेह के साथ नहीं व्यतीत होता, तो आप इस निम्नांकित यन्त्र को पवित्रता पूर्वक चन्दन की लाल स्याही से फूल के बर्तन में सात दिन तक निरन्तर लिखें तो ईश्वर चाहेगा तो सात दिन बाद आपकी रूठी हुई पत्नी आपके चरण चुम्बन करेगी।

अद्‌भुत आकर्षण यन्त्र

यदि आप किसी कामिनी के प्रेम पाश में जकड़े हुये हैं और

अद्‌भुत आकर्षण यन्त्र

६	१	८
७	५	३
४	६	२

कामना करते हैं कि वह रूपवती कामिनी आपकी ओर आकर्षित होकर आपकी अभिलाषा पूर्ण करे, किन्तु वह कामिनी आपको किंचित मात्र भी नहीं चाहती तोआप हमारे निम्नांकित यन्त्र को भोजपत्र पर अनार की कलम से लिखकर गेहूँ के आँटे में मिला कर किसी सरिता में डाल दें ।इस प्रकार यह क्रिया २१ दिन तक निरन्तर करने के बाद यन्त्र को लिख कर अनार के पेड़ में लटका दें । हवा के घर्षण से वह यन्त्र जैसे-जैसे हिलेगा वैसे-वैसे ही आपकी अभिलषित कामिनी आपके प्रेम में व्याकुल होकर आपसे मिलने के लिये उस स्थान पर उपस्थित होयेगी ।

प्रेम दृढ़ीकरण यन्त्र

२२	३५	३४	२६
३३	२८	२३	३४
२७	३०	३७	१४
३६	३५	२६	२१

यदि आप अपनी स्त्री से इसलिये परेशान हैं कि वह आपको मन से नहीं चाहती और केवल पति होने के नाते आपका साथ देती है तो निम्नां-कित यन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर अपनी दाहिनी भुजा पर बांधे ईश्वर चाहेगा तो आपकी स्त्री चरण दासी बनकर रहेगी और किसी पुरुष की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखेगी ।

मोहन यन्त्र

४६	६६	२	८
७	३	६३	६२
६५	६०	६	१
४	६	६१	६४

अगर आप हृदय से किसी रूपवती बाला को चाहते हैं किन्तु वह आपसे बात भी नहीं करती तो आप निम्नांकित यन्त्र को पुष्य नक्षत्र में स्त्री के दूध से भोजपत्र

पर लिखें। भगवान चाहेगा तो आपकी कामना अवश्य पूर्ण होगी।

कामिनी आकर्षण यन्त्र



यदि आप किसी रूपवती तरुणी के रूप राशि पर आसक्त हैं और वह तरुणी किसी भी प्रकार आपकी ओर आकर्षित नहीं होती, तो आप इस नीचे लिखे यन्त्र को दाहिने हाथ की अनामिका नामक उंगली के रक्त से बाईं हथेली पर लिख कर पूजा कर जिस कामिनी की इच्छा करेंगे- वह मनभामिनी १०८ घड़ी पश्चात् आपकी सेवा में अवश्य उपस्थित होगी।

प्रेमिका वशीकरण यन्त्र

५ ५१५१७१२१   ७५५५५ १२१७१

ज्ञातव्य–दोनों रेखाओं के नीचे प्रेमिका का नाम लिखें। इस उपरोक्त यन्त्र को कागज पर लिख बत्ती बना लें और पलीता बनाकर अग्नि में जला दें तो आपकी प्रेमिका कैसी ही पाषाण हृदय क्यों न हो आपके वियोग में व्याकुल होकर दौड़ी चली आवेगी।

७८६ दुर्लभ वशीकरण यन्त्र

३५२१	३५१८	३५१५
३५१६	प्रेयसी और उसकी माँ का नाम	३५२०
३५१९	३५१४	३५१७

यदि आप किसी रूपवती बाला को अपने वश में करना चाहते हैं तो आप निम्नांकित यन्त्र को भोजपत्र पर लिख करके उसकी बत्ती बना लें और मिट्टी के एक कोरे सकोरे में चमेली का तेल डाल कर उसे प्रज्वलित करें और दीपक का मुख उस ओर रखें जिस ओर प्रेमिका का घर या

निवास होवे। इस प्रकार इक्कीस दिवस तक करने से वह कैसी ही पत्थर दिल युवती क्यों न हो चुम्बक की भांति आपके समीप खिंची चली आयेगी

प्रेयसी वशीकरण यन्त्र

५८२४२	५८२४२	५८२५०
५८२४४	५८२५२	५८२४६
५८२४६	५८२४७	५८२४५

निम्नांकित वशीकरण यन्त्र भी अपने ढंग का अनूठा यन्त्र है। इसका प्रभाव कभी निष्फल नहीं होता। इस यन्त्र को भी भोजपत्र पर लिख कर बत्ती बना मिट्टी के कोरे सकोरे में कुंजड़ का तेल भर दीपक बना जलावें। इस प्रकार इक्कीस दिन तक निरन्तर जलाने से प्रेयसी कैसी ही पत्थर दिल क्यों न हो इस यन्त्र के प्रभाव से प्रभावित होकर इक्कीसवें दिन अवश्य आपका चुम्बन करने लगेगी।

राजा वशीकरण यन्त्र

ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं
	अधिकारी		
ह्लीं	का		ह्लीं
	नाम		
ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं	ह्लीं

यदि आपको शासक वर्ग से भय अथवा हानि या भी कारावास आदि की सम्भावना प्रतीत हो तो आप इस वशीकरण यन्त्र को भोजपत्र पर केशर, गोरोचन, लाल चन्दन तथा अनामिका (अंगूठे से चौथी) उगली का रक्त मिश्रण करके लिखें और धूप दीप नैवेद्य आदि से विधिवत पूजन करके ब्राह्मण तथा कन्या भोजन कराकर यन्त्र को दाहिने हाथ की मुट्ठी में दबा कर राज्य अधिकारी के सम्मुख जाने से अधिकारी वश में हो जाता है। यह शंकर भगवान् का कहा हुआ अति उत्तम वशीकरण है।

पुरुष वशीकरण यन्त्र—१

अगर आपका पति किसी अन्य स्त्री के रूप पर मोहित होकर

आपकी अवहेलना करता है तो आप निम्नांकित यन्त्र को केशर से भोजपत्र पर लिख कर धूप दीप आदि से विधिवत पूजन करके मिट्टी में गाड़ देवें, तो जब तक यह यन्त्र मिट्टी में दबा रहेगा उस समय तक आपका पति आपके वश में रहेगा और किसी भी स्त्री की ओर आर्कषित न होगा।

८	३	४	अलहुब	६	७	२
१	५	९	बिन फलां अलाहुब	१	५	९
६	७	२	फलां बिन फलां	८	३	४

पुरुष वशीकरण यन्त्र—२

पर नारी के रूप पर मोहित अपने पति को वश में करने के लिये इस यन्त्र को प्याज के रस से रोटी पर लिख कर किसी यत्न से वह रोटी पति को खिला दें तो पति जीवन भर वश में रहे और अन्य स्त्री का स्वप्न में भी ध्यान न करे।

३३	४१	२	८
८	३	६९	३७
३९	३४	९	१
४	६	३५	३८

वशीकरण यन्त्र

यदि आप किसी रूपवती तरुणी के सौन्दर्य पर आसक्त हैं किन्तु वह रूपगर्विता किसी भी प्रकार आप के प्रेम पाश में नहीं आती तो निम्नांकित यन्त्र को सफेद कागज पर सत्तर बार लिख अपने समीप की किसी नदी या दरिया में बहा दें और इसी प्रकार सात दिन तक करें तो आप देखेंगे कि वह अभिमानी बाला स्वयं ही आकर आपके चरण चुम्बन करेगी और फिर जीवन भर आपसे अलग न होगी।

फलां	२३	बिन	१२	फलां
२५	१५	१३	२०	१८
२४	१४	१६	१६	२१
फलां	२२	बिन	१७	फलां

विशेष—फलां बिन फलां का अर्थ अमुक को अमुक होता है, अतः फलां प्रथम खाने में अपना तथा अन्तिम खाने में अभिलषित स्त्री का नाम लिखना चाहिये।

मुहब्बत का सुरमा

अगर आप किसी से प्रेम करते हैं किन्तु वह किसी कारण से आपकी ओर आकर्षित नहीं है तो आप इस सुरमे का प्रयोग करें तो आपको मालूम होगा कि यह सुरमा किस प्रकार आपकी कामना पूर्ण करने में समर्थ हैं। इसके बनाने की विधि यह है—शुद्ध सुरमा लेकर जिससे प्रेम करना हो, उसके कपड़े में लपेट लो और कनेर के फूलों को खरल करके उस सुरमे वाले कपड़े के ऊपर लपेट एक गोला सा बनाकर छाया में सुखा लो तथा दस सेर जंगली उपलों की आग में उसको फूंक दे और आग शीतल होने पर निकाल कर खरल करके सूरमा बना लें और रोजाना प्रातः काल एक-एक सलाई अपनी आंखों में लगा कर अपने प्रेमी या प्रेमिका के पास जाइये और उससे आँखे चार करने का प्रयत्न कीजिये। इस प्रकार सात दिन करने से आपका प्रेमी कैसा ही पत्थर दिल क्यों न हो आपके प्रेम में व्याकुल होकर खिचा चला आयेगा और फिर जीवन भर आपसे अलग न होगा।

बिच्छू के विष झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र—ओम् नमो गुरह गाय पर जाप हरी दूब खाती,
फिर ताल तलैया पानी पीवे, गुरह गाय ने गोबर

किया, जिसमें उपजे बिच्छू सात, काले, पीले, भूरे और हराल, उतर रे जहर बिच्छू का जाय, नहीं गरुड़ उड़कर आया सत्य नाम, आदेश गुरु का, शब्द साँचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।

विधि—दीवाली के दिन इस मन्त्र को १०८ बार जप कर सिद्ध कर ले । फिर जिसे बिच्छू ने काटा हो इस मन्त्र को पढ़ कर (फूंक कर) पानी पिलावे तो विष उतर जाय ।

दूसरा मन्त्र (डक झारने का)

ॐ सुमेर पर्वत नोना चमारी सोने रायी, सोने के सुनारी हुकबुक वाद-विलारी, धारिणी, नला, कारि-कारि समुद्र पार बहायो दोहाई नोना चमारी की फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि—इस मन्त्र को १,००० बार जपकर सिद्ध कर ले । जब किसी को बिच्छू काटे तो इस मन्त्र से २१ बार पढ़ कर झाडे तो बिच्छू का विष उतर जावे ।

मन्त्र—साँप-बिच्छू न काटे

मन्त्र—ओम् सुखं शिर काली माई स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र को प्रातः क़ाल चारपाई पर से उठते ही और जैसे ही पृथ्वी पर पैर रक्खा जावे तब इस मन्त्र को पढ़ ले तो आपका सारा दिन ठीक रहेगा और सर्प-बिच्छू आदि से बचेंगे । (सर्प बिच्छू नहीं काटेगा) ।

शीतला देवी जी का यन्त्र

विधि—इस यन्त्र को लाल चन्दन से कागज पर लिखे और फिर धूप-गूगुल आदि की धूनी दे फिर जिसके चेचक (देवी) निकली हों उसके गले में बांध

७	४४	६	३८
७१	४	१७	५२
३	२८	६	८
८	५	३६	४५

दे तो वह सूक्ष्म रूप से निकलेंगी और शीघ्र ही आराम देंगी।

गर्भ स्थिर रहने का यन्त्र

२०	२७	२	७
६	३	२४	२३
२६	२१	८	१
४	५	२२	२५

विधि—इस मन्त्र को कपूर, केसर कस्तूरी, गोरोचन, अगर, सुगन्ध, माला आदि से भोज.पत्र पर रविवार या मंगल वार को लिख कर स्त्री की भुजा अथवा गले में बाँध दे तो गर्भ स्तम्भन हो अर्थात् गर्भ स्थिर रहे। परीक्षित है।

ब्रह्म राक्षस छूट जाय

यन्त्र

५	४	५
४	५	४

इस यन्त्र को गूलर के पत्ते पर चंदन से लिख कर जिसके ऊपर ब्रह्मराक्षस की छाया हो उसके बांधे तो ब्रह्मराक्षस दूर हो जावे।

यन्त्र मोती झाला

श्री:	श्री:	श्री:	श्री:
श्री:	श्री:	श्री:	श्री:
श्री:	श्री:	श्री:	श्री:
श्री:	श्री:	श्री:	श्री:

इस यन्त्र को अनार की कलम द्वारा लाल चन्दन से भोज पत्र पर लिख कर धूप-दीप देकर मोती झाला वाले मरीज के गले में बांधे तो निश्चय मोती झाला से छुटकारा पावे। परीक्षित है।

यन्त्र—पुत्र होकर मर जाता हो

'शंकर मातु शंकर पितु'

४०	४२	४	५
१	३	४८	४३
४६	४५	५	४
२	७	४७	४४

जिसके पुत्र या बच्चा होकर मर जाता हो तो इस यन्त्र को अनार की कलम से गोरोचन से भोज पत्र पर लिख कर गूगुल की धूनी देकर अच्छे दिवस अच्छे मुहूर्त में उत्तर मुँह होकर लिखे

और उस स्त्री के गले में बाँध दें । निश्चय सफलता मिलेगी ।

सर्वार्थ सिद्धि यन्त्र

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

विधि—रविवार के दिन गोरोचन से भोज पत्र पर लिखे और यन्त्र में भर कर दाहिनी उसे भुजा पर बाँधना चाहिये ।

आधा शीशी का यन्त्र

विधि—इस यन्त्र को मंगल या रविवार को कागज के ऊपर लिख कर धूप, दीप की धूनी देकर सिर में बांधे तो आधा शीशी का दर्द दूर हो जावे ।

४२	४६	३	६
४	१४	४	४
७	२	४६	३८
१	८	४०	४५

तिजारी (तिजड़ा) का यन्त्र

विधि—इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर तिजारी वाले (रोगी) आदमी की दाहिनी भुजा में बाँधे तो तिजारी रोग दूर हो जावे ।

०	०	०	०
७१	७१	७१	०
७१	७१	७१	०
७१	७१	७१	०

भूत-प्रेत बाधा नाशक मन्त्र

विधि—इन्द्रायण का पका हुआ फल लाकर उसका नस्य (नहरु) बना करके गो मूत्र के साथ सुँघावे । या फिर कमलगट्टा व काली मिर्च दोनों को बारीक पीस कर नस्य बनाकर उसे जिसके ऊपर भूत-प्रेत हो सुँघावे तो ब्रह्मराक्षस, भूत प्रेत, चुड़ैल आदि दूर हों ।

नजर के लिये २० यन्त्र

४	२	६	८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

विधि—इस यन्त्र को लाल चन्दन से भोजपत्र पर लिख करके और धूप, दीप तथा नैवेद्य आदि यन्त्र को ताँबे के यन्त्र में भर कर बच्चे के गले में बाँधने से नजर दूर होती है और फिर नजर नहीं लगती।

संकट हरण यन्त्र

ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं ठं

विधि—कैसा ही संकट हो, अष्ट गंध से भोज पत्र पर लिख कर धूप, दीप तथा नैवेद्य देकर गले में बाँध दे।

पीलिया (कँवर) का मन्त्र

ॐ नमो वीर वैताल असुराल नाहर सिंह देव जी स्वादी तुरवादी सुभाल तुभाल, पीलिया को काटे, झारे पीलिया रहे न नेक निशान, जो रह जाय तो हनुमान की आन।

विधि—शुद्ध सरसों का तेल एक कटोरे में लेकर रोगी के मस्तक पर चन्दन से सात बार मले और प्रत्येक बार मन्त्र का उच्चारण करता जावे और कम-से-कम दिन भर में २ बार प्रयोग करें।

ज्वर नाशक तंत्र 'धूप'

देवदारु, इन्द्रावणी, लोहबान, गोदन्ती, हींग, सुगंध वाला, कुटकी, नीबू के पत्ते, वच, दोनों कराई, चव्य, सूखा बिनौला, जौ, सरसों, "शुद्ध घी" काले बकरे की बाल, गोर शिखा इन सब चीजों को लेकर बैल के मूत्र में पीस कर मिट्टी के कोरे बरतन में रख छोड़े। इसे माहेश्वर धूप कहते हैं। इसकी धूनी देने से सब प्रकार के ज्वर तथा

उन्मत्त रोगी को यह धूप देने से ग्रह, राक्षस, भूत, पिशाच, चुड़ैल, नाग, पूतना, शाकिनी, डाकिनी आदि तथा अन्य विघ्न भी क्षण में दूर होते हैं। परीक्षित है।

ज्वर नाशक मन्त्र

मन्त्र—ॐ नमो भगवते रुद्राय शूल पाणये । पिशाचाधिपतये आवश्य कृष्ण पिंगल फट् स्वाहा।

इस मन्त्र को कागज के ऊपर कोयले से लिख कर दाहिनी भुजा पर बाँधे तो नित्य आने वाला ज्वर दूर हो।

ज्वर नाशक अन्य मन्त्र

मन्त्र—श्रीकृष्ण बलभद्रश्च प्रद्युम्न अनिरुद्ध च । ऊधा स्मरण मन्त्रेण ज्वर व्याधि विमुच्यते ।।

इस मन्त्र को कागज पर लिख कर धूप-दीप देकर गले में बाँधने से ज्वर दूर होता है तथा उसका जाप करने से भी ज्वर दूर होता है।

बाई झारने का मन्त्र

मन्त्र—ओम् मूलनमः धुक्षतमः जाहि जाहि ध्वांक्ष तमः प्रकीर्ण अंग प्रस्तार प्रस्तार मुंच मुंच ।

विधि—मंगलवार या रविवार को तिलोई पक्षी के पंख से झारे तो बाई दूर होती है।

रोनी मन्त्र (बालकों का रोना दूर होने का मन्त्र)

मन्त्र—वावति-वावति-छोटी वावति, लम्बी केश वावति, चललीं कामरु देश, कामरु देश से आइल भगाना सिर लोट पर चढ़े मसाना, ठोकर मारी तीन, दीख लेब छीन सत्य नाम कामरु के, विद्या नोना योगिनी के, सिद्ध गुरु के बन्दौं पाँव ।

विधि–जो बालक अधिक रोता हो या दीठ लग गई हो तो उस बालक के सर पर हाथ रख कर मन्त्र पढ़ कर फूंक मारे ।

जानवरों के कीड़ा झारने का मन्त्र

ओम् नमो कीडा रेकुण्ड कुण्डालों लाल पूँछ, तेरा मुँह काला । मैं तोंहि पूँछा कंह से आका, तूने सब मांस खाया । अब तू जाय, भस्म हो जाय, गुरु गोरख नाथ की दुहाई ।

विधि–नीम की हरी ताजी डाली से मन्त्र पढ़ कर सात बार झाड़े तो सब कीड़े मर जायँ ।

वायु गोला का मन्त्र

मन्त्र–ओम् ऐ चाचा ।

विधि–चाकू से २० बेंड़ी और ४० खड़ी लकीरें खींच कर इस मन्त्र को पढ़ कर उस पर फूंके तो वायु का रोग जाय ।

वायु गोला झारने का मन्त्र

कान्हपुर हाई कहाँ चले वनही चले बागहे के कोयला कोयला का करबेह सारी पत्रखण्ड कर बेहु अष्टोत्तर बाँत व्याधि काटे के सिर रावण का वश, भुजा बीस, ककुही वर वटी वायु गोला बांधू गुल्म महादेव गौरा पार्वती के नीलकंठ लोना चम्माइन की दुहाई ।

इस मन्त्र से वायु गोला झारे तो लाभ (फायदा) होता है ।

कान का दर्द झारने का मन्त्र

मन्त्र–आसमीन नगोट वन्ही कर्म हीन न जायले, दोहाई महावीर की जो रहे कान की पीर अंजनी पुत्र

कुमारी वायु पुत्र महाबल को मारी ब्रम्हचारी हनुमन्ताई नमो नमो दोहाई महावीर की जो रहे पीर मुण्ड की ।

विधि—इस मन्त्र को पढ़ कर कान तथा माथे पर फूँक मारे ।

मृगी (मिरगी) का मन्त्र

ओम् हाल हलं स्मगत मंड़िका पुड़िया श्रीराम फुंकै मिरगी वायु सूखे ।। ओम् ठः ठः स्वाहा ।।

इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर किसी ताँबे के यन्त्र में भर कर बाँधने से मृगी रोग दूर होता है ।

पेट का शूल, आँव, खून बन्द करने का मन्त्र

सागरेर कूले उपजिलो सूल ओर पीभौ पीओ पानी (अमुके) धूचिलाम रक्त शूल छाडानि जर्भेर आज्ञा ।

विधि—मन्त्र में जहाँ अमुक है । वहाँ पर अमुक की जगह रोगी का नाम लेना चाहिये । उपरोक्त मन्त्र को आठ बार पढ़-पढ़ कर पानी में फूँक डाल कर और उस पानी को रोगी को पिलावे ।

प्रसव आसानी से होने का यन्त्र

मन्त्र—अस्ति गोदावरी तीरे जृम्भला नाम राक्षसी । तस्याः स्मरण मात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत् ।।

१	८	६	१४
११	१२	१३	६
७	२	१५	८
१३	१०	५	४

प्रसव वेदना से गर्भिणी बहुत परेशान हो तो वट (बरगद) के पत्ते पर ऊपर लिखा यन्त्र तथा मन्त्र लिख कर उसके (गर्भिणी) के मस्तक पर रखने से सुख पूर्वक प्रसव हो जाता है ।

दूसरा प्रसव मन्त्र

मन्त्र–गंगा तीरे वसेत काशी चरतेय हिमालये।
तस्याः पक्षच्युतं तोयं पाप येच्चैव तत् क्षारणात् ॥
ततः प्रसूयते नारी काक रुद्रो वचो यथा।

विधि–स्वाँस को रोककर जितनी बार यह मन्त्र जपा जा सके उतनी बार जप कर, गुड़ या गरम जल अथवा गरम दूध को अभिमंत्रित करके गर्भिणी को खिलाने तथा पिलाने से प्रसव बालक सुख पूर्वक पैदा होगा। परीक्षित है।

आँख दुखने का मन्त्र

मन्त्र–ओम् नमो झल मल जहर नली तलाई अस्ताचल
पर्वत से आई जहाँ जा बैठा हनुमान जाई, फूटे न
पाके करें न पीड़ा यती हनुमन्त की दोहाई।

विधि–नीम की हरी पत्ती दार डाली से सात बार मन्त्र पढ़-पढ़ कर झाड़ना चाहिये।

दूसरा–दुखती आँख अच्छी होने का यन्त्र

५७८२०६०२

स्याही से कागज पर इस यन्त्र को लिख कर दुखती आँख वाले को दिखावे तो दुखती आँख ठीक हो।

जानवरों के खुरहा रोग का मन्त्र तथा यन्त्र

मन्त्र–अर्जुन फलानी जिस्न सेत बाजी कपिध्वज,
गिरिउ विकामुक पार्थैर्व सव्य साची धनंजयः
इति अर्जुन दश नामानि पशु पीड़ा हराणि चा ॥

नीम की डाली से मन्त्र द्वारा (मन्त्र पढ़) कर झारना चाहिये।

८	१	६
६	५	४
४	६	२

यन्त्र

इस यन्त्र को लिखकर पशु के गले में बाँधने से खुरहा रोग दूर होता है।

भूत प्रेत भय नाशक यन्त्र

१	९	९१	९६
८	२	९	८६
९२	९५	३	७
९४	९१	६	४

इस यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर गले में बाँधने से भूत-प्रेतबाधा आदि दूर होते हैं और भय नही लगता है।

सर्व ग्रह बाधा दूर करने का यन्त्र

११	१३	१५
१७	१९	२१
२३	२५	२९

लाल चन्दन को गाय के दही में मिला कर स्वर्ण की लेखनी (कलम) से ग्यारह सौ विल्व पत्रों पर इस यन्त्र को लिख कर, अग्नि में हवन करे, अरिष्ट सर्व ग्रह बाधा दूर हो। परीक्षित है।

बच्चों की नजर (दीठ) दूर करने का यन्त्र

३३	९	४९	९
८१	८२	७	५२
४२	१७	५०	१
७२	८	१५	४५

इस यन्त्र को तांबे के पत्र पर लिख कर (खुदवा कर) बालक के गले में बाँधे तो नजर दूर हो।

राज सम्मान प्राप्ति यन्त्र

१०	६०	६०	१०
९०	१२	१३	८०
२०	७०	७०	४०
श्रीं	ह्रौं	श्रीं	ह्रीं

इस यन्त्र को अष्टगंध से तुलसी की लकड़ी की कलम से, पीपल के पत्ते पर लिख कर और स्वर्ण के यंत्र में भर कर दाहिनी भुजा पर बांध कर राज दरबार, नेताओं तथा बड़े आदमियों के सम्पर्क में आने से विशेष रूप से मान-सम्मान होगा।

आधा शीशी झारने का मन्त्र

ओम् नमो वनमेंबसी बानरी, उछल पेड़ पर जाय, कूद-कूद डालन पर फल खाय, आधी तोड़े-फोड़े, आधा शीशी जाय।

विधि—जमीन पर हाथ से सात लकीरें खींचे तथा फिर सात आड़ी रेखाओं से उन्हें काटता जावें। इस प्रकार सात बार करके रोगी के माथे पर फूंक मारता जावे और हाथ फेरता जावे तो आधा शीशी जावे।

रतौंधी झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र पढ़-पढ़ के फूंके भाट भाटिन संग चली कहाँ जाव, जायेउ समुद्र पार, भाटिन कहा मैं विआयेऊ कुश की छाली विआयेऊ उपसमा छीकर मुद्रा अंडा धों सों हिलतारा सोहिल तारा राजा अजैपाल तर कर केदार पानी भरत रहे उन देखे पावां बालाउ गोडिया मेला उजाल तोके मैं अधोखी ईश्वर महादेव की दोहाई, हनुमान कै दोहाई यही उतरि जाइ।

विधि—इस मन्त्र को पढ़-पढ़ कर सात बार झारे।

गर्भ धारण मन्त्र

मन्त्र—ओम् ह्लीं उलजाल्य ठः ठः ओम् ह्लीं।

विधि—जब स्त्री ऋतु-काल में हो तब हिरन की खाल (मृगचर्म) पर पुरुष तथा स्त्री दोनों बैठे और पुरुष-स्त्री के कान में १०८ बार मन्त्र कहे और फिर रात्रि में ईश्वरकाध्यान करके स्त्री-पुरुष सम्भोग करें तो गर्भ रहेगा।

आधा शीशी दूर करने का यन्त्र

३६	४६	२६	७१
३	८	४	७
३	८	२	३
११	७	२०	६

इस यन्त्र को रविवार के दिन लाल चन्दन से लिख कर मस्तक में बाँधे तोआधाशीशी (अधकपारी) नष्ट हो।

तिजारी ज्वर (तिजड़ा) दूर करने का यन्त्र

इस यन्त्र को अष्टगंध से लिख कर दाहिनी भुजा पर बांधने से तिजारी ज्वर छूट जाता है। परीक्षित है।

६	२	७
४	६	८
५	१०	३

नजर (दीठ) रोग दूर होने का यन्त्र

४	२	६	८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

इस यन्त्र को लाल चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर धूप दे फिर तांबे की ताबीज में मढ़ा कर बालक के गले में बांधे तो नजर दुख दूर हो और नजर न लगे।

गर्भ स्तम्भन मन्त्र

मन्त्र—ओम् नभो गंगा उकारे गोरख वहा घोरघो पार गोरख बेटा जाय जयद्रुत पूत ईश्वर की माया। दुहाई शिव जी की।

विधि—क्वारी कन्या के हाथ से कते हुये सूत को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके और उसी सूत (तागा) का गंडा बनाकर स्त्री को पहना देने से गर्भ स्तंभन होगा। यानी जिन स्त्रियों का गर्भ गिर जाता है। उन्हें पहनाने से गर्भ नहीं गिरेगा और गिरता हुआ रक्त (खून) भी बन्द हो जावेगा।

गर्भ रक्षा मन्त्र

मन्त्र—ओम् रुद्रा भी द्रव हो हा हा ह ओ का ।

विधि—रविवार के दिन गर्भवती स्त्री के पास गूगुल की धूनी देकर और गर्भवती के पास बैठ कर १२१ बार इस मन्त्र को जपे तो स्त्री को गर्भ सम्बन्धी किसी प्रकार की बाधा न रहेगी ।

बवासीर झारने का मन्त्र

मन्त्र—ओम् छई छलक कलाई आहुम आहुम कं कां कीं हूँ फट् फुरो मंत्र ईश्वरो वाच ।

विधि—इतवार और मंगल के दिन इस मन्त्र से पानी फूंक कर आबदस्त लेने से बवासीर का रोग जाता है ।

बवासीर ठीक होने का यन्त्र

४ / १ / ४४ / ८	७ / ४५ / २ / ४६
४२ / ६ / ४६ / ३	४ / ४८ / ५ / ४६

इस यन्त्र को अष्टधातु के पत्र पर खुदवा कर दाहिनी भुजा पर बाँधने से दोनों प्रकार का बवासीर अच्छा होता है ।

बालकों के सभी प्रकार के रोग दूर होने का यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर और उस भोजपत्र को तांबे के ताबीज में रख कर बालक के गले में बांधे तो सब प्रकार की बाधा दूर होती हैं ।

३३	३२	२७
३७	४६	६७
३३	६६	३७

स्त्रियों का भय नाशक यन्त्र

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर तांबे की ताबीज में भर कर स्त्री के गले में बांध देने से जो स्त्रियां प्रायः डरा करती हैं, वह नहीं डरेंगी ।

कारागार से मुक्ति दिलाने वाला यन्त्र

७८६

१८	११	१६
१३	१५	१७
१४	१९	१२

कदाचित आपके किसी इष्ट मित्र या परिवार के किसी व्यक्ति को कारागार का दण्ड मिला हो और उससे मुक्ति पाने के आपके सभी उपाय निष्फल हो चुके हों तो आप इस अद्भुत यन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर आँटे में गूँध गोलियां बना सरिता में डाल दे। ईश्वर चाहेगा तो आपको यन्त्र के प्रभाव से मुक्ति अवश्य मिल जायेगी।

बेकारी दूर करने वाला यन्त्र

यदि आप किसी कारणवश प्रयत्न करने पर भी कोई नौकरी नहीं पा सके हैं। दौड़ते-दौड़ते बुरी तरह परेशान हो चुके हैं लेकिन उदर पूर्ति का कोई साधन दिखाई नहीं देता तो आप निम्नांकित यन्त्र को पूर्णिमा की रात्रि में भोजपत्र पर लिख कर सदा अपने पास रखें। ईश्वर चाहेगा तो आपकी परेशानी दूर होकर बेकारी की समस्या अवश्य हल हो जायेगी।

या अल्लाहो	०	२	६	२	६	६	१
या रहमानो	२	३	२	८	२	६	३
या रहीमो	१	६	६	६	१	६	६
या अजीज	१	२	७	६	२	२	७
या बासितो	७	३	३	६	६	४	२
या वहूदो	२	३	६	६	६	२	६
या बुदूहो	६	६	२	ऐन	६	५	२

भूतादि बाधा निवारण यन्त्र

विधि—यदि कोई भूत प्रेत आदि से पीड़ित हो तो आप निम्नांकित यन्त्र को चीनी की प्लेट पर केशर से लिख कर ग्रसित व्यक्ति को धोकर पिलावें तो विश्वास रखें, इस प्रकार की समस्त व्याधियाँ अवश्य दूर हो जायेंगी।

यन्त्र

७	१३	१९	२६	१५
बुदो हो	१२	२	८	१४
३	६		१६	२३
११	१७	३१	१०	१०
२५	५	६	१२	८

अद्भुत वशीकरण यन्त्र

गं गं गं गं गं गं गं गं गं गं

ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं
कों ह्रीं क्लीं 'देवदत्त' गं
क्लीं ह्लीं क्रौं ह्लीं क्लीं कं ह्लीं
ह्लीं ह्लीं ह्लीं ह्लीं

गं गं गं गं गं गं गं गं गं

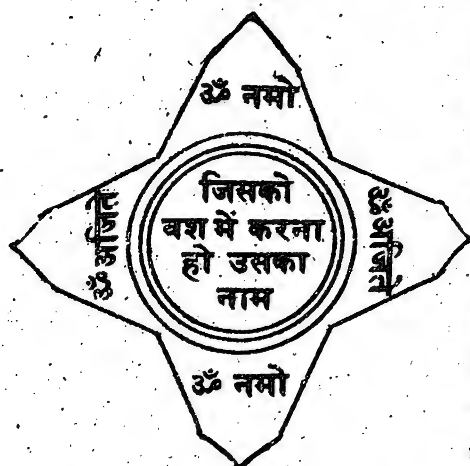
गं गं गं गं गं गं गं गं गं गं

गं गं गं गं गं गं गं गं गं गं

विधि—यदि आप किसी को जीवन पर्यन्त अपने वश में रखना चाहते हैं, जिससे वह सदैव आपके आधीन रहकर अन्य किसी का अपने मस्तिष्क में ध्यान ही न लावे तो आप हमारे निम्नांकित अद्भुत यन्त्र को भोजपत्र के एक चौड़े टुकड़े पर जो कहीं से कटा-फटा न हो लाकर अनामिका उंगली का रक्त, हाथी का मद, लाख का रस तथा गोरोचन की स्याही से जानी नामक वृक्ष की लकड़ी की लेखनी बनाकर निर्माण करें, तत्पश्चात् किसी पवित्र स्थान से काली मिट्टी लाकर उससे गणेश जी की मूर्ति बना यन्त्र को गणेश जी के उदर में स्थापित करें और पुष्प तथा धूप इत्यादि से देव देव गणाध्यक्ष सुरासुर नमस्कृत "देव दत्त

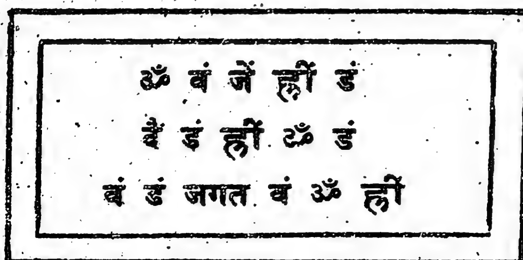
महावश्यं यावज्जीवं कुरु प्रभो" (और जहाँ देवदत्त लिखा है–उस स्थान पर जिसको वश में करना हो उसका नाम उच्चारण करें) इस प्रकार पूजन करके जमीन में हाथ भर गड्ढा खोदकर गणेश जी की मूर्ति को रख ऊपर से मिट्टी डालकर बन्द कर देवे तो साध्य व्यक्ति जीवन पर्यन्त साधक के वश में रहेगा।

पुरुष वशीकरण यन्त्र



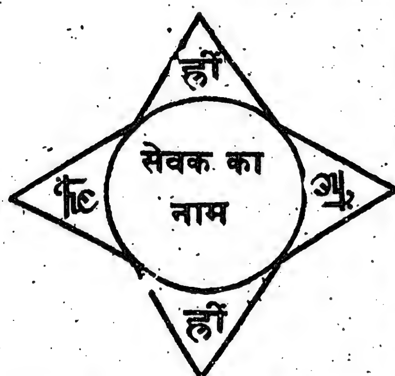
समस्त प्राणियों को वश में करने वाले उक्त वशीकरण यन्त्र को कपूर, कुंकुम, गोरोचन तथा कस्तूरी के माध्यम से भोजपत्र पर लिखकर तीन दिन तक धूप, दीप, पुष्प इत्यादि से पूजन कर चौथे दिन एक ब्राह्मण को भोजन कराकर सोना, चाँदी या ताँबा से बने हुये ताबीज में भर कर गले या भुजा में धारण करने से अद्भुत वशीकरण होता है।

संसार वशीकरण यन्त्र



विधि—उक्त यन्त्र भगवान् शंकर द्वारा निर्माण किया हुआ दुर्लभ वशीकरण यन्त्र है, जो किसी दशा में निष्फल नहीं होता। साधक को चाहिये कि शुभ मुहूर्त में भोजपत्र पर लिखकर चमेली की लकड़ी की लेखनी बना केशर, कस्तूरी, लाल चन्दन एवं गोरोचन की स्याही बना यन्त्र को बनावे और तीन दिवस तक धूप, दीप, पुष्प आदि से यन्त्र का विधिवत पूजन करे और त्रिलोह द्वारा निर्मित तावीज में बन्द कर भुजा या बाहु में धारण करे तो जब तक यह यन्त्र बँधा रहेगा तब तक समस्त संसार साधक के वश में रहेगा।

सेवक वशीकरण पिशाच यंत्र



विधि—प्रायः देखा जाता है कि धनी पुरुष को अकेला जान सगे-सम्बन्धी नौकर सेवक आदि उसे हर प्रकार से हानि पहुँचाने की चेष्टा करते हैं। ऐसे समय में भगवान् भूतनाथ द्वारा निर्मित यह पिशाच यन्त्र प्रयोग में लावे तो वह भ्रष्ट बुद्धि सेवक आदि वश में होकर साधक की आज्ञानुसार ही कार्य करेंगे और साधक को किसी भी प्रकार की हानि न पहुँचा सकेंगे। यन्त्र धारण करने की विधि यह है कि भोजपत्र के ऊपर गोरोचन से निम्नांकित यन्त्र निर्मित कर गन्ध-पुष्पादि से विधिवत पूजन कर दही के अन्दर रख दें तो उक्त सेवक सदैव के लिये वश में हो जाता है।

दुष्टादि वशीकरण यन्त्र

बहुधा देखा गया है कि दुष्ट और क्रूर मनुष्य शांति प्रकृति के सीधे सादे मनुष्यों को परेशान करते हुये हानि पहुँचाने की चेष्टा करते हैं। ऐसे दुष्ट मनुष्यों को वश में करने के लिये ही शिवजी महाराज ने

निम्नांकित "काला नल" नामक यन्त्र का प्रयोग कहा है, जिसकी विधि यह है कि भोजपत्र के ऊपर गोरोचन से निम्न यन्त्र निर्माण करे, फिर किसी भी वृक्ष के नीचे की धूलि लाकर जिसको वश में करना हो उसकी मूर्ति बनावे और उसके वक्षस्थल (हृदय) में उक्त यन्त्र रख विधि पूर्वक पूजन कर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को रात्रि में चूल्हे के अन्दर गड्ढा खोद उक्त प्रतिमा को यन्त्र सहित उसी में गाड़ देवे, तत्पश्चात् चावल पकाकर उसमें बकरे का रक्त मिला बलिदान करके—घी, लाल पुष्प मिश्रित कर "ओं महा कालायेति" मन्त्र से आठ सौ बार आहुति देते हुये हवन करे तो इस "कालानल" यन्त्र के प्रभाव से दुष्ट मनुष्य सदैव वश में रहेगा। उदाहरण के लिये जैसे राजाराम को वश में करना है तो यन्त्र इस प्रकार लिखा जाएगा।

ह्रा ँ ह्जा ँ ह् रा ँ ह्म ँ ई

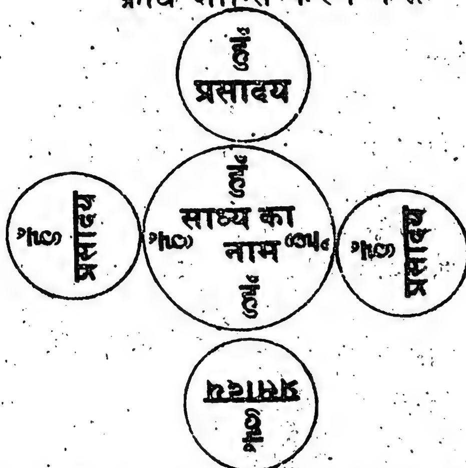
उच्छिष्ट पिशाच यन्त्र



विधि—प्रायः सभी स्थानों में धन के लोभी उचक्के पाये जाते हैं। जिनका कार्य ही किसी-न-किसी प्रकार लोगों का धन हथिया लेना होता है। अतः उन व्यापारियों को जिनको प्रायः देशावरों में माल आदि की खरीद के लिये जाना होता है, अपने धन की रक्षा के लिये इस यन्त्र का प्रयोग करें तो निश्चय ही इस यन्त्र के प्रभाव से वे उचक्के-बदमाश आपका धन कदापि हरण न कर सकेंगे। यन्त्र निर्माण विधि यह है कि अपने खून से भोजपत्र के ऊपर

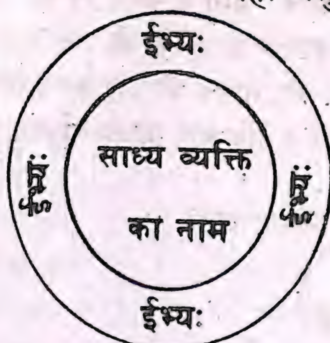
इस यन्त्र को लिख बीच में ह्रीं के नीचे साध्य व्यक्ति का नाम लिखकर पुष्प इत्यादि से विधि पूर्वक पूजन करके "ओम् आकर्षय स्वाहा" इस मन्त्र को पढ़कर यन्त्र के टुकड़े कर मार्ग में डाल देवें, तो उक्त मार्ग से जाने वाले दुष्टजन वश में हो जावेंगे और साधक की चाह करके किसी भी प्रकार की हानि पहुँचाने में समर्थ न होंगे और साधक का धन एवं प्राण सुरक्षित रहेंगे।

क्रोध शान्ति करण यन्त्र



कदाचित आपके मित्र या बान्धव आप से किसी बात पर कुपित हो जायँ तो उनका कोप शान्त करने के लिये आप इस शिवजी के मुखार विन्द से निकले हुये अद्भुत यन्त्र को तांड़ के पत्र पर गोरोचन की स्याही बना लौह लेखनी से लिख कुम्हार की मिट्टी में रख।अक्रोधन: सत्यवादी जमदग्नि दृढ़ व्रत: । रामस्यजनक: साक्षात् सत्त्वे मूर्ते नमोस्तुते ।। मन्त्र द्वारा विधिवत पूजन करे तथा इसी प्रकार सात दिवस तक यन्त्र का पूजन करके किसी वेदपाठी विप्र का पूजन कर भोजन करा द्रव्य दान दे और प्रसन्न करे तो यन्त्र के प्रभाव से कुपित मित्रबान्धवों का क्रोध तत्काल शान्त हो जायेगा।

महा शत्रु वशीकरण यन्त्र



कदाचित कोई आपका अति बलवान शत्रु आपको हानि पहुँचाने की चेष्टा करे और आपके पास उसका सामना करने की सार्मथ्य न हो तो आप इस निम्नांकित यन्त्र को मरघट की राख लाकर धतूरे के दो पत्तों पर निर्माण करें । तत्पश्चात दोनों पत्रों को सम्पुट में लेकर काटों से छेद कर कृष्ण पक्ष की रात्रि में पूजन करके श्मशान में गाड़, भूतादि बलि प्रदान करे तो अत्यन्त बलशाली शत्रु भी साधक के वश में हो जायेगा ।

कामिनी सौभाग्य वर्द्धक यन्त्र

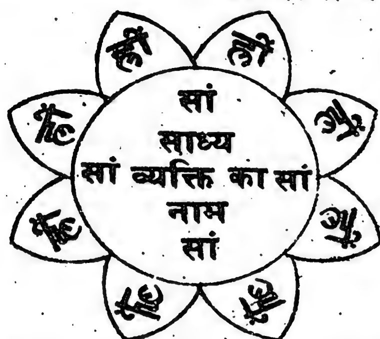


प्रायः देखा जाता है कि किसी-किसी नारी का पति किसी अन्य सुन्दरी के सौन्दर्य पर आकर्षित होकर निज पत्नी का ध्यान तक नहीं करता । उस पति की वियोगिनी रमणियों के सुख प्राप्त हेतु शिव जी महाराज द्वारा वर्णित इस अद्भुत यन्त्र को गोरोचन, कुकुम, कस्तूरी, एवं लाल चन्दन इन चारों वस्तुओं को एकत्र कर भोजपत्र पर उपरोक्त यन्त्र लिख कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को रात्रि के समय से प्रारम्भ कर सात दिवस तक नित्य पूजन करे । सात दिवस पश्चात सात स्त्रियों को भोजन करा कर निम्न मन्त्र से विसर्जन करे ।

मन्त्र—शंकरस्य प्रिये देवि ललिते प्रीयतामित ।
रूप देहि यशो देहि सौभाग्यं देहि मे श्रियम् ।
भगवती वाञ्छितं देहि प्रियमायुष्य वर्द्धनम् ।।

तत्पश्चात यन्त्र को चाँदी के ताबीज में भर कर कंठ में धारण कर ले तो जब तक यन्त्र कंठ में रहेगा तब तक कामिनी प्रीतम प्यारी बनी रहेगी ।

स्त्री सौभाग्य वर्द्धक यन्त्र

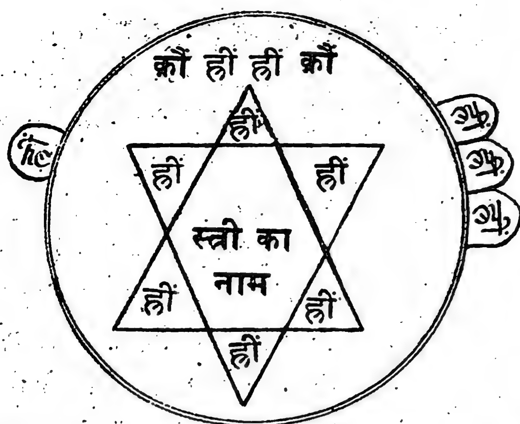


कदाचित किसी स्त्री का पति किसी अन्य रूपवती महिला के रूप जाल में फँस जाय तो पति परित्यक्ता कामिनी इस सौभाग्य वर्द्धक यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर बना तीन रात्रि पर्यन्त पुष्प-गन्ध आदि से पूजन कर चौथे दिवस विधि पूर्वक तीन सौभाग्यवती स्त्रियों को प्रेमायुत भोजन करा कर इस मन्त्र-अनंग वल्लभे देवि त्वं च मे प्रीयतामिति । एनं प्रियं महा वश्यं कुरु त्वं स्मर वल्लभे ।। इस प्रकार यन्त्र का पूजन कर चांदी अथवा ताम्बे की ताबीज में यन्त्र को भर कर कंठ में धारण करने से पति दास के समान हो जायेगा और यन्त्र राज के प्रभाव से सदैव उसके वश में रहेगा ।

श्रेष्ठ वशीकरण यन्त्र

कदाचित आप किसी राज-कुल की रूपसी पर प्रेमा-सक्त हों और उसको पाने की कोई तदबीर दृष्टि गोचर न हो तो प्रस्तुत यन्त्र को गोरोचन कुंकुम कपूर की स्याही बना चमेली की लेखनी से निर्माण करके श्रद्धा भक्ति पूर्वक श्वेत वस्त्र धारण करके यन्त्र का पूजन करे, तत्पश्चात रात्रि के समय यन्त्र को सन्मुख रख कर

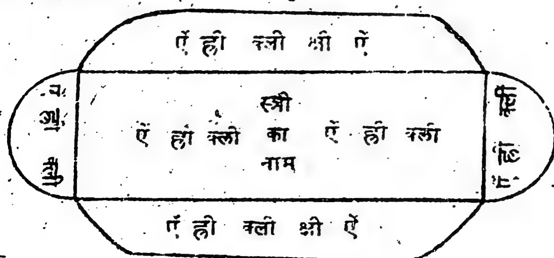
श्रेष्ठ वशीकरण यन्त्र



इच्छित स्त्री का ध्यान करे तथा इसी प्रकार सात दिवस तक नित्य करता हुआ आठवें दिन पूजा आदि से निवृत हो ब्राह्मण स्त्रियों को भोजन करा यथा शक्ति दक्षिणा देकर "कामाक्षी प्रीयताम' कहे, फिर यन्त्र को त्रिलोह की ताबीज में बन्द कर भुजा में धारण करे तो साधक को देखने से ही काम पीड़ित राज कुल की स्त्रियां सम्मोहित होकर प्राण निछावर करेंगी। साधारण स्त्री की तो बात ही क्या है?

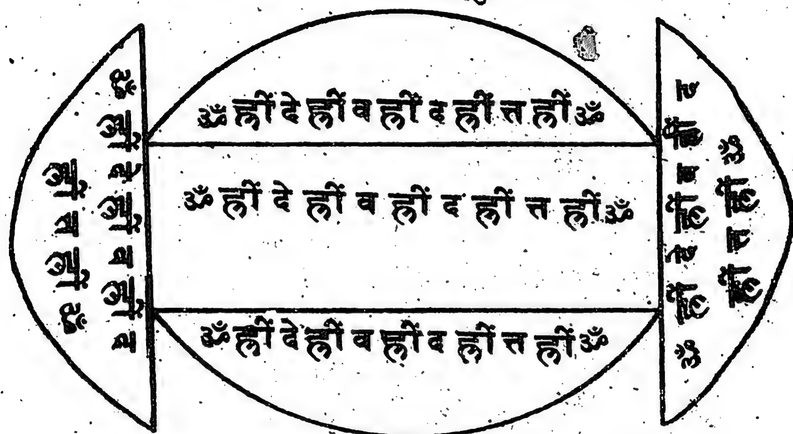
स्त्री वशीकरण यन्त्र

समस्त प्राणियों में मनुष्य विशेषतया सृष्टि के प्रारम्भ से ही सौन्दर्य प्रिय रहा है, परन्तु इच्छित रूपवती बाला प्राय: किसी भाग्यवान को ही प्राप्त होती है। अत उन अनेक निराश प्रेमियों की कामना पूर्ति हेतु ही हम भगवान शंकर द्वारा वर्णित यह अद्भुत यन्त्र प्रस्तुत कर रहे हैं। इस यन्त्र को कुंकुम, गोरोचन, कस्तूरी, लाल



चन्दन—चारों वस्तुओं को मिश्रित कर चमेली की लेखनी बना भोजपत्र पर उपरोक्त यन्त्र बना राई से कामदेव की एक मूर्ति बना उसके हृदय में यन्त्र स्थापित कर धूप, दीप, फूल और नैवेद्य से संध्या काल में इस मन्त्र से "कामोऽनंगः पुष्पशरः कन्दर्पो मीन केतनः । श्री विष्णुतनयो देवः प्रसन्नो भव मे प्रभो । काम देव का पूजन करने से इच्छित कामिनी वश में होकर आपके चरण चुम्बन करेगी ।

कामिनी वशीकरण अद्भुत यन्त्र



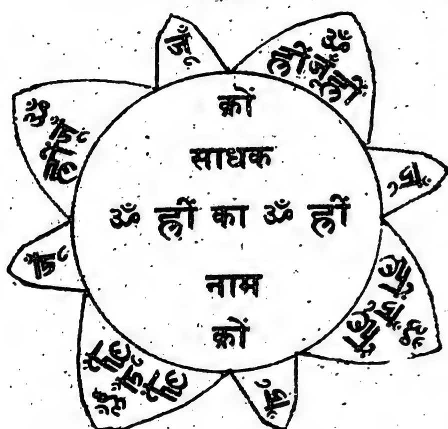
अत्यन्त रूपवती किन्तु अभिमानिनी स्त्री जो किसी भी प्रयत्न से हाथ आती न प्रतीत हो तो निम्नांकित यन्त्र को घोड़े के रुधिर से भोजपत्र पर बना मदन काष्ठ से काम देव की एक प्रतिमा बना उसके हृदय में एक ऐसा छिद्र करे जिसमें यन्त्र प्रविष्ट हो सके । तत्पश्चात लाल चन्दन-पुष्प आदि वस्तुओं से यन्त्र की पूजा कर प्रतिमा के हृदय में स्थापित कर इक्कीस दिन तक पूजन करें तो कैसी ही पाषाण हृदया रूपबाला क्यों न हो इस यन्त्र के प्रभाव से सदा के लिये आपके वश में होकर आपके चरण चूमेगी ।

सौभाग्य वर्धक विजय यन्त्र

स्ह्रीं क ल ड ई	इस यन्त्र को गोरोचन तथा जल के संयोग से भोजपत्र पर बना पुष्प गंध से पूजन कर बाहु में धारण करने से स्त्रियों के सौभाग्य की वृद्धि होती है और वे इस यन्त्र के प्रभाव से आयु भर अपने पति की हृदयेश्वरी बनी रहती हैं ।

कमलाख्य यन्त्र

यह भगवान शंकर द्वारा वर्णित वह अद्भुत यन्त्र है जिसके प्रयोग करने से दुर्भाग्य का विनाश होकर सौभाग्य का उदय होता है । यन्त्र के प्रताप से बन्ध्या स्त्री भी पुत्र प्रसविनी होती है । इसके समान सौभाग्यवर्धक दूसरा कोई यन्त्र नहीं है । इसके निर्माण की विधि यह है कि गोरोचन से भोजपत्र पर यन्त्र बना गन्ध, पुष्प, ताम्बूल आदि से तीन दिन पूजन कर "हे लोकेश प्रीयताम" उच्चारण करता हुआ एक दम्पति को भोजन करा मन्त्र को कच्चे डोरे से लपेट त्रिलोह में बन्द कर कंठ या बाहु में धारण करना चाहिये ।



प्रियजन आकर्षण यन्त्र

कभी-कभी दूर देशीय प्रियजनों का वियोग अति कष्टप्रद प्रतीत होने लगता है, किन्तु बुलाने अथवा देखने का कोई सुगम उपाय नहीं होता या कोई प्रियजन किसी बात पर रुष्ट होकर विदेशगामी ही

सः सः सः सः सः इ
सः सः क्रौं ह्रीं क्रों
साध्य व्यक्ति का नाम
ह्रीं क्रों ह्रीं क्रों
ह्रीं क्रों ह्रीं दर

जाता है तो उस समय आप इस उपरोक्त यन्त्र का प्रयोग करें, जिसके प्रभाव से दूरदेशीय वह प्राणी आकर्षित होकर आपसे मिलने के लिये स्वयं आपके समक्ष उपस्थित होगा। इस यन्त्र के निर्माण की विधि यह है कि भोजपत्र पर गोरोचन, कुंकुम, लाल चन्दन से उक्त यन्त्र बनाकर श्रद्धा भक्ति पूर्वक गंध, पुष्प इत्यादि से पूजन कर लाल डोरे में बांधे तथा अपने शरीर के मैल से जिस व्यक्ति को आकर्षित करना हो उसकी मूर्ति बनावें तथा यन्त्र को मूर्ति के हृदय में रख खदिर की अग्नि जला त्रिकाल संध्या में तीन दिन तक मूर्ति को अग्नि के बीच में रख कर इस यन्त्र "ॐ देवदत्तं वेगेन आकर्षय-आकर्षय माणिभद्र स्वाहा" का निरन्तर जप करे तो इच्छित प्राणी शीघ्र ही आकर्षित होकर साधक के पास पहुँच जाता है।

टिप्पणी—यन्त्र में देवदत्त के स्थान पर जिसे आकर्षित करना हो उसका नाम उच्चारण करें।

मित्राकर्षण यन्त्र



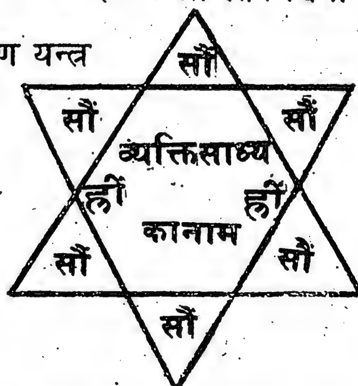
यदा-कदा देखने में आता है कि किसी का अत्यन्त घनिष्ट हितैषी मित्र उससे विलग हो जाता है और तब मनुष्य को उसकी याद व्याकुल कर देती है। उस निमित्त आप प्रस्तुत इस यन्त्र को लाल चन्दन तथा अपना रक्त मिला भोजपत्र पर लिख तीन दिन तक गन्ध पुष्पादि से विधि पूर्वक पूजन करने से आपका मनोरथ अवश्य पूर्ण होगा।

कामिनी आकर्षण यन्त्र



यदि आपका मन किसी रूपवती तरुणी के मोहक सौन्दर्य पर मुग्ध हो चुका है किन्तु वह रूपवती बाला अनेक प्रयत्न करने पर भी आपकी ओर आर्कषित नहीं होती तो आप प्रस्तुत यन्त्र को अपने दायें हाथ की अनामिका मामक उँगली के रक्त से बाँये हाथ की हथेली पर बना कर विधि पूर्वक पुष्प इत्यादि से पूजन करें तो वह रूपबाला यन्त्र के प्रभाव से इस प्रकार आर्कषित होकर चली आयेगी, जैसे उंगली के इशारे पर पतंग खिंची चली आती है।

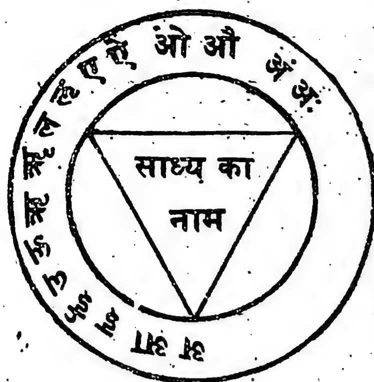
त्रिपुरा आकर्षण यन्त्र



कदाचित आपका सगा सम्बन्धी या मित्र आदि किसी कारणवश आपसे रुष्ट होकर किसी अज्ञात स्थान पर जा बसे और आप उसके दर्शन के बिना व्याकुल हों किन्तु उपाय शेष न रहे तो इस यन्त्र को गोरोचन को जल के साथ पीस भोजपत्र पर यन्त्र बना गन्ध, पुष्प आदि से सात दिवस तक विधि पूर्वक पूजन करें और यन्त्र द्वारा त्रिपुरा देवी से प्रार्थना करें तो सात दिन में आपकी अभिलाषा अवश्य पूरी होगी।

अद्‌भुत कामिनी आकर्षण यन्त्र

कदाचित आपका हृदय किसी रूपबाला षोडशी के सौन्दर्य पर मोहित हो जाय और आप उसे प्राणों से भी अधिक प्यार

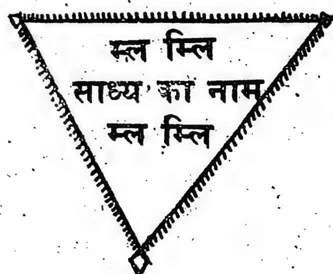


करने लगे हैं किन्तु वह रूप गर्विता आपके अनेक प्रयत्न करने पर भी आपकी ओर नाममात्र को भी आकर्षित नहीं होती है तो आप निम्न यन्त्र को हल्दी, मजीठे एवं लाख का रस—तीनों कोमिश्रण करके भोजपत्र पर यन्त्र बनावें और उस कामिनी के पैरों की धूल लाकर उसकी आकृति बना उसकी योनि में यन्त्र स्थापित करने से वह कामिनी आपकी ओर आकर्षित होकर आपकी मनोकामना अवश्य पूरा करेगी ।

टिप्पणी—यन्त्र को योनि में स्थापित करने से पहले पुष्प आदि से पूजन कर लें ।

शत्रु विनाशक यन्त्र

कदाचित आप प्रबल पराक्रमी शत्रु के भय से सदैव आतंकित हो निज प्राण रक्षा के लिये चिन्तित रहते हैं, किन्तु भयसेमुक्त होने का कोई प्रयत्न सफल नहीं होता, तो आप निम्न मारण यन्त्र का प्रयोग करें तो यन्त्र के प्रभाव से आपके शत्रु शीघ्र मरण को प्राप्त होंगे और आप सदैव के लिए विपत्तियों से मुक्त हो जायेंगे । इसकी निर्माण विधि यह है कि कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को रात्रि में श्मशान में जा वसन त्याग, चिता के अंगारे को धतूरे के रस में घिस कर मानव कंकाल में मन्त्र का निर्माण करें, फिर



शराब सपुट में रख बलि मांस, अपना रक्त एवं पूजा की सामग्री से विधि पूर्वक पूजन कर वही भूमि में गाड़ दे और उसके ऊपर अग्नि जलावें। इस प्रकार तीन दिन तक करने से तीसरे दिन शत्रु को ज्वर आना प्रारम्भ होगा और धीरे-धीरे रोग प्रबल होता हुआ शत्रु को मृत्यु के मुख में ढकेल देगा और जब तक शत्रु एक जीव की बलि न देगा तब तक उसके प्राणों की रक्षा ब्रह्मा भी न कर सकेंगे। यह शंकर भगवान का कहा हुआ अचूक मारण प्रयोग है, जो कभी निष्फल नहीं जाता है।

शत्रु विद्वेषण यन्त्र

यदि आप शत्रु दल की असीम शक्ति से अपने आपको संकट से घिरा हुआ ज्ञात करते हों, सदैव प्राणों के भय से त्रस्त रहते हों, तो आप प्रस्तुत यन्त्र को अपने विद्वेषी के रक्त से श्मशान के वस्त्र पर कौआ के पंख की कलम से निर्माण कर अजारक्त मिश्रित भात नैवेद्य बलि तथा गंध-पुष्प आदि से यन्त्र तथा गुरु का पूजन कर एक योगिनी को भोजन करावें और यन्त्र को उदास शिव मन्दिर या श्मशान में स्थापित करें तो शत्रुदल कितना ही प्रबल क्यों न हो उसमें फूट पड़ जायेगी और वह आपको हानि न पहुँचा सकेगा।

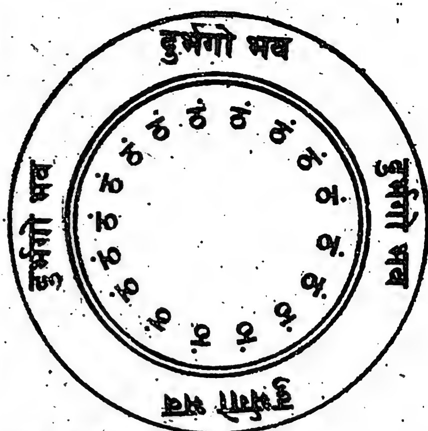
ह्लीं अं ह्लीं
साध्य व्यक्ति
का नाम

ह्लीं अं ह्लीं
देवदत्तः

टिप्पणी—यन्त्र में जिस स्थान पर देवदत्तः लिखा है वहाँ साध्य व्यक्ति का नाम लिखें।

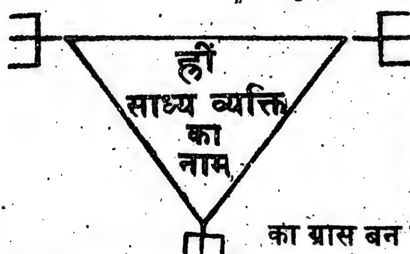
विश्व विद्वेषण यन्त्र

यदि आप किसी शक्तिशाली शत्रु के प्रबल बल से आतंकित हों और उनसे निस्तार का कोई मार्ग दृष्टिगोचर न हो तो



आप इस प्रस्तुत यन्त्र को उल्लू, कौवा तथा ऋतुमती स्त्री के ऋतुरक्त से भोजपत्र पर लिख, विधिवत पूजन कर, शत्रु के घर में गाड़ देवें तो जब तक यन्त्र पृथ्वी में गड़ा रहेगा तब तक वहाँ विद्वेष शांत न होगा और आपका शत्रु दल निर्बल हो जाएगा ।

शत्रु प्राण हरण यन्त्र



इस यन्त्र को भी अपने से प्रबल शत्रु को मारने के लिये प्रयोग करना चाहिये । इस यन्त्र के प्रभाव से कैसा ही शक्तिशाली शत्रु क्यों न होवे अचानक ही मृत्यु का ग्रास बन जायेगा, इसमें किंचित सन्देह नहीं है । यन्त्र निर्माण की विधि यह है कि विष और हरताल को एकत्रित करके कौआ के पंख की लेखनी से भोजपत्र पर प्रस्तुत यन्त्र बना विधान पूर्वक पूजन करके नरनलिका में रख श्मशान में गाड़ देने से शत्रु अचानक ही मृत्यु को प्राप्त होगा ।

अन्तर्देशीय शत्रु मारण यन्त्र

कदाचित आप किसी दूर देशीय शत्रु के भय से आतंकित रहते हैं और उससे मुक्त होने का मार्ग आपको नहीं दिखाई देता तो आप इस यन्त्र को श्मशान के अंगारे और बकरे के रक्त को मिलाकर मनुष्य की खोपड़ी पर कौआ के पंख की लेखनी से बना संपुट में लेकर भस्म से

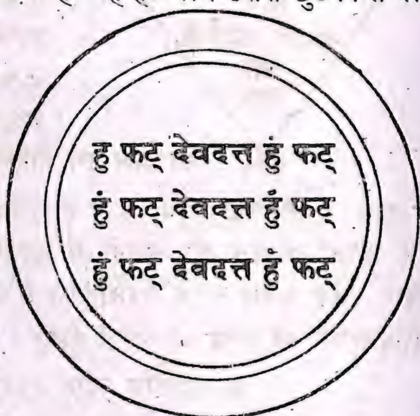
पूरित कर अग्नि में स्थापित करें तो यन्त्र के प्रभाव से विदेश स्थित शत्रु भी ज्वर ग्रस्त हो जायेगा । इस प्रकार थोड़ा-थोड़ा प्रतिदिन जलाने के पश्चात इक्कीसवें दिन सम्पूर्ण जला देवे, उसी दिन शत्रु का भी प्राणान्त हो जायेगा ।



नोट—मन्त्र के मध्य में जहाँ देवदत्त लिखा है उस स्थान पर शत्रु का नाम लिखना चाहिये ।

सर्वजन मारण यन्त्र

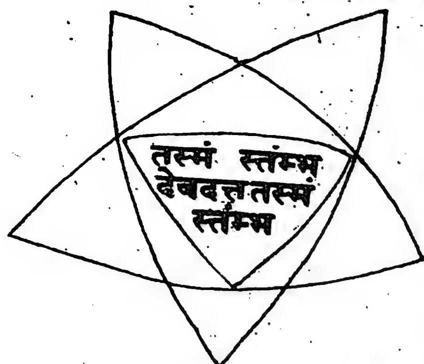
जब अपने शत्रु द्वारा पीड़ित हो रहे हों और उससे छुटकारा पाने के सारे प्रयास निष्फल हो चुके हों तो आप प्रस्तुत यन्त्र को मनुष्य के रक्त में विष मिला के चिता के अंगारे पर घिस कौआ के पंख की लेखनी से अवसान वस्त्र पर इस यन्त्र को लिखें और शत्रु के पैरों के नीचे की मिट्टी लाकर राजि का मिश्रण कर एक मानवाकार



प्रतिमा बनावे और उसके हृदय में इस यन्त्र को स्थापित करें तो सात दिवस के अन्दर ही आपका शत्रु परलोकगामी हो जायेगा ।

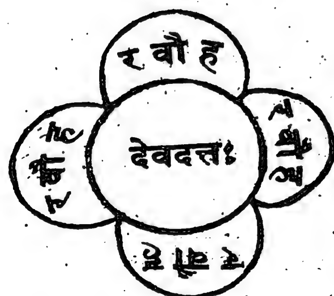
नोट—यन्त्र में देवदत्त के स्थान पर शत्रु का नाम लिखें ।

नर-नारी मारण यन्त्र



अग्रांकित यन्त्र नर अथवा नारी दोनो में जो भी आपका शत्रु होवे प्रयोग करने से सात दिवस में अवश्य मृत्यु को प्राप्त होता है। निर्माण विधि यह है कि स्त्री के मासिक धर्म का रक्त ले श्मशान की राख मिला विभीतक के पत्र पर कौआ के पंख की लेखनी बना यन्त्र लिखें फिर यन्त्र नरनलिका में बन्द कर शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी से पूर्ण कर श्मशान भूमि में गाड़ देवें तो शत्रु सात दिन में अवश्य मर जायेगा।

परम शत्रु उच्चाटन यन्त्र

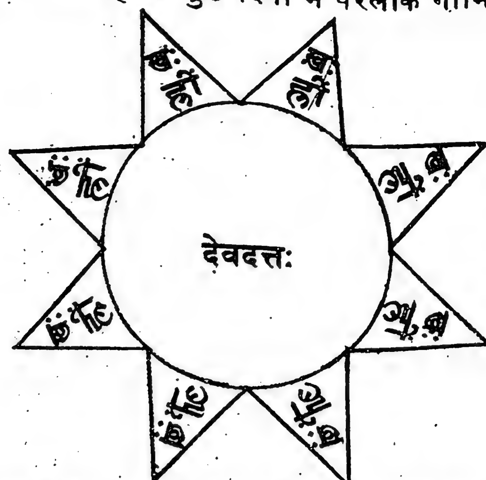


नीम के पत्तों के रस से भोजपत्र पर कौआ के पंख की लेखनी से प्रस्तुत यन्त्र बनाकर विधानपूर्वक पूजा करके भूमि में गढ़ा खोद नीचे की ओर मुख करके गाड़ दे तो शत्रु संसार में कहीं भी जाय उसका मन नहीं लगेगा और वह ऐसी स्थिति में अवश्य ही परलोकगामी हो जायेगा, इसमें किंचित मात्र सन्देह नहीं है।

कामिनी उच्चाटन यन्त्र

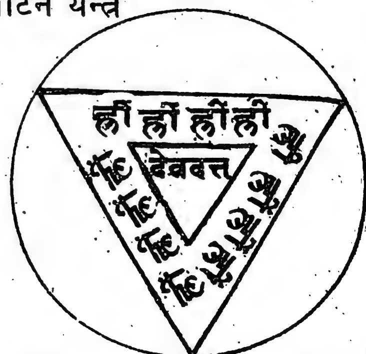
यदि आप किसी कामिनी पर किसी कारण वश रुष्ट होकर उसे दण्ड देना चाहते हैं तो चित्रित यन्त्र को गदहे के रक्त से लकड़ी के टुकड़े पर कौआ के पंख की लेखनी से बना विधान पूर्वक पूजन कर भूमि में गढ़ा खोद कर अधोमुख दबा देवें तो तीसरे दिवस यन्त्र

के प्रभाव से ऐसा उच्चाटन होगा कि संसार में कहीं उसका मन न लगेगा और उद्विग्न होकर कुछ दिनों में परलोक गामिनी होगी ।



नोट—यन्त्र के मध्य जहाँ देवदत्त: लिखा है उस स्थान पर साध्य कामिनी का नाम लिखें ।

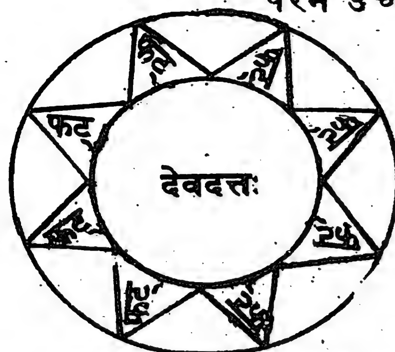
त्रैलोक उच्चाटन यन्त्र



यह भगवान शंकर का वर्णन किया हुआ अद्भुत उच्चाटन यन्त्र, जो कभी निष्फल नहीं जाता । इस यन्त्र का प्रयोग अति आवश्यक हो तभी करें । काले मुर्गे के रक्त से इस यन्त्र को भोजपत्र पर बना कर विधान पूर्वक पूजा करके कुत्ते के गले में बांध देवें तो जहाँ जहाँ वह कुत्ता भ्रमण करता हुआ जायेगा उसी के पीछे पीछे भ्रमण करेगा और संसार में कोई भी स्थान उसे सन्तोष प्रदान न कर सकेगा ।

नोट—यन्त्र में देवदत्त के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिखें।

परम उच्चाटन यन्त्र

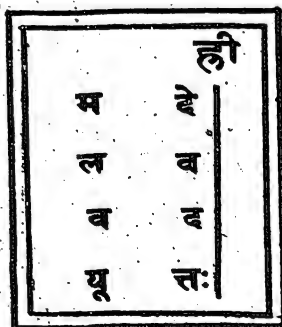


प्रस्तुत यन्त्र को हल्दी वृक्ष के रस से भोजपत्र के ऊपर बना बिधान पूर्वक पूजन करके यन्त्र को चूर्ण कर लेवें, साध्य व्यक्ति को थोड़ा सा चूर्ण जल में या भोजन में किसी युक्ति से खिला देने से अद्भुत उच्चाटन होता है।

नोट—यन्त्र में देवदत्त के स्थान पर साध्य जीव का नाम लिखें।

सर्पादि भय नाशक यन्त्र

यह यन्त्र भी समस्त हिंसक जीव जन्तुओं से मनुष्य की रक्षा करने वाला परम कल्याणकारी है। इस यन्त्र को शुभ दिन शुभ मुहूर्त में गोरोचन, कुंकुम, कपूर और कस्तूरी—चारों वस्तुओं के संयोग से भोजपत्र पर लिख, पुष्प गन्ध इत्यादि से विधान पूर्वक पूजन करके, त्रिलोह के तावीज में भर, भुजा या गले में धारण करने से सर्प व्याघ्र और चोर इत्यादि हिंसक का भय न रहेगा। यह यन्त्र अनेक प्रकार के उपद्रवों को शान्त करने वाला है।



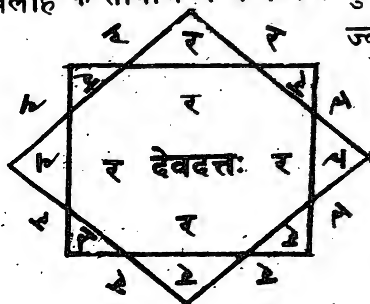
नोट—देवदत्त के स्थान पर साध्य प्राणी का नाम लिखें।

परम कल्याण कारी महा यन्त्र

यह यन्त्र मनुष्य के दुर्भाग्य को नष्ट करने वाला, दारिद्र, क्लेश, कलह, ईर्ष्या आदि का हरण करने वाला, सम्पूर्ण सुखों को देने वाला,

क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं
अं	आं	इं	ईं	उं	ऊं	ऋं
जं	झं	ञं	टं	ठं	डं	ॠं
छं	भं	मं	यं	रं	ढ	लृं
चं	बं	सं	हं	लं	णं	लॄं
ङं	फं	षं	शं	व	तं	एं
घं	पं	नं	धं	दं	यं	ऐं
गं	खं	कं	अः	अं	औं	आं
क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं

अत्यन्त सौभाग्य वर्धक है। इसके धारण करने से मनुष्य का सोया हुआ भाग्य चमक उठता है और यन्त्र के प्रभाव से विपत्तियों का विनाश हो जाता है तथा शीघ्र ही सुख शान्ति लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इसके निर्माण की विधि यह है कि शुभ दिन शुभ मुहूर्त में गोरोचन, कुंकुम, कपूर और कस्तूरी को एकत्रित करके चमेली की लेखनी से काँसे के पात्र में उपरोक्त प्रकार लिख श्वेत तथा लाल कमल, मालती, जुही, केतकी, चमेली, बकुल तथा सामयिक फल, कपूर, ताम्बूल, धूप दीप गन्ध श्वेत वस्त्र नैवेद्य आदि से यन्त्र का पूजन कर ब्राह्मण द्वारा दुर्गा सप्तशती का पाठ करा कर घृत खीर आदि उत्तम भोजन ब्राह्मणों को खिला तीन दिवस तक पृथ्वी पर शयन करें, तत्पश्चात यन्त्र को त्रिलोह के तावीज में बन्द कर भुजा या गले में धारण करें।



ज्वर विनाशक यन्त्र

यह यन्त्र आयुर्वेद अधिष्ठाता भगवान धनवन्तरि का निर्माण किया हुआ है, जो सभी प्रकार के ज्वरों को समूल नष्ट करनेवाला है। छोटे बच्चों का ज्वर प्रकोप इसके प्रभाव से अति शीघ्र

नष्ट होता है। इस यन्त्र को धतूरे के रस से मृतक परिधान पर निर्माण करके मनोहर पुष्पादि से पूजन करके कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी को निराहार रहकर धरती में गाड देने से समस्त ज्वरों का प्रकोप शान्त होता जाता है।

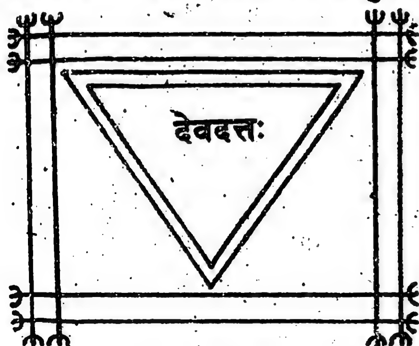
विपति विनाशक यन्त्र

८	१०	१३	१
७४	२	७२	७१
१४	१५	६८	६
३९	१६	४	१५

भोजपत्र के चार टुकड़े लाकर चारों पर गोरोचन कुंकुम तथा केशर से उपरोक्त यन्त्र को लिख धूप दीप से पूजन कर मकान की चारों दिशाओं में गाड़ देवे तो समस्त विपत्तियों से छुटकारा मिल जाता है।

सन्तान दाता यन्त्र

यह यन्त्र उन निराश व्यक्तियों के लिये संजीवन के समान है जिनके अनेक प्रयत्न करने पर भी पुत्र या पुत्री की प्राप्ति का सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ। इस यन्त्र को शुभ मुहूर्त, शुभ दिवस में गोरोचन, कुंकुम, कपूर तथा कस्तूरी के संयोग से चमेली की लेखनी द्वारा भोजपत्र पर निर्माण करके पुष्प गन्ध इत्यादि से विधिवत पूजन करके



त्रिलोह के तावीज में बन्द करके भुजा या कंठ में धारण करने से समस्त प्रकार की अरिष्टता नष्ट होती है और कुछ ही दिनों में सौभाग्य सुख सन्तान की प्राप्ति होती है।

नोट—यन्त्र में देवदत्तः के स्थान पर साध्य स्त्री अथवा पुरुष का नाम लिखें।

कतिपय इस्लामी सन्तान दाता यन्त्र

२३	४०	२	८
७	३०	३७	७
३	३४	६	१
४	६	३५	३५

इस यन्त्र को शुक्रवार के रोज से गेहूँ की रोटी पर लिखकर वह रोटी काले कुत्ते को खिला दें। मालिक चाहेगा तो आपकी मुराद बहुत जल्द पूरी होगी, परन्तु जब तक सन्तान न पैदा हो जाय, यह क्रिया बिना नागा रोजाना करते रहें।

भूतादि व्याधि हरण यंत्र

५५	६३	२	८
७	३	५६	५८
६१	५६	६	१
३	६	५७	६०

इस यन्त्र को भोजपत्र पर केशर से लिखकर जिसके गले में डाल दे तो वह प्राणी भूत, प्रेत चुड़ैल आदि किसी भी आसेब से सुरक्षित रहेगा इस प्रकार की व्याधियां उस पर असर न कर सकेंगी।

बिसमिल्लाह का यन्त्र

२६३	२५८	२६५
२६४	२६२	२६०
२५६	२६६	२६१

इस यन्त्र को जुमेरात (गुरुवार) के रोज केशर गुलाब व अम्बर से लिख १२१ बार बिसमिल्लाह पढ़, लोबान देकर गले में पहनने से बदकिस्मत इन्सान भी खुशकिस्मत हो जाता है। कुछ रोज में ही उसकी किस्मत का सितारा चमकने लगते है तथा हर एक रजो गम मुसीबत से छुटकारा मिल जाता है।

बच्चों का जमोगा दूर करने का यन्त्र

ॐ
देवदत्ताय हूँ ठः ठः ठः ठः

इस यंत्र को मंगलवार या रविवार को जब पुष्य अथवा पुनर्वसु नक्षत्र हो तो चमेली की लेखनी से भोजपत्र पर लिख,

मोमजामा में लपेट बालक के पास रख दें या गले में पहना देवें। जमोगा सूखा रोग दूर हो जाता है यन्त्र के नीचे बालक का नाम लिखें

कारागार से मुक्ति दिलाने का यन्त्र

या हाफिज	३३२	३३८	२२१०
या हाफिज	३३२	३३४	२३६
या हाफिज	३३७	३३०	३३५
कैदी और उसके पिता का नाम	या हाफिज	या हाफिज	या हाफिज

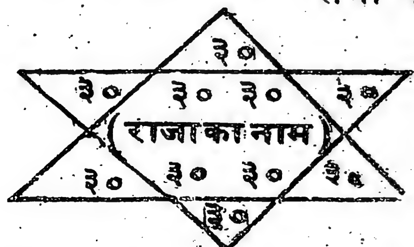
यदि आपका कोई स्वजन कारागार में पड़ा हो और उस की मुक्ति के सभी उपाय व्यर्थ हो चुके हों, तो आप रविवार के दिन प्रात:काल उपरोक्त यन्त्र को केशर से भोजपत्र पर लिखकर जगली काले कबूतर को पकड़कर उसकी गर्दन में बाँध दें तो अभिलषित व्यक्ति को शीघ्र कारागार से मुक्ति मिल जायेगी।

रोग निवारक यन्त्र

७	२	७७	७०
७३	७४	३	६
१	८	७१	७६
१५	७२	५	४

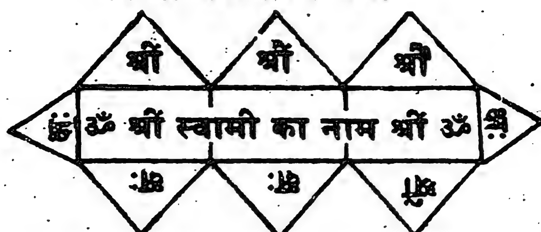
इस यन्त्र को भोजपत्र पर केशर से लिखकर गूगल की धूनी दे रोगी के कंठ में बाँध देने से असाध्य रोग भी तुरन्त दूर हो जाते हैं। यह परीक्षित यन्त्र है।

राजा वशीकरण यन्त्र



विधि—इस यत्र को कुंकुम, गोरोचन और कपूर की स्याही बनाकर चमेली की कलम से भोजपत्र पर लिखकर उसको धूप दीप देकर अपनी शिखा (चोटी) में बांधकर राजा के पास जाने से वह राजा वशीभूत हो जावेगा।

स्वामी वशीकरण यन्त्र



अब आपके सम्मुख अद्भुत "स्वामी वशीकरण यन्त्र" प्रस्तुत है, जिसके प्रयोग करने से सेवक अपने स्त्री अपने पति को जीवन पर्यन्त अपने वश में कर सकती है। इस यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर दो मिट्टी के कोरे सकोरों में बन्द कर प्रज्ज्वलित अग्नि में पकावे और शीतल होने पर सकोरे से निकाल यन्त्र की भस्म को पान में रखकर स्वामी को खिलावे, तो स्वामी वश में हो जाता है।

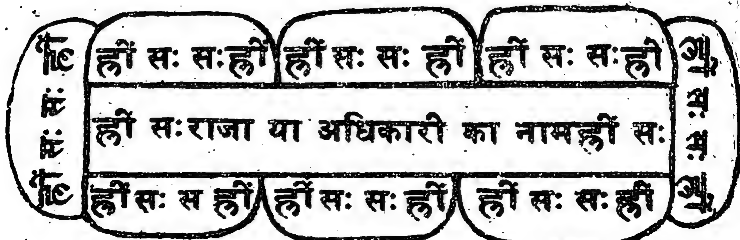
शत्रु वशीकरण यन्त्र

विधि—इस यंत्र को लाल स्याही से नगाड़े पर लिखकर नगाड़ा बजावें, तो शत्रु वश में हो।

नोट—तिथि नक्षत्र विधिवत होना चाहिये।

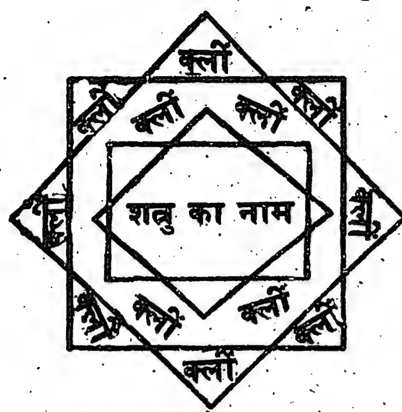
२८ / ३३ ९ / १	३४ / २७ २ / ८
६ / ४ २४ / २३	३ / ७ ३१ / ३०

राजा वशीकरण यन्त्र



किसी भी कारण से कदाचित राजा या कोई अन्य अधिकारी आपसे रुष्ट हो जाय और आपको उससे अनिष्ट की संभावना हो तो आप प्रस्तुत यन्त्र को गोरोचन कुंकुम से भोजपत्र पर लिख मदिरा में संपुटित करके विधिवत पूजन करें। इस प्रकार सात दिन तक पूजन करने से राजा वश में हो जाता है और कोप का भय नहीं रहता।

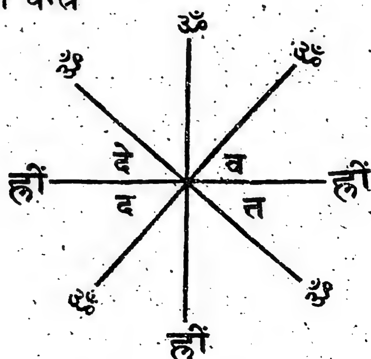
सर्व प्रजा व शत्रु वशीकरण यन्त्र



विधि—वसंत पंचमी के दिन, भोजपत्र, कुंकम गोरोचन से इस यंत्र को लिखकर इसे अपने सर पर धारण करके या इस यंत्र को पगड़ी अथवा टोपी में रखकर शत्रु या प्रजा आदि जिसके सामने जावेगा वह वश में हो जावेगा बीच में शत्रु का नाम या जिसके सामने जाना हो उसका नाम लिखना चाहिये। परीक्षित है।

मुख स्तम्भन यन्त्र

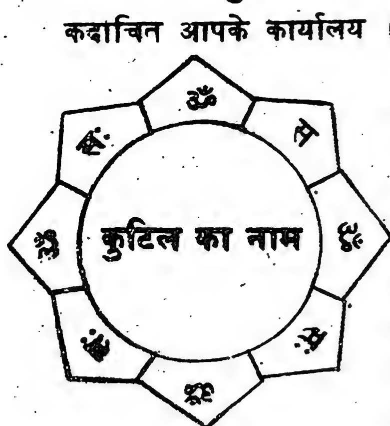
विधि—इस यन्त्र को अपने मकान की दीवार पर बृहस्पति के दिन सायंकाल सफेद खड़िया से लिखे और जहाँ पर देवदत्त लिखा है। वहाँ (बीच में) शत्रु का नाम लिखे। फिर सफेद पुष्पों से उसकी पूजा करे



और उसे सफेद कपड़ा से ढांक देवे और दो ब्राह्मणों को भोजन करावे तो शत्रु का मुख बन्द होवे।

कुटिल मनमोहन यन्त्र

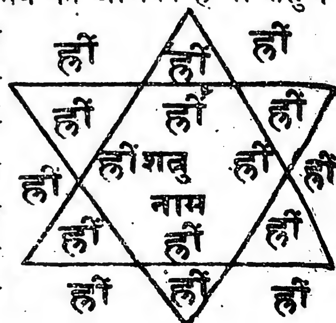
कदाचित आपके कार्यालय (आप जहाँ कार्य करते हैं) कुछ चुगलखोर आपके प्रति शत्रु भावना से ओत प्रोत होकर अधिकारियों से आपकी निन्दा या चुगली करके आपको हानि पहुँचाना चाहते हैं और आप इस विषम परिस्थिति से परेशान हैं, निराकरण का कोई मार्ग आपको दिखाई नहीं देता, तो आप इस दर्शाये गये यन्त्र को भोजपत्र पर



अपने रक्त से लिखकर इक्कीस दिन तक विधि पूर्वक पूजन करके, दूध में स्थापित करें तो दुष्टों का मुख मर्दन होगा और उनकी चुगलखोरी उनके लिये संकट का कारण बन जायेगी और आपका सम्मान सुरक्षित रहेगा।

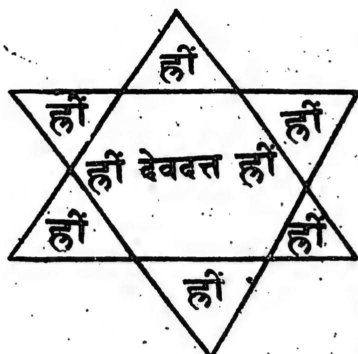
शत्रु भय विनाशक यन्त्र

यदि आपको अपने किसी शत्रु से भय की आशंका है या शत्रु ने आपको किसी समय में कोई हानि पहुँचाई है तो ऐसे शत्रु को भय निवारण करके वशीभूत करने के लिये गोरोचन कुंकुम से भोजपत्र पर प्रस्तुत यन्त्र बनाकर मिट्टी के कोरे सकोरे में बन्द कर भक्ति भाव से विधिवत पूजन करें और पूरे दिवस उत्तम मुहूर्त में निकाल



कर अपनी चोटी में बाँध कर समय और फल का चिन्तन करने से शत्रु भय समाप्त हो जायेगा और शत्रु आपके वश में होगा ।

दिव्य स्तम्भन यन्त्र



विधि—इस यन्त्र को शिशिर ऋतु में बृहस्पतिवार के दिन विधि पूर्वक सिद्ध करे और फिर गोरोचन, कुंकुम से भोजपत्र पर लिख कर मदिरा के सम्पुट में रख दें और धूप, दीप नैवेद्य आदि से पूजन करे । फिर दूसरे दिन नित्य कर्म से निश्चिन्त होकर इस यन्त्र को शराब में से निकाल अपनी शिखा में बांधे तो दिव्य स्तम्भन हो।

माया मय ऋण मोचन यन्त्र

कदाचित व्यापार या व्यवहार में आप की धन हानि हो जाय और आप धनिक व्यापारियों के तकादे से परेशान हो गये हैं, परन्तु धन अदा करने का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता तो आप निम्नांकित यन्त्र को गोरोचन तथा कुंकुम से भोजपत्र लिखकर सात दिवस विधिवत यन्त्र पूजन करके महा माया देवी की पूजा करें तथा मार्कण्डेय पुराण में वर्णित देवी महात्म का सात दिवस तक जाप करें, तत्पश्चात खीर, शहद, घी, आहुति देकर



हवन करें और पूर्णाहुति होने पर तीन कन्याओं को भोजन करा यन्त्र को त्रिलोह की तावीज में भर कर भुजा या गले में धारण करें तो धनिक वैश्य आप से धन का मांगना बन्द करके आवश्यकतानुसार आपको और भी धन प्रदान करेगा ।

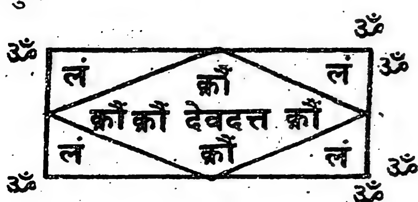
महामोहन यन्त्र

अब हम आपके लिये अत्यन्त एवं दुर्लभ तथा शिव जी द्वारा वर्णित साधकों का अत्यन्त प्रिय महा मोहन यन्त्र-प्रयोग लिख रहे हैं, जो किसी भी दशा में कभी निष्फल नहीं जाता । महा मोहन यन्त्र स्त्री पुरुष आदि समस्त प्राणियों को वश में करने वाला है । इसकी प्रयोग विधि इस प्रकार है कि काँसे की एक थाली लेकर गोबर राख आदि से शुद्ध करके 'जाती' नामक वृक्ष की लकड़ी की लेखनी से गोरोचन तथा चन्दन की स्याही से प्रस्तुत प्रकार यन्त्र लिख कर मालती, चमेली, सफेद कमल आदि सुगन्धित पुष्पों से पूजन करे । इस प्रकार सात दिवस तक पूजन करने के पश्चात् सोना चाँदी तथाताम्बे से निर्मित ताबीज में भर कर भुजा अथवा गले में धारण करने से प्राणी मात्र वश में हो जाते हैं ।



अग्नि स्तम्भन यन्त्र

विधि—इस यन्त्र को दीपावली को सिद्ध कर लें और केशर या हल्दी की स्याही से भोजपत्र पर लिख



कर विधिवत पूजन करके ब्राह्मण भोजन करावे, फिर उसे पृथ्वी में गाड़ दे और उस पर पानी की धार छोड़ते जावें तो अग्नि ठण्डी हो जावेगी।

स्वामी वशीकरण यन्त्र



कदाचित आप का मालिक आपसे किसी कारण से रुष्ट होकर आपको हानि पहुँचाने की चेष्टा करे तो आप इस प्रस्तुत यन्त्र को भोजपत्र के टुकड़ों पर लोहे की लेखनी से लिखकर उत्तर की ओर मुख करके पत्थर की शिला के नीचे दबाकर स्वामी के समक्ष जावें तो वह यन्त्र के प्रभाव से आपको हानि न पहुँचा सकेगा बल्कि प्रसन्नता पूर्वक आपकी इज्जत करेगा।

कार्य सिद्धि यन्त्र

५	१५	२	७
६	३	११	११
१४	६	६	१
४	५	१०	१३

सर्व कार्य सिद्धि हेतु यह अद्भुत यन्त्र है। रविवार के दिन हलदी के रस से इस यन्त्र को कागज पर लिखकर वत्ती बनावे, सायंकाल दीपक में सरसों का तेल डाल कर घर में जलावे, इसी तरह सात रविवार करे, तो सभी प्रकार के दुख दूर हों व कार्य सिद्धि हों।

सर्वोपरि यन्त्र—१

प्रात:काल इस यन्त्र को भोज पत्र पर केशर की स्याही से लिखे, धूप दीप दे चाँदी में मढ़वा गले में बाँधे तो सर्व कार्य सिद्धि हो

ओं भू:	ओं भुव:	ओं स्व:
ओं मह:	ओं जन:	ओं तप:
	ओं सत्यं	

सर्वोपरि यन्त्र—२

राम	राम	राम
राम	रामायनम:	राम
राम	राम	राम

इस यन्त्र को ताम्र की तष्टी में नित्य संध्योपासनोपरान्त चन्दन से अनार की लेखनी द्वारा लिख, धूप दीप पुष्पादि से पूजा करने से सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

सर्वोपरि यन्त्र—३

इस यन्त्र की पूजा उपरोक्त विधि के अनुसार ही करना चाहिये।

कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण
कृष्ण	कृष्णायनम:	कृष्ण
कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण

मासिक धर्म चालू होने का मन्त्र

हैं	१२५	२	५
१६	१०	१८	१९
अ	१०	१०	९९
१४०	३	३०	९९

जिस स्त्री को मासिक धर्म ठीक से न होता हो तो इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर उसके गले में बाँधे तो रजो धर्म खुलकर होवे।

वन्ध्या दोष निवारण यन्त्र

प्रस्तुत यन्त्र को भोजपत्र प: अष्टगंध से लिखकर राम मन्त्र से अभिमान्त्रित कर वन्ध्या के गले में बाँधने से एक वर्ष के वीच वन्ध्या गर्भवती होती है।

ॐ	र	रा	म	स्वा	हा
ह	१	०	५	७	रा
न्द्र	०	९	१	८	म
प	०	९	७	९	च
श	०	९	७	९	न्द्र
कृ	०	१	५	४	रं
क	ल	ति	ल्प	कु	धु

संतान दाता (अठरा) यन्त्र

जिस स्त्री को अठरा रोग हो अथवा जिसके संतान न होती हो या कन्या ही होती हों, उसके वास्ते यह यन्त्र बड़ा गुणकारी है। रोहिणी नक्षत्र के दिन पुत्रवती स्त्री के दूध में केशर और चन्दन मिला अनार की कलम से सफेद कागज पर ऐसे आठ यन्त्र लिखे। एक यन्त्र ताँबे में मढ़वाकर स्त्री के गले में बाँध देवे तथा सात यन्त्र प्रति मंगल के दिन एक यन्त्र जल में धोकर स्त्री को पिलावे, तो कार्य सिद्धि होवे, अन्यथा नहीं।

दुर्गा दुर्गेश महेश

ओं

अं अः

नंदनी मम कार्य कुरु

गर्भ रक्षा का यन्त्र

च		णिड
ओं ह्रीं	गर्भरक्षां कुरु	कार्यं
नमः		स्वाहा

इस यन्त्र को लिखकर गर्भिणी के ललाट पर स्पर्श कराकर बहते जल में विसर्जन करें, तो इससे गर्भिणी का गर्भपात निवारण होता है।

प्रसूता भय नाशक यन्त्र

दीप मालिका की रात को यह यन्त्र त्रिकोन ठीकरों (त्रिकोण पात्र मिट्टी का) पर लिखे और प्रसूता स्त्री के सिरहाने रखे तो सर्व भय दूर होवे।

४	२२	१०	६
६	१०	६	४
१०	६	४	१२
१२	४	१२	१०

सुख प्रसव यन्त्र

अस्ति गोदावरीतीरे जम्भला नाम राक्षसी।

तस्याः स्मरणमात्रेण विशाल्या गर्भिणो भवेत्॥

ओं ओं ओं

यन्त्र लिखकर गर्भिणी के बाल से बांधकर कपालपर्यन्त लटका देवे, इससे तुरन्त सन्तान होगी। यह यन्त्र अलक्त के रस से लिखना।

सुख पूर्वक बालक होने का यन्त्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	४१	४

यह यन्त्र लिखकर स्त्री को धोकर पिलाओ तो सुख पूर्वक तुरन्त बालक उत्पन्न हो जावेगा।

बालक बिना कष्ट के जन्मे

६	७	२
८	५	१६
१	३	४

बालक के जन्म समय जब पीड़ा बहुत होती हो तो इस यन्त्र को भोजपत्र पर सह देवी के रस से अथवा पुनर्नवा के रस से लिखकर जांघ पर बाँधे, तो पीड़ा दूर होकर बालक बिना कष्ट के जन्मे।

चक्रव्यूह यन्त्र

च	क्र
व्यू	ह

यह चक्रव्यूह कागज पर लिखकर जिस स्त्री के बालक होने का दिन पूरा होऔर वह स्त्रीकष्ट में हो बालक होता न हो, तो इस चक्रव्यूह को बनाकर दिखावे, तो उस स्त्री को सुख प्रसव हो और कष्ट सब दूर हो।

स्त्री दूधवर्धक यन्त्र

ओं प्रीं दुग्धः वौखा		
३०४	४०३	३०४
ओं प्रां दुग्धः वौखां		

जिस स्त्री को दूध कम आता हो या जिसका दूध खराब होवे या जिसके पीने से बालक रोगी हों अथवा मर जाते हों तो यह यन्त्र भरणी नक्षत्र में श्वेत जीरे के जल से कागज पर लिख उस स्त्री के गले में बाँध दो और ऐसे ही सात यन्त्र उसी दिन लिखकर रख लो नित्य एक यन्त्र जल में धोकर पिलावो।

बालक जीवन यन्त्र

शंकरमातु शंकरपितु

कै करलजीवबाढे

४०	४२	४	५
१	३	४८	४३
४६	४५	५	४
२	७	४७	४४

पापी की जारु दिज्ञ

औरत रक्षा बारो चौबे

इस यन्त्र को शुभ नक्षत्र में गोरोचन से अनार की कलम द्वारा भोजपत्र पर उत्तर मुख हो लिखें, फिर गूगल की धूनी दे कंठ में बाँधे, जिस औरत का लड़का जीता न हो तो जीवे और होता न हो तो होवें।

बाल रक्षा यन्त्र

७२	५१	३३	४२
६८	८२	६	११
२५	३७	४६	५०
४५	२७	६	१

इस यन्त्र को तांबे के पत्र पर केशर से लिखें, फिर अक्षर खोदकर बालक के गले में बाँधे तो नजर नहीं लगे।

बालक डरे नहीं यन्त्र—१

८६	६३	२	८
७	३	१४	८२
६६	६१	६	१
४		६०	६४

यह यन्त्र भोजपत्र पर दूध से लिखकर बालक के गले में बाँधे तो बालक को डर नहीं लगे।

बालक डरे नहीं यन्त्र—२.

४	२२	१०	६
६	१०	६	४
१०	६	४	१२
१२	४	१२	१०

अमावस्या की रात्रि को यन्त्र केशर की स्याही से अनार की कलम द्वारा लिखकर जिस बालक के कंठ में बांधा जावें तो उसे डर नहीं लगे।

बालकों का रोदन (रोउनी) निवारण यन्त्र—१

१२	२	११	१
१६	२	३६	८
५	२४	६	२३
४	१३	६	१८
सींरींरींजंब्रंचंह्रींयं			

यह यन्त्र अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर बालक के गले में बाँध देने से रोदन शान्त होता है।

बालक की काँच न निकले यन्त्र

यह यंत्र माजू फल के रस से चंद्रवार को लिखकर बालक के कंठ में बाँधे और जिस समय काँच निकले माजू और सीप को बारीक पीस कर उसके ऊपर धूल दे तो काँच न निकले।

७६	८२	२	८
७	३	८०	७६
८२	७७	६	१
४	६	८२	८१

स्वप्न में भूत दिखाने का यन्त्र

६	१३	२	८
७	३	१०	११
२२	७	८	१
४	६	६०	६

इस यंत्र को कुचले के रस से लिखकर जिस किसी के सिरहाने रक्खा जावे, तो वह रात को स्वप्न में भूत देखे।

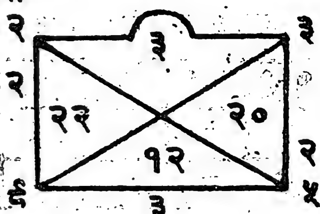
भूत दर्शन यन्त्र

इस यन्त्र को गिलोय के रस में लिख रात्रि को शयन करने के समय सिर के नीचे धरें, तो स्वप्न में भूत दिख पड़े।

१	२	३	४
४	३	२	१
१	२	३	४
४	३	२	१

प्रेत नाशक यन्त्र

यह यन्त्र कोरे खपड़ा पर लिखे और जिसके प्रेत लगा होय, उस आदमी का नाम लिखे, फिर रोगी को दिखा के अग्नि में जला दे, तो प्रेत भाग जाय।



भूत प्रेत नाशक यन्त्र

५०५ दुन दन ३६६६
दूर भव भूतः

पुष्य नक्षत्र में इस यन्त्र को लोबान से लिखकर गूगुल के साथ धूनी देवे, तो भूत प्रेत दूर होवे। और इस ही यन्त्र को पूर्वोक्त रीति से लिखे व चरखे केसाथ बांध दिन में सौ बार उलटा चरखा घुमाने से परदेश गया जल्दी लौट आवेगा।

भूत भय नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर धूप देकर गले में बाँधे तो किसी तरह का भय न होवे और भूत न लगे, जो लगा हो तो छूट जाये।

१४	७	४	३
६	३	६	५
७	३	४	१४
४	१४	३	७

चुडैल हटाने का यन्त्र

३७१००३७१३७१००		
३७७००७७००३७००		
३७७००	देवदत्त	३०००

यह यन्त्र पीपल के पत्ता पर लिखें। जिसको चुरैल लगी हो, उसके गले में गूगल की धूनी देकर बाँधे तो छूटि जाय।

डाकिनी शाकिनी आदि दूर-करने का यंत्र—१

११।९	६६	१	५
७	६	७	६
९	=	·।·	·।·
८	१	ऽ	४०

यंत्र—२

७	७	९	८
ऽ	६	६	५
४	।।।	ऽ	११
७।	६	१।।	।।।

प्रथम यंन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर बालक के गले में बाँधे और द्वितीय यन्त्र को भी लिखकर शुद्ध जल में घोलकर पिलावें तो डाकिनी शाकिनी दूर होकर बालक दोष से निवृत्त हों जावेगा।

आँख नहीं दुखे यन्त्र

(५७८२०६९२)

यह यन्त्र स्याही से कागज पर लिखें। जिसकी आँख आती हो उसको दिखावें तो आँखे ठीक हों।

यह यन्त्र बालक के हाथ में बाधना चाहिये

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	९	२
७	४	५	४

भूतोन्माद का यन्त्र—१० नीम के पत्ते, वच, हींग, सर्प की काँचली और सरसों— इनकी धूनी दो तो भूत डाकिनी आदि दूर हों।

भय नाशक यन्त्र

यदि किसी को भय लगता हो तो इस यन्त्र को केवड़ा और गुलाब के अर्क से भोजपत्र पर लिखकर उसके कण्ठ (गले) में बाँध दो तो भय नहीं लगे।

३१	८	६६	१
७	५०	३	२
३७	४१	५२	४
५	३	४६	८

अत्याचारी का भय दूर करने के लिये यन्त्र

श्री	रा	म
स	हा	य
क	रो	तु

जिस मनुष्य को अफसर अधिकारी आदि का भयहो और वह व्यक्ति भय के मारे उस के सामने न जासके अथवा अफसर भयानक हो और उससे भय हो तो इस यन्त्र को लिख कर बाँह पर बाँधे। परमात्मा ने चाहा तो पत्थर हृदय मोम हो जावेगा

शत्रु के घर लड़ाई हो यन्त्र

कुम्हार के आँवे से ठीकरी लाकर रक्त चन्दन से उस पर यह यन्त्र लिखकर शत्रु के घर फेंक दे तो उनमें लड़ाई झगड़ा होता रहे।

७९	७६	२	७
	३	८३	४८
८५	८०	८	१
५	६	८१	८४

शत्रु बुद्धि नाशक यन्त्र

ओं	ओं	ओं	ओं
	ओं नील २ महानील मम वैरी की जिह्वा शून्य कुरु २ स्वाहा		
ओं	ओं	ओं	ओं

रविवार को यह यन्त्र केले के रस से लिखकर शत्रु के गृह में दबा देने से बुद्धि नष्ट हो जावेगी।

शत्रु नाशक यन्त्र

अनुराधा नक्षत्र शनिवार को इस यन्त्र को आक के दूध से कागज पर लिखकर अपने पास रखे, तो शत्रु का नाश होवे।

६	३	५७	५६
५३	६०	२	७
५९	५४	८	१
४	५	५५	५८

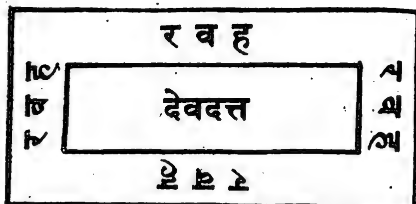
शत्रु भगाने का यन्त्र

यह यन्त्र धतूरे के रस सें रविदिन शत्रु का नाम लिखे तो शत्रु भाग जाय ।

ज		ज
ज	देवदत्त	ज
ज		ज

शत्रु भगाने का यन्त्र

यह यन्त्र नीबू के रस से कौवा के पर से लिखे तो शत्रु दूर होय। देवदत्त की जगह शत्रु का नाम लिखना चाहिये।



आधे सिर (आधा शीशी) की पीड़ा नाशक यन्त्र

३८	४६	२६	७१
३	८	४	७
१	८	२	३
११	७	२०	६

इस यन्त्र को रविवार के दिन चन्दन से लिखकर माथे पर बाँधे तो आधा शीशी दूर होवें।

आधा शीशी की पीड़ा दूर हो यन्त्र

रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण में इस यन्त्र को लिखकर सिर में बाँधा जावे तो आधे सिर की पीड़ा दूर होवे।

१५	१०	६५
७	७६	८२
२२	७१	५
६	३	४

	(u
(w	(w
(w	(w

आधा शीशी यन्त्र

यह यन्त्र (अधकपारी) आधाशीशी के वास्ते है। इतवार को या मंगल को लिखकर बाँधे तो अधकपारी जाय।

आधा शीशी दूर होनें का यन्त्र

५३	४२
३११	७०

यह यन्त्र स्याही से लिखकर माथे में बाँधे तो आधा शीशी दूर हो।

चौथिया ज्वर यन्त्र

यह यन्त्र रविवार के रोज लिख दाहिने हाथ में बांधे तो चौथिया ज्वर छूट जाय। पीछे जो कुछ बन पड़े सो दान कर दे।

स: ७ ४	स: १	स: ३ ८
स: ९	२ स:	स: ५
स: ८	स: ६	स: ४

जूडी नाशक यन्त्र

७	२	८
८	६	४
३	८	५

यह यन्त्र जूडी के वास्ते है, इसको भोजपत्र पर लिखकर गले में बाँधे तो जूडी दूर हो जावे।

ताप यन्त्र

यह यन्त्र रविवार को लिखकर गले में बाँधे तो ताप (ज्वर) नष्ट हो जाय।

५५९	२१७	३६९
६५५	१३८१	४९३
७७२	१२७७	१५२१
८८१	९६६	१००१

बाधक शान्ति का यन्त्र

बद्धबाधकं प्रशमय ऐं ईं ॐ हुं स्वाहा

एक नये घड़े पर यह यन्त्र लिखकर उसमें जल डालना उस जल द्वारा ऋतुस्नान के दिन रोगी को स्नान कराना इससे बाधक रोग की शान्ति होती है।

कान की पीड़ा दूर होने का यन्त्र

२२	२६	२	६
७	३	१६	१५
२८	१६	६	१
४	६	२४	११

इस यन्त्र को अनार के रस से लिखकर कान पर बाँधे तो पीड़ा दूर हो जाय।

कान की पीड़ा का यन्त्र

यह यन्त्र कान की पीड़ा के वास्ते है, लिखकर कान में बाँधे तो पीड़ा दूर होवे।

भ	ज	व
क	ग	जः
छः	छः	दः

दोनों प्रकार के बवासीर के लिये अन्तिम बुद्ध का छल्ला

जिसको बवासीर का रोग हो वह इस प्रकार करे कि मास के अन्तिम बुधवार के दिन बुध के होरा में चाँदी का छल्ला बनवाकर थोड़ा पानी लेकर ॐ नमः शिवाय सात बार पढ़कर पवित्र करें, फिर इस छल्ले को अग्नि में डालकर, गर्म करके इसे पानी में बुझावें। फिर उसी दिन अपने दाहिने हाथ में पहने। परमात्मा बवासीर का रोग दूर कर देंगे, बल्कि फिर जिसको बवासीर का रोग हो, वह इस छल्ले को हाथ में पहने, आराम होगा।

बवासीर नाशक यन्त्र

६	३	८	१३
६५	४	१०	७७
७	६	१५	८०
१२	८२	११	१४

रविवार पुष्य नक्षत्र में नीबू के रस से इस यंत्र को लिखकर कण्ठ में बाँधे तो बवासीर दूर हो जावे।

खूनी व बादी बवासीर के लिए यन्त्र

५	३८	३५	१२
३६	११	६	३७
१०	३३	४०	७
३६	८	६	३४

जिसको बवासीर हो वह शुक्लपक्ष की द्वादशी को यह यन्त्र लिखकर धूप दीप दे,अपनी नाभि पर बाँधे और ध्यान रहे कि नाभि से हटकर यन्त्र किसी और जगह न चला जाय और यदि किसी समय ऐसा हो तो तत्काल यन्त्र को नाभि पर लावे और जब तीन दिन बीत जावें तो फिर इतनी सावधानी की आवश्यकता नहीं।

आवश्यकता की पूर्त्ति के लिये यन्त्र

इस यन्त्र को चौबीस दिन तक प्रतिदिन चौबीस यन्त्र लिखकर आंटे में गोलियाँ बनाये और इन गोलियों को एक-एक करके नदी में प्रवाह करें।

१	१४	११	१३
१२	७	२	१८
६	६	१६	३
५	४	५	५

जिस उद्देश्य के लिये लिखेगा,परमात्म वह इच्छा पूरी करेंगे।

रोगी के लिये यन्त्र

७०	७७	२	७
६	३	७४	१३
७६	७१	८	१
४	५	७२	१५

यदि मनुष्य रोगी हो तो इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिख कर गूगल की धूनी देकर गले में बांधे तो रोगी रोग मुक्त हो।

शीतला (चेचक) शान्ति का यन्त्र

सोमवार को केशर और मुनक्का के रस में यह यन्त्र लिखकर गले

श्री	श्री	श्री
श्री	श्री	श्री
श्री	श्री	श्री

(कण्ठ) में बांधे और एक यन्त्र नित्य जल से धोकर पिलावे तो जिसको शीतला निकली हों तो वह शान्त हों।

वायुगोला नाशक यन्त्र

यह यन्त्र कागज पर स्याही से रविवार को लिखे और सूर्य के सामने पानी में धोकर पीवे तो वायुगोला जाय।

७	५
६	१

वीर्य स्तम्भ तथा पुष्टि करण यन्त्र

३	६५	३३	११
२६	७	६५	१४
१५	१३	५२	८
४	७३	१	६

इस यन्त्र को मघा नक्षत्र में उटंगन के रस से लिखे एक मास तक नित्य एक यन्त्र प्रातः समय गौ के कच्चे दूध में धोकर पीवे तो धातु पुष्ट हो यदि उस समय कंठ में बाँधे तो स्तम्भन हो।

परदेश गया घर आवे का यन्त्र

७२	७६	२	७
६	३	७६	७६
७८	७३	८	१
४	५	७४	७७

इस यन्त्र को मार्ग के रेते (मिट्टी) पर लिखकर कुछ दिन तक उसपर कोड़े लगावे तो परदेश गया पुरुष शीघ्र ही लौटकर घर आवे या उक्त यन्त्र को कागज पर लिखकर उसके पुराने वस्त्र में लपेट कर किसी चक्की आदि के नीचे दबा दें तो वह शीघ्र वापस आवेगा।

यन्त्र दूसरा

३५	८	१५	१
४	५२	५	१३
६	१३	६४	३
७२	६५	७२	६

यह यन्त्र केशर से भोजपत्र पर लिख चरखे पर बांधे प्रति दिन सात बार चरखा उलटा घुमावे, तो परदेश गया लौट कर घर आवे।

उच्चाटन चित्त शान्ति यन्त्र—१

७	८	६	३	१७	२५	१५	१२
३	५	१	२	३	५	४	२
२	६	१२	१	५	५	३	३
४	७	३	४	६	२	१	१०
१०	११	६	३	६	३	६	१३

जिसका चित्त उच्चाट हो उदास रहता हो, कोई काम करने को न चाहता हो तो इस यन्त्र को स्वर्ण की निब या अनार की कलम से भोजपत्र पर कुंकुम और चन्दन से लिखकर चाँदी में मँढ़वा कर कण्ठ में बांधे तो चित्त उदास नहीं रहे और काम मन लगा कर करे।

उच्चाटन यन्त्र—२

३१	१७	१५	१
२६	१६	१३	३
२७	२१	११	५
२५	२३	६	७

इस यन्त्र को मंगल के दिन अनुराधा नक्षत्र हो तब पान के रस से लिखकर जिसको पिलाया जावे अथवा जिसके शयन स्थान में गाड़ा जावे तो उसका चित्त उच्चाटन हो।

गई वस्तु लाने का यन्त्र

ह्लां	ह्लां	ह्लां	ह्लां
ह्लां	ह्लां	ह्लां	ह्लां
प्रां	प्रां	प्रां	प्रां
प्रीं	प्रीं	प्रीं	प्रीं

कनेर वृक्ष की छाया में बैठकर यह यन्त्र एक लाख लिखे तो गई वस्तु आवे।

चोरी गया पशु घर लाने का यन्त्र

१६	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	६	१
४	६	२१	२३

इस यन्त्र को सेहके तकले से लिखकर किसी खूँटे में गाड़े तो चोरी गया पशु घर आवे।

विघ्न विनाशक यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन से लिखकर सोने या चाँदी के यन्त्र में मँढ़वा कर दाहिनी भुजा पर धारण करने से सभी प्रकार के विघ्न दूर होते हैं ।

५६	६२	२	८
७	३	६०	५९
६२	५७	९	१
४	६	५८	६१

कैद से मुक्ति पाने का यन्त्र

१८	११	१६
१३	१५	१७
१४	१९	१२

जब कोई पुरुष अपराध किये बिना ही कैद हो जावे तो इस यन्त्र को लिखकर अपने पास रखने से छुटकारा पावे ।

"लाभदाता यन्त्र"

इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से सोमवार के दिन लिख कर दुकान पर लगाने से उसकी बिक्री बढ़ जावेगी ।

ल	क्ष	म
ई	लक्ष्मी वर्धते	ई
[illegible]	[illegible]	[illegible]

राजा व अधिकारी से मान पाने का यन्त्र

४३	५०	२	७
६	३	४७	४८
५९	४४	८	१
४	५	४६	४७

इस यन्त्र को ग्रहण अथवा दीपावली को कस्तूरी और कपूर से भोजपत्र पर चाँदी लिखकर के यन्त्र में भर कर गले में बाँधे अथवा अपने पास रख कर राज दरबार में जावे तो मान पावे । यह बड़ा ही परीक्षित है।

सुखदाता यन्त्र

२५४	२५४	२५४
	⊥	
	T	
२५४	२५४	२५४

इस चन्द्र यन्त्र को चन्द्रवार को प्रातः समय चन्द्र के होरा में कपूर चन्दन से लिख कर अपने पास रखे तो सर्व दिन सुख से व्यतीत होवे।

मित्र मिलाप यन्त्र

ह्लैं	ह्लां	ह्लीं	ह्लः
ह्लू	ह्लां	ह्लीं	ह्लः
ह्लै	ह्लां	ह्लीं	ह्लः
ह्लौं	ह्लां	ह्लीं	ह्लः

यदि कोई मित्र चित्त से भुला बैठा हो या रूठ गया हो तो इस यन्त्र को कस्तूरीसे लिख कर किसी वृक्ष की शाख से लटका दें, जब पवन से यन्त्र हिलेगा तो मित्र का चित्त भी हिलेगा और वह शीघ्र आकर मिलेगा।

आग से रक्षा का यन्त्र

६	१६	२	८
७	३	३	१२
१५	७	६	१
४	६	११	१४

इस यन्त्र को इमली के रस से भोजपत्र पर लिख कर जिस स्त्रीतथा पुरुष के गले में बाँधा जावे या जिस मकान में रखा जावे उसे आग लगने का भय नहीं रहता है।

सर्प नाशक यन्त्र

३०	३७	३	८
७	६	३४	३३
३६	३१	६	१
४	५	३२	३४

रेवती नक्षत्र चन्द्रवार को इस यन्त्र को माल कंगनी के रस से लिख कर अपने घर में रखने से सर्प नहीं आवें।

काम शीघ्र पूर्ण करने का यन्त्र

मं. ४	ह्लाँ १	ॐ ८
महः ५	ह्लीं २	श्रीं ९
सः ६	श्रीं ३	ह्लीं ८

यह यन्त्र शीघ्र कार्य पूर्ण करने के वास्ते है, जो कोई अपने संकट पड़े पर लिखे और दहिने हाथ पर बाँधि तो अवश्य काम सिद्धि होय ।

गुड़गुड़ी यन्त्र

यह यन्त्र गुड़गुड़ी के वास्ते है, पीपल के पत्ते पर लिख कर दहिने हाथ में बाँधे तो गुड़गुड़ी दूर होय ।

६९	१९	८९
७९	५९	३९
३९	९९	४९

मान पाने का यन्त्र

११७	१२४	२	७
६	३	१२१	१२०
११३	११८	८	१
४	५	११९	१२२

इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिख कर धूप दीप देकर सर पर टोपी में या चोटी में रक्खे तो राजा प्रींति करे ओर संसार में मान होय ।

बालक रोवे नहीं यन्त्र

यह यन्त्र कागज पर बुध के दिन हल्दी से लिख कर जो लड़का बहुत रोता होय उसके गले में बाँधे तो रोवे नहीं ।

१४८	१३	१३८	६
२	१४६	१३	१३९
९३	७	१४०	१
२०	१३४	९	१४७

व्यापार वृद्धि यन्त्र

इस यन्त्र को दिवाली के दिन रक्त चन्दन से बाजार में सन्मुख दूकान पर लिखे तो व्यापार अधिक हो।

७३	८०	२	७
६	३	७७	७६
७९	७४	८	१
४	४	७५	७४

बुद्धि अथवा स्मरण शक्ति यन्त्र

१४	९१	२	९
७	३	९९	९७
९०	९	९	१
४	६	९६	८९

बुद्धि और मस्तिष्क अथवा स्मरण शक्ति को उन्नत करने के लिए जो मनुष्य इस यन्त्र को मालकङ्गनी से दस बार जिह्वा पर लिख देवे तो बुद्धि उन्नत हो जाती है।

अद्भुत यन्त्र

१६५६११	१६५६२५	१६५६२१	१६५६१८
१६५६२२	१६५६१७	१६५६२७	१६५६१३
१६५६१६	१६५६१९	१६५६२७	१६५६१३
१६५६२६	१६५६१४	१६५६१५	१६५६२०

(१) जो मनुष्य इस यन्त्र को लिख कर अपने पास रखेगा, उसकी कुल अभिलाषा पूरी हो, चाहे धार्मिक हों अथवा सांसारिक। गुण इसके बहुत हैं, परन्तु थोड़े से लिखे जाते हैं। प्रथम यह यन्त्र जिस मनुष्य के पास हो उसे किसी कठिन मुसीबत का सामना नहीं करना पड़े।

(२) कोई मनुष्य मुसीबत में फँस जावे तो यह यन्त्र लिख कर अपने पास रखे, परमात्मा बहुत शीघ्र छुटकारा दिलावेंगे ।

(३) जब कोई बीमार हो जावे और शरीर बहुत दुखी हो और किसी औषधि से लाभ न होता हो तो इस यन्त्र को लिखे और उस रोगी के गले में बाँधे, परमात्मा की इच्छा से रोग दूर हो जावेगा ।

(४) यदि किसी को कोई साए भूत-प्रेत-जिन्न, आदि का भय हो तो इस यन्त्र को मीठे पानी अथवा वर्षा जल में घोल कर सात दिन पिलावे तो तुरन्त स्वास्थ्य लाभ हो ।

(५) जिसको दृष्टि बुरी लग जावे या सिवाय इसके किसी के जादू करने का ख्याल हो तो यह लिख कर उसके गले में बाँधे ।

पंचदशी यंत्र-तंत्रम्

कैलासशिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शंकरम् ।
स्वामिन् प्रभो जगन्नाथ भक्तानुग्रहकारक ॥१॥
पञ्चदशीं दयां कृत्वा लोकानां हितकारणात् ।
वक्तुमर्हसि देवेश श्रोतुमिच्छामि सांप्रतम् ॥२॥

कैलाश पर्वत शिखर पर गौरा पार्वतीजी और महादेवजी बैठे थे उस समय में पार्वतीजी महादेवजी से बोलीं (पूछा) कि, हे भक्त पर अनुग्रह करने वाले ! हे जगत् के नाथ ! हे प्रभो ! हे देव देवेश ! आप जगत् की भलाई के लिये पंचदशी (पन्द्रह के) यन्त्र का विधान कहिये, आप ही कहने के योग्य हो और मेरी श्रवण करने (सुनने की) इच्छा है ॥१।२॥

श्री शिवजी बोले

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि पञ्चदश्या विधानकम् ।
शांतिर्यंत्रं च लोकेऽस्मिन्सर्वं देवि प्रकीर्तितम् ॥३॥

शंकरजी बोले, हे देवि ! मैं पंचदशी का विधान तुमसे कहता हूँ, लेकिन पंचदशी का विधान, शांति यन्त्रादि मैंने पहले ही लोक में प्रसिद्ध किया है ॥३॥

पञ्चदशीमहायन्त्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
गुह्यं रक्ष्यमहो लोके देवानामपि दुर्लभम् ॥४॥

यह पंचदशी (पन्द्रह) का महायंत्र सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करता है और बहुत ही गोपनीय व रक्षणीय है, अधिक क्या कहूँ, यह यन्त्र देवताओं को भी दुर्लभ है ॥४॥

मन्त्रोद्धारः

मन्त्रोद्धार प्रवक्ष्यामि शृणु देवि समाहिता ।
मन्त्रो यथा । "ॐ ह्रीं श्रीं हूरः" ।

एतन्मन्त्रं महामन्त्रं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
जलेऽग्नौ च तथा भूमौ यंत्राणि च समर्पयेत् ।।५।।

हे पार्वती देवि ! मैं पहिले तुमसे मन्त्रोद्धार कहता हूँ, सावधान होकर सुनो । "ॐ ह्रीं श्रीं हर:" यह मन्त्र है । इसी पंचाक्षरी महामंत्र से सभी सिद्धियों की प्राप्ति होती है । इसी यन्त्र को जल, अग्नि और पृथ्वी, इन तीनों स्थानों में अर्पित करे ।।५।।

चन्द्रनेत्रे तथा वह्निर्वेदबाणरसास्तथा ।
मुनिनागग्रहा ज्ञेया: पञ्चदश्यास्तु मध्यगा: ।।६।।

पंचदशीयन्त्रम् ।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, यही नौ अंक पंचदशी महायन्त्र के बीच (मध्य में) योजित किये जाते हैं ।।६।।

अथात: संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं महदद्भुतम् ।
रवौ वारेऽर्कदुग्धेन श्मशान भस्मना लिखेत् ।।७।।
साध्यवर्णस्य नामानि चितामध्ये विनिक्षिपेत् ।
विक्षिप्तो जायते मर्त्य अष्टोत्तरशतं जपेत् ।
पञ्चदशीविलोमं तु सन्ध्याकाले विशेषत: ।।८।।
चन्द्रवारे गृहीत्वा तु श्वेतदूर्वां च केशरम् ।
श्वेतगुञ्जासमायुक्तं कपिलापयमध्यत: ।।९।।

हे देवि ! अब मैं तुमसे अद्भुत प्रयोगों को बतलाता हूँ, ध्यान से सुनो । रविवार के दिन मदार (आक) के दूध में श्मशान भस्म (चिता की भस्म) मिलाकर भोजपत्र के ऊपर जिस व्यक्ति (प्राणी) का नाम लिखे और उक्त मन्त्र से १०८ बार जप करके चिता में डाले तो वह मनुष्य विक्षिप्त (पागल) हो जाता है और यदि पंचदशी को

विलोम करना हो तो सोमवार के दिन संध्याकाल में करें और श्वेत दूर्वा (सफेद दूब,) केशर, सफेद गुंजा इन सब के चूर्ण को कपिला गऊ के दूध में मिश्रित कर उससे लिखे ॥७॥८॥९॥

भौमवारे गृहीत्वा तु काकरक्तं सपक्षकम् ।
नामाक्षरं लिखेद्यन्त्रे मौनभावयुतो नरः ॥१०॥
तस्य द्वारे खनेद्भूमावुल्लंघ्योच्चाटनं भवेत् ।
कुटुम्बानां च सर्वेषां यदि शक्रसमोरिपुः ॥११॥

मंगलवार के दिन सपक्ष काक (पंख सहित कौवे) के रक्त से यन्त्र में अपने शत्रु के नामाक्षर मौन होकर लिखे और उसको शत्रु के गृह द्वार में (दरवाजे के पास) थोड़ी भूमि खोदकर यन्त्र गाड़ देवे तो यन्त्र का उल्लंघन होते ही शत्रु के कुटुंब का उच्चाटन होता है, चाहे वह शत्रु इन्द्र के समान पराक्रमी क्यों न हो ॥१०॥११॥

बुधवारे गृहीत्वा तु नागकेशररोचनम् ।
सर्षपातैलयुक्तेन लिखेद्यन्त्रं तदुत्तमम् ॥१२॥
कृत्वा तु वर्त्तिकां तस्य चालयेन्मन्त्रभाविताम् ।
नृकपाले कज्जलं तु तज्जपेन्मोहनं जगत् ॥१३॥

बुधवार के दिन नागकेशर और गोरोचन इन दोनों का चूर्ण कड़ुवे तेल (सरसों के) में मिलाकर उससे भोजपत्र के ऊपर विधि पूर्वक इस यन्त्र को लिखे और इसकी बत्ती बनाकर (पूर्वोक्त) मन्त्र से अभिमंत्रित कर नरकपाल में प्रज्वलित करे और काजल तैयार करे, इस काजल से सब जगत् मोहित होता है ॥१२॥१३॥

गुरुवारे हरिद्रे द्वे रोचनागुरुसंघृतम् ।
यन्त्रराजं समालिख्य तस्य मध्ये तु नामकम् ॥१४॥
आसनान्ते खनित्वा तु यन्त्रं स्थाप्यं शुभानने ।
कर्षणं जायते देवि नान्या श्रेष्ठा क्रिया स्मृता ॥१५॥

हे पार्वति ! गुरुवार के दिन हलदी, दारुहलदी, गोरोचन और अगुरु (अँगर) इनका चूर्ण घी में मिला कर उसी से भोजपत्र पर इस यन्त्र को लिखकर मध्य भाग में जिस मनुष्य पर प्रयोग करना है उसका नाम लिखकर उसी व्यक्ति के आसन के समीप में थोड़ी भूमि खोदकर इस यन्त्र को गाड़ दे तो उस व्यक्ति का आकर्षण होगा। आकर्षण करने में इससे श्रेष्ठ क्रिया दूसरी नहीं है, मेरा परीक्षित है ॥१४॥१५॥

प्रयोगान्तरम् ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं महदद्भुतम् ।
भृगुवारे सकर्पूरं वचकुष्ठं लघुसमम् ॥१६॥
लिखित्वा यन्त्रराजं तु भूर्जपत्रे सुशोभनम् ।
दृष्ट्वा स्त्री वशमायाति प्राणैरपि धनैरपि ॥१७॥

हे देवि ! अब मैं दूसरा महा अद्भुत प्रयोग बतलाता हूँ, सुनो–शुक्रवार के दिन कपूर, वच और कुच–इनका चूर्ण शहद में मिलाकर उसी से भोजपत्र पर इस पंचदशी यन्त्रराज को लिखकर स्त्री को दिखावे, इस यन्त्रराज को देखकर तन-मन-धन से वश्य (वश) में होती है ॥१६॥१७॥

अन्यः प्रयोगः

शनिवारे चिताकाष्ठे पंचदश्या विलोमकम् ।
लिखित्वा यस्य नामानि श्मशाने निखनेद्बुधः ।
कुक्कुटस्य तु रक्तेन म्रियते नात्र संशयः ॥१८॥

शनिवार के दिन चिता के काष्ठ के ऊपर पंचदशीयन्त्र को (उलटी) रीति से लिखकर उसके बीच में मुर्गे के रक्त से शत्रु का नाम लिखें और उसे श्मशान भूमि में गाड़ देने से शत्रु मृत्यु को प्राप्त होता है, इसमें संदेह नहीं है ॥१८॥

विधानम् ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यन्त्रराजविधिं तथा ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं गोपनीयं च यत्नतः ॥१८॥

हे देवि! सुनो अबमैं तुमसे इसयन्त्रराज काविधान बतलाताहूँ,लेकिन इसको गुप्त रखना चाहिये, हर एक से कहना ठीक नहीं है ॥१८॥

वटवृक्षतले यन्त्रं भूमिमध्ये ततो लिखेत् ।
कृष्णपक्षत्रयोदश्यां लेखिनीं वटवृक्षजाम् ॥२०॥
नीत्वारम्भं विधातव्यमेकचित्तेन मानवैः ।
अयुतं प्रजपेद्देवि धर्मकामार्थमोक्षदम् ॥२१॥

हे देवि पार्वती ! कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी में वटवृक्ष के नीचे एकाग्रचित्त से बट की कलम से भोजपत्र के ऊपर इस यन्त्र को लिखकर पूर्वोक्त मन्त्रराज का एक अयुत दस हजार जप करे । इससे धर्म, अर्थ कामं और मोक्ष इन चारों की प्राप्ति होती है ॥२०॥२१॥

दाडिमीवृक्षलेखिन्या भूमौ यन्त्रं सहस्रकम् ।
लिखित्वा जायते मोक्षो बन्दिनश्च वरानने ॥२२॥

हे वरानने ! दाड़िम वृक्ष की कमल से इस यन्त्र को पृथ्वी पर एक सहस्र बार लिखे तो बन्दी बन्धन से मुक्त होता है ॥२२॥

ब्रह्मवृक्षस्य लेखिन्या यन्त्रं पंचशतं लिखेत् ।
भूमिमध्ये दरिद्रस्य नाशनं भवति ध्रुवम् ॥२३॥

ब्रह्म वृक्ष की कलम से इस यन्त्र को ५०० बार भूमि पर लिखे तो दारिद्रय नष्ट होता है ॥२३॥

गोमूत्रं च शिलां चैव कर्पूरागुरुमिश्रितम् ।
एकीकृत्याश्वत्थमूले लिखेद्यन्त्रं तु भूर्जके ॥२४॥

चिंतितं चाचिरेणैव जायते देवि निश्चितम् ।
प्रतापाल्लभते भोगानिन्द्रतुल्यपराक्रमान् ।।२५।।

गोमूत्र, मनशिल, कपूर और अगुरु– अगर इनको एकत्र कर मिलाकर उससे पीपलवृक्ष के नीचे भोजपत्र के ऊपर इस यन्त्र को लिखे तो मनोवांछित फल की शीघ्र ही सिद्धि होती है और इस यन्त्रराज के प्रताप से इन्द्र के समान पराक्रम और भोगों की प्राप्ति होती है ।।२४।।२५।।

बिल्वपत्ररसं ग्राह्यं हरितालमनः शिले ।
बिल्वशाखजलेखिन्या सहस्रद्वितयं लिखेत् ।।२६।।
एकान्ते च शुभस्थाने भूमिमध्ये तथैव च ।
विलिख्यात्र शुभं यंत्रं वाचां सिद्धिः प्रजायते ।।२७।।

हरताल व मनशिल को बेलपत्र के रस में घोलकर फिर बेलवृक्ष की कलम से एकांत स्थान में इस यन्त्र को पृथ्वी पर दो सहस्र बार लिखे तो वाणी की सिद्धि प्राप्त होती है ।।२६।।२७।।

अर्कपत्ररसेनैव अर्कपत्रं समालिखेत् ।
अष्टोत्तरशतं चैव रिपुवंशमिनाशकृत् ।।२८।।

मदार-(आक) के पत्ते के रस से आक के पत्ते पर इसी की कलम से इस यन्त्र को १०८ बार लिखे तो शत्रु के वंश को कष्ट व नष्ट होता है ।।२८।।

किंकरीवृक्षबन्धाद्वैज्वरादिशूलकं तनौ ।
जायते नात्र संदेहो यदि शक्रसमो रिपुः ।।२९।।

इस यन्त्र को भोजपत्र पर विधि पूर्वक लिख कर कीकर-कीकरी वृक्ष में बांध देवे तो निश्चय ही शत्रु के शरीर में ज्वर पीड़ा शूलादि व्याधियां उत्पन्न होंगी, चाहे वह शत्रु, इन्द्र के तुल्य ही क्यों न हो ।।२९।।

पाषाणस्तम्भनं देवि शत्रुद्वारे च भूमिके ।
हरिद्रालिखितं यन्त्रं स्थाप्यं तत्र सुशोभनम् ॥३०॥
एवं कृते तु देवेशि पितृपुत्रादिकैः सह ।
शत्रोः प्रजायते द्वेषो सत्यं सत्यं ब्रवीमि ते ॥३१॥

हे देवि पार्वती ! हलदी को घिस कर उसकी स्याही से भोजपत्र के ऊपर इस शोभन यन्त्र को लिख शत्रु के गृहद्वार में गाड़ देने से यह पाषाण स्तंभन, प्रयोग होगा । हे देवि ! मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि, इस प्रयोग से शत्रु के पिता तथा पुत्रों के साथ द्वेषभाव विरोध हो जावेगा ॥३०॥३१॥

अपामार्गरसेनैव लिखितं भोजपत्रके ।
ऐकाहिकं तृतीयं च चतुर्थज्वरनाशनम् ॥३२॥

अपामार्ग (लटजीरा) के रस से भोजपत्र के ऊपर इस यन्त्र को लिखकर धारण करने से ऐकाहिक, तिजारी तथा चौथिया, ये तीनों प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं ॥३२॥

भृंगराजरसेनैव यन्त्रं लेख्यं तु भूर्जके ।
धारयेद्वापि हृदये विवादविजयो भवेत् ॥३३॥

भृंगराज (भंगरा) के रस से भोजपत्र के ऊपर इस यन्त्र को लिखकर हृदय में धारण करने से विवाद में विजय प्राप्ति होती है ॥३३॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यन्त्रराजस्य सिद्धिदम् ।
लक्षयन्त्रं समालिख्य सिद्धे पीठे शुभे दिने ॥३४॥
भूमिमद्धे शुद्धचित्तो भूमिशायीजितेन्द्रियः ।
हवनादिकं तु कुर्याच्च सर्षपाघृततण्डुलैः ।
शर्करामिश्रितैश्चैव यन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥३५॥

हे देवि ! मैं तुमसे इस यन्त्रराज की सिद्धि का विधान कहता हूँ, सुनो, साधक शुभ दिन में जितेंद्रिय, भूमिशायी तथा शुद्धचित्त होकर सिद्धपीठ में पृथ्वी पर इस यन्त्र को एकलक्ष, १,००,००० बार लिखकर, सरसों, घी, चावल और शक्कर इन चारों को मिलाकर विधिपूर्वक होम (हवन) करे तो इस यन्त्र की सिद्धि प्राप्त होती है ।।३४।।३५।।

यानि यानि च कर्माणि एकयन्त्रे समालिखेत् ।
क्षणमात्रेण सिद्धिः स्यात् सत्यं सत्यं पुनः पुनः ।
देवरूपो भवेद्देवि नरः शीघ्रक्रियाकरः ।।३६।।

हे देवि ! मैं सत्य २ और पुनः २ (बार-बार सत्य) कहता हूँ कि जो कुछ कर्म (काम) हो उसको इस एक यन्त्रराज में लिखने से उस कर्म की क्षणमात्र में सिद्धि प्राप्त होती है ।।३६।।

भूर्जपत्रे लिखेद्यंत्रं रोचनागुरुकुङ्कुमैः ।
कृत्वा च धूपदीपादि जलमध्ये विनिक्षिपेत् ।।३७।।
रात्र्यन्ते स्वप्नमध्ये तु वरं देवि ददाम्यहम् ।
जीवन्मुक्तः सुभागी च सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।।३८।।

गोरोचन, अगुरु और कुंकुम इनको एक में मिलाकर इससे भोजपत्र के ऊपर इस यन्त्र को लिखकर धूप दीपादि देकर जो जल में डालता है उसको मैं रात्रि के समय स्वप्न में वरदान देता हूँ, जिससे वह सुभागी (भाग्यवान) और जीवन्मुक्त होता है तथा मनोरथ पूर्ण होते हैं ।।३७।।३८।।

देवदत्तं महावीरं पञ्चदश्यास्तु यन्त्रकम् ।
वश्यं करोतु मे देवि जलमध्ये प्रवाहितम् ।।३९।।
दुग्धमाषतिलांश्चैव शर्कराघृतवीरकान् ।

एकीकृत्य बलिं दद्यात् कृष्णपक्षाष्टमीतिथौ ॥४०॥
वश्यो भवति वीरोऽयं प्राणैरपि धनैरपि ।
सर्वकर्माणि सिद्धिं च यान्ति नात्र विचारणा ॥४१॥

हे पार्वती देवि ! यह जल में प्रवाहित किया पंचदशी यन्त्र देवदत्त (अमुक) महावीर को मेरे वश में करे, यों कहकर दूध, उड़द, तिल शक्कर, घी तथा करवीर वृक्ष के पुष्प इन सबको एकत्र कर कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि में बलिदान देवें तो उक्त महावीर प्राणों के तथा धन के साथ वश में होता है और सब कार्य सिद्ध होते हैं, इस विषयमें तनिक भी सोच विचार नहीं करना चाहिये ॥३९॥४०॥ ४१ ॥

भाषा टीका सहितं पंचदशी तंत्रं समाप्तम् ।

दुर्लभ महासिद्ध विंशति यंत्र

(दुर्लभ वीसा यन्त्र)

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड अधिनायिका अपार करुणामयी जगत्जननी 'माँ' की कृपा किरण व माँ की सेवा में रत रहकर व बड़े-बड़े महात्मा पुरुष तथा अपने पूज्य दउआ जी (चाचाजी) विश्वविख्यात् चिन्ताहरण जंत्री के प्रणेता रमलसम्राट् पं० वचान प्रसाद त्रिपाठी तांत्रिक शिरोमणि, जिनकी मेरे ऊपर अभूतपूर्व कृपा व आशीर्वाद रहा, उनकी सेवा में रत रहकर उनसे भी कुछ यन्त्र, मन्त्र, तंत्र, प्रयोगात्मक रूप में प्राप्त किया व बाबा विश्वनाथ की महानगरी काशी में भी कई तांत्रिकों व महानुभावों से, जो इन यंत्रों को गोपनीय रक्खे थे, यहाँ तक कि दर्शन तक नहीं कराते थे, उनकी सेवा व प्रेमभाव से उनसे भी प्राप्त किया । इन यन्त्रों के प्राप्त करने में हमारे सुहृद बंधुवर श्री जगजीवन दास जी गुप्त, काशी का भी योगदान रहा है तथा कुछ प्रख्यात स्थानों के बड़े-बड़े मन्दिरों, व कामाक्षा आदि

जगहों से प्राप्त कर अति गोपनीय दुलर्भ यन्त्र, जो हमारे भारत से लुप्त न हो जावें, यही सोच समझ व विचार कर तान्त्रिक प्रेमियों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं। कुछ तांत्रिकों का मत था कि इन्हें प्रकाशित नहीं करना चाहिये, उनसे काफी विचार विमर्श के बाद व उनसे प्रार्थना करके, आज्ञा प्राप्त करके यहाँ प्रकाश में ला रहा हूं। आशा है तांत्रिक प्रेमीजन इनसे स्वयं तथा जनता का कल्याण करेंगे, तभी हम अपना प्रयास सफल समझेंगे। इन शुद्ध वीसा यन्त्रों के सम्बन्ध में कहा गया है।

॥ जहाँ यन्त्र वीसा, तो काह करें जगदीसा ॥

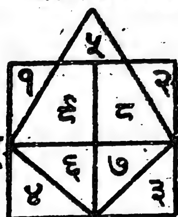
एक अनन्त, त्रिकाल सत् चेतन शक्ति दिखात।

सिरजत पालत हरत जग, महिमा बरनि न जात ॥

नोट—कोई भी महानुभाव, पाठकगण इन यन्त्रों को लिखकर या किताब के फटने पर, किसी भी स्थिति में इन यन्त्रों को अशुद्ध स्थान पर न डालें। यदि फट जावे अथवा किसी भी स्थिति में हो तो कृपया उन्हें पवित्र स्थान—गंगा जी, नदी, कूप, आदि में प्रवाह कर दें। यही उनसे याचना है, अथवा इस दोष के भागी वही महानुभाव होंगे।

१—व्यापारोन्नतिकारी सिद्ध—वीसा यन्त्र

ॐ श्रीं श्रियैनमः

॥ लाभम्  **लाभम् ॥**

॥ शुभम् ॥

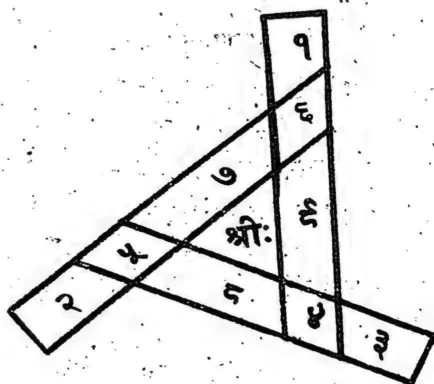
इस यन्त्र को दीपावली के दिन लक्ष्मी, गणेश पूजनके स्थान पर दीवाल में अथवा भोजपत्र पर लिखकर दफ्तीमें चिपकाकर दूकान फैक्ट्री आदि व्यापारिक संस्थाओं में रखना चाहिये और देवताओं के साथ ही इस यन्त्र का भी धूप, दीप, पूजन अर्चन करना चाहिये। व्यापारादि को बढ़ाने व उन्नति लाने का परमोपयोगी परीक्षित सिद्ध यन्त्र है।

२—यश, विद्या, विभूति राज सम्मान-प्रद—सिद्ध बीसा यन्त्र

१	९	१०
१४	७ ऐं २ श्रीं ॐ ह्रीं ३ क्लीं ८	६
५	११	४

यन्त्र लिखने व सिद्धि का विधान—श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक भोजपत्र पर केशर अथवा गोरोचन की स्याही से चमेली वृक्ष की कलम अथवा स्वर्ण की निब द्वारा यन्त्र का निर्माण करके पंचोपचार से पूजन करे और निवार्ण मन्त्र "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" का एक माला प्रतिदिन के हिसाब से १०८ दिन तक पूजनोपरान्त जाप करे, अथवा ९ दिन में ११००० ग्यारह हजार जाप करे, फिर यथाशक्ति स्वर्ण के यन्त्र में या चाँदी के यन्त्र में भरकर धूप दीप देकर दाहिनी भुजा अथवा गले में धारण करना चाहिये। "अभावे-शालि चूर्णं वा" के अनुसार तांबे का यन्त्र भी प्रयोग में ला सकते हैं।

३—लक्ष्मीप्रद-श्री यन्त्र (धनदाता सिद्ध वीसा यन्त्र)

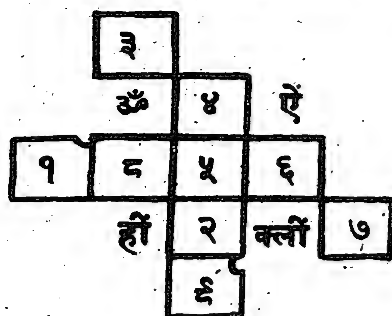


विधान—इस यन्त्र को श्रद्धा भक्ति पूर्वक यंत्र नं० २ के विधि-विधान पूर्वक लिखकर १८ हजार निवार्ण यन्त्र द्वारा जप कर सिद्ध करके स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के यन्त्र में भरकर मोम आदि लगाकर यन्त्र को लाल तागे में दाहिनी भुजा अथवा गले में धारण

करें, इससे धन धान्य की वृद्धि होगी। परीक्षित है।

४—धनप्रद—भाग्योदयकारी—सिद्ध वीसा यन्त्र

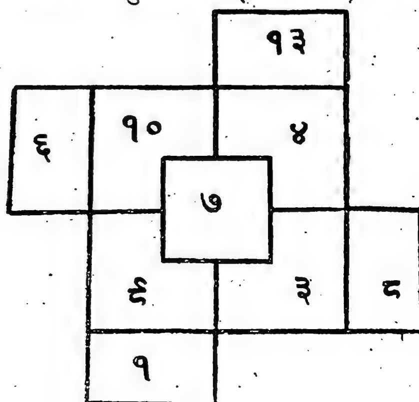
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे



विधान—गुरुवार के दिन जब शुभ नक्षत्र मुहूर्त हो, उस समय भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से सोने की निब अथवा चमेली की कलम से लिखकर मंत्रोपचार पूजन कर रुद्राक्ष अथवा स्फटिक की माला से इक्कीस हजार नवार्ण मन्त्रों द्वारा अभिमंत्रित कर स्वर्ण, चांदी आदि के यन्त्र में भरकर धारण करने से धन, धान्य व सौभाग्य की प्राप्ति होती है। हमारे दउआ जी (तांत्रिक रमलाचार्यजी) का यह यंत्र लाखों व्यक्तियों को भलीभूत सिद्ध हुआ है। परीक्षित है।

५—सिद्धदाता श्री लक्ष्मी कवच

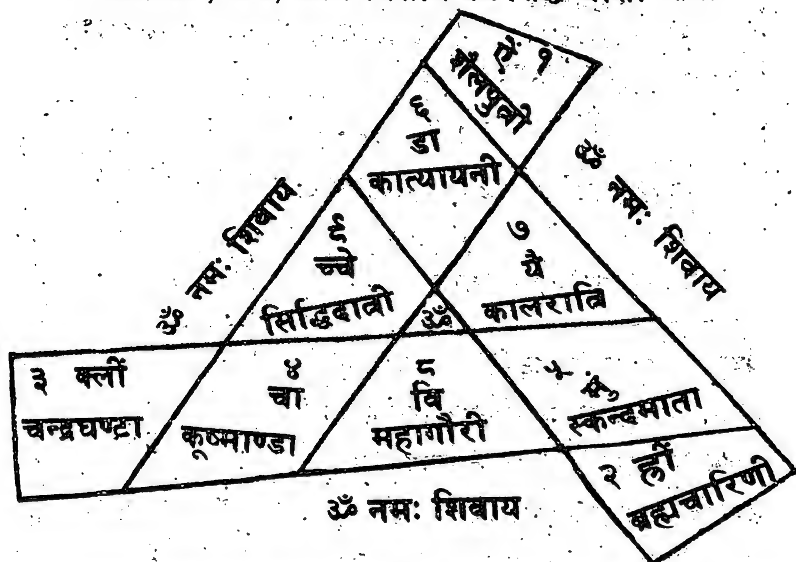
इसे शुभ दिन-मुहूर्त आदि देखकर भुर्ज्वपत्र (भोजपत्र) पर अष्टगंध से, स्वर्ण की निब से लिखकर विधिवत पूजनोपरान्त काँच के फ्रेम में मढ़वा लेना चाहिये और प्रतिदिन प्रातः काल स्नानोपरान्त यन्त्र का पूजन कर धूप-दीप देकर लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करना चाहिये।



इस यन्त्र के पूजन-दर्शन के प्रभाव से घर में

धन-सम्पत्ति-ऐश्वर्य एवं सुखों की वृद्धि होती है और लक्ष्मी स्थिर बनी रहती है। प्राचीन ग्रन्थों में इस लक्ष्मी यन्त्र की बड़ी महिमा कही गयी है, अतः प्रत्येक श्रद्धालु व्यक्ति को इस यन्त्र के पूजनादि से लाभ उठाना चाहिये।

६—ज्योतिष, तंत्र, ज्ञान-विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यन्त्र



विधि—सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, अथवा पूर्णमासी के दिन जब गुरुवार पड़े अथवा दीपावली की रात्रि में इस यन्त्र को भोजपत्र पर केशर अथवा अष्टगंध की स्याही से सोने की निब अथवा चमेली की कलम से १ अंक से क्रमानुसार ९ अंक तक (यंत्र के अनुसार) विधि पूर्वक लिखें, तत्पश्चात् विधि विधान से यन्त्र का पूजन कर २७ हजार नवार्ण ९ दिन में रुद्राक्ष की माला से पूर्ण करें फिर इस यन्त्र को यथाशक्ति यन्त्र में भरकर लाल तागे में पिरोकर धारण करने से उपरोक्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। परीक्षित है।

७—सर्वैश्वर्य प्रद-महा-दुर्लभ सिद्धि वीसा यन्त्र

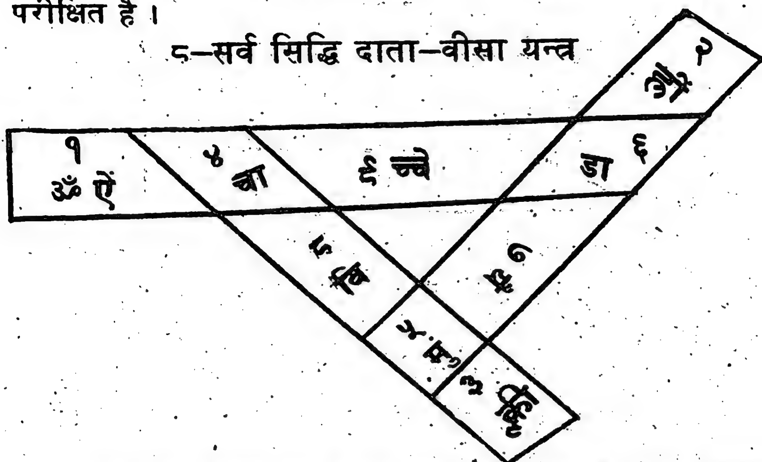
१ प्रथमं शैलपुत्री च		८
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ९	द्वितीयं ब्रह्मचारिणी २	चाष्टमम् महागौरीति
षष्ठं ६ कात्यायनीति च	३ तृतीयं चन्द्रघण्टेति	सप्तमं कालरात्रीति
४ चतुर्थकम् कूष्माण्डेति		७
		पञ्चमं स्कन्दमातेति ५

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीय ब्रह्मचारिणी।
तृतीय चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीतिच।
सप्तमंकाल रात्रीति महागौरीति चाष्टमम्
नवमं सिद्धदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः

विधि—इस यन्त्र को उपरोक्त यन्त्र नं० ६ की विधि से निर्मित करे तदुपरान्त पञ्चोपचार पूजन करके कम से कम १८ हजार अथवा २७ हजार उपरोक्त यन्त्र में लिखे अनुसार—प्रथम शैलपुत्री च .... पूर्ण मंत्र द्वारा जाप करके सिद्धि कर लें और स्वर्ण अथवा चाँदी के यन्त्र में इसे लाल तागे में पिरोकर धारण करने से सभी प्रकार के ऐश्वर्य, धन, धान्य, संतान मनोकामनाओं की पूर्ति होती है और इस यन्त्र को स्वर्ण के पत्र पर अथवा चाँदी के पत्र पर शुभ मुहूर्त में स्वर्णकार से खुदवाकर (बनवाकर) धूपदीप पूजनोपरान्त इसे

पूजनगृह में लाल वस्त्र के पर्दे में रखने से धन धान्य की विशेष पूर्ति होती है। मैंने इसे घोर परिश्रम व प्रयास के बाद प्राप्त किया है, मुझे सैकड़ों कार्यों पर अनुभूत चमत्कारिक फल प्राप्त हुआ है। मेरा स्वयं परीक्षित है।

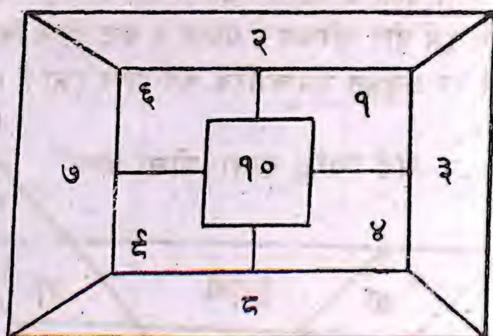
८–सर्व सिद्धि दाता–वीसा यन्त्र



यह यन्त्र विशेष रूप से श्री जगजीवन दास जी गुप्त, सम्पादक चिन्ताहरण जंत्री, वाराणसी से विशेष कृपा पूर्वक प्राप्त हुआ है तथा इनके सम्बन्ध में उन्होंने विशेष प्रयास भी किया है, अतः आपका आभारी हूँ।

विधि–इस यन्त्र को किसी शुभ मुहूर्त अथवा ग्रहण, दीपावली आदि में आरम्भ करें और नं० ७ की तरह इसे तैयार करके नवार्ण मन्त्र से ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे–मंत्र द्वारा २७ हजार मन्त्रों द्वारा अभिमंत्रित कर सिद्ध कर लें और यन्त्र में भरकर धारण करें, इससे सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं तथा यन्त्र नं० ७ की तरह स्वर्णपत्र अथवा चाँदी के पत्र पर खुदवाकर पूजनालय में रखकर पूजा करें इससे आपकी मनवांछित कामनायें पूर्ण होगी। इस यन्त्र को भी मैंने हजारों व्यक्तियों के लाभार्थ प्रयोग किया है। परीक्षित है।

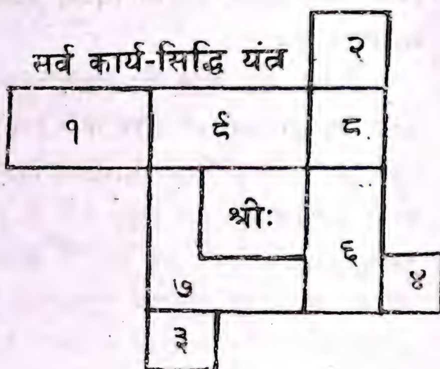
९—सुख, ऐश्वर्य, वाहनादि प्राप्ति हेतु—सिद्ध बीसा यन्त्र



विधि—इस यन्त्र को मंगल के दिन से लिखना प्रारम्भ करे और ५००१ की संख्या तक लिखकर पञ्चोपचार पूर्वक पूजन करके प्रवाहित नदी में एक-एक करके प्रवाह कर दें, फिर ग्रहण अथवा दीपावली में इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर लाल तागे से वेष्ठित कर चाँदी के यन्त्र में भरकर धारण करने से इच्छित वाहनादि. मोटर स्कूटर-गाड़ी. आदि की प्राप्ति होती है। इस प्रयोग को ९ दिन में पूर्ण करना परमावश्यक है।

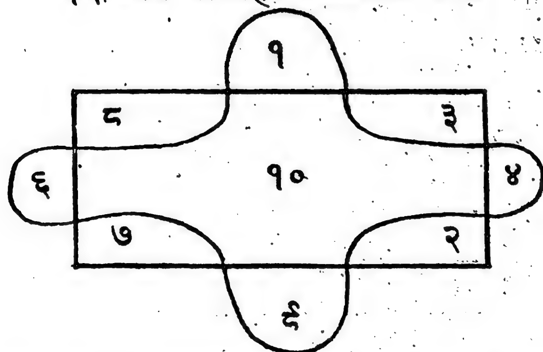
१०—सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र

यन्त्र विधि—स्नान आदि से निवृत्त होकर ४० यंत्र प्रतिदिन के हिसाब से २१ दिन तक प्रतिदिन लिखना चाहिये। जब २० वाँ दिन हो उस दिन इन सब यन्त्रों की गोली बनाकर एक-एक करके नदी में प्रवाहित करें.



इससे यंत्र सिद्ध हो जावेगा। फिर इस यन्त्र को दो अंक से क्रमानुसार भरना चाहिये, तदुपरान्त धूप-दीप-नैवेद्य आदि लगाकर इसे किसी चाँदी अथवा सोने के यन्त्र में वेष्ठित करके वशीकरण हेतु भुजा में बाँधना चाहिये। सिर पर रखने से कार्य सिद्ध होते हैं। इस यन्त्र को शत्रु का नाम लेकर आग दिखावे तो शत्रु नष्ट हों। पुत्र प्राप्ति व गर्भ रक्षा के लिये स्त्री को कमर में बाँधना चाहिये। इसकी विधिवत नित्य प्रति पूजा धूप दीप से किया जाय तो धन वृद्धि हो। इस यन्त्र को रविवार के दिन सिरहाने रखकर सोवे तो प्रश्न का उत्तर मिले। यदि कोई व्यक्ति लापता हो या भाग गया, चला गया हो तो उस व्यक्ति के पहिने हुए वस्त्र में इस यन्त्र को बाँधकर खूँटी में लटका दें और सुबह-शाम दोनों समय सात-सात कोड़े अथवा बेंत मारे तो वह व्यक्ति वापस आ जावेगा और भी अनेकों कार्यों पर सिद्ध होगा।

११—सर्वव्याधिहरण—वीसा यन्त्र



निर्माण विधि—अमावस्या के दिन इस यन्त्र को अष्टगंध की स्याही में भोजपत्र के ऊपर पीपल वृक्ष की डाल की लेखनी बनाकर उसी में लिखे, फिर हनुमान जी के दाहिनी ओर नीचे रखकर पूर्णिमा तक बराबर धूप-दीप-नैवेद्य से पूजन करे और निम्नलिखित मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करता रहे।

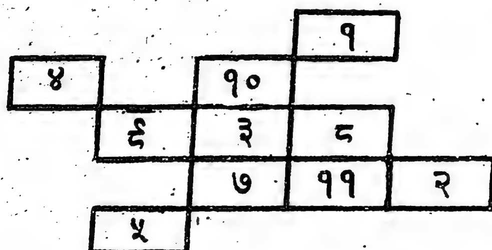
मंत्र—आओ वीर हनुमंता; अंजनी के पूता, थोर जागरित कीजै, मसान बांध, सातो जोगनी बांध, बावनवीर बांध, अहो वीर लक्ष्मण वीर, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचः ।

उपरोक्त मन्त्र से १०८ बार प्रतिदिन, अमावस्या से पूर्णिमा तक अभिमंत्रित करे और गूगुल की धूनी देता रहे, फिर उसे १५वें दिन (पूर्णिमा को ही) चांदी अथवा ताँबे के यन्त्र में भरकर गले अथवा दाहिनी भुजा पर धारण करें, इससे सभी प्रकार की बाधायें, बच्चों के सभी प्रकार के रोग, जो स्त्री, पुरुष, बच्चे आदि डरते हों, जिन स्त्रियों के गर्भपात हो जाता हो, मुकदमा में विजय, शत्रु विजय, राजदरबार अधिकारीगण आदि जगहों में मान-सम्मान आदि कार्य सिद्ध होते हैं। यह मेरा परीक्षित है ।

१२—अद्भुत चमत्कारिक—वीसा यंत्र

वसुरन्ध्र हुताशन नेत्र मुनौ प्रथमादिपति ।
दिक् वेद रसा विंशति यन्त्र मिदम् शुभम् ।।

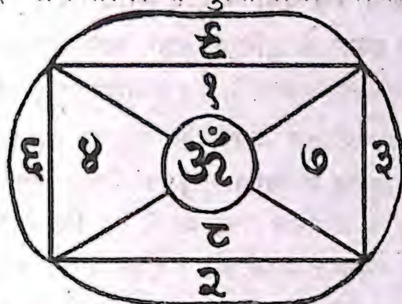
वसु सिद्धियाँ ८, अन्ध्र-निधियाँ ६, हुताशन (अग्नि) ३ नेत्र २, मुनि (सप्तर्षि) ७, प्रथमाधिपति रुद्र ११, दिग्दिशाधिपति १०, वेद ४, रस ६-इन नामांकों पर आधारित यंत्र का नाम वीसा यन्त्र है।



विधि—इस यन्त्र को शुभ मुहूर्त में अष्टगंध से स्वर्ण की निब से भोजपत्र पर लिखकर स्वर्ण अथवा चांदी के यन्त्र में धारण करना

चाहिये। अथवा इस यन्त्र को स्वर्ण पत्र, या चाँदी के पत्र पर अंकित करा कर २१ दिन तक, उपरोक्त मन्त्र से १०८ बार प्रतिदिन के अनुपात से अभिमन्त्रित करना और धूप-दीप नैवेद्य आदि से पूजन करना चाहिये और शुभ मुहूर्त में धारण करें। इससे अभीष्ट लाभ, कार्य सिद्धि, धन धान्य वृद्धि, पुत्र प्राप्ति, विवेक, बुद्धि, यश, मान प्रतिष्ठा, पराक्रम आदि सैकड़ों आश्चर्यजनक लाभ होते हैं। परीक्षित है।

१३—त्रय-तापों से मुक्तिदाता—वीसा यन्त्र



विधि—वर्तमान यन्त्र को स्वर्ण पत्र अथवा रजत (चांदी) के पत्र पर शुभ दिन, मुहूर्त में अमावस्या के दिन अंकित करावे, तदुपरान्त इसे स्नान आदि कराकर पञ्चोपचार पूजन धूप-दीप आदि देकर अपने पूजनालय अथवा तन्त्रालय में लाल रंग के वस्त्र में रखकर नित्य प्रति इसकी पूजा व दर्शन करना चाहिये। दैहिक, दैविक, भौतिक, त्रयतापों से मुक्ति व परब्रह्म परमेश्वर में व्यक्ति लीन होगा। बड़ा ही उपयोगी यन्त्र है। इसके सम्बन्ध में जितना भी लिखा जावे थोड़ा है।

नोट—जो सज्जन उपरोक्त वीसा यन्त्रादि का निर्माण कर सकने में असमर्थ हों वे लेखक से पत्र व्यवहार द्वारा परामर्श करें। पत्रोत्तर के लिए डाक टिकट भेजना आवश्यक होगा।

पता—पं० परमेश्वर प्रसाद त्रिपाठी, निर्भय
निर्भय निवास, ७६६, वाई ब्लाक
किदवई नगर-कानपुर

।। नवग्रह जन्य दोष-उत्पात शान्ति के यन्त्र-मन्त्रादि ।।

इस जन्म तथा उस जन्म के असत् कर्मों के फलस्वरूप नौ ग्रहों की अशुभ दृष्टि से मानव को नाना प्रकार के अनिष्टों की उपलब्धि होती है, अथवा यों मानिये कि ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आकाश मण्डल में स्थित् ग्रह पिण्डों के प्रभाव से उत्पन्न उत्पात दो प्रकार के होते हैं।

१–सम्पूर्ण राष्ट्र पर प्रभाव डालने वाले ग्रह–उत्पात-गृह युद्ध-भूकम्प, तूफान, रक्त-वर्षा, केतूदय आदि। (२) व्यक्ति विशेष पर होने वाले नाना प्रकार के अनिष्ट, रोग, कष्ट, उत्पातादि। यह दोनों प्रकार के उत्पात नाना प्रकार के ग्रह युतियों द्वारा परिलक्षित होते हैं, जिनका विवेचन ज्योतिष शास्त्र के संहिता स्कन्ध, जातक स्कन्ध, वाराही संहिता आदि में विस्तार पूर्वक लिखा गया है।

तंत्र शास्त्र के अन्तर्गत यन्त्र-मन्त्रों का विशिष्ठ महत्व है। इस विषय पर कई स्वतन्त्र ग्रन्थ भी निर्मित किये गये हैं, मगर तन्त्र मन्त्र-गुरु परम्परा वैशिष्ट्य् के कारण गुह्य हैं, इसलिये सर्वसाधारण बहुत से विषयों से अपरिचित रहते हैं। हमने परम्परा प्राप्त ग्रह दोष निवारणार्थ यन्त्रों आदि का विशेष अनुभव किया है, जिन्हें जन साधारण के लिये बहुत ही सरल रीति से यहाँ उद्धृत कर रहे हैं। इन यन्त्रों को प्रारम्भ में सिद्ध करना पड़ता है, तदुपरान्त ही कोई व्यक्ति इन्हें किसी दूसरे को बनाकर दे सकता हैं। इन्हें सिद्ध करने की विधि संक्षेप में आगे लिख रहे हैं।

विधि–प्रारम्भ में जिस ग्रह मन्त्रदि को सिद्ध करना हो उस ग्रह के देवता के वार (दिन) व्रतोपवास करें और विधिवत आठ हजार या (कलौ चतुर्गुणं प्रोक्तं) ३२ हजार (ग्रह सम्बन्धित) मन्त्रों का जप-हवनादि प्रतिदिन दो हजार के हिसाब से करें, फिर उस ग्रह की काल होरा में यन्त्र निर्माण कर उसका पूजनादि करें, इसके पश्चात् अभिलषित व्यक्ति को उपवास एवं यन्त्र पूजन कराकर यंत्र धारण

करना चाहिये और ग्रहण-होली-दीपावली-विजयादशमी (दशहरा) रामनवमी, अमावस्या, वसंत पंचमी आदि शुभ ग्रह नक्षत्रों में यंत्रों का पूजन करना चाहिये व जिस ग्रह का यन्त्र हो उसके वार (दिन) में प्रातः पूजन, धूप-दीप आदि करते रहना चाहिये तो अति उत्तम होगा।

स्मरणीय–(१) यन्त्रों को भोजपत्र पर अष्टगन्ध, केशर अथवा रक्त चन्दन (लालचन्दन) या केशर मिश्रित सफेद चन्दन आदि से अनार या तुलसी की कलम (लेखनी) अथवा सोने (स्वर्ण) की निब (कलम) से ही लिखना चाहिये।

(२) यन्त्र स्वर्ण अथवा रजत (चाँदी) के पत्र पर भी अंकित हो सकतें हैं।

(३) यन्त्रों को ताँबा-चाँदी अथवा सोने के ताबीज (खोल) में भरकर धारण करना चाहिये।

(४) इन यन्त्रों का निर्माण यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण ही कर सकते हैं।

(५) सूर्य यन्त्र, चन्द्र, मंगल, गुरु (बृहस्पति) शुक्र इन यन्त्रों को लाल डोरे में, बुध यन्त्र को हरे डोरे में, शनि-केतु-राहु के यन्त्रों को काले रंग के डोरे में पिरोकर दाहिनी भुजा अथवा गले में धारण करना चाहिये।

अष्टगन्ध बनाने की विधि—असली केशर-कस्तूरी-कपूर-काला अगर-गोरोचन-हाथी का मद, सफेद चन्दन तथा लाल चन्दन इन–सब को पीस लें और घोलकर रोशनाई बना लें। हाथीमद के अभाव में पिसी हल्दी लेनी चाहिये।

नवग्रहों के यंत्रादिकों की विस्तृत जानकारी।यंत्रादि निम्न प्रकार दिये जा रहे हैं। "यंत्रचिन्तामणि से"।

। १–रवि–(सूर्य) यन्त्र-मन्त्रादि ।

रवि यन्त्रम्		
६	१	८
७	५	३
२	९	४

रसेंदुनागा नगबाणरामा युग्मांबवेदा नवकोष्ठ मध्ये । विलिख्य धार्यं गदनाशनाय वदन्ति गर्गादिमहामुनीन्द्राः ॥

पुराणोक्त रवि-मंत्र–

ह्रीं जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

टीका–जपा (अढौल) के फूल के समान जिन सूर्य भगवान की कान्ति है और जो 'कश्यप' से उत्पन्न हुये हैं, अन्धकार जिनका शत्रु है, जो सभी प्रकार के पापों को नष्ट करते हैं, उन सूर्य-भगवान को मैं प्रणाम करता हूँ ।

वैदिक रवि-मंत्र–

ॐ आकृष्णेनेत्यस्य मन्त्रस्य हिरण्यस्तूः सविता त्रिष्टुप् सूर्य प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।
ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतंमर्त्यं च ।
हिरण्ययेन सवितार थेनादेवोयाति भुवनानिपश्यन् ॥

तन्त्रोक्तरविमन्त्र–

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ।

अथवा– ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः ।

जपसंख्या—सात हजार—कलियुग में २८ हजार।

सूर्य-गायत्री मन्त्र—

ॐ सप्त तुरंगाय विद्महे सहस्य किरणाय धीमहि तन्नोरविः प्रचोदयात्।

अथवा—ॐ आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्॥

सूर्य—मध्यभाग, वर्तुल मंडल, अंगुल १२, कलिंग देश, कश्यप गोत्र, रक्तवर्ण, सिंह राशि का स्वामी, वाहन सप्ताश्व, समिधा मदार।

दानद्रव्य—माणिक्य (माणिक) सोना, तांबा, गेहूँ, घी, गुड़, लालकपड़ा, लालफूल, केशर, मूंगा, लालगऊ, लालचन्दन, दान का समय अरुणोदय, (सूर्योदय काल)।

धारण करने का रत्न—माणिक्य (माणिक रत्न)।

यदि रत्न धारण करने में असमर्थ है तो जड़ी—बिल्व पेड़ (बेल) की जड़ को गले अथवा भुजा में धारण करना चाहिये।

२——चन्द्र (चन्द्रमा) का यन्त्र—मन्त्रादि

चन्द्र यन्त्रम्		
७	२	९
८	६	४
३	१०	५

नगद्विनंदा गजषट् समुद्रा शिवाक्षदिग्बाण बिलिख्यकोष्ठे।
चंद्रकृतारिष्टविनाशयनाय धार्यं मनुष्यैः शशियंत्रमीरितम्॥

पुराणोक्त चन्द्र-जप मन्त्र—

दधि, शंख, तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम्॥

अर्थ-दही, शंख अथवा हिम के समान जिनकी दीप्ति है और उत्पत्ति क्षीरसागर (समुद्र) से है, जो शिव (शंकर भगवान्) के मुकुट

पर अलंकार की तरह विराजमान रहते हैं, मैं उन चन्द्रदेव को प्रणाम करता हूँ।

वैदिक चन्द्र मंत्र–

ॐ आप्याय गौतमः सोमो गायत्री सोमप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सगथे॥

तन्त्रोक्त मंत्र–

श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः। अथवा–ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

जपसंख्या–११ हजार, कलियुग में ४४ हजार।

सोम गायत्री मन्त्र–

ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय, धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।

चन्द्र–अग्निकोण, चतुरस्र मण्डल, अगुल ४, यमुनातटवर्ती देश, अत्रिगोत्र, श्वेत वर्ण, कर्कराशि का स्वामी, वाहन हीरण, समिधा पलाश

दान द्रव्य–मोती, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दही, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, शंख, कपूर, सफेद बैल, सफेद चन्दन। दान का समय–संध्या काल। (गोधूलि वेला)

धारण करने का रत्न–मोती या चन्द्रकान्त मणि (मूनस्टोन), अभाव में सीप अत्यधिक प्रभाव में। जड़ी–खिरनी वृक्ष की जड़ को, सफेद कपड़े में सीकर गले अथवा भुजा में धारण करें।

मंगल का यन्त्र-मंत्रादि

गजाग्निदिश्याथ नवाद्रिबाणा पातालरुद्रारससंविलिख्य।
भौमस्य यंत्रं क्रमशो विधार्य मनिष्टनाशं प्रवदन्ति गर्गाः॥

भौम-यन्त्रम्		
८	३	१०
९	७	५
४	११	६

पुराणोक्त भौम-जप मंत्र—

ह्रीं धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्-कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥

अर्थ—पृथ्वी के उदर से जिनकी उत्पत्ति हुई है, विद्युत्-पुञ्ज (बिजली) के सदृश (समान) जिनकी कान्ति (प्रभा) है, और जो हाथों में शक्ति धारण किये रहते हैं, उन मंगल देव को मैं प्रणाम करता हूँ ।

वैदिक जप मन्त्र—

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः रूपोऽङ्गारको गायत्री, अङ्गारकप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः । (या) ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपाठं रेताठंसि जिन्वति ॥

तंत्रोक्त भौम मंत्र—

क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः । या ॐ हूं श्रीं मङ्गलाय नमः ।

जपसंख्या—१० हजार, कलियुग में ४० हजार ।

भौम-गायत्री मंत्र—

ॐ अङ्गारकाय-विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात् ।

मंगल-दक्षिण दिशा, त्रिकोणमंडल, अङ्गुल ३, अवन्ति देश, भारद्वाज गोत्र, मेष-वृश्चिक का स्वामी, वाहन मेढा, समिधा-खदिर ।

दान द्रव्य—मूँगा, सोना, ताँबा, मसूर, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल कनेर का फूल, केशर, कस्तूरी, लाल बैल, लाल चन्दन ।

दान का समय—सबेरे दो घड़ी तक ।

धारण करने का रत्न—मूँगा, अभाव में, जड़ी-अनन्त मूल, नाग-जिह्वा की जड़, लाल डोरा व कपड़ा में सीकर धारण करना चाहिये ।

ऋणमोचन-मङ्गलस्तोत्रम्

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः ।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः ॥१॥

लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः ।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः ॥२॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः ।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः ॥३॥
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत् ।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात् ॥४॥
धरणीगर्भ-संभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गल प्रणमाम्यहम् ॥५॥
स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः ।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित् ॥६॥
अङ्गारक महाभाग ! भगवन् ! भक्तवत्सल ! ।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय ॥७॥
ऋण-रोगादि-दारिद्र्यं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः ।
भय-क्लेश-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥८॥
अतिवक्त्र दुराराध्यं भोग-मुक्त-जितात्मनः ।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात् ॥९॥
विरञ्चि शक्र-विष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा ।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः ॥१०॥
पुत्र न् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः ।
ऋण-दारिद्र्य-दुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः ॥११॥
एभिर्द्वादशभिः श्लोकैर्यः स्तौति च धरासुतम् ।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनदो युवा ॥१२॥

इति श्री स्कन्दपुराणे भार्गवप्रोक्तं ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

बुध का यन्त्र-मंत्रादि

नवाब्धिरुद्रा दशनागषट्का बाणार्कसप्ता नवकोष्ठयंत्रे ।
विलिख्य धार्यं गदनाशहेतवे वदंति यंत्रं शशिजस्य धीराः ॥

बुध-यन्त्रम्		
९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

पुराणोक्त-बुध-जप-मंत्र—

ह्रीं प्रियङ्ग-कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥

अर्थ—प्रियंगु की कली की भाँति जिनका श्याम वर्ण है, जिनके रूप की कोई उपमा ही नहीं है, उन सौम्य और सौम्यगुणों से युक्त बुध को मैं प्रणाम करता हूँ ।

वैदिक-बुध-मंत्र—

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्व मिष्टापूर्ते सठ सृजेथामयं च ।
अस्मिन्त्सधस्थे ऽअद्ध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

अथवा—ॐ उद्बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुम् बुधप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

ॐ उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समोग्रयिध्वं बहवः संनीलाः ।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावती वसे निह्वये वः ॥

तन्त्रोक्त बुध मंत्र—ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ।

अथवा—ॐ ऐं श्रीं श्री बुधाय नमः ।

जपसंख्या—९ हजार, कलियुग में ३३ हजार ।

बुध-गायत्री मंत्र—ॐ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात् ।

बुध—ईशानकोण, बाणाकार मण्डल, अंगुल ४, मगधदेश, अत्रिगोत्र, पीतवर्ण, मिथुन-कन्या का स्वामी, वाहन सिंह, समिधा-अपामार्ग (चिचिड़ा) (लटजीरा) ।

दानद्रव्य—पन्ना, सोना, कांसी, मूँग, खाँड़, घी, हरा कपड़ा, सफेद फूल, हाथी दाँत, कपूर, शस्त्र, फल । दान का समय—सबेरे ५ घड़ी तक ।

धारण करने का रत्न–पन्ना,अभाव में जड़ी-विधारा(वृद्धमूल)। हरे रंग के डोरे या कपड़े में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

बृहस्पति (गुरु) का यन्त्र-मंत्रादि

दिग्बाणसूर्या शिवनन्दसप्ता षड्विश्वनागाः क्रमतोऽककोष्ठे। विलिख्य धार्यं गुरुयंत्रमीरितं रुजाविनाशाय वदंति तद्बुधा॥

गुरोयन्त्रम्		
१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

पुराणोक्त गुरु-जपमंत्र–

ह्रीं देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥

अर्थ–जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, कञ्चन (स्वर्ण) के समान जिनकी प्रभा हैं और जो बुद्धि के अखण्ड भण्डार तथा तीनों लोकों के प्रभु हैं, उन बृहस्पति जी को मैं प्रणाम करता हूँ।

वेदोक्त गुरु मंत्र–

ॐ बृहष्पते अतीत्यस्य गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्, बृहस्पति-प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
मद्दीदयच्छवसऽर्त्तप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

तन्त्रोक्त-गुरु-मंत्र–ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः। अथवा-ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।

जपसंख्या-१९ हजार, कलियुग में ७६ हजार।

गुरु-गायत्री-मंत्र–ॐ आङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि, तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

गुरु–उत्तर दिशा, दीर्घ चतुरस्र मण्डल, अंगुल ६, सिन्धु देश, अंगिरा गोत्र, पीत वर्ण, धनु, मीन का स्वामी, वाहन-हाथी, समिधा-पीपल ।

दानद्रव्य–पुखराज, सोना, काँसी, चने की दाल, खाँड़, घी, पीला फूल, पीला कपड़ा, हल्दी, पुस्तक, घोड़ा, पीला फल ।

दान का समय–संध्या काल ।

धारण करने का रत्न–पुखराज नग । अभाव में जड़ी-भारंगी (बमनेठी), पीले डोरे या कपड़े में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें ।

शुक्र का यंत्र-मंत्रादि

रुद्रांगविश्वा रविदिग्गजाख्या नगामनुश्चांकक्रमाद्विलेख्या । भृगोः कृतारिष्टनिवारणाय धार्यं हि यंत्रं मुनिना प्रकीर्तिता ॥

शुक्रयन्त्रम्		
११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

पुराणो-शुक्र मंत्र–

ह्रीं हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥

अर्थ–तुषार, कुन्द अथवा मृणाल के समान जिनकी आभा (शोभा) है और जो दैत्यों के परम गुरु हैं, उन सब शास्त्रों के अद्वितीय वक्ता श्री शुक्राचार्यजी को मैं प्रणाम करता हूँ ।

वेदोक्त-शुक्र मंत्र–ॐ शुक्रं ते इत्यस्य मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः शुक्रो देवतास्त्रिष्टु छन्दः, शुक्रप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

ॐ शुक्र ते अन्यद्यजन ते अन्यांद्विषुरुपे अहनीद्यौरिवासि । विश्वादि माया अवसिस्वधावोधद्रा ते पूषन्निहरातिरस्तु ।

तन्त्रोक्त-शुक्र मंत्र—द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः । अथवा-ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः ।

जपसंख्या-१६ हजार, कलियुग में ६४ हजार ।

शुक्र-गायत्री मंत्र—ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ।

शुक्र—पूर्व दिशा, षट्कोण मण्डल, अङ्गुल ९, भोजकट देश, भृगु गोत्र, श्वेत वर्ण, वृषभ (वृष), तुला का स्वामी, वाहन अश्व, समिधा उदुम्बर ।

दानद्रव्य—हीरा, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दूध, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, सुगन्ध दही, सफेद घोड़ा चन्दन । दान का समय—अरुणोदय काल (सूर्योदय काल) ।

धारण करने का रत्न—हीरा । अभाव में जड़ी-मंजीठ की जड़ को सफेद कपड़े या डोरे में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

शनि का यंत्र-मंत्रादि

अर्काब्धिमन्वास्मररुद्रअंका नगाख्य-तिथ्या दश मन्वयन्त्रम् ।
विलिख्य भूर्जोपरि धार्य-विद्वच्छनेः कृतारिष्टनिवारणाय ॥

शनियन्त्रम्		
१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

पुराणोक्त शनि-जपमंत्र—

ह्रीं नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्ड-संभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥

अर्थ—नील अञ्जन के समान जिनकी दीप्ति है और जो सूर्य भगवान् के पुत्र तथा यमराज के बड़े भ्राता हैं, सूर्य की छाया से जिनकी उत्पत्तिहुई है, उनशनैश्चर(शनि)देवता को मैं प्रणाम करता हूँ ।

वैदिक शनि मंत्र—ॐ शमग्निरित्यस्यरिविठिः ऋषिः शनैश्चर प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छं नस्तपतु सूर्यः ।
शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः ॥

तन्त्रोक्त-शनि मंत्र—प्रां प्रीं प्रौं शनये नमः । अथवा—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ।

जपसंख्या—२३ हजार, कलियुग में ९२ हजार ।

शनि-गायत्री मंत्र—ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नः शौरिः प्रचोदयात् ।

शनि—पश्चिम दिशा, धनुषाकार मण्डल, अङ्गुल २, सौराष्ट्र देश, कश्यप गोत्र, कृष्ण वर्ण, मकर-कुम्भ राशि का स्वामी, वाहन-गीध, समिधा-शमी ।

दानद्रव्य—नीलम, सोना, लोहा, उड़द, कुलथी, तेल, काला कपड़ा, काला फूल, कस्तूरी, काली गौ, भैस, खड़ाऊँ । दान का समय—मध्याह्न काल ।

धारण करने का रत्न—नीलम अथवा कालाश्वपदीय अँगूठी (काले घोड़े के पैर की नाल की अँगूठी), शनिवार के दिन शनि के हौरा में बनवा कर उँगली में धारण करना चाहिये । अभाव में जड़ी-अम्लवेत (श्वेत विरैला) की जड़ को काले कपड़े या डोरे में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें ।

राहु का यंत्र-मंत्रादि

विश्वाष्टतिथ्या मनुसूर्यदिश्या खगामहींद्रैकदशांककोष्ठे ।
विलिख्य यंत्रं सततं विधार्यं राहोः कृतारिष्टनिवारणाय ॥

राहुयन्त्रम्		
१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

पुराणोक्त-राहु मंत्र–

ह्रीं अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहीकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।

अर्थ–जिनका केवल आधा शरीर है तथा जिनमें महान् पराक्रम है, जो चन्द्र और सूर्य को भी परास्त कर देते हैं और सिंहिका के गर्भ से जिनकी उत्पत्ति हुई है, उन राहु देवता को मैं प्रणाम करता हूँ ।

वैदिक-राहु मंत्र–

ॐ कयान इत्यस्य मन्त्रस्य वामदेवो राहुर्गायत्री,
राहुप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठयावृता ।।

तंत्रोक्त-मंत्र–भ्रां भ्रीं सौं सः राहवे नमः । अथवा–ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः ।

जपसंख्या–१८ हजार, कलियुग में ७२ हजार ।

राहु-गायत्री मंत्र–

ॐ शिरो रूपाय विद्महे, अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात् ।।

राहु–नैर्ऋत्य कोण, सूर्पाकार मण्डल, अङ्गुल १२, राठीनापुर (मलयदेश), पैठीनस गोत्र, कृष्णवर्ण, वाहन-व्याघ्र, समिधा-दूर्वा (दूब) ।

दान द्रव्य–गोमेद, सोना, सीसा, तिल, सरसों का तेल, नीला कपड़ा, काला फूल, तलवार, कम्बल, घोड़ा, सूप । दान का समय–रात्रि ।

धारण करने का रत्न–सीलोनी गोमेद नग । अभाव में जड़ी–सफेद चन्दन ।

केतु का यंत्र-मंत्रादि

मनुखेचर-भूपातिथि-विश्व-शिवा दिग्सप्तादशसूर्यमिता ।
क्रमतो विलिखेन्नवकोष्ठमिते परिधार्य नरा दुःखनाशकराः ।।

केतोर्यन्त्रम्		
१५	६	१६
१४	१३	११
१०	१७	१२

पुराणोक्त केतु मंत्र–

ह्रीं पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह-मस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मक घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।

अर्थ–पलाश के फूल की तरह जिनकी लाल दीप्ति है और जो समस्त तारकाओं में श्रेष्ठ माने जाते हैं, जो स्वयं रौद्र रूप और रौद्रात्मक हैं, ऐसे घोर रूप वाले केतु को मैं प्रणाम करता हूँ ।

वैदिक-केतु मंत्र–ॐ केतुं कृण्वन्नित्यस्य मन्त्रस्य मधुच्छन्दा ऋषिः, केतुर्देवता गायत्रीछन्दः केतुप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ।।

तन्त्रोक्त-मंत्र–स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः। अथवा–ॐ ह्रीं केतवे नमः ।

जपसंख्या–१८ हजार, कलियुग में ७२ हजार ।

केतु-गायत्री मंत्र–ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात् ।

केतु–वायव्य कोण, ध्वजाकार मण्डल, अङ्गुल ६, अन्तर्वेदी (कुश) देश, जैमिनी गोत्र, धूम्र वर्ण, वाहन कबूतर, समिधा-कुशा ।

दान द्रव्य–लहसुनिया, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूमिल कपड़ा, धूमिल फूल, नारियल, कम्बल, बकरा शस्त्र । दान का समय–रात्रि ।

धारण करने का रत्न–लहसुनियाँ नग या लाजवर्त नग, अभाव में जड़ी–असगन्ध की जड़ी को काले कपड़े या डोरे में गले अथवा दाहिनी भुजा में धारण करें ।

नवग्रहों का यंत्र-मंत्रादि

जिन व्यक्तियों के कई ग्रह अरिष्ट चल रहे हों, उन्हें चाहिये कि ग्रहण, होली, दीपावली, विजयादशमी, दशहरा, रामनवमी, अमावस्या, नागपंचमी, वसंत पंचमी आदि शुभ मुहूर्तों में विधि-विधान पूर्वक यंत्रों का निर्माण, भोजपत्र पर अष्टगन्ध की स्याही से पूरा विधान ऊपर नवग्रहों के यंत्रों में लिखा जा चुका है। निर्माण करके निम्नलिखित नवग्रह स्तोत्र से कम से कम ६६ हजार मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित करके विधि-विधान पूर्वक धारण करने से नवग्रह दोषों की पीड़ा शान्त होती है।

नवग्रहयन्त्रम्			
अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

नवग्रहयन्त्रम्			
६६	६६	६६	६६
६६	६६	६६	६६
६६	६६	६६	६६
६६	६६	६६	६६

नवग्रहस्तोत्रम्

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥१॥
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥२॥
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत् — कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥३॥
प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥४॥
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।

बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥५॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥६॥
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥७॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥८॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ॥
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥९॥
इति व्यासमुखोद्‌गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥१०॥
नर-नारी-नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम् ।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥११॥
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ॥१२॥

इति नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

नोट—जो महानुभाव, नवग्रहों के यंत्र व नवग्रह यंत्र विधि-विधान पूर्वक न बना सकें वे महानुभाव हमारे तंत्रालय से प्रत्येक ग्रहों के यंत्र-पत्र लिखकर डाक द्वारा मँगवा सकते हैं। नवग्रहों में से प्रत्येक ग्रह के यंत्र के पूजन, तंत्र सामग्री आदि की न्योछावर ११) है और नवग्रह यंत्र की ३१) है, डाक-व्यय पृथक् लगेगा।

विशेष सूचना—यंत्र मँगाने वाले महानुभावों को पत्र में अपना पूरा पता स्पष्ट रूप से लिखें और जिसके लिये यंत्र मंगाना हो, उसका नाम अवश्य लिखें। पत्र आने के कम से कम १५ दिन बाद यंत्र भेजा

जायेगा। यंत्र का पूरा मूल्य मनीआर्डर द्वारा आना परमावश्यक है और सभी प्रकार के तंत्रादि कार्यों के लिये जबावी पत्र भेजकर ही पत्र-व्यवहार करें।

पता—यंत्र-मंत्र-तंत्र-ज्योतिष संस्थान।

"निर्भय" निवास, ७६६ वाई ब्लाक, किदवई नगर, कानपुर।

अशुभ फलकारी ग्रहों के उपाय

जिस समय कोई अशुभ ग्रह आप को अशुभ फल दे रहा हो, उसकी शान्ति हेतु प्राचीन काल के महर्षियों-विद्वानों ने उसके यंत्र-मंत्र-तंत्र आदि का जपानुष्ठान व दानादि का विधान किया है, जो आपको उपरोक्त नवग्रह जन्य दोष शान्ति आदि का पूरा विधान जप-संख्या आदि विस्तृत रूप से लिखकर समझाया गया है। मंत्र-जपादि स्वयं अथवा किसी कर्मनिष्ठ यज्ञोपवीत धारी ब्राह्मण से करावें।और जो महानुभाव असमर्थ हों वे सब ग्रहों के दोष शान्त्यर्थ सामान्य औषधि से स्नान करें।

औषधि स्नान—लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिल्ला, कंगुनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी लोध, सर्वोषधि * इन औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सभी ग्रहों की पीड़ा नाश होती है।

सभी ग्रहों के दुष्ट दोष नाश के सबसे सुलभ उपाय है, पीपल वृक्ष पर जल, दीपदान तथा गौ और ब्राह्मश पूजा आदि करने से ग्रहों के दोष नाश होते है। जैसे—

मूलमंत्र—मन्दवारे तु येऽश्वत्थं प्रातरुत्थाय मानवाः।
आलभन्ते च तेषां वै ग्रहपीडां व्यपोहतु॥
यथा ग्रहो द्विजस्तद्वद्विज्ञेयो वेदपारगः।
तोपयन् मृदुवस्त्राद्यैस्तुष्टमेनं विसर्जयेत्॥
कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर ! ग्रहापापहरं परम्॥

एकश्लोकी नवग्रहस्तोत्रम्

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

मेरे परीक्षित कुछ यंत्र

हम देख रहे हैं तथा प्रायः बहुत लोगों से सुनने में आता है कि अमुक मंत्र सिद्ध किया मगर सफलता नहीं मिली, यंत्र-मंत्र-तंत्रादि झूठे हैं, आदि। हम ऐसे महानुभावों को विश्वास दिलाते हैं कि मंत्रों आदि की आराधना में शास्त्र व निम्न बातों का ध्यान रक्खेंगे तो मंत्रों द्वार शत-प्रतिशत सफलता मिलेगी।

यः शास्त्रविधिमृत्सृज्य वर्तते काम-कारतः।
न स सिद्धिमवांप्नोति न सुखं न परां गतिम्॥

---

* सर्वौषधि—कूट-जटामांसी, दोनों हल्दी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन, वच, चम्पक और नागर मोथा ये दस औषधि सर्वौषधि है।

इस महावाक्यानुसार शास्त्र की विधि के अनुसार पूजन-अर्चन आदि करना चाहिये। मनमाने ढंग से ऊटपटांग करना या कराना हानिप्रद होता है, लाभकारी नहीं। प्रयोग करने या कराने के ममय शुभमुहूर्त, चन्द्र-तारा-नक्षत्रादि बलों को दिखाकर अनुष्ठान-पुरश्चरण आदि करना चाहिये। प्रयोग कराते समय किसी सिद्ध पीठ-देवालय, सिद्ध-स्थान, नदी तट आदि के स्थान पर सफाई लिपवा-पुतवा कर अनुष्ठान आरम्भ करें और अनुष्ठान-अवधि में निम्न बातों का भी ध्यान रक्खें। (१) मंत्रों आदि पर पूर्ण विश्वास और श्रद्धा रक्खें। (२) चित्त शान्त रक्खें, मन में अशांति न आने दें। (३) मंत्र जपते समय मन इधर-उधर डाँवाडोल न हो (चित्त भटके नहीं)। (४) साधनों के समय भयभीत न हों। (५) अपने मंत्र जपने या इष्ट आदि का भेद भूलकर भी किसी अन्य को न दें। (६) जब

तक अनुष्ठान पूरा न हो जावे तब तक वह स्थान न बदलें। (७) जिस मंत्र का जैसा विधान शास्त्रों में है, उसी के अनुसार ही करें अन्यथा सफलता न मिलेगी। (८) अनुष्ठान प्रारम्भ के समय से समाप्ति तक, दीपक, धूप दानी, आसनी (आसन), माला, वस्त्रादि का परिवर्तन न करें। (९) जहाँ तक हो भोजन दिन में एक बार करें, तपस्या से ही भगवान् मिलते हैं। (१०) जब तक मंत्र-जाप चले तब तक मादक पदार्थों का सेवन न करें। (११) भूमि-तरवत (चौकी) आदि पर शयन करें। (१२) वस्त्रों को प्रतिदिन धोकर सुखा दिया करें। (१३) स्नान-ध्यान के बाद ही जपानुष्ठान किया करें। (१४) मस्तक सूना न रक्खें, भस्म-चन्दन, तिलक या सिन्दूर आदि लगाये रहें। (१५) जब तक जपानुष्ठानादि चले, तब तक विशुद्ध घी या सरसों के तेल का दीपक प्रज्वलित रक्खें। (१६) मंत्र जपते समय शिखा (चोटी) में गाँठ जरूर लगावें। (१७) साधक-पंडित-यजमान जब तक अनुष्ठान चले तब तक संयमी रहें (जितेन्द्रिय होकर रहें)। (१८) बार-बार आसन न बदलें, जप-समाप्ति के बाद हवन करें तथा श्रद्धानुसार ब्राह्मण भोजन करावें, तभी कार्य सिद्ध होगा।

नोट—यदि किसी पण्डित द्वारा करावें तो प्रयोग-विधि आदि का ज्ञाता, उदार-दयालु-परोपकारी-संतोषी-देवाराधक योग्य विद्वान् ही से करावें। कुछ प्रत्यक्ष मंत्र लिखे जा रहे हैं।

नोट—इसका पूर्ण विधान 'महामृत्युञ्जय जप विधान' नामक पुस्तक में देखें।

श्री महामृत्युञ्जय जप-मंत्र—

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। भूर्भुवः स्वरोंजूंसः ह्रौं ॐ॥

पुराणोक्त-मृत्युञ्जय मंत्र—

मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे।
अमृतेशाय सर्वाय महादेवाय ते नमः॥

इस मंत्र का १ माला जप करने पर शिवजी प्रसन्न होकर समस्त दुःख दूर कर देते हैं। प्रत्येक सोमवार को व्रतोपवास करते हुए शिव-मंदिर में १०००० जप करें तो दुःख-दारिद्रय दूर होकर धन की प्राप्ति होती है।

लघु मृत्युञ्जय मन्त्र–

ॐ जूं सः अमुकं पालय-पालय सः जूं ॐ।

नोट–अमुक के स्थान पर उसका नाम लेवे, जिसके लिये प्रयोग किया जावे। इस मंत्र से सर्व व्याधि नाश होती है और रोगों से मुक्ति मिलती है। यह अमोघ मंत्र है। शुद्ध आसन, कुशासन पर पूर्वाभिमुख बैठकर ५ माला प्रतिदिन जप करने से शरीर स्वस्थ एवं निरोग होता है।

त्र्यक्षर मृत्युञ्जय मन्त्र–ॐ हौं जूं सः।

कुशासन पर पूर्वाभिमुख किसी देवालय आदि में प्रारम्भ में प्रदोष या किसी सोमवार से प्रारम्भ करें। कम-से-कम ५-७ या ६ माला प्रतिदिन के हिसाब से ४० दिन बिना नागा करने से सभी प्रकार की विघ्न-बाधाओं व रोगों का निवारण होता है।

शुक्रोपासित मृतसंजीवनी मंत्र–

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे-सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

इस अमोघ मंत्र के संविधान-जप से मृत्युशय्या पर पड़ा प्राणी भी नवजीवन का लाभ प्राप्त करता है। विधि–मिट्टी की पार्वती सहित शिव प्रतिमा बनाकर पार्थिव-पूजन करे, तदुपरान्त यजमान के निमित्त संकल्प कर कम से कम २१ माला का नित्यप्रति जप करें और दीप जलाते रहें तो कष्ट क्रमशः दूर होने लगता है। जप ५०००० (पचास हजार करें) न्यूनाधिक में कम से कम १०००० (दस हजार) परमावश्यक है। स्वस्थ व्यक्ति यदि नित्य नियम पूर्वक १ माला इस

मंत्र का जप करता रहे और महाशिवरात्रि को सविधि पूजन व हवनोपरान्त रात्रि भर जागरण कर २१ माला जप करे तो दु:साध्य बीमारी और अकाल मृत्यु के भय से सुरक्षित रहेंगे ।

शत्रुशमनार्थ बगलामुखी मन्त्र–

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।

इन्हें पीताम्बरा भी कहते हैं । इसका जप, अनुष्ठान कोरे वस्त्र-पीले रंग में रंगे धारण करना चाहिये, पूजनोपरान्त वस्त्रों को धोकर सुखा देना चाहिये, जप हरिद्रा (हल्दी की) माला से करना चाहिये । अनुष्ठान में सवालक्ष जप तथा दशांश हवन करना चाहिये । यदि दशांश हवन न कर सकें तो जप संख्या बढ़ा देनी चाहिये । इसके हवन में नीम अथवा बैर की समिधा (लकड़ी) तथा चम्पा के फूल से हवन करें तो प्रबल शत्रु का शमन होता है, शत्रु परास्त हों–कोर्ट, कचहरी से मुक्ति और शत्रु पर विजय निश्चित मिलती है।तथा त्रिमधु (शर्करा-मधु-घी) तिल से हवन करने से राजा वश में होता है और त्रिमधु व लवण से हवन करने पर आकर्षण होता है । तैल व नीम की पत्ती से विद्वेषण होता है । हरताल, लवण व हरिद्रा (हल्दी) से हवन करने पर शत्रु-स्तम्भन होता है । गृद्ध, काक पक्ष (पंखों) से सरसों के तेल के साथ भिलावा से चिताग्नि में हवन करे तो शत्रु का उच्चाटन होता है । दूर्वा, गुर्च, लाजा, त्रिमधु से हवन करे तो रोगों का नाश होता है । इसी तरह इसमें सैकड़ों प्रयोग हैं । विस्तृत जानकारी हेतु ठाकुरप्रसाद ऐण्ड सन्स बुक्सेलर-द्वारा प्रकाशित 'बगलोपासन-पद्धति' नामक पुस्तक देखें ।

पुत्रप्रद-संतान-गोपाल मन्त्र–

ॐ क्लीं देवकीसुतगोविन्द वासुदेव जगत्पते ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीं ओम् ।।

इस मंत्र से सवालक्ष का पुरश्चरण करना चाहिये और खीर-पंचामृत, कमलगट्टा, जीरा, वैजयन्ती, शतावरी से दशांश हवन, तर्पण व मार्जनादि करें तथा योग्य १२ ब्राह्मणो को भोजनादि कराकर उनसे आर्शीवाद लें । तत्पश्चात् पुरोणोक्त-हरिवंश पुराण का श्रवण करें और कन्यादान करें, तो निश्चय ही पुत्र की प्राप्ति होगी और यदि पुत्र होकर मर जाते हों तो इसी मंत्र में 'देहि' के स्थान पर "रक्ष मे तनयं" ऐसा कहें, इससे बहुतों को सफलता मिली है और भगवत्कृपा से आगे भी होगी ।

नोट—सर्वप्रथम किसी योग्य ज्योतिषी से अपनी तथा स्त्री की जन्मपत्री दिखला लें, यदि पंचम भाव खराब है या मंगलादि क्रूर ग्रह बैठे हैं या बन्ध्या-काकबन्ध्या आदि योग हैं तो पुत्र-प्राप्ति नहीं ही होगी । विस्तृत जानकारी हेतु हमारी 'पुत्रग्रह संतान-दाता' नामक पुस्तक देखें ।

रुष्ट होकर भागे व्यक्ति को वापस आने एवं नष्ट वस्तु प्राप्ति का प्रयोग-

भागे व्यक्ति का पहना हुआ, पसीना लगा (बिना धुला) वस्त्र लेकर उस पर अनार की कलम द्वारा रक्त चन्दन से निम्न मन्त्र लिखें, फिर उस वस्त्र को किसी चरखे के छोर पर बाँध दें । नियमित रूप से २१ दिनों तक प्रातःकाल उसी मन्त्र का उच्चारण करते हुए चरखे को विपरीत दिशा में १०८ बार (या आधा घन्टे तक) उल्टा घुमावें । नष्ट वस्तु की पुनः प्राप्ति के लिए प्रतिदिन (१००८ बार) या १० माला सविधि करना चाहिए ।

यस्य स्मरणमात्रेण गतं नष्टं च लभ्यते क्लीं ॐ।

('गतं नष्टं' के स्थान पर व्यक्ति या वस्तु का नामोच्चारण करना चाहिये ।

उत्तम पत्नी की प्राप्ति का मंत्र-प्रयोग—

ॐ ह्रीं पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणीं दुर्गसंसार-सागरस्य कुलोद्भवाम् ह्रीं ॐ ॥

प्रतिदिन स्नान-ध्यानोपरान्त रक्त चन्दन की माला पर इस मन्त्र का अष्टोत्तरशत १०८ बार जप नियमित रूप से करने से एकाध वर्ष में ही उत्तम पत्नी की प्राप्ति से दाम्पत्य जीवन सुखी होता है।

परीक्षा में सफलता एवं विद्या-प्राप्ति का मन्त्र प्रयोग–

ॐ क्लीं बुद्धि देहि यशो देहि कवित्वं देहि देहि मे।
मूढत्वं हर मे देवि त्राहि मां शरणागतम् क्लीं ओम्॥

प्रतिदिन ब्रह्मबेला में स्नान-ध्यानोपरांत रुद्राक्ष या रक्त चन्दन या कमलगट्टे की माला पर मंत्र का १००८ (दस माला) जप करने से विद्या-लाभ में आश्चर्य जनक प्रगति तथा परीक्षा में निश्चित सफलता प्राप्ति होती है।

रोग-बाधा निवारणार्थ मन्त्र प्रयोग–

ॐ ऐं सोमनाथो वैद्यनाथो धन्वन्तरिरथाश्विनौ।
पंचैतान्संस्मरेन्नित्यं व्याधिस्तस्य न बाधते ऐं ॐ॥

इस मंत्र का अष्टोत्तरशत जप रोगी के समीप प्रतिदिन सुबह-शाम जपना चाहिये। दु:साध्य स्थिति में २१ बार मंत्रोच्चारण से जल फूँककर तत्परतापूर्वक रोगी को पिलाने से शीघ्र बाधा दूर होती है। प्रयोगकर्त्ता पूर्ण सात्त्विक व्यक्ति होना चाहिये।

आकस्मिक विघ्न-बाधा के निवारणार्थ गणेश-गायत्री मन्त्रप्रयोग–

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ॐ॥

इस मंत्र का अनुष्ठान श्री गणेशजी के मन्दिर में या उनकी प्रतिमा के समक्ष करना चाहिये। गणेशजी का षोडशोपचार पूजन कर उन्हें नुक्ती के लड्डू का भोग लगाना चाहिये। प्रतिदिन ११ माला यानी ११८८ मंत्र-जप करना चाहिये। अनुष्ठान काल में ब्रह्मचर्यादि यम-नियम के पालन में पूर्ण सावधान रहें।

आर्थिक संकट निवारणार्थ श्री लक्ष्मी-गायत्री मंत्र-प्रयोग–

ॐ ह्रीं महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मी: प्रचोदयात् ह्रीं ओं॥

कमलगट्टा के माला पर अत्यन्त गुप्त रूप से पूर्ण शुद्धतापूर्वक अर्धरात्रि में १००८ जप प्रतिदिन करना चाहिये। दो-तीन मास में ही चमत्कार दिखलाई देगा।

अकाल मृत्यु एवं व्याधि निवारण का सफल प्रयोग–

ओं अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषण:।
कृष्ण: परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविन:॥
सप्तैतान्संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेय तथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतं पूर्णमपमृत्युविवर्जित: ओं॥

काशीविश्वनाथ या मन्दिर की ओर मुख कर व शुद्ध आसन पर बैठ कर १०८ बार इस मंत्र का समाहित चित्त से जप करना चाहिये। इससे शीघ्र ही आधि-व्याधि का निवारण हो जाता है। नियमित जप करने वाले को अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता।

बालारिष्ट निवारण प्रयोग–

ओं क्लीं बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम्।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् क्लीं ओं॥

४० दिन तक इस मंत्र का कम-से-कम १ माला १०८ बार जप नियमित रूप से करने पर जन्म कुण्डली के बालारिष्ट के अशुभ फल का निवारण होता अथवा कोई बालरोग का आक्रमण हो गया हो तो वह भी शीघ्र ही दूर हो जाता है।

संकटमोचन मंत्र-प्रयोग–

ओं हर हरिं हरिश्चन्द्र हनूमन्त हलायुधम्।
पंचकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसंकटनाशनम् ओं॥

आपत्ति-विपत्ति की प्रतिकूल स्थिति में बार-बार इस मन्त्र का स्मरण करते रहना चाहिए। ४१ दिन के विधिवत् अनुष्ठान में निश्चय कार्य सिद्धि होती है।

नोट–विशेष रूप से अपने पाठकों के लिये हमारे तन्त्रालय में सभी प्रकार के इच्छानुकूल यन्त्र शास्त्रोक्त रूप से सिद्ध करके भेज

जाते हैं । पूजन के लिये यन्त्र राज (श्री यन्त्र) जिसकी तैयारी में लगभग १ वर्ष लग जाता है । वह भी तैयार किया जा सकता है । पूजन का मंगल यन्त्र, "बगलामुखी यन्त्र" आदि भी विधानपूर्वक तैयार किये जाते हैं तथा अनुष्ठान आदि भी सविधान किये जाते हैं । कृपया पत्राचार करते समय जवाबी लिफाफा अवश्य भेजें । यन्त्र आदि वी. पी. द्वारा भेजने का नियम नहीं है ।

हमारे संस्थान के–

तैयार किये हुए चमत्कारिक यन्त्र

हमारे पूर्वजों ने प्रत्येक कार्य की सिद्धि के लिये साधन बतलाये हैं । यदि श्रद्धा और विश्वास के साथ उन साधनों को प्रयोग में लाया जाय तो अवश्यमेव मनवांछित सिद्धि प्राप्त होती है, क्योंकि श्रद्धा और विश्वास से किया हुआ कार्य अवश्य फलीभूत होता है "विश्वासं फलदायकं" । खोटे ग्रहों की शांति का उपाय उच्चकोटि के महान् तान्त्रिकों, महान् साधु-महात्माओं आदि के यन्त्र-मन्त्र, तन्त्रादि–जिनके धारण करने मात्र ही से राजकाज, मान-प्रतिष्ठा, लक्ष्मी प्राप्ति, नाना प्रकार की आधि-व्याधि, नवग्रहों से उत्पन्न पीड़ा का शमन, रोगों से मुक्ति, परीक्षा आदि में सफलता, मुकदमें आदि में विजय, उच्चाधिकारियों की कृपा, नौकरी, व्यापार, उद्योग-धन्धे, सन्तानादि प्राप्ति, सुख, धन-धान्य की वृद्धि, प्रेतादिबाधाओं से मुक्ति आदि कार्य सफल होते हैं । हमारे यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र आदि ज्योतिष शोध संस्थान में सभी प्रकार के कार्य किये जाते हैं । अपने पाठकों के लिये दीपावली, नवरात्र, ग्रहण व शुभनक्षत्र, योग आदि के समय शुद्ध-रूपेण शास्त्तोक्त विधि से तैयार कुछ यन्त्रों की जानकारी निम्न प्रकार है । कार्यसिद्धि ही हमारे संस्थान की प्राभाणिकता है ।

सिद्धभाग्यदाता यन्त्र । जिसका भाग्य साथ न देता हो, नौकरी, व्यापार, फैक्ट्री, उद्योग आदि ठीक न चल रहा हो, समय खोटा चल

रहा हो, तब इस यन्त्र को मगाकर धारण करें और चमत्कार देखें। मूल्य २१) मात्र।

महासिद्ध वीसा यन्त्र—यह हमारे कार्यालय का बड़ा ही चमत्कारिक यन्त्र है, इसके सहस्रों प्रशंसा पत्र मेरे कार्यालय में आये हैं। इसके धारण मात्र से मनोकामनाओं की पूर्ति, दूकान में गल्ले, तिजोरी आदि में रखने, दीवाल में टाँगने से व्यापार आदि में विशेष लाभ होता है। इसके सम्बन्ध में महर्षियों ने कहा है—"जहाँ यन्त्र है वीसा, तो काह करे जगदीशा" यन्त्र की (दक्षिणा २१) और विशेष स्पेशल (पावरफुल) का ३१) मात्र। दूकान-गद्दी-आफिस-घर आदि में मढ़वाकर टाँगने वाले की दक्षिणा ७१)।

लक्ष्मी प्राप्ति (कुबेर यन्त्र)—यथा नाम तथा गुणम् दक्षिणा २१)।

विजयदाता सिद्ध यन्त्र—मुकदमें, कोर्ट, कचहरी, हाकिम अधिकारी आदि में व शत्रुओं से विजय २१), विशेष स्पेशल ३१) है।

सिद्ध सरस्वती यन्त्र—परीक्षा आदि में बुद्धि को प्रखर, तीव्र करता है। कुशाग्र बुद्धि बनाकर सफलता दिलाता है ११)। स्पेशल २१)।

सर्व विघ्न हरण यन्त्र—नाना प्रकार की आधि-व्याधि विघ्न-बाधाओं को नष्ट करता है। मूल्य २१)।

महासिद्ध दुर्गा यन्त्र—इसके धारण मात्र से नाना प्रकार की चिन्तायें, रोग से मुक्ति, यदि बालक, स्त्री, पुरुष आदि को डर लगता हो, भय से पीड़ित हो, विशेषकर छोटे बच्चों को नजर, दीठ आदि का भय होता हो तो यह रामबाण है २१) स्पेशल ३१)।

पुत्रदाता यन्त्र—जो महानुभाव सन्तान विहीन हैं, उन्हें यदि माँ जगदम्बा की कृपा हुई तो निश्चय ही वह पिता कहलाने के अधिकारी होगें। यदि कवच-आदि हमारे तन्त्रालय में आदेश पत्र (आर्डर) देने पर तैयार कराया जाता है, दक्षिणा ५१) विशेष पावरफुल १०१) मात्र।

तथा मंगल पूजन यंत्र १०१) ।

नवग्रहों के यन्त्र–ग्रह जन्य पीड़ाओं के लिये हमारे कार्यालय में प्रत्येक ग्रह-सूर्य यन्त्र, चन्द्रमा का यन्त्र, मंगल यन्त्र, बुध यन्त्र, गुरु यन्त्र, शुक्र यन्त्र, शनि यन्त्र, राहु यन्त्र, केतु यन्त्र, ये नवों ग्रहों के यन्त्र भी मिलते हैं। प्रत्येक ग्रह के यन्त्र की दक्षिणा ११) है। नवग्रह यन्त्र की दक्षिणा ३१) ।

मनोरमा यंत्र–मनवांछित पत्नी, सुन्दर रूपवान्, गुणज्ञ, सुशील पत्नी प्राप्ति हेतु मूल्य २१), स्पेशल ३१) ।

शुक्रोपासित महामृत्युञ्जययन्त्र–जिस व्यक्ति के खोटे ग्रह चल रहे हों, मारकेश की दशा हो तथा नाना प्रकार के रोगों से छुटकारा पाने के लिये यह बड़ा ही चमत्कारी यन्त्र है। ९००० मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित दक्षिणा ५१), साधारण ३५) ।

शत्रुशमनक बगलामुखी यंत्र–यदि आप शत्रुओं से परेशान व त्रासित हैं तथा झगड़े-झंझट-मुकदमें आदि के लिये यह बड़ा ही चमत्कारी कवच है। मूल्य ३५) ।

श्री महालक्ष्मी यन्त्र–रोकड़ खजाने-तिजोरी, कैशवक्स आदि में रखने से लक्ष्मी (धन) की वृद्धि होती है। दक्षिणा ३१) ।

श्रीरामरक्षा बालयन्त्र–छोटे-बड़े बच्चे जिनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता हो, नजर-टोना-डीठ-बनहा आदि व बच्चे डरते-चौंकते हों तो वह धारण मात्र से आपत्तियों से सुरक्षित रहेगें। मूल्य २१) ।

श्रीदुर्गा कवच यन्त्र–इस यंत्र के धारण मात्र से आधि-व्याधि-डर-भय-बाहरी बाधाओं से मुक्ति व कहीं भी जावें तो डर-भय न लगे आदि ३१) ।

यदि प्रेतादि बाधाओं आदि से ज्यादा त्रस्त हों तो विशेष रूप से ९ हजार मंत्रों से अभिमंत्रित श्रीदुर्गा कवच यंत्र धारण करें। मूल्य ५१) ।

यंत्र राज—(श्रीयंत्रम्) यह शास्त्रोक्त विधानपूर्वक निर्माण किया जाता है। इसमें कम से कम ६ माह का समय लग जायेगा। इसके लिये अग्रिम चौथाई धनराशि भेजने पर छः माह बाद तैयार करके प्राणप्रतिष्ठा आदि करके भेजा जाता है।

चाँदी के पत्र पर तैयार किया हुआ, दक्षिणा २७५१)।

(दो हजार सात सौ इक्यावन रुपया मात्र)।

त्रिधातु पर (सोना-चाँदी-ताँबा) सोना से दूनी चाँदी और चाँदी से दूना ताँबा पर निर्मित व सिद्ध किया हुआ ३७५१)।

ताँबे पर तैयार व सिद्ध किया हुआ २१५१)।

नोट—जो व्यक्ति इतना द्रव्य न खर्च करना चाहें, तो उनके लिये स्वच्छ कागज पर छपा हुआ तथा १८००० मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित व प्राणप्रतिष्ठा किया हुआ दक्षिणा १५१) मात्र।

बगलामुखी पूजन यंत्र—शुद्ध ताम्र पात पर बना व अभिमंत्रित सिद्ध किया व प्राणप्रतिष्ठा सहित मूल्य २५१)।

दशमहाविद्यायें—१ काली, २ तारा, ३ महाविद्या (त्रिपुरसुन्दरी), ४ भुवनेश्वरी, ५ भैरवी, ६ छिन्नमस्ता, ७ धूमावती, ८ बगलामुखी, ९ मातङ्गी, १० कमला अर्थात् (लक्ष्मी) आदि के पूजन यंत्र भी आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

जो महानुभाव यन्त्र मँगाना चाहें, वह यन्त्र मंगाते समय पत्र में धारण करने वाले का नाम अवश्य लिखें तथा जो यन्त्र मंगाना चाहें उसका नाम आदि व यन्त्र की दक्षिणा भी मनीआर्डर द्वारा भेज दें। वी० पी० भेजने का नियम नहीं है।

विद्वज्जनानुदास—
तन्त्राचार्य—**डा० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी "निर्भय"**
पता—यंत्र-तंत्र-मंत्र-ज्योतिष-शोध संस्थान
प्लाट नं० ७६९, ब्लाक वाई, किदवई नगर, कानपुर-२०८०२१
दूरभाष ६०२४६

तंत्र-विज्ञान

इसके पूर्व यन्त्र-मन्त्रादिकों का उल्लेख किया जा चुका है। अब विभिन्न प्रकार के रोग-शमनहेतु शास्त्रोक्त एवम् लोक-प्रचलित परम्परागत तांत्रिक विधियों का वर्णन किया जा रहा है जिसमें किसी प्रकार के यंत्र-मंत्र-जप अथवा अन्य साधन की आवश्यकता नहीं।

नाना प्रकार के रोगनाशक आधि-व्याधि शमनक टोटके

विभिन्न रोगों की चिकित्सा औषधियों के द्वारा करने की प्रथा है, मगर हमारे देश में बहुत प्राचीन काल से ही नाना प्रकार के भयंकर से भयंकर रोगों को दूर करने हेतु विभिन्न प्रकार के टोटकों का प्रयोग किया जाता था, उसमें बड़ी ही चमत्कारिक उपलब्धियाँ मिलती थीं। मैं स्वयं यंत्र-मंत्र तथा टोटका विज्ञान के द्वारा हजारों व्यक्तियों का कल्याण कर चुका हूँ और आये दिन सैकड़ों व्यक्ति आते हैं माँ जगज्जननी भगवती की व गणपतिजी की कृपा से उनका कल्याण होता है। वर्तमान समय में टोटके विभिन्न भागों में प्रचलित हैं। नाना प्रकार की औषधियों का उपयोग मुख मार्ग द्वारा शरीर के भीतर पहुँचाकर किया जाता है और बाह्य रूप में शरीर के विभिन्न अङ्गों पर बाँधने, स्पर्श करने अथवा रखने मात्र से ही रोग-प्रेतादि बाधायें आधि-व्याधि से मुक्ति मिल जाती है। अतः इन टोटकों के प्रयोग से किसी भी प्रकार की हानि की संभावना नहीं रहती। ऐसे रोगादि नाशक तंत्र (टोटके) कुछ निम्नलिखित छपे हैं जो मेरे परीक्षित हैं।

यदि आप लोगों का सहयोग रहा तो भविष्य में व्रृहत् रूप से टोटका विज्ञान पर विस्तृत (बृहत् संस्करण) पुस्तक तैयार कर आप लोगों के समक्ष प्रकाशित कर प्रस्तुत की जायेगी।

ग्रह-भूत-प्रेतादिनाशक तंत्र (टोटका)

(१) सफेद अपराजिता वृक्ष के पत्तों के रस में जावित्री पीसकर नस लेनें (नाक के अन्दर सूँघने) से भूत, प्रेतादि, चुड़ैल, डाकिनी-शाकिनी, दानव आदि की बाधा दूर होती है।

(२) अश्विनी नक्षत्र जब रविवार या मंगलवार को पड़े तो उस दिन घोड़े के खुर का नाखून लेकर रख ले, आवश्यकता के समय उस नाखून को अग्नि में डालकर धूनी देने से भूत-प्रेतादि बाधा दूर होती है। परीक्षित है।

(३) चन्दन, वच, कूट, सेंधा नमक, घी-तेल और चर्बी को मिलाकर धूप (धूनी) देने से बालकों के आधि-व्याधि, टोना-प्रेतादि बाधायें दूर होती हैं।

(४) काशीफल के फूलों के रस में हल्दी को पीसकर फिर पत्थर के खरल में खूब घोंटे, अंजन की भाँति बना लें फिर उसे अंजन की भाँति आँखों में आँजने से प्रेतादि की बाधाएँ दूर होती हैं।

(५) काली मिर्च तथा काली सरसों को महीन पीसकर आँखों में अंजन की भाँति लगाने से भूत-प्रेतादि बाधाएँ दूर होती हैं।

मृगी रोग (हिस्टीरिया) नाशक तंत्र (टोटका)

(१) जायफल को रेशमी धागे में गूँथकर दाहिनी भुजा या गले में धारण करने से मृगी रोग दूर होता है।

(२) एक तोला असली हींग कपड़े में सीकर यंत्र (ताबीज) जैसा बना लें और उसे गले में पहनाने से भी सभी रोग नष्ट हो जाता है।

(३) जंगली सूअर के नाखून को अँगूठी की तरह बनवाकर मंगलवार के दिन दाहिने हाथ की कनिष्ठिका उँगली में पहनने से मृगी रोग का दौरा पड़ना बन्द हो जाता है।

(४) गाय के बाँये सींग की अँगूठी बनवाकर दाहिने हाथ की कनिष्ठिका उँगली में पहनने से भी मृगीरोग का दौरा पड़ना बन्द हो

(५) भेड़ के जूँ (जुवें) (चीलड़ों) को कम्बल के रोवों में लपेट करके ताँबे के यंत्र में भरकर जिन स्त्रियों या बच्चों को हिस्टीरिया जाता है।

रोग हो, उसके गले में बाँध दे तो हिस्टीरिया रोग नष्ट हो जाता है।

पथरी रोगनाशक तंत्र—दाहिने हाथ की मध्यमा उँगली में भैंसे के पैर की नाल की अँगूठी (छल्ला) बनवाकर मंगल या रविवार को धारण करने से पथरी रोग दूर होता है।

वायु गोलानाशक तंत्र—नदी आदि में चलने वाली नाव की कील (काँटा) ले आवें, फिर घोड़े के खुर की नाल का लोहा दोनों को मिलाकर एक कड़ा बनवा ले, उस कड़े का पूजन कर धूप-दीप देकर हाथ में पहनने से वायुगोला का दर्द नहीं रहता है।

उस कड़े को पानी में डालकर उस पानी को पिलाने से भूत-प्रेतादि चुड़ैल, डाकिनी-शाकिनी आदि की बाधा तथा हूक रोग भी दूर हो जाता है।

तिल्ली, जिगर, प्लीहा नाशक तंत्र

१—नागफनी के जड़ की माला बनाकर पहनने से तिल्ली-जिगर रोग दूर हो जाता है।

२—बाँझ ककोड़े के वृक्ष की जड़ को रविवार (इतवार के दिन) लाकर रोगी के समीप जलते हुए चूल्हे में बाँध दें, वह गाँठ जैसे-जैसे सूखती जायेगी वैसे-वैसे तिल्ली भी घटती जायेगी।

संग्रहणी व दस्तनाशक तंत्र

(१) सहदेई की जड़ को रविवार के दिन लाकर उस जड़ के सात टुकड़े बना लें और उन टुकड़ों को लाल रंग के डोरे में लपेटकर (बाँधकर) रोगी के कमर में बाँध देने से संग्रहणी-दस्त आना बन्द हो जाता है।

(२) गेहुँअन साँप की केंचुल को कपड़े की थैली में सीकर रोगी के पेट पर बाँधने से संग्रहणी रोग दूर हो जाता है।

आधा सीसी—रविवार या मंगल के दिन प्रातःकाल दक्षिण की ओर मुँह करके हाथ में एक गुड़ की ढेली लेकर उसे दाँत से काटकर चौराहे पर फेंक दें, उससे आधा सीसी का दर्द दूर हो जाता है।

दमा-श्वास रोगनाशक—सोख्ता (ब्लाटिंग पेपर) को सोडे में भिगोकर साया में सुखा लें, फिर उस सोख्ता को जहाँ पर श्वास का रोगी सोता हो वहाँ जलावें, इससे श्वास रोग से आराम मिलता है।

बाल रोगनाशक-टोटका

(१) सीपियों की माला बनाकर इतवार-मंगल के दिन बालक के गले में बाँध देने से उसके दाँत आसानी से निकल आते हैं।

(२) संभालू वृक्ष की जड़ को मंगलवार के दिन बच्चे के गले में बाँध देने से दाँत आसानी से निकल आते हैं।

(३) बालक के हाथ व पैर में लोहे अथवा ताँबे का कड़ा बनवाकर पहनाने से उसे नजर-डीठ आदि का भय नहीं होता तथा दाँत आदि भी आसानी से निकल आते हैं।

(४) इतवार या मंगल के दिन कटनाश (नीलकण्ठ) पक्षी के पंख लाकर जिस चारपाई पर बालक सोता हो उसमें बाँध दें, या घुसेड़ दें, उससे बालक डरेगा नहीं और रोना बन्द हो जावेगा।

(५) रीठे के फल को छेदकर और धागे में पिरोकर गले में बाँधने से उसे नजर-दीठ, टोना आदि नहीं लगता है तथा हिचकियाँ आना भी बन्द हो जाती है।

(६) काले रंग के कुत्ते का १ बाल (रोवाँ) तथा अकरकरा का एक दाना कपड़े आदि में सिलकर बाँध देने से उसके आमाशय सम्बन्धी रोग,ज्वर आदि दूर होता है। तथाचैतन्यता आ जाती है।

(७) अकरकरा की जड़ को सूत के डोरे से बाँधकर बालक के गले में बाँधने से बालक का मृगी रोग दूर हो जाता है।

(८) भेड़िया के दाँत को बालक के गले में बाँध देने से बाल अपस्मार रोग दूर हो जाता है।

(९) बालक को यदि नजर-डीठ लग जावे तो विशेषकर इतवार-मंगल के दिन समूचे (लाल मिरचें) को बच्चे के ऊपर तीन बार उतारकर जलते हुए चूल्हे में झोक दें, यदि किसी की नजर लगी

होगी तो मिरचों की धांस नहीं उड़ेगी और मिर्चों के जल जाने के पश्चात् ही नजर-डीठ दोष दूर हो जायेगा।

धरन रोगनाशक टोटका—शनिवार की शाम को हल्दी व चावल लेकर जंगल आदि में जहाँ फूली हुई शंखाहुली (शंखपुष्पी) (सकौली) को न्योत आवें, फिर रविवार को प्रातःकाल उसी स्थान पर जाकर उस बूटी के पौधें की सात बार प्रदक्षिणा करें और हाथ जोड़कर प्रणाम करें, फिर सूर्यदेव की ओर मुख करके जड़ में दूध डालें तत्पश्चात् उसे खोदकर घर ले आवें और जिस व्यक्ति की धरन हट गई हो (नाप) हर गई हो उसके कमर में बाँध दें, इस प्रयोग से तुरन्त ठीकाने आ जायेगी।

पील पाँव नाशक टोटका

(१) जिसे पील पाँव हो उसके घर से उत्तर दिशा में उत्पन्न आक (अकौंड़ा) वृक्ष की जड़ को रविवार के दिन लावें, फिर उस जड़ को लाल डोरे में लपेटकर पील गाँव वाली जगह पर बाँध दें, इससे रोग धीरे-धीरे ठीक हो जावेगा।

(२) पीली कौड़ी सोलह दाँत वाली, जिस पीली कौड़ी में सोलह दाँत (लकीरें १६) हो, उस कौड़ी में छेद करके काले रंग के डोरे में पिरोकर पील पाँव रोग वाली जगह पर बाँधने से पील पाँव रोग की बाढ़ रुक जाती है और धीरे-धीरे ठीक हो जाता है।

मोटापा नाशक तंत्र—राँगा धातु की अँगूठी बनवाकर दाहिने हाथ की मध्यमा उँगली (बीचवाली उँगली) में पहनने से मोटापा कम होता है।

पागलपन नाशक तंत्र—बिच्छू का डंक व कुत्ते का नाखून तथा कछुवे का खून (रक्त) तीनों को ऊँट की खाल (चमड़े) में मढ़वाकर ताबीज बना लें और उस ताबीज को पागल मनुष्य के गले में बाँध देने से उसका पागलपन दूर हो जाता है।

मासिक धर्म-विकार-नाशक टोटका—मासिक धर्म की खराबी से जिस स्त्री के पेडू में दर्द रहता हो तो रविवार या मंगलवार की रात्रि को मूँज की रस्सी अपनी कमर में बाँधकर सो जाना चाहिए और प्रातः उसे खोलकर किसी चौराहे पर फेंक देना चाहिये, उससे मासिक धर्म की खराबी के कारण पेडू में दर्द आदि ठीक हो जावेगा।

बाँझ पन नाशक तंत्र

(१) जिस दिन श्रवण नक्षत्र हो उस दिन काले एरण्ड वृक्ष (कालेरग) की जड़ लाकर धूप-दीप देकर बन्ध्या स्त्री के गले में बाँध देने से बाँझपन का दोष दूर हो जाता है।

(२) श्रावण के महीने के कृष्ण पक्ष (श्रावणवदी) में जब रोहणी नक्षत्र हो, उस दिन एक मिट्टी के कोरे घड़े को लेकर नदी तट पर जावें और वहाँ कमर को थोड़ा सा झुकाकर उस घड़े में नदी का जल भर लावें, उस जल को बाँझ स्त्री को थोड़े दिन पिलावें, तो उससे गर्भ ठहरेगा।

(३) पलाश वृक्ष (छिपुला वृक्ष) के १ पत्ते को किसी गर्भवती स्त्री के दूध में भिगोकर ऋतुस्नान के बाद सात दिन तक खाने से बन्ध्या रोग दूर होता है।

(४) कदम्ब वृक्ष का पत्ताश्वेत बृहती(सफेद भटकटैया)की जड़ बराबर मात्रा में बकरी के दूध अथवा गोक्षुर(गोखरू)के बीज सभालू वृक्ष के पत्तों के रस में पीसकर ५ दिन खाने से पुत्र प्राप्त होता है।

गर्भ पीड़ानाशक तंत्र

(१) क्वांरी कन्या के हाथ से कते हुए सूत को लेकर, गर्भवती स्त्री के सिर से पैर तक नापकर उसके बराबर २१ टुकड़े (उतने बड़े २१ टुकड़े) धागे लेकर, उनमें काले धंतूरे वृक्ष की जड़ के २१ टुकड़े से प्रत्येक धागे में एक-एक टुकड़ा बाँधे, फिर उन सभी को इकट्ठा करके गर्भवती स्त्री की कमर में बाँध दें, इससे गर्भ स्राव या गर्भपात आदि नहीं होता है।

(२) खरेंट वृक्ष की जड़ को क्वांरी कन्या के हाथ से कते हुए सूत में लपेटकर गर्भवती स्त्री की कमर में बाँध देने से गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है ।

(३) कुम्हार के हाथ से लगी मिट्टी, जो कुम्हार के चाक के ऊपरी हिस्से की हो, उसे बकरी के दूध में मिलाकर गर्भवती स्त्री को पिला देने से उसका गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है ।

(४) गर्भवती स्त्री को शिवलिङ्गी के बीज का एक दाना जिस दिन रजो धर्म प्रारम्भ हो, उसी दिन से एक दाना जल के साथ निगल जाना चाहिए, यह क्रिया सात दिन तक करनी चाहिए ।

(५) फिटकरी और बाँस की छाल को कूटकर जल में खूब औंटाकर निरन्तर सात दिन तक एक छटाँक पीना चाहिएँ, ऐसा करने से गर्भ नष्ट नहीं होता ।

सुख प्रसव कारक तंत्र

(१) सरफोंका की जड़ को गर्भवती स्त्री के कमर में मंगलवार को बाँध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है ।

(२) केले की जड़ को गर्भवती स्त्री के कमर में बाँध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है ।

(३) अपामार्ग (लटजीरा) की जड़, गुरु पुष्य नक्षत्र अथवा रवि पुष्य नक्षत्र में लाया हुआ उसकी जड़ आदि को गर्भवती के गले या बालों की लट में बाँध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है ।

(४) भिण्डी के पेड़ को जड़ सहित उखाड़ लें और उस जड़ का छिलका पीसकर मिश्री व काली मिर्च मिलाकर पिला देने से शीघ्र प्रसव होता है ।

(५) जिस इमली के पेड़ में फूल न आये हों ऐसे इमली के छोटे वृक्ष की जड़ गर्भवती स्त्री के सामने सिर के बालों में बाँध देने से शीघ्र सुख पूर्वक प्रसव होता है ।

नोट—प्रसव के पश्चात् जितने बालों में जड़ बाँधी गयी है, उतने बालों सहित काटकर फेंक देना चाहिए।

(६) चकमक पत्थर को कपड़े में लपेटकर गर्भवती स्त्री की जाँघ में बाँध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

(७) गर्भवती स्त्री के नितम्बों पर साँप की केंचुल बाँध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

(८) बारहसिंगे के सींग को गर्भवती स्त्री के स्तन के समीप बाँध देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

(९) लाल कपड़े में थोड़ा सा नमक बाँधकर गर्भवती स्त्री के बायें हाथ की ओर लटका देने से सुख पूर्वक प्रसव होता है।

गर्भ न ठहरने का तंत्र

(१) हाथी की लीद स्त्री की योनि में रख देने से गर्भ नहीं ठहरता।

(२) जिस छोटे बालक का सर्वप्रथम जो दाँत गिरने वाला हो उसे गिरते समय पृथ्वी पर न गिरने दें, हाथ में ले लें, फिर उसे चाँदी के ताबीज में मढ़वाकर जो स्त्री अपनी बाँयी भुजा में धारण करेगी उसे गर्भ नही ठहरेगा।

नोट—सन्तान दाता (पुत्रदा) नामक हमारी पुस्तक छप रही है। इसमें बृहत् रूप से पुत्र-प्रद यंत्र-मंत्र-तंत्र विधान आदि विस्तारपूर्वक होगा। यह महत्त्वपूर्ण संग्रहीत ग्रन्थ होगा।

बवासीर नाशक तंत्र

(१) कार्तिक के महीने में जंगल से सूरन (जमींकन्द) को खोद लावें, फिर उसकी चकत्तियाँ बनाकर साया में सुखा लें और आवश्यकता के समय उन चकत्तियों को काले रंग के डोरे में गूँथकर कमर में धारण करने से बवासीर के मस्से धीरे-धीरे सूख जाते हैं।

(२) बवासीर के मस्सों के नीचे साँप की केंचुल रखने से बवासीर का कष्ट दूर होता है।

ज्वरादि नाशक तंत्र प्रकरण

ज्वरनाशक तंत्र–(१) रविवार के दिन ज्वर के रोगी से पतावर (मूँज के पौधे में) सूर्योदय से पहले गाँठ (गिरह) लगवा दें। इससे ज्वर दूर होता है।

(२) मकड़ी के जाले को रोगी के गले में बाँधकर लटकाने से ज्वर दूर हो जाता है।

(३) मूसाकानी की जड़ को रोगी के हाथ में बाँध देने से ज्वर दूर हो जाता है।

महा ज्वरनाशक तंत्र–(१) लोगलीमूल (नारियल वृक्ष की जड़)को रोगी के गलेमें बाँध देने से महाज्वर दूर हो जाता है।

(२) बृहपति मूल (कटेरी की जड़) को रोगी के मस्तक पर बाँध देने से महाज्वर दूर हो जाता है।

शीतज्वर (जूड़ी) नाशक तंत्र–(१) शनिवार के दिन बबूल वृक्ष की जड़ को सफेद डोरे में रोगी की भुजा में बाँध देने से शीत ज्वर शान्त हो जाता है।

(२) सफेद कनेर की जड़ को रोगी की दाहिनी भुजा में बाँधने से शीत ज्वर शान्त हो जाता है।

(३) एक मक्खी, थोड़ी सी हींग तथा आधी काली मिर्च इन सबको पीसकर रोगी की आँख में अंजन की भाँति आँज देने से शीत ज्वर दूर हो जाता है।

(४) रविवार या मंगलवार के दिन लहसुन के सात नग (सतयवा) पीसकर काले कपड़े में रखकर रोगी के पाँव के अँगूठे में बाँध दें और तीन घण्टे के बाद उसे खोलकर किसी चौराहे पर पटक दें इससे शीत ज्वर की पारी रुक जाती है।

(५) आठ पाँव वाले मकड़े के जाले को लालरंग के कपड़े में लपेटकर बत्ती बना लें, फिर मिट्टी के दीपक में सरसों का तेल भरकर

उसमें उक्त बत्ती को डालकर जलावें और उससे काजल पारें, उस काजल को रविवार या मंगलवार के दिन रोगी की दोनों आँखों में सात-सात बार लगाने (आँजने से) पारी ज्वर तथा शीत-ज्वर शान्त हो जाता है।

विषम-ज्वर नाशक टोटका—(१) चौराई की जड़ को रोगी के सिर में बाँध देने से विषम ज्वर दूर होता है।

(२) रविवार के दिन अपामार्ग (चिरचिटा), (लटजीरा) की जड़ को उखाड़ लावें और उस जड़ को सूत के डोरे में लपेटकर पुरुष रोगी की दाहिनी भुजा में और स्त्री रोगी की बाँयीं भुजा में बाँध दें, इससे विषम-ज्वर शान्त होता है।

(३) सफेद फूल वाले कनेर वृक्ष की जड़ को रविवार के दिन उखाड़कर रोगी के दाहिने कान अथवा भुजा में बाँध देने से विषम-ज्वर दूर होता है।

एक दिन के अन्तर से आने वाला पारी ज्वर तथा मलेरिया नाशक तंत्र

(१) रविवार के दिन आक (मदार) (अकौड़ा) की जड़ को उखाड़कर लावें और रोगी के कान में बाँध देने से सभी प्रकार के ज्वर शान्त होते हैं।

(२) रविवार के दिन प्रातः समय सहदेई तथा निर्गुण्डी की जड़ को लाकर और दोनों को रोगी के कमर में बाँध दे, इससे हर प्रकार के पारी ज्वर व कम्प-ज्वर भी शान्त हो जाते हैं।

(३) रविवार के दिन संध्या समय कोरे मिट्टी के घड़े में पानी भरकर उसमें एक सोने की अँगूठी डाल दें, एक दो घण्टे बाद मलेरिया पारी ज्वर के रोगी को किसी चौराहे पर ले जाकर उस घड़े के जल से स्नान करा देवें, स्नान के बाद घड़े से अँगूठी निकाल लें, इससे भी पारी ज्वर शान्त हो जाता है।

(४) रविवार के दिन सफेद फूल वाले धतूरे वृक्ष की जड़ को उखाड़कर रोगी को दाहिनी भुजा में धारण करने से पारी ज्वर शान्त होता है।

(५) कुत्ते के मूत्र में मिट्टी सानकर गोली बना लें और धूप में सुखा लें और उस गोली को रोगी के गले में बाँध दें, इससे पारी ज्वर शान्त होकर फिर नहीं आता है।

(६) शनिवार के दिन ताड़ के सूखे वृक्ष की जड़ की मिट्टी लाकर रविवार को प्रातः समय उसे घिसकर चन्दन की तरह रोगी के मस्तक में अच्छी तरह से लगा देने से ज्वर शान्त होता है।

(७) शनिवार के दिन मोरपंखी वृक्ष को शाम को न्यौत आवें और रविवार को प्रातः उसे उखाड़कर लें आवें और लाल डोरे में लपेटकर रोगी के गले अथवा हाथ में बाँध देने से इकतरा ज्वर शान्त होता है।

(८) काले सर्प की केचुल को रोगी के कमर में बाँध देने से पारी पारी से आने वाला ज्वर ठीक हो जाता है।

(९) भृंगराज वृक्ष (भंगरे की) जड़ को सूत में लपेटकर रोगी के सिर में बाँधने से चौथिया ज्वर शान्त हो जाता है।

(१०) उल्लू पक्षी के पंख तथा स्याह गूगल इन दोनों को कपड़े में लपेटकर बत्ती बना लें, फिर मिट्टी के दीपक में शुद्ध घी डालकर उसमें उस बत्ती को जलाकर कज्जल (काजल) पार लें, इस काजल को आँखों में लगाने से सभी प्रकार के ज्वर शान्त होते हैं।

(११) मंगलवार के दिन छिपकली (बिछुतिइया) की पूँछ काटकर उसे काले रंग के कपड़े में सिलकर यंत्र की भाँति रोगी को भुजा में धारण करने से मलेरिया व पारी ज्वर दूर होता है।

(१२) रविवार के दिन गिरगिट की पूँछ काटकर उसे रोगी की भुजा अथवा चोटी में बाँध देने से चौथिया ज्वर शीघ्र दूर होता है।

जीर्ण-ज्वर तथा रात्रिज्वर नाशक टोटके

(१) मकोय की जड़ को रविवार के दिन रोगी के कान में बाँधने से रात्रिज्वर दूर होता है।

(२) भृङ्गराज (भंगरे की जड़) को डोरे में बाँधकर रोगी के कान में बाँध देने से रात्रिज्वर दूर होता है।

(३) जीर्णज्वर के रोगी के शरीर में बकरी का रक्त (खून) प्रवेश करा देने से रोगी स्वस्थ और ठीक हो जाता है।

भूतज्वर तथा सन्निपात ज्वर नाशक तंत्र

(१) अपामार्ग (चिरचिटा–औंगा) की जड़ रविवार या मंगलवार को दाहिनी भुजा में बाँधने से भूत-ज्वर उतर जाता है।

(२) लाल फूल वाले पलाशबृक्ष की जड़ मंगलवार को लाल डोरे में दाहिनी भुजा या गले में बाँध देने से भूतज्वर तथा प्रेतादिज्वर उतर जाता है।

(३) नीम-बकुंची तथा तगर के अंजन को रोगी की आँखों में काजल की भाँति लगाने से भूतारि ज्वर उतर जाता है।

(४) हुल-हुल वृक्ष की जड़ का अर्क रोगी के कान में डालने से भूतज्वर शीघ्र ही उतर जाता है।

(५) मुर्गे की वीट (मुर्गे की टट्टी), काले सर्प की केंचुल, बन्दर के बाल, लहसुन, घी, गूगल तथा कबूतर की बीट इन सबको एकत्रित करके रोगी को इनकी धूप देने से भूतज्वर तथा सभी प्रकार के ज्वर नष्ट होते हैं।

(६) अश्विनी नक्षत्र में निर्गुण्डी की छाल तथा उसके फूलों को पीसकर गोली बनाकर रोगी की भुजा में बाँधने से सन्निपातज्वरादि ठीक होते हैं।

सर्प-बिच्छू विष नाशक तंत्र

(१) गुरुपुष्य नक्षत्र में या रविपुष्य नक्षत्र में औंगा (अपामार्ग-लठ-जीरा-अजाझार) की जड़ लाकर रख लें, जिस व्यक्ति

को बिच्छू ने डंक मारा हो, उसकी नाभि में जड़ लगा दे या कान में बाँध देने या जहाँ डंक मारा हो लगा देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है। सैकड़ों रोगियों पर परीक्षित है।

(२) हुल हुल की जड़ को सात बार सुँघा देने से बिच्छू का बिष उतर जाता है।

(३) सर्प जिस व्यक्ति को काटे उसी समय पीपल वृक्ष की कोमल दो टहनियाँ लेकर लगभग एक-एक बालिस्त की दो टहनियाँ सर्प काटे व्यक्ति के कान में, एक दाहिने कान में, दूसरी बाँयें कान में लगावें और मजबूती से दोनों टहनियाँ पकड़ें रहें अन्यथा वह कान के अन्दर घुस कर पर्दा फाड़ देगी, इसी क्रिया से सर्प विष उतर जाता है।

(४) मोर के पंखों को चिलम में रखकर तम्बाकू की भाँति चिलम पीने से सर्प का विष उतर जाता है।

(५) आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन ईश्वर मूल वृक्ष की जड़ को लाकर डोरे में बाँधकर हाथ में बाँधने से साँप के काटने का भय नहीं रहता।

रोगादि दोष निवारण का टोटका

मिट्टी के सात कहवे तथा उनके ढक्कन लावे और सात प्रकार के रेशम लाकर उनके ऊपर सिन्दूर लगावें। फिर सातों कहवों को क्रमशः लाल, पीला, हरा, काला, गुलाबी, भूरा तथा सफेद रंगों से एक-एक रंग का एक-एक कहवा रंगें। फिर अगर-कपूर-छाड़छबीला-कपूर-कचरी इन सबको मिलाकर सात पुड़ियां बना लें। फिर उन रंगें हुये कहवों में कड़ुवातेल (सरसों कातेल डालकर) उनका मुँह ढक्कन से बन्द कर दें और उन सात पुड़ियों में से एक-एक पुड़िया सातों पर रख दें और संध्या समय इन उतारों को रोगी के समक्ष रख दें और रोगी के ऊपर उतारकर सबको किसी नदी-तालाब-पोखर आदि जलाशय में विसर्जित कर दें। इससे सभी प्रकार की आदि-व्याधि रोग दूर होते हैं।

वीर्य स्तम्भन तंत्र

(१) सुअर के दाहिने दाँत को कमर में बाँधकर मैथुन करने से काफी समय तक वीर्य स्तमभ्न होता है।

(२) कमलगट्टे को शहद में पीसकर नाभि के ऊपर लेप करके मैथुन में काफी स्तम्भन होता है।

(३) काले साँप की हड्डी तथा दुमुँहे साँप की हड्डी को कमर में बाँधकर मैथुन करने से विलम्ब से वीर्य स्खलन होता है।

(४) ऊँट की हड्डी में छेद करके पलंग के सिरहाने बाँध दें और उसी पलंग पर मैथुन करें तो इससे स्तम्भन होता है।

नोट—स्थानाभाव के कारण अब टोटका विज्ञान समाप्त कर रहा हूँ। हमारे पास वंशपरम्परागत तथा आदरणीय ताऊजी (चाचाजी) सम्माननीय स्वर्गीय रमलसम्राट पं० बंचान प्रसाद त्रिपाठी, प्रणेता एवम् प्रवर्तक चिन्ताहरण जंत्री, कसमंडा राज्य की विशेष कृपा और उनकी छत्र-छाया एवं गुरुजनों से इस विषय का बृहत् भंडार मेरे पास है। यदि यंत्र-मंत्र-तंत्रादि के प्रेमियों का इसी प्रकार सहयोग रहा तो भविष्य में शीघ्र ही 'बृहत् प्राचीन टोटका-विज्ञान' पुस्तक आप लोंगों के समक्ष प्रस्तुत करूँगा।

विद्वज्जनानुदास

तंत्राचार्य—डॉ० रामेश्वर प्रसाद त्रिपाठी 'निर्भय'

७६९ वाई ब्लाक, किदवई नगर, कानपुर—११

फोन—६०२४६

सर्वविध-पुस्तक-प्राप्ति-स्थान

ठाकुर प्रसाद कैलाशनाथ बुक्सेलर

राजादरवाजा, वाराणसी





